आधुनिक क्लासिक्स

ओ.वी. विजयन

खसक की किंवदंतियाँ

Table of Contents

लेखक के बारे में सारा

आधुनिक क्लासिक्स

ओ.वी. विजयन

खसक की किंवदंतियाँ

य की खोज में
दूसरी बारी
पुरोहित
खासक की हूरी
खोए हुए वर्षों के बाद
स्कूलों
एक समय की बात है
असहज पड़ोसी
पहले पाठ
भीतर का कुआँ
बाघ
गोधूलि बेला
जांच
ड्रैगनफ्लाइज़
खंडहर
पूर्व की ओर जाने वाला मार्ग
अनुपयुक्त स्वनिम
महोत्सव
फूल की खुशबू
प्रेम प्रसंग
शेख का गीत
रूपांतरण
मुअज़्ज़िन की पुकार
अजनबी का मुखौटा
पूर्वजों का पर्व
फूलना
झील की शांति
यात्रा शुरू होती है
एक उपसंहार

फुटनोट
लेखक का नोट
कॉपीराइट पृष्ठ
*
हालाँकि शाब्दिक रूप से बुद्ध का अर्थ बुद्ध का अनुयायी होता है, हिंदू उच्च वर्ग
* क्रांति

Penguin

O. V. VIJAYAN

खासक की किंवदंतियाँ

लेखक द्वारा मलयालम से अनुवादित

पेंगुइन बुक्स

अंतर्वस्तु

लेखक के बारे में
सराय की खोज में
दूसरी बारी
पुरोहित
खासक की हूरी
खोए हुए वर्षों के बाद
स्कूलों
एक समय की बात है
असहज पड़ोसी
पहले पाठ
भीतर का कुआँ
बाघ
गोधूलि बेला
जांच
ड्रैगनफ्लाइज़
खंडहर
पूर्व की ओर जाने वाला मार्ग

अनुपयुक्त स्वनिम
महोत्सव
फूल की खुशबू
प्रेम प्रसंग
शेख का गीत
रूपांतरण
मुअज़्ज़िन की पुकार
अजनबी का मुखौटा
पूर्वजों का पर्व
फूलना
झील की शांति
यात्रा शुरू होती है
एक उपसंहार
फुटनोट
दूसरी बारी
एक उपसंहार
लेखक का नोट
कॉपीराइट पृष्ठ

पेंगुइन क्लासिक्स

खासक की किंवदंतियाँ

ओ.वी. विजयन (1930-2005) ने पाँच उपन्यास, आठ कहानी संग्रह, सात राजनीतिक निबंध संग्रह और एक व्यंग्य संग्रह प्रकाशित किए। उनके दूसरे उपन्यास, गुरुसागरम को राष्ट्रीय साहित्य अकादमी पुरस्कार मिला। इस उपन्यास को केरल राज्य अकादमी पुरस्कार और प्रतिष्ठित वायलर पुरस्कार भी प्राप्त हुए। विजयन ने द हिंदू, स्टेट्समैन, मातृभूमि (मलयालम) और फार ईस्टर्न इकोनॉमिक रिव्यू जैसे कई प्रमुख समाचार पत्रों के लिए राजनीतिक कार्टूनिस्ट के रूप में काम किया।

विजयन ने उनकी कुछ रचनाओं का अंग्रेजी में अनुवाद किया। इनमें 'धर्मपुरी की गाथा' और 'फांसी के बाद और अन्य कहानियां' शामिल हैं, जो दोनों पेंगुइन द्वारा प्रकाशित की गई हैं।

सराय की खोज में

जब बस कूमनकावु में आकर रुकी, तो रवि को वह जगह अपरिचित नहीं लगी। वह पहले कभी वहाँ नहीं गया था, लेकिन उसने खुद को पेड़ों के विशाल आवरण के नीचे बसे इस सुनसान इलाके में आते हुए देखा था, जहाँ दर्जनों दुकानें और झोपड़ियाँ खंभों पर बनी हुई थीं; उसने यह सब बार-बार पूर्वाभास में देखा था - पेड़ों की सौम्य उम्र, उनकी फटी हुई छाल और धरती के ऊपर झुकी हुई जड़ें।
बाकी यात्री पहले ही उतर चुके थे और रवि बस में अकेला बैठा था, अपनी कुंडली में किसी अशुभ गोचर की तरह यात्रा के अगले हिस्से के बारे में सोच रहा था... सफ़र लंबा और थका देने वाला था। रवि स्वामी बोधानंद के आश्रम से सुबह बहुत जल्दी निकला ताकि लंबी दूरी की बस समय पर पकड़ सके। उसने आश्रम के नौकर और स्वामिनी को ही जगाया, एक को अपना थोड़ा सा सामान उठाने के लिए और दूसरे को जल्दी से विदाई देने के लिए। अनजाने में ही उसने स्वामिनी की भगवा धोती अपनी कमर में लपेट ली। उसे अपनी इस अजीब गलती का एहसास तब हुआ जब वह काफी दूर आ चुका था। सुबह का तारा उग आया। पगडंडी के दोनों ओर, पेड़, झाड़ियाँ और चट्टानें धुंध में जीवित लग रही थीं, मानो साँस लेते हुए भ्रूण हों...
'आपका सामान उठाने के लिए कोई यहाँ है,' कंडक्टर ने रवि से कहा।
रवि विचारों में डूबा हुआ बस से बाहर निकला; और उसे ऐसा लगा जैसे उसके पैरों तले से जमीन खिसक गई हो।
हल्की हवा से बरगद के पत्ते सरसरा उठे।
बक्सा और पलंग को बस की छत से नीचे उतारा गया। रवि की निगाह पलंग पर जमी एक मैल पर टिक गई; उसके चारों ओर की हर चीज़ एक मोहक भंवर में घुलमिल गई।
‘कहाँ जाना है?’ बूढ़े सामान ढोने वाले ने पूछा, जो धैर्यपूर्वक उस युवक के अपने ख्यालों से बाहर आने का इंतजार कर रहा था।

'ओह,' रवि ने कहा, 'खासक को।'
बूढ़ा आदमी सामान उठाने ही वाला था कि रवि ने उसे रुकने को कहा, 'वहाँ कोई शरबत बेच रहा है, चलो हम थोड़ा आराम कर लेते हैं।'
बूढ़े आदमी ने किसानी शिष्टाचार के साथ मना कर दिया, लेकिन रवि फिर भी उसे शरबत बेचने वाली झोपड़ी में ले गया। रवि ने शरबत माँगी और दुकान के सामने खंभों पर बनी बेंच पर बैठ गया। उसने चारों ओर देखा; सड़क घास के एक गोलाकार मैदान पर जाकर खत्म होती थी, जिसके चारों ओर खंभों पर बनी झोपड़ियाँ खड़ी थीं। उनके पीछे मिट्टी के घर लगाए गए पौधों की हरियाली में गुम थे—दालें, केले और लौकी जो छप्परों पर पक रही थीं।
शरबत बेचने वाले ने गिलास धो दिए थे और चाशनी की बोतल खोल दी थी, तभी रवि ने आदत के मुताबिक बर्फ़ माँगी। दुकानदार मुस्कुराया और बोला, 'आपको बर्फ़ की ज़रूरत नहीं पड़ेगी, साहब।' रवि को एक घूँट लेते ही एहसास हुआ कि यह बात सच है। मिट्टी के बर्तन ने पानी को ठंडा कर दिया था और उसमें मानसून की पहली बारिश जैसा खट्टापन भर दिया था। रवि एक और घूँट लेकर बैठा और झोपड़ी में रखी छोटी-छोटी चीज़ों पर नज़र गड़ा दी। दुकानदार के बैठने की जगह के पीछे नरक की यातनाओं को दर्शाने वाली एक बड़ी सी तस्वीर टंगी थी। रवि ने सोचा, क्या वह तस्वीर मेरा इंतज़ार कर रही थी, उन अजीब से जारों और गहरे हरे रंग की पुतलियों वाली गॉथिक शैली की नींबू पानी की बोतलों के पीछे? एक कोने में एक फ़ोनोग्राफ़ था जिसके हॉर्न पर एक छोटा सा कुत्ता बना हुआ था; उसकी नम, जंग लगी चिमनियों से यादों की धुंध उठ रही थी और रवि से उदास और कोमल आवाज़ों में बातें कर रही थी।
‘आप कहाँ जा रहे हैं?’ विक्रेता ने पूछा।
'खासक।'
‘रिश्तेदारों से मिलने जा रहे हैं?’
नहीं। मैं वहां पढ़ाने जा रहा हूँ।
‘पढ़ाना? खासक में? वहाँ कोई स्कूल नहीं है, कम से कम कुछ दिन पहले तक तो नहीं था—’
'जिला बोर्ड के नए एकल शिक्षक विद्यालयों में से एक। मुझे इसे शुरू करने की जिम्मेदारी सौंपी गई है।'
विक्रेता रुका, यात्री को ध्यान से देखा और बोला, 'मुझे लगा आप कांग्रेस में हैं।'

उनकी निगाहें रवि की भगवा धोती पर टिकी थीं। स्वतंत्रता संग्राम के दौरान ग्रामीण इलाकों में घूमने वाले कांग्रेस समर्थक हाथ से बुनी और भगवा रंगी धोती पहनते थे; कई लोग आज भी इसे फैशन के तौर पर पहनते हैं।
‘अभी नहीं,’ रवि ने हंसते हुए कहा, ‘और यह कांग्रेस का केसर नहीं है, यह आश्रम का केसर है।’ आश्रम का नाम सुनते ही विक्रेता ने अनायास ही अपने हाथों से अभिवादन किया...
रवि चल पड़ा। बूढ़ा आदमी आगे-आगे चल रहा था। वे झोपड़ियों के बाज़ार को पीछे छोड़ते हुए गहरी मेड़ों के बीच से कटी एक गली में चलने लगे, जो जल्द ही एक घाटी में खुल गई। हवा में जंगली तुलसी की खुशबू फैली हुई थी।
‘यह कितनी दूर है, प्रिय बुजुर्ग?’
बस थोड़ी सी सैर।
क्या बोझ भारी है?
'भार तो भार ही होता है।'
'हम बारी-बारी से कर सकते हैं, मैं मदद करना चाहूंगा।'
दोपहर का समय था और हवा थम सी चुकी थी, धरती मदहोश थी।
रवि की बचपन की यादें हमेशा दोपहर के समय से शुरू होती थीं। वह पहाड़ी की चोटी पर बने अपने घर के बरामदे में अकेला बैठा रहता था। पहाड़ी नीचे कॉफी के बागानों की घाटी तक झिलमिलाती पीली घास की ढलानों में फैली हुई थी। घाटी के बाद, यह फिर से क्षितिज की ओर उठती थी, जिस पर छोटे-छोटे चीड़ के पेड़ निर्मल मृगतृष्णा में लहराते थे। उसकी सबसे प्यारी याद आकाश-दर्शन की थी, एक ऐसा शौक जिसमें उसकी माँ भी उसके साथ शामिल होती थी, हालाँकि वह गर्भवती होने के कारण अक्सर नहीं होती थी। वह उसे देवताओं की कहानियाँ सुनाती थी। आकाश में रहने वाले ये देवता कल्पक फल का दूध पीते थे, जो उनका अमरत्व का अमृत था, और उसके खाली छिलके धरती पर फेंक देते थे। अगर आप आकाश को काफी देर तक निहारते रहते, तो आपको वे छिलके पारदर्शी आकृतियों की तरह दिखाई देते। दोपहर के समय आकाश उनसे भरा रहता था। रवि उन्हें चमकते बादलों के किनारों पर सरकते और चीड़, चट्टानों और घास के ऊपर से धीरे-धीरे गुजरते देखता था। वह माँ के पेट पर सिर रखकर देखता रहता था, जब वह सोफे पर लेटी रहती थी।
‘तेरह!’ रवि ने उत्साह को रोकते हुए फुसफुसाया।

‘अरे मेरे बच्चे,’ माँ ने कहा, ‘तुमने उनके साथ क्या किया?’
मैंने उन्हें गिन लिया है, माँ।
शर्मीले-सहमे हुए जीव गायब हो गए। आकाश अब निर्जन था, सिवाय एक अकेले गिद्ध के जो अंतरिक्ष की अथाह गहराइयों में अपना रास्ता तलाश रहा था।
एक बार जब मैं निगरानी कर रही थी, तब माँ ने कहा, 'मेरी नन्ही सी स्टार, ज्यादा झुकना मत, कहीं तुम्हारी बहन को चोट न लग जाए।'
नन्ही बहन, प्यारी सी मेंढक की बच्ची, जिसने माँ के अंगूठे के अंदर लंबे सपने देखे और सोई रही! वह रेंगकर माँ के पेट तक पहुँच गई थी, पर रवि को उसे देखने का सौभाग्य नहीं मिला; माँ उस नन्ही बच्ची को एक अजीब सी पालकी में अपने साथ ले गईं। उस दिन घर में कई लोग आते-जाते रहे, कॉफ़ी की झाड़ियों की छंटाई करने वाले पुरुष, बागान के अस्पताल में पिताजी की सहायता करने वाली नर्सें, ऐसे लोग जिन्हें उसने पहले कभी नहीं देखा था। पालकी तैयार की जा रही थी; रवि को शोकगीत, इत्र, फूल और अगरबत्ती की खुशबू याद आ गई। दोपहर का समय था, भूसी गिर रही थी। माँ गहरी और अद्भुत शांति में सो रही थीं। जैसे ही पालकी घर से निकली, नर्सों ने उसे रोक लिया, कोमल हाथों से उसका चेहरा दूसरी तरफ़ कर दिया। उसने विरोध नहीं किया, क्योंकि उसने घास के मैदान से होते हुए, पन्ना जैसी हरी घाटी से गुजरते हुए, लहराते चीड़ के पेड़ों के बीच से इस यात्रा की कल्पना कर ली थी।
यह समझौता तब टूट गया जब उसकी सौतेली माँ, उसकी चित्तम्मा, आ गईं। दोपहर में वह घर के अंदर दोपहर की नींद ले रही थीं, और रवि बरामदे में अकेला बैठा था, आकाश को देखना नहीं चाहता था, अपने खिलौनों में उसकी कोई दिलचस्पी नहीं थी। वे उसके लिए सिंड्रेला जैसे दिन थे, अनाथपन का दौर; एक दिन, आकाश की गहराइयों से नज़रें हटाकर, उसने चमत्कारिक क्षितिज की ओर देखा। तभी सुनहरी लहरों पर सवार होकर वे आए—पंखों वाले और मुकुटधारी सर्प, उसे खेलने के लिए बुला रहे थे...
‘अभी तक बारिश नहीं हुई है।’ बूढ़े आदमी की आवाज थी। ‘शायद इस साल मानसून हमें निराश कर देगा।’
‘अरे, कुछ कहा नहीं जा सकता।’
पिछले साल बाढ़ आई थी।

वे लगभग तीन मील चल चुके थे और बूढ़े आदमी ने कहा कि अभी इतना ही चलना बाकी है। वे काफी देर से चढ़ाई कर रहे थे, और पीछे मुड़कर देखने पर रवि को कूमनकावु की छतें धुंधली-सी दिखाई दे रही थीं। रवि रुका; बस पालघाट कस्बे की ओर वापस जा रही थी।
‘थके हुए हो?’ बूढ़े आदमी ने पूछा।
'अरे नहीं।'
‘क्या किसी बात ने आपको दुखी कर दिया?’
रवि मुस्कुराया। बूढ़े आदमी ने कहा, 'चलो आगे बढ़ते हैं, कुट्टी।'
रास्ता फिर से ढलान पर उतर गया, और कूमनकावु नज़रों से ओझल हो गया। सूरज अपने चरम पर पहुँच चुका था; हवा फिर से तेज़ हो गई, अब वह हल्की हवा नहीं थी बल्कि पूर्वी हवा थी जो पहाड़ी दर्रे से होकर आती थी, ताड़ के पत्तों पर तूफ़ानी और उग्र। 'अरे, सुनो!' बूढ़े आदमी ने अचानक रुकते हुए कहा; हवा के ऊपर एक ऊँची चिड़िया की आवाज़ गूँजी। मनियन बारिश की भविष्यवाणी कर रहे हैं!
‘शायद बारिश के बारे में मेरा अनुमान गलत ही था,’ बूढ़े ने राहत भरी आवाज़ में कहा। वह बारिश के बारे में घंटों बोल सकता था, ज़रा सी भी प्रतिक्रिया से उसका भाषण और भी जोशीला हो जाता था। उसने कहा कि बारिश ने हमेशा से ही मनुष्य को मोहित किया है। ‘क्या यह माया नहीं है, कुट्टी?’ माया, ज़ाहिर है, ब्रह्मांडीय भ्रम; रवि जानता था कि यह उसका भगवा रंग है! एक पल के लिए उसके मन में रहस्यवादी बनने की हल्की सी इच्छा हुई; उसने उसे दबा दिया। नहीं, इस कई जन्मों की यात्रा में नहीं, इस अविश्वसनीय बोझों की यात्रा में नहीं। मुझे अपने सराय, खसक गाँव तक पहुँचने दो। अब रवि माया के प्रश्न का उत्तर देने की कोशिश कर रहा था, ‘मुझे लगता है ऐसा ही है।’ इस फीके जवाब ने बूढ़े को थोड़ा निराश किया, लेकिन बस कुछ पल के लिए; जल्द ही उसने कहा, ‘वे एक बांध की बात कर रहे हैं, लेकिन क्या बांध आसमान से बारिश करवा सकता है या बाढ़ को रोक सकता है?’
‘बांधों से मदद मिलती है...’
‘कोई नहीं जानता,’ बूढ़े ने बुदबुदाते हुए कहा, ‘कोई नहीं जानता!’ वह भुजाओं और जबड़ों वाली उस विशाल मशीन को देखकर बहुत परेशान था जो मिट्टी के ढेर उठाती थी और शांत चट्टानों को चबाकर जेली बना देती थी। क्या मनुष्य अपनी क्षमताओं का प्रयोग ईश्वर की इच्छा के विरुद्ध कर सकता है?

“देखो, कुट्टी,” बूढ़े ने सामान रखने की खुशी से कहा, “यही तो खासक है!” जैसे ही बादलों का एक टुकड़ा छंट गया, घनी हरियाली के बीच लाल छत की टाइलें चमक उठीं। रवि को कई तरह की आवाज़ें और दृश्य सुनाई दे रहे थे—एक माँ अपनी बेटी को घर बुला रही थी, उसका रहस्यमय नाम किसी धुन की तरह लंबा खिंच रहा था; सीटी बजाते कबूतर और हरियाली में बैठे कई अन्य चिड़चिड़े पक्षी; एक भैंस, अजनबियों को देखकर डर से अपने सींग उठाए हुए; तेज़ बहती हुई छोटी नदी, जिसके किनारे फूलों से लदे हुए थे; दूर से शिकायत करते कौवों का एक झुंड सूरज की चमकती किरणों में टेरोडैक्टाइल की तरह उड़ता हुआ।

खासक के पीछे चेताली पर्वत खड़ा था, जिसकी चट्टानी चोटी नीचे धान के खेतों के ऊपर उभरी हुई थी। जंगली मधुमक्खी के छत्ते, एक दूसरे से चिपके हुए, चट्टान के नीचे विशाल संरचनाओं में लटके हुए थे, जहाँ मनुष्य की पहुँच नहीं थी।

जिला बोर्ड ने विद्यालय के लिए एक मकान पट्टे पर लिया था, जो दो कमरों और एक गलियारे वाला एक साधारण सा घर था, जिसके साथ इमली के पेड़ों से घिरा एक बड़ा आंगन था। यह मकान गांव के बाहरी इलाके में स्थित था और खासक के गरीब सामंती सरदार शिवरामन नायर का था, जो पिछली फसल तक इस शेड का इस्तेमाल पौधों को रखने के लिए करते थे। वे दोपहर से ही शिक्षक के आने का इंतजार कर रहे थे। उन्होंने रवि को चाबियां सौंपते हुए कहा, 'यह हमारा पहला असली स्कूल है, और आप हमारे पहले शिक्षक हैं।'

रवि ने इस पर कब्ज़ा कर लिया; तो यह मेरा अस्थायी निवास है, मेरी सराय। रवि अंदर गया; हवा में फफूंदी और सीलन की तेज़ गंध फैली हुई थी।

'इसमें रहने की जरूरत है, माश,' सिवरमन नायर ने फफूंद को लेकर शर्मिंदा होते हुए कहा।

चूंकि विद्यालय उनकी संपत्ति थी, इसलिए उन्होंने एक ब्लैकबोर्ड, एक मेज और कुर्सी तथा कुछ बेंचों का भुगतान किया था। इनमें उन्होंने व्यक्तिगत स्पर्श जोड़ते हुए गांधी, हिटलर और वानर देवता हनुमान की रंगीन तस्वीरें फ्रेम में लगाई थीं।

‘बोर्ड का एक अधिकारी कुछ दिन पहले यहाँ आया था,’ शिवरामन नायर ने कहा। ‘उन्होंने सुझाव दिया कि आप स्कूल में ही रहें। वरना मैं आपको अपने घर में ही ठहरा लेता।’

'सिवरामन नायर, मुझे आपका बहुत-बहुत धन्यवाद करना है। वैसे भी, मैं आप पर अपना बोझ नहीं डालना चाहता।'
मुझे उम्मीद है कि आप यहां आराम से रहेंगे। अगर आपको किसी चीज की जरूरत हो, तो आप पैदल चलकर आ सकते हैं। मेरा घर गांव के ठीक बाहर है।
जब मकान मालिक चला गया, तो लड़कों, लड़कियों और दूध पीती महिलाओं की एक छोटी सी भीड़ जमा हो गई। इस भीड़ में एक बौना खड़ा था, जिसके हाथ में ऊन की एक डोरी थी, जिसके सिरे पर एक हरी ड्रैगनफ्लाई फड़फड़ा रही थी। उसकी उम्र का अंदाज़ा लगाना मुश्किल था, उसका धड़ तो पूरी तरह विकसित था, लेकिन हाथ-पैर अविकसित थे, और उसका चेहरा घोड़े जैसे जबड़े के साथ बड़ा था। रवि जल्दी से उनसे घुलना-मिलना नहीं चाहता था, लेकिन बच्चे बौने को उसकी ओर धकेल रहे थे, इसलिए प्राथमिक विद्यालय की पुरानी बोलचाल की भाषा में उसने पूछा, 'आपका नाम क्या है?' बौना मुस्कुराता रहा। बच्चों ने उसे उकसाया, 'बताओ, ओ किली!' बहुत मनाने के बाद, बौने ने एक बूढ़े आदमी की कर्कश आवाज़ और बच्चे की तुतलाहट से भरी आवाज़ में जवाब दिया, 'अप्पू-किली।'
अप्पू-किली, अप्पू-तोता, नाम निहत्था रवि। 'तोता, क्या तुम हो?'
‘जी सार,’ बच्चों ने बौने की ओर से जवाब दिया और साथ ही कुछ और जानकारी भी दी। ‘वह तुतलाता है, सार। वह ड्रैगनफ्लाई पकड़ता है, सार। उसे मकड़ियां पसंद हैं, सार।’
‘अब घर जाओ,’ रवि ने कहा। ‘सोमवार को मिलते हैं। तुम सब स्कूल आओगे ना?’
बच्चों ने एक साथ स्वर मिलाए, मानो कई पायलें एक साथ बज रही हों; ये मधुर आवाजें जल्द ही उनके दुख को शांत करने वाली थीं। उन्होंने एक साथ कहा, 'हम आएंगे, सार!' वे चले गए। और फिर वे स्त्रियाँ आईं, जिनके स्तन उनके शिशुओं के होठों से बाहर निकल रहे थे।
रवि ने अपना थोड़ा-बहुत सामान खोला और उसे रखने के लिए जगह ढूंढने लगा; उसने खिड़की की चौखट से अनिच्छुक तिलचट्टों को हटाया और वहाँ अपनी किताबें, साधारण किताबें और धार्मिक पुस्तकें, ढेर कर दीं। बाकी छोटी-मोटी चीज़ों को जितना हो सके समेटकर वह खस्ताहाल कुर्सी पर बैठ गया। उसकी पिंडलियों में दर्द हो रहा था, हड्डियाँ दुख रही थीं, दर्द उसके शरीर से होते हुए उसके दिमाग तक पहुँच रहा था...

सूर्यास्त की गर्माहट से चट्टानें गर्म थीं, रवि नंगे पैर नहाने के लिए नाले की ओर चल पड़ा। दो औरतें नदी के निचले हिस्से में नहा रही थीं, उनकी कमर और छाती तौलिये से मुश्किल से ढकी हुई थीं, उनकी जांघें गोधूलि बेला में काली दिख रही थीं। रवि नाले के कंकड़-पत्थर वाले तल पर बैठा था, पानी की गर्म धारा उसके कंधों पर बह रही थी। दूर क्षितिज के धुंधले सिंदूरी रंग में शहर दिखाई दे रहा था... रवि ने फिर से खासक की ओर देखा, जो अब मिट्टी के तेल की बत्तियों से जगमगा रहा था, और खासक के पार, चेताली की विशाल पहाड़ी दिखाई दी।

दूसरी बारी

मदरसे में बैठे, अल्लाह-पिचा मुल्ला ने मुसलमानों के बच्चों को खासक की गाथा सुनाई। बहुत समय पहले, उस समय में जो अब मनुष्य के लिए अज्ञात है, उनके खजूर के बाग में एक हजार एक घोड़ों का काफिला आया। सवार बद्रीन थे, पैगंबर द्वारा आशीर्वाद प्राप्त योद्धा, और काफिले के सबसे आगे सबसे पवित्र - सवाब मियां शेख सवार थे। पूर्णिमा का चाँद बेदाग सफेद रंग के हजार घोड़ों पर चमक रहा था। लेकिन शेख जिस घोड़े पर सवार थे, वह बूढ़ा और बीमार था।
युवा श्रोताओं की हर पीढ़ी पूछती थी, 'मोल्लाक्का, बीमार घोड़े की क्या ज़रूरत है?' और मुल्ला बार-बार दोहराता था, 'बूढ़े और मरणासन्न लोगों के लिए अल्लाह और उसके प्यारे शेख के सिवा सहारा कहाँ है?'
जब बूढ़ा घोड़ा और आगे नहीं जा सका, तो शेख ने अपने योद्धाओं को रुकने का संकेत दिया। रात के आखिरी पहर में, जब चाँद डूब रहा था, तब वह वफादार जानवर मर गया और उसे एक खजूर के बाग में दफना दिया गया। कहा जाता है कि वह अपनी अचिह्नित कब्र से उठता है, हवा के साथ उठता है, और जो लोग ध्यान से सुनते हैं, वे अब भी उसके लड़खड़ाते कदमों की आहट सुन सकते हैं, जब वह खोए हुए लोगों की मदद के लिए दौड़ता है, अक्सर उन्हें घने जंगलों वाले पहाड़ी दर्रे को पार करने में मदद करता है... हज़ार घुड़सवार घोड़ों से उतरे और खजूर के बाग में अपना डेरा डाला। खासक के लोग उन्हीं हज़ार घुड़सवारों से अपनी वंशावली जोड़ते हैं।
आज शेख चेताली पर्वत की चोटी पर एक चट्टानी मकबरे में विश्राम कर रहे हैं। मनुष्य अभी तक इसकी सटीक स्थिति का पता नहीं लगा पाए हैं। खासक के मुसलमान और

हिंदू दोनों ही शेख को अपना रक्षक देवता मानते हैं।
मुल्ला ने कहा, 'जब हम बुढ़ापे से झुक जाएंगे, तो अल्लाह आकर हमारी पीठ पर बैठेंगे। सर्वशक्तिमान ईश्वर बीमारों और दरिद्रों पर सवार होंगे, और उनके अनुयायी श्रद्धापूर्वक खड़े रहेंगे।'
उनकी फटी हुई कमीज से पसीने की गंध उठी और मुल्ला को रहमदिल अल्लाह के करीब होने का अहसास हुआ। अल्लाह के खस्ताहाल वाहन की तरह, मुल्ला ने मदरसे में जमा हुए अपने शिष्यों की ओर देखा और पूछा, 'आज किसकी बारी है?'
बच्चे बारी-बारी से मुल्ला के लिए नाश्ता लाते थे; उस सुबह कुन्हमीना की बारी थी। उसकी माँ ने खट्टी-मीठी ताड़ी से बने चावल के पैनकेक, जिन्हें वेल्लायप्पम कहते हैं, बनाए थे, उन्हें केले के पत्तों में लपेटा और लड़की के थैले में रख दिया। कुन्हमीना का मदरसा जाने का रास्ता जंगल के एक हिस्से से होकर गुजरता था, जहाँ अरसु के पेड़ों के झुंड से फूल पगडंडी पर बिखरे होते थे। उस दिन ऐसा लग रहा था मानो पेड़ों से फूलों की बारिश हुई हो; कुन्हमीना फूलों की चादर निहार रही थी, तभी चारा ढूंढते हुए मोरों का एक झुंड उसके पास आ गिरा। मोहित होकर, और यह जाने बिना कि वह क्या कर रही है, कुन्हमीना ने थैला खोला, पैनकेक को टुकड़ों में तोड़ा और मोरों को खिला दिया। जब उसने आखिरी टुकड़ा भी खा लिया, तो उसने अपनी हथेलियाँ साफ कीं और जाने के लिए मुड़ी। लेकिन एक चितकबरा मोर और खाने के लिए उसके पीछे आ गया।
‘हो गया, मोर-सार!’ उसने कहा। पक्षी ने उसका पीछा किया और उसके बछड़े पर चोंच मारी। उसे दर्द हुआ और थोड़ा खून भी निकला, लेकिन वह बहुत खुश थी, उसे मदरसे में सबको बताना था; उसे सचमुच एक मोर ने चोंच मारी थी! उसने खोलूसू और नूरजहाँ को बताया।
जब मुल्ला ने पूछा कि किसकी बारी है, तो सन्नाटा टूट गया। इतराता शाही मोर और फूलों की बारिश गायब हो गई; कुन्हामिना खड़ी हो गई, मदरसे के शोरगुल के बीच एक शरारती दस साल की बच्ची। मुल्ला उठे और उसके पास आए। बच्चे मुल्ला की छड़ी को देखते रहे और तनाव में आ गए। लेकिन पुजारी ने कुछ नहीं किया, वह बस वहीं खड़े रहे, अपने आसपास की दुनिया से बेखबर...
अल्लाह-पिच्चा का मन पिछले सप्ताह की पंचायत की ओर चला गया, जिसमें उन्होंने मुस्लिम बुजुर्गों को बुलाया था। वे आए, अपनी रूढ़िवादिता दिखाने के लिए अपनी

दाढ़ी लाल रंग से रंगी हुई थी। कुछ नौजवान भी आ गए। वे सब गाँव के चौक के बीचोंबीच खड़े बरगद के पेड़ के नीचे इकट्ठा हुए। पेड़ की तलहटी के चारों ओर ईंटों से बने चबूतरे पर बैठे मुल्ला ने अपने अनुयायियों को नए स्कूल के खतरों, उसके नुकीले अक्षरों और निषिद्ध सूदखोरी में इस्तेमाल होने वाली उसकी गणना पद्धति के बारे में बताया। मुल्ला ने नई शिक्षा के पागलपन, शेख के क्रोध और उनके दोबारा आने की भयावह कल्पनाएँ प्रस्तुत कीं। खासक में दो स्कूल थे—एक मदरसा जहाँ मुल्ला कुरान पढ़ाते थे, और दूसरा एझुत्थु पल्ली, जिसका शाब्दिक अर्थ है लेखन का घर, जिसे वंशानुगत हिंदू ज्योतिषियों के एक परिवार द्वारा चलाया जाता था। दोनों स्कूलों में कभी प्रतिस्पर्धा नहीं थी।
पंचायत में युवाओं की ओर से असहमति की फुसफुसाहट सुनाई दी।
‘बोलिए!’ मुल्ला ने कहा।
युवा कासिम ने कहा, 'मुझे यह बात समझ में आई कि अगर सरकार स्कूल की स्थापना करती है, तो हममें से कौन इसे रद्द करना चाहेगा?'
अलियार की चाय की दुकान के सामने ग्रेनाइट की उस पट्टी पर बैठी कुप्पू-अच्चन, जो गांव की गपशप करने वाली थी और जिसे आम बोलचाल में बोझ ढोने की जगह कहा जाता था, जिस पर पुराने ज़माने के लोग अपना बोझ रखते थे, ने किसी से विशेष रूप से नहीं कहा, 'आप लोग क्या कहते हैं? क्या यह काम करेगा?'
स्कूल के अपने समर्थक भी थे—जमींदार शिवरामन नायर, उनके भतीजे माधवन नायर (गांव का दर्जी), और जुल्फिकुर हयात, जो खासक की सीमाओं से परे व्यापार करने वाले पहले स्थानीय व्यक्ति के चचेरे भाई थे। कुप्पू-अच्चन ने गुजरते हुए एक लाल दाढ़ी वाले व्यक्ति का ध्यान आकर्षित करने के लिए अपनी स्थिति बदली और कहा, 'अगर लोगों को इस स्कूल की परवाह नहीं है तो इसे कौन चलाएगा?' जैसे ही उन्होंने यह ताना समाप्त किया, शिवरामन नायर, नंगे बदन, कमरबंद से चाबियों का गुच्छा लटकाए हुए, जो जमींदार का प्रतीक था, कुप्पू-अच्चन के पास आए और फुसफुसाते हुए बोले, 'कुप्पू, अपना वादा याद रखना, है ना?'
‘आप कुप्पू पर भरोसा कर सकते हैं, आदरणीय नायर।’
‘दस प्रवेश ...’
'यह हो चुका है।'
‘क्या आप इसे पंद्रह कर सकते हैं?’

'शांति से रहिए, आदरणीय नायर। वादा तो वादा होता है।'
स्कूल को बचाने के लिए पंद्रह बच्चों से कहीं अधिक बच्चों की आवश्यकता होगी। बंद हो रहे हैं।' शिवरामन नायर करीब आए और बोले, 'बौद्ध* हमारे खिलाफ हैं।'
एक इशारे से कुप्पू-अच्चन ने मकान मालिक को आगाह किया कि पंचायत के बाद बौद्ध धर्मगुरु इधर आ रहे हैं। उनके आगे अल्लाह-पिच्चा थे। मुल्ला अपने कुछ खास विश्वासपात्र बुजुर्गों के साथ अलियार की चाय की दुकान में दाखिल हुए, और चूंकि वहां पर्याप्त जगह नहीं थी, इसलिए बाकी लोग दुकान के सामने ही खड़े रहे। बुजुर्ग ने जवाब दिया, 'सच्चा'।
मुल्ला ने अविश्वास से बुदबुदाते हुए कहा, 'निज़ाम अली वापस आ गया है... वो कहाँ है?'
मुल्ला ने यह बात बहुत धीमी आवाज़ में कही। वहाँ मौजूद बड़े-बुजुर्ग व्याकुल हो गए। वापसी की कहानी इसके टुकड़ों को जोड़कर बनाई गई थी। निज़ाम अली चार रात पहले आए थे, दलदल और झाड़ियों को पार करते हुए राजा की मस्जिद में गायब हो गए, जो एक भूतिया खंडहर था।
गांव वालों ने आपस में कहा, 'उसने इसे अपना घर बना लिया है, उसने बुरी आत्माओं को वश में कर लिया है।'
इनमें से कोई भी बात मुल्ला तक नहीं पहुँची थी, लेकिन बूढ़े के मन में यादें उमड़ पड़ीं, एक सोलह साल के लड़के की, जिसके होंठ लड़की जैसे थे और घुंघराले बाल उसके चेहरे को घेरे हुए थे। यह यादें ताज़ा करने का समय नहीं था, बल्कि धर्मद्रोह का सामना करने का समय था; निज़ाम अली खुद को खज़ी घोषित करके खसक लौट आया था, शेख का तांत्रिक, एक ऐसा अधिकार जो गाँव में पहले कभी नहीं देखा गया था। मुल्ला ने फिर से बच्चे की तरह चिढ़कर पूछा, 'मुझे किसी ने क्यों नहीं बताया? तुममें से किसी ने भी नहीं...' बूढ़े लाल दाढ़ी वाले ने कोई जवाब नहीं दिया। 'और तुम, अलियार?' मुल्ला ने चाय की दुकान के मालिक नौजवान को चिढ़ाते हुए कहा, 'तुम भी जानते थे?'
अलियार, उसका शिष्य, समोवर के पीछे रूठकर बैठा था। अचानक मुल्ला असहाय महसूस करने लगा, उसके सामने पुजारी और ढोंगी के बीच एक रहस्यमय द्वंद्व चल रहा था। अल्लाह-पिच्चा को पहले भी ऐसे उन्मादी दौरे पड़ चुके थे, और उसकी पत्नी थित्थी बी उसके साथ दुखी थी, लेकिन उसने ईर्ष्या करने से इनकार कर दिया; एक लड़के को लेकर ईर्ष्या करना उचित नहीं था।

मुल्ला चाय पर झुके हुए थे। उनके मन में अजीबोगरीब तस्वीरें उठ-गिर रही थीं—खाज़ी द्वारा पुरानी व्यवस्था का खात्मा, नए स्कूल द्वारा पवित्र मान्यताओं का खंडन, पैर के अंगूठे पर चप्पल की चुभन का असहनीय घाव में बदलना... चाय ठंडी हो गई। पंचायत से आई भीड़ छंट गई, लेकिन अब एक और बड़ी भीड़ चाय की दुकान की ओर बढ़ रही थी, नौजवान और लड़के अपने नए नेता के चारों ओर गोल-गोल घूम रहे थे। मुल्ला उठे और आंगन में चले गए।

‘निज़ाम अली!’ मुल्ला का सामना धर्मत्यागी से हुआ।

‘खाज़ी,’ उनके पूर्व शिष्य ने उन्हें सख्ती से सुधारा। अल्लाह-पिच्चा स्तब्ध रह गए; फिर अपनी आवाज़ पाकर उन्होंने कहा, ‘निज़ाम अली, क्या आप सत्य हैं या छल?’

‘सच्चाई।’

मुल्ला व्यर्थ ही किसी शगुन, छिपकली की आवाज़, हवा के झोंके से आती हुई अनसुनी आवाज़ों, या जादुई पहाड़ पर नीले बादल के छींटे का इंतज़ार करता रहा। कमज़ोरी और दर्द से कराहते हुए उसने कहा, 'धोखेबाज़! तुम पर अपवित्र आत्मा का साया है।' उसने मुट्ठी भर धूल उठाई, उस पर मंत्र पढ़ा और निज़ाम अली पर फेंक दी। फेंकने की कोशिश में, जो खाज़ी को नहीं लगी, मुल्ला लड़खड़ा गया और अगर अलियार ने उसे न पकड़ा होता तो वह गिर ही जाता। इस सब के दौरान निज़ाम अली मुस्कुराते हुए अपनी जगह पर डटा रहा।

निराश मुल्ला चाय की दुकान में वापस चला गया। फिर उसने वफादार लाल दाढ़ी वाले एक व्यक्ति से पूछा, 'क्या उस गलती करने वाले ने स्कूल के बारे में बात की थी?'

उन्होंने ऐसा किया, और बहुत जोश के साथ किया।

‘उसने क्या कहा?’

उन्होंने कहा कि शेख की आत्मा स्कूल को लेकर क्रोधित नहीं थी, और वह, शेख के खाजी होने के नाते, स्कूल को एक छोटे पौधे की तरह लगाएंगे।

मुल्ला कुछ देर तक अपनी माला जपते रहे। फिर उन्होंने कहा, 'इस विद्यालय में हमारे बच्चों को काफिरी ज्ञान से भ्रमित किया जाएगा। ऐसा पौधा लगाने वाला शेख का खाज़ी कैसे हो सकता है?'

मुल्ला ने अपनी चाय की एक घूंट ली, जो अब कड़वी हो चुकी थी, और अगले ही पल उसे ज़ोर से थूक दिया। उसने अपना सारा गुस्सा अलियार पर निकाला। 'कुत्ते, बेशर्म कुत्ते!' वह चिल्लाया। 'चाय में काफ़िरों का दूध पाउडर मिला रहा है!' गालियाँ देते हुए,

सिसकते हुए, मुँह से लार टपकाते हुए, उसने प्याले और गिलास पकड़े और उन्हें गुस्से में आँगन में फेंकने लगा।
‘मोल्लाक्का!’ आंगन से एक शांत आवाज ने उन्हें पुकारा। तभी निज़ाम अली बेंचों की कतार को लात मारकर हटाते हुए चाय की दुकान में दाखिल हुए। मुल्ला स्तब्ध होकर बैठ गए; घुसपैठिया जादूगर उन पर हावी हो गया। मुल्ला ने धीमी फुसफुसाहट में सख्त आदेश सुना, ‘शांत हो जाओ, मोल्लाक्का!’
मदरसे में, मुल्ला भयभीत कुन्हमीना के बगल में गहरी ध्यान मुद्रा में खड़ा था, आँसुओं से उसकी कमीज़ भीग रही थी। फिर कुन्हमीना के सिर पर हाथ रखकर उसने कहा, 'तुम इसे दोबारा नहीं दोहराओगे, है ना, ऐ बिलाल?'
‘नहीं,’ उसने कहा।
बैठ जाओ।
बच्चे अचंभित थे। मुल्ला ने उसे क्यों माफ कर दिया, वह कुन्हमीना के पास इतनी देर तक क्यों खड़ा रहा और क्यों रोया?
‘और अब बताओ,’ मुल्ला ने कहा, ‘क्या तुम काफिरों के स्कूल जाओगे?’
राहत मिलने पर आभारी कुन्हामिना कुछ भी वादा करने को तैयार थी, 'मैं नहीं जाऊंगी।'
‘शेख की कसम खाओ।’
‘सबसे पवित्र शेख की कसम,’ और उसने अपनी ओर से जोड़ा, ‘बद्रिनों की कसम, पैगंबर की कसम...’
‘मरियम्मा की कसम खाओ।’
मरियम्मा चेचक की देवी थीं, जिनकी पूजा हिंदू निम्न जातियों द्वारा की जाती थी और वे ताड़ी और अश्लील गीतों से उन्हें प्रसन्न करते थे। मुल्ला कोई जोखिम नहीं लेना चाहता था।
‘मरियम्मा की कसम,’ लड़की ने फिर से अपने शपथ में अनावश्यक देवी-देवताओं का नाम जोड़ते हुए कहा। ‘इमली की शाखा पर विराजमान देवी की कसम, नागदेवों की कसम—मैं काफिरों के विद्यालय में नहीं जाऊंगी!’
मुल्ला अपनी छोटी चौकी पर लौट आया, जो साठ वर्ष की आयु तक इतिहासकार का आसन हुआ करती थी। चालीस वर्ष उसने शेख की महिमा का गुणगान करते हुए

पर्वतीय पथ पर यात्रा की थी, चालीस वर्ष दुर्बलता के साथ बीते थे। मुसाफिर के पैर के अंगूठे से, लगभग भुला दिया गया घाव, दर्द का अपना हल्का संकेत भेज रहा था।

पुरोहित

बारह मस्जिदें खंडहर में तब्दील हो चुकी थीं, गाँव के चारों ओर एक उजाड़ घेरा बना हुआ था; उनमें खसाक काल का अनंत समय ठहर सा गया था। किंवदंती के अनुसार, मूर्तिपूजक देवताओं ने उनमें से सबसे पुरानी मस्जिद का पुनर्निर्माण करने का प्रयास किया। लेकिन देवताओं ने शपथ ली थी कि वे केवल अंधेरे में ही निर्माण करेंगे और सूर्योदय से पहले अपना कार्य पूरा कर लेंगे। मुर्गे का रूप धारण करने वाले राक्षसी आत्माओं ने रात में ही बांग दी, जिससे देवता भ्रमित हो गए और अधूरी इमारत को छोड़कर भाग गए। मस्जिदों पर एक अभिशाप था और देवताओं के विफल होने के बाद कोई भी, और निश्चित रूप से कोई भी मनुष्य, किसी भी पूजा स्थल का निर्माण पूरा नहीं कर सका, विशेष रूप से उनमें से सबसे प्राचीन मस्जिद का। यदि आप ग्रामीणों से मस्जिद की आयु पूछते, तो वे उत्तर देते, 'हजारों वर्ष।' इन अंतहीन वर्षों में काई ने ईंटों को इतना नरम कर दिया था कि मस्जिद दलदल में केवल रूपरेखाओं का एक निशान बनकर रह गई थी।
बारहवीं मस्जिद, जिसे बादशाह की मस्जिद कहा जाता था, खंडहरों में सबसे नई थी। इसकी दीवारें और छत विचित्र विकृतियों से ढकी हुई थीं, और मस्जिद एक प्राचीन इमारत की उदास समृद्धि को दर्शाती थी। यह अरबी तालाब के सामने स्थित थी, जो क्रिस्टल जैसे साफ पानी का एक तालाब था, जहाँ प्राचीन युद्धों में क्षत-विक्षत हुए प्राणी, जिन्हें कबन्धा कहा जाता था, अपने घावों को धोने आते थे। तेरहवीं मस्जिद में अल्लाह-पिच्चा नमाज़ पढ़ाते थे।
खासक के मुल्ला परिवार में सभी अनाथ थे, जिन्हें असामान्य परिस्थितियों में गोद लिया गया था। इसलिए जब अल्लाह-पिच्चा की नज़र चेताली की ढलानों पर उस सुंदर लड़के पर पड़ी, तो उन्होंने सोचा कि उत्तराधिकारी की उनकी तलाश पूरी हो गई है। यह बारह साल पहले की बात है, जब उनकी बेटी सोलह साल की थी। लड़का भी लगभग उसी उम्र का था। वह फटे हुए कपड़े की एक पट्टी ओढ़े खड़ा था, जिसके आर-पार मुल्ला को उसकी जांघें और उन पर के कोमल बाल दिखाई दे रहे थे।

‘आप शेख की घाटी में क्यों आए हैं?’ अल्लाह-पिचा ने पूछा।
लड़के ने जवाब दिया, 'सांप। मैं उन्हें पकड़ने आया हूँ।'
‘किस तरह के सांप?’
'नकाबपोश लोग, सरीसृप राजकुमार।'
'किस कारण के लिए?'
लड़के ने कोई जवाब नहीं दिया, वह बस पुजारी के सामने खड़ा रहा और मुस्कुराता रहा।
‘तेरा नाम क्या है, ऐ अभागे?’ मुल्ला ने तब पूछा।
‘निज़ाम अली।’
‘क्या आपके अत्था और उम्मा जीवित हैं?’
'इन में से कोई भी नहीं।'
'घर?'
'कोई नहीं।'
लड़का मुस्कुराया, बूढ़े पुजारी ने उसके गालों पर हाथ फेरा। मुल्ला ने फिर ऊपर देखा, और अब चेताली की ओर से एक संकेत आया, घने काले जंगल में एक हवा चली और झाड़ियों में लगी आग से ढलान पर नीले धुएं के गुबार उठने लगे। पुजारी काफी देर तक पहाड़ को निहारते रहे। जब उनका ध्यान भंग हुआ, तो उन्होंने देखा कि लड़का अभी भी उनके सामने था, लेकिन अब उसके हाथ में एक हरा सांप रेंग रहा था, झाड़ियों का वह सांप जो अनजान लोगों की आंखों में जहर उगल देता था।
‘तुमने उस सरीसृप राजकुमार को क्यों नहीं पकड़ा?’ मुल्ला ने पूछा।
लड़के ने जवाब दिया, 'क्योंकि यह भी उतना ही जहरीला हो सकता है।'
'बिल्कुल सही कहा। लेकिन यह कब होगा?'
जब उसका समय निकट आ जाए।
मुल्ला ने कहा, 'उस दुष्ट को फिलहाल झाड़ियों में वापस जाने दो।'
लड़के ने वैसा ही किया जैसा उसे कहा गया था, उसने सांप को नीचे छोड़ दिया और वह रेंगकर दूर चला गया।
‘अब मेरे पीछे आओ,’ मुल्ला ने कहा। पवित्र आयतें पढ़ते हुए अल्लाह-पिच्चा उस सुंदर लड़के को साथ लेकर घर लौट आया। उस रात कोई नहीं सोया... निज़ाम अली परिवार का हिस्सा बन गया। तिथि बी भैंस का मांस पकाती और पथरी बनाती, जिसे वह लड़के

के सामने रात के खाने में परोसती। वह उसके लिए लाख पिघलाती जिससे वह उसके शरीर की मालिश करता; वह शाम की धूप में हरे-भरे फूलों की क्यारियों के बीच खड़ा रहता ताकि लाख उसकी त्वचा में समा जाए और उसे कोमल और चमकदार बना दे... तीन साल बीत गए। एक दिन मुल्ला ने देखा कि निज़ाम अली का सिर मुंडा हुआ नहीं था। धर्मनिष्ठ मुसलमान निज़ाम अली मूर्तिपूजकों से अलग दिखने के लिए अपना सिर मुंडवाते थे, और अल्लाह-पिच्चा ने मुस्लिम नाई, उस्सान को निर्देश दिया था कि वह हर अमावस्या की रात को अपने शिष्य का सिर मुंडवा दे।

‘मैं देख रहा हूँ कि तुम्हारे बाल लंबे हो गए हैं,’ मुल्ला ने कहा। ‘क्या तुम ओस्सान नहीं गए थे?’

निज़ाम अली मुस्कुराए और बोले, 'मैं भूल गया था।'

'इसे जल्द से जल्द करवा लेना बेहतर होगा।'

अगले दिन अल्लाह-पिच्चा को कूमनकावु जाना पड़ा। रात को लौटने पर उन्होंने देखा कि निज़ाम अली मैमूना के टूटे हुए दर्पण में देख रहे थे; वे अपने बढ़ते बालों को बड़े ध्यान से संवार रहे थे। मुल्ला ने उन्हें हल्की सी डांट भी नहीं दी... बाल बढ़ते ही रहे। कुछ और लोग भी थे जो काफ़िर नहीं थे, फिर भी लंबे बाल रखते थे—आलम, अमीर, मोहियुद्दीन और अत्तार। अत्तार सबसे पहले प्रलोभन में पड़ गया था। वर्षों पहले उसने मदरसा छोड़ दिया था और आवारा बन गया था। बाद में उसने एक छोटा सा व्यवसाय शुरू किया और पैसे कमाने लगा। कूमनकावु में उसने जो छोटा सा फूस का घर खरीदा था, जिसे अत्तार अपनी 'फैक्ट्री' कहता था, उसमें दस भूखे-प्यासे और कम वेतन पाने वाले मजदूर सुबह से शाम तक बीड़ी बनाते रहते थे। अत्तार ने शैतान इब्लिस का साथ दे दिया था और वह अपने मजदूरों को उनकी उचित मजदूरी नहीं देता था। मुल्ला को उस स्कूली छात्र की याद में थोड़ी कड़वाहट थी और वह सोचता था कि उसके बालों में कौन सी बीमारी है—रूसी, जूँ? वह ठान चुका था कि निज़ाम अली को ऐसा नहीं करना चाहिए। तिथि बी ने अपने पति को समझाने की कोशिश की। आख़िरकार, क्या ज़्यादा से ज़्यादा युवा मुसलमान अपने धर्म को छोड़े बिना ही गैर-धार्मिक केश-शैली नहीं अपना रहे थे?

‘लेकिन यह गलत है,’ अल्लाह-पिच्चा ने कहा था। ‘वह खासक का अगला मुल्ला है।’ उसने अपना सिर हिलाया और निष्क्रिय उदासी में आगे बोला, 'यह गलत है! उसे मैमूना से शादी करनी है।'

उसके मुंह से शब्द फूट पड़े और अवास्तविक से लग रहे थे। दरअसल, मैमूना की शादी उसके दिमाग में आखिरी बात थी; इसके बजाय वह एक दर्पण में एक चेहरे के चारों ओर लिपटी कोमल लटों की कल्पना से परेशान था, बाल मैमूना या थिथी बी के बालों से भी कहीं अधिक घने थे, बाल निरंतर बढ़ते जा रहे थे और एक घृणित प्रलोभन की तरह फैल रहे थे।

जल्द ही मुल्ला को एक और यात्रा पर जाना था—अथिकोड गाँव, जहाँ उनकी दूसरी पत्नी रहती थीं, जिनसे वे साल में एक बार मिलना कभी नहीं भूलते थे। वे चार-पाँच दिनों के लिए चले जाते थे और चूंकि खासक में मुल्ला अज़ान भी देते थे, इसलिए उन्होंने पाँचों नमाज़ों के लिए अज़ान देने का काम निज़ाम अली को सौंप दिया था...

मुल्ला जब लौटा तो उसने पाया कि खासक ने पाँच दिनों से अज़ान नहीं दी थी। पुजारी क्रोधित हो उठा और उसने मैमूना पर हमला बोल दिया।

'वह कहाँ है?' मुल्ला ने पूछा।

'कौन, अथ्था?'

'तुम्हारी हिम्मत कैसे हुई मुझसे यह पूछने की कि कौन, तुम इब्लिस?'

अल्लाह-पिच्चा गुस्से में घर से बाहर निकले और सीधे मस्जिद की ओर चल दिए। काली धुंध छाई हुई थी, जिससे उनकी नज़र धुंधली हो गई थी; खजूर के पत्तों पर तेज़ हवा चल रही थी। वे उस सुनसान मंज़िल पर चढ़ गए, जहाँ दिन-रात अँधेरा छाया रहता था। छोटे-छोटे चमगादड़ चीखते हुए उन्मादी ढंग से चक्कर लगा रहे थे। बालकनी पर खड़े होकर, मुट्ठियाँ भींचकर कनपटी पर दबाए, ताकि उनकी नसें न फट जाएँ, मुल्ला ने ज़ोर से पुकारा: अल्लाहो अकबर! अल्लाहो अकबर! अशहादो इन्ना ला इलाहा इल्लल्लाह! यह फज़ीर और ज़ोहर की नमाज़ों के बीच, सुबह और दोपहर की नमाज़ों के बीच, एक असमय पुकार थी। यह खासक में गूँज उठी, एक दुख भरी पुकार। मुल्ला ठंडे, अंधेरे फर्श पर थका-हारा, कांपता हुआ बैठ गया और अपनी माला से खुद को शांत करने लगा। थोड़ी देर बाद वह उठा और मस्जिद और गांव के बीच के घास के मैदानों पर चलने लगा। मस्जिद के कब्रिस्तान में उसने निज़ाम अली को एक समाधि पर बैठे हुए देखा, जो धूप में धूप का आनंद ले रहा था और उसके बाल सूर्य की रोशनी में एक प्रभामंडल की तरह चमक रहे थे।

उस रात निज़ाम अली रात के खाने के लिए घर नहीं आए थे, और मुल्ला खुद सीढ़ियों पर बैठे थे, उन्हें खाने की इच्छा नहीं थी। अपने पति का इंतज़ार करते-करते थक चुकी

तिथि बी ने एक चीनी मिट्टी के कटोरे में गीले, खट्टे चावल निकाले। फुसफुसाते हुए उन्होंने कहा, 'मैमूना, इसे अत्था को दे दो।'
मैमूना ने गलियारे के फर्श पर छोटी चटाई बिछाई और दीपक जलाया। ‘अत्था!’ उसने दबी आवाज़ में पुकारा। कोई जवाब नहीं आया। मैमूना ने कटोरा चटाई के पास रखा और चुपचाप चली गई। दोनों महिलाओं में से किसी की भी हिम्मत नहीं थी कि वे बूढ़े आदमी के गुस्से के इन दुर्लभ पलों में दखल दें। तभी उन्हें चीनी मिट्टी के बर्तन के टूटने की आवाज़ सुनाई दी। फिर उन्होंने उसके कदमों की आहट गलियारे से होते हुए बरामदे से गुज़रकर आंगन की ओर जाती हुई सुनी।
तिथि बी रोते-रोते सो गई, लेकिन मैमूना न तो रोई और न ही सोई। बाहर पूर्णिमा का चाँद था, और हवा पहाड़ों के दर्रे से चाँदनी में लहराती धुंध को उड़ा रही थी। उस धुंध के बीच उसने अपने पिता को जंगल में अपना लिखा हुआ गीत गाते सुना—एक थका हुआ, उलझन भरा विलाप।
मैंने बिस्मी का गीत गाया है
मैं अपनी कविता शुरू करता हूँ
अल्लाह मुझे कृपा प्रदान करें
पैगंबर की लड़ाइयों का गुणगान करने के लिए।
निज़ाम अली अगले ही दिन खासक छोड़कर अत्तार की 'फैक्ट्री' में बीड़ी बनाने का काम करने चला गया।

खासक की हूरी

खासक छोड़ने के बाद, निज़ाम अली फिर कभी उस गाँव में नहीं गए; और न ही मुल्ला अपनी यात्राओं के दौरान कूमनकावु गए। निज़ाम अली खुद को अत्तार की जर्जर झोपड़ी में ही समेटे रहे, जहाँ दस मज़दूर बीड़ी बनाते थे। अत्तार और उनकी पत्नी झोपड़ी के पीछे मिट्टी की दीवारों वाले घर में रहते थे। निज़ाम अली बाकी नौ लोगों से ज़्यादा तेज़ी से और बेहतर बीड़ी बनाते थे। बाँस की थाली पर झुके हुए, वह देर रात तक काम करते थे और कभी ज़्यादा मज़दूरी नहीं माँगते थे, जिससे अत्तार खुश रहते थे और उन्हें खाना खिलाते थे और झोपड़ी में सोने देते थे। दो साल बीत गए और मुल्ला के लिए, खासक में उनके घर और कूमनकावु के वर्कहाउस के बीच की दूरी एक ऐसी

खाई बन गई जिसे पार करने की हिम्मत वह नहीं कर पाते थे। तिथि बी ने अपनी बेटी को बड़ा होते देखा, हर दिन वह और भी परिपक्व होती जा रही थी, अधीर और इतनी खूबसूरत कि खासक में ऐसी खूबसूरती पहले कभी नहीं देखी गई थी। तिथि बी ने अपने पति से विनती की, 'एक दिन कूमनकावु जाओ और उस लड़के से बात करो।' हम बूढ़े हो चुके हैं, इतने समझदार हो चुके हैं कि माफ कर देते हैं।' मुल्ला में अब कोई गर्व नहीं बचा था, बस दुख था। उसने वही जानी-पहचानी धुन बुदबुदाई, 'अब कभी पहले जैसा नहीं होगा!'

थिथी बी ने अपने पति को इतना टूटा हुआ कभी नहीं देखा था; उनकी सूजी हुई आँखों और मुरझाए गालों में बुढ़ापे के पहले लक्षण दिखाई दे रहे थे। आजकल उन्हें अक्सर बुखार रहता था। उन्होंने मन ही मन सोचा कि बारिश रुकते ही वह उन्हें दवा मिला हुआ चिकन सूप पिलाएंगी; लेकिन वह यह भी जानती थीं कि चिकन के लिए शायद उनके पास कभी पर्याप्त पैसे जमा न हो पाएं।

'बस एक बार,' उसने दोहराया, 'कोशिश करो और वहाँ उससे मिलने जाओ।' कोमल स्वर में उसने कहा, 'नहीं, तिथि बी।' उसने पहले कभी यह स्वर नहीं सुना था, जिस नए स्वर में उसने उसका नाम पुकारा था। इसने उसे गहराई से छू लिया। वह पास आई और उसके बगल में बैठ गई, और अपनी सुंदर भुजाएँ उसके कंधों पर डाल दीं। बाद में, जब वह केले के पौधों की देखभाल करने के लिए पिछवाड़े गई, तो उसने मैमूना को पानी का घड़ा लेकर घर आते देखा। उसका थट्टन, मुस्लिम महिलाओं द्वारा बालों को ढकने वाला पारंपरिक दुपट्टा, फिसल गया था; वह उसके पीछे बेजान सा लटक रहा था। यह धर्मत्याग था। लेकिन थट्टन केवल एक रस्म से कहीं अधिक था; महिलाओं के बाल, यदि ढके न हों, तो कामुक आत्माओं को आकर्षित करते थे। बेशक काफ़िर महिलाएं अपने बाल ढके बिना घूमती थीं, और कभी-कभी तो अपने स्तन भी नंगे रखती थीं। तिथि बी को इसमें कोई संदेह नहीं था कि उड़ने वाले गंधर्वों, आकाश के लोगों ने उनमें शैतानी संतानें पैदा की थीं। मैमूना ने अपनी माँ की उपस्थिति के प्रति अनायास ही सम्मान दिखाते हुए थट्टन को अपने सिर पर खींच लिया। यह फिर से उतनी ही लापरवाही से फिसल गया। थिथी बी ने उसे डांटा नहीं, बल्कि अपनी देह से जन्मी इस मनमोहक सुंदरता को असहाय होकर देखती रही।

मैमूना शक्ति और समृद्धि के साथ चलती थी, आस्तीनें ऊपर चढ़ाकर अपनी भुजाओं को नंगा रखती थी, जिससे उसकी पारदर्शी त्वचा दिखाई देती थी, जिसके नीचे नीली

नसें एक सुंदर नक्काशी की तरह उभरी हुई थीं। अक्सर मैमूना अपने आकर्षण से पीछा करने वालों को शरमाते हुए किशोरों में बदल देती थी। वह एक ऐसी बलि की घोड़ी थी जिसे कोई भी अपने वश में नहीं कर सकता था।
कोमनकावु में अपने प्रवास के पाँचवें वर्ष में, निज़ाम
अली ने दो नौकरों के साथ अपना खुद का व्यवसाय शुरू किया। अफवाह थी कि अत्तार की पत्नी ने उसे व्यवसाय शुरू करने के लिए पैसे दिए थे, हालांकि कोई भी निश्चित रूप से नहीं जानता था। लेकिन अत्तार और उसकी पत्नी के बीच सड़क पर ज़ोरदार झगड़ा हुआ था।
बीड़ी शंकु के आकार के दस के पैकेट में आती थी, और हालांकि तंबाकू एक ही पत्ते में लिपटा होता था, फिर भी अनगिनत छोटी-छोटी 'कंपनियों' के अपने-अपने लेबल होते थे, और पारखी अपने पसंदीदा ब्रांड के लिए अपनी पसंद जताते थे। अत्तार के दस बीड़ी के पैकेट के चारों ओर रंगीन कागज की एक पट्टी थी जिस पर अत्तार की तस्वीर छपी थी और उस पर लिखा था, भगवान आपको आशीर्वाद दें, श्री अत्तार फोटो बीड़ी। इसमें अत्तार का समय और पैसा लगा था। वह पालघाट कस्बे गए थे ताकि किराए के कोट, टाई और टोपी में अपनी तस्वीर खिंचवा सकें। अत्तार की पत्नी ने कहा था कि वह तस्वीर में असहज लग रहे थे, लेकिन अत्तार अपनी तस्वीर को लेकर जुनूनी थे। कभी-कभी, इस आत्म-प्रेम से अभिभूत होकर, अत्तार घनी झाड़ियों के पीछे चले जाते और उस एकांत में अपने ही छपे हुए चेहरे से विचार करते, जो रहस्यमय और उदास था, जिसे काले और बैंगनी रंग की स्याही में इतनी सटीकता से कैद किया गया था।
सात सालों से अत्तार की बीड़ी उन इलाकों में खूब चल रही थी। अब एक नया व्यापारी अपने खुद के ट्रेडमार्क, सैयद मियां शेख ब्लेस निज़ाम फोटो बीड़ी के साथ मैदान में उतरकर उसे चुनौती दे रहा था। और इस अनोखे व्यापारी ने अत्तार के मन में एक ऐसी बात ला दी जिसकी उसने कल्पना भी नहीं की थी—विज्ञापन! कूमनकावु की दीवारों पर, छोटी-छोटी नालियों पर, पत्थरों पर, रातों-रात बड़े अक्षरों में गलत वर्तनी वाले नारे छपने लगे, जिन पर हल्दी और कोयले से लिखा था, "निज़ाम फोटो सेहतमंद। भूख बढ़ाता है, सड़े हुए खाने को भी जला देता है।"
पेट में अटक गया! रात के अंधेरे में निज़ाम अली ने सैकड़ों बीड़ी के रैपर फुटपाथों पर बिखेर दिए और सुबह होते ही सारा तांडव गाँव वालों के सामने फूट पड़ा। मैमूना ने एक रैपर उठाया और उसे सहेज कर रख लिया; उसने सोचा, यह तनावग्रस्त और

बदसूरत अत्तर से कितना अलग है! छपे हुए चित्र में निज़ाम अली की मुस्कान ऐसी सहज थी मानो वह जन्मजात ही मुस्कुराता हो, उसका मुँह मोहक था, नीले बालों की लटें कनपटी पर लटक रही थीं, और उसकी कमीज़ के बटन खुले हुए थे।
फिर निर्वासन समाप्त हुआ। ईद के त्योहार के दौरान निज़ाम अली खासक आए, रंग-बिरंगे रेशमी वस्त्र पहने हुए, उनकी चौड़ी, कई जेबों वाली कैनवास की बेल्ट पारदर्शी कमीज़ से झाँक रही थी, सिर और गर्दन पर एक जैसे लाल स्कार्फ लिपटे हुए थे और सीने की जेब से बाहर झाँक रहे थे, पैरों में ऐसे सैंडल थे जो चलते समय चरमराहट करते थे, और दोपहर में समृद्धि के प्रतीक के रूप में एक लंबी बिजली की टॉर्च लहरा रहे थे। निज़ाम अली, जो अब धनवान निज़ाम अली मुथलाली बन चुके थे, प्रशंसक भीड़ में घुलमिल गए। कासिम और हनीफ़ा, उबैद दाऊद और उस्सामत, खासक के चिकने गालों वाले आवारा जो इन दिनों हूरी के पीछे-पीछे घूमते थे, डर और निराशा से निज़ाम अली का सामना कर रहे थे। कासिम ने उनकी ओर से कहा, 'निज़ाम अन्नो, क्या आप हमेशा के लिए वापस आ गए हैं?'
‘यह कैसा सवाल है!’ निज़ाम अली ने कहा। ‘क्या आपको लगता है कि मैं अपनी फैक्ट्री को अपने हाल पर छोड़ सकता हूँ?’
निज़ाम अली, अलियार की चाय की दुकान के अंदर एक बेंच पर पद्मासन में पैर मोड़कर बैठे थे, जबकि आंगन में लोगों की भीड़ उन्हें निहार रही थी। निज़ाम अली मुथलाली ने सभी को चाय और कुरकुरे मुरुक्कू परोसे।
दूर से विशाल मानसूनी बादल गर्मी बिखेर रहे थे। मैमूना कमर तक पानी में खड़ी, अरबी तालाब के साफ पानी में नहा रही थी और छपछपा रही थी। तालाब और उसके ऊपर पहाड़ी पर बनी बादशाह की मस्जिद प्रेतवाधित लग रही थी। बीते युग के युद्धों में, अरबों ने धर्मत्यागियों और काफिरों को तलवार से मार डाला था और उनके क्षत-विक्षत शरीर तालाब में फेंक दिए थे। आज भी माना जाता है कि घने अंधेरे में और सुनसान दोपहर में कबांध तालाब में लौट आते हैं। मैमूना अकेले, नग्न अवस्था में नहा रही थी और साबुन के बुलबुलों को लाल और नीले रंग में टिमटिमाते हुए देख रही थी। दूर धान के खेतों में दो स्त्रियाँ पौधे रोप रही थीं, आस-पास कोई और नहीं दिख रहा था। हवा थम सी गई थी, बरगद के पेड़ों पर मृगजल लहरों की तरह उठ रहा था। मैमूना पानी से बाहर निकली और पहाड़ी पर चढ़ने लगी, गीले कपड़े उसके शरीर से चिपके हुए थे; वह कांटों पर चल रही थी लेकिन इस मदहोश कर देने वाली यात्रा में उसे कोई

दर्द महसूस नहीं हुआ। राजा की मस्जिद के अंदर अंधेरा था, फिर भी उसने वहां मौजूद विशाल आकृति को पहचान लिया जो इंतजार कर रही थी।
निज़ाम अली ने कहा, 'इन गीले कपड़ों में तुम्हें सर्दी लग जाएगी, इन्हें उतार दो।'
यह खबर सुनकर खासक दंग रह गए: मैमूना की शादी होने वाली थी!
बरगद के नीचे और अलियार की चाय की दुकान में जमा भीड़ में घोर अविश्वास का माहौल था। गाँव के हर आदमी ने इस घोड़ी को अपनी कल्पनाओं में बांध रखा था... शादी के मेहमान ऐसे इकट्ठा हुए जैसे किसी अंतिम संस्कार में आए हों। घुटनों के बल लड़खड़ाता हुआ दूल्हा अंदर आया, शादी के बाद दाढ़ी बनवाने से उसका चेहरा मोम की तरह उभरा हुआ दिख रहा था: चुक्कु गोताखोर, जिसे खासक और आसपास के इलाकों में 'गोताखोर मुर्गा' कहा जाता था, को न तो खुशी हुई और न ही चिंता, क्योंकि मुल्ला ने उसे वे छंद सुनाने को कहा जिनसे उसे खासक की हूरी पत्नी के रूप में मिली। उस रात एक उन्मादी यात्री खासक से निकला। किसी ने उसे जाते नहीं देखा। वह रात बाकी रातों से कहीं ज़्यादा काली थी, आसमान में बादल छाए हुए थे, मानो मानसून आने वाला हो। बिजली कड़कती और कड़कती हुई यात्री को अपने रास्ते की झलक दिखाई दी। वह रास्ता इंसानों का नहीं, बल्कि जिन्नों और इफ्रिथों का था। निज़ाम अली आगे बढ़ता रहा। चेताली जल्द ही उससे बहुत पीछे छूट गया।

खोए हुए वर्षों के बाद

निज़ाम अली गायब हो गया, किसी को पता नहीं चला कि वह कहाँ गया। उसके दो नौकर बेढंगे छोटे सिगार बनाते रहे, लेकिन उन्हें मज़दूरी देने वाला कोई नहीं था। एक हफ्ते बाद उन्होंने 'फैक्ट्री' बंद कर दी और उदास और बेसहारा होकर दूसरी नौकरी की तलाश करने लगे। एक ने अत्तार के साथ काम करना शुरू कर दिया और दूसरा अवैध शराब बनाने लगा।
अपने रहस्यमय ढंग से गायब होने के दो साल बाद, निज़ाम अली कोमनकावु के बाज़ार में ऐसे लौट आया मानो वह कभी गया ही न हो। वह अत्तार के पास गया और बड़े शांत भाव से पूछा, 'क्या मैं आपके यहाँ काम कर सकता हूँ?' अत्तार उन सभी निजी और घिनौने अपमानों के लिए उसे जान से मार सकता था। लेकिन उसने एक कुटिल रास्ता चुना। उसने निज़ाम अली को अपने यहाँ इसलिए रखा ताकि वह उसे

अपनी मर्ज़ी से परेशान कर सके, उसकी तनख्वाह रोक सके और उसे चाय की दुकानों पर मिलने वाले थोड़े से खाने पर गुज़ारा करते देख सके, उसके बाल जला सके और उसे भूखा रखकर उसका चेहरा पीला कर सके। और वास्तव में उसे कई अन्य तरीकों से भी थका सके।
‘बहुत अच्छा,’ अत्तार ने कहा, ‘लेकिन मुझे और कोई बकवास नहीं चाहिए।’
‘बिल्कुल नहीं,’ निज़ाम अली ने उत्तर दिया, ‘और जब निज़ाम वादा करता है, तो वह वादा निभाता है।’
‘अब आप कारखाने में पहले की तरह नहीं सो सकते। रहने के लिए कोई जगह ढूंढिए।’
‘निज़ाम हवा की तरह है। वह बहता है, फिर शांत हो जाता है।’
‘यह फालतू की बातें बंद करो।’
'निश्चित रूप से।'
उसी शाम अत्तार की पत्नी सोहरा बी ने सहज लहजे में अपने पति से कहा, 'लोग कहते हैं कि उसने अपने बाल औरतों की तरह लंबे कर लिए हैं।'
‘चुप रहो, कुतिया!’ अत्तार भड़क उठा।
निज़ाम अली ने अपना वादा निभाया। अत्तार को भी चकित कर देने वाले उन्माद में, उन्होंने बाकी कारीगरों से दोगुनी बीड़ियां बनाईं, एकदम कसी हुई बीड़ियां। अत्तार उन खूबसूरत उंगलियों को जोश में काम करते हुए देखते रहे... महीने बीत गए, और उनका जोश शांत हो गया। फिर निज़ाम अली की एक कमरे की झोपड़ी के दरवाजे पर एक छोटा सा लाल बोर्ड दिखाई दिया। उस लाल बोर्ड पर तारकोल से यह लिखा था: कूमनकावु बीड़ी वर्कर्स यूनियन। अत्तार के सात कारीगर यूनियन में शामिल हो गए। ये लोग गुप्त और समझदार जगहों पर इकट्ठा होते थे; पालघाट कस्बे से उनके समर्थक आते और धुंधली भविष्यवाणियां पढ़कर सुनाते। वे कहते थे कि यूरोप में एक प्रेत मंडरा रहा है। 'क्या तुम जानते हो कि प्रेत क्या होता है?' उन विचारकों ने बीड़ी बनाने वालों से पूछा।
‘हमें पता है, साथियों,’ कूमनकावु के नए सर्वहाराओं ने जवाब दिया। ‘हमारे यहाँ जिन्न और पूथम हैं।’
‘आप लोग सुन नहीं रहे हैं, साथियों।’
‘खासक में तो इससे भी कहीं ज्यादा प्रेत-भूत हैं...’

इक्कीस जनवरी को उन्होंने लेनिन की जयंती मनाई; एक अन्य दिन एक दर्जन लोगों ने जुलूस निकाला, जो कोमनकावु में देखा गया पहला जुलूस था।
मुस्लिम ट्रेड यूनियनवादियों ने अत्तार से मुलाकात की और उन्हें बताया कि ये जुलूस बुराई से भरे हैं और इनके नारे शैतानी हैं। दक्षिणपंथी कांग्रेसियों के पास तो और भी डरावनी कहानी थी, उन्होंने कहा कि रूसी आ रहे हैं। अत्तार चुपचाप सुनते रहे। उन्हें बेहतर पता था, यह एक निजी जानकारी थी जिसे उन्होंने किसी के साथ साझा न करने का फैसला किया था। यह वर्ग संघर्ष से कहीं अधिक आत्मिक संघर्ष था। अत्तार ने अपनी दौलत कमाने के लिए कड़ी मेहनत की थी—ईश्वर साक्षी थे—और उसी दौलत से उन्होंने अपने छोटे से घर के ऊपर एक अटारी बनवाई थी। दूसरी मंजिल सभी को यह संकेत देती थी कि वह एक मुथलाली हैं, धन के स्वामी हैं। 'मलिका' का अर्थ दो मंजिला घर होता है, और इसी से उन्होंने अपने नाम के आगे लगने वाला 'एम' लिया, एम. अत्तार, मलिकक्कल अत्तार मुथलाली, दो मंजिला घर में रहने वाला पूंजीपति। उन्होंने शैतानी खतरे को नजरअंदाज कर दिया, और रूसियों के बारे में तो और भी कम चिंता की। अब उनके लिए केवल एक ही बात मायने रखती थी, वह अदृश्य शत्रु जो उन्हें हमेशा गरीबी के कगार पर धकेलने की कोशिश कर रहा था, उनके बचपन की गरीबी में। अत्तार ने प्रतिरोध किया था, अब वह विजय प्राप्त करेगा। यही वीरता का क्षण था।
उन्होंने निज़ाम अली को बर्खास्त कर दिया।
इसी के साथ हड़ताल शुरू हो गई। खासक में, लोग अपने प्रवासियों के बीच इस युद्ध को उत्सुकता और चिंता से देख रहे थे। जुलूस कूमनकावु में चारों ओर घूम रहे थे, यह नहीं जानते हुए कि कहाँ जाना है। सभी पुरानी लाल लुंगी को फाड़कर जुलूसियों के लिए झंडे बना दिए गए थे, और सबसे आगे वाले जुलूस में कुरान और स्टालिन का चित्र था। नारों ने कूमनकावु की शांति भंग कर दी।
‘एंग्लो-अमेरिकन शोषण—मुरदाबाद!’
‘Oppressor M Attar—Murdabad!’
‘Inquilab—Zindabad!’
खासक से कूमनकावु तक गुड़ से भरी टोकरियाँ ले जाने वाला टांका इन सब का प्रत्यक्षदर्शी था और विद्रोह की कुछ झलकियाँ अपने घर तक लेकर आया।

‘क्या आप अनुमान लगा सकते हैं कि इन सबका नेतृत्व कौन कर रहा है?’ वह बेहद प्रसन्न हुई। ‘यह वही है!’
'निजाम अन्नान?' मैमूना ने पूछा।
जी हां, मेरी हूरी।
मैमूना खिलखिलाकर हंस पड़ी और उसका चेहरा लाल हो गया... पांचवें दिन विद्रोह ने एक गंभीर मोड़ ले लिया जब अत्तार ने एक हड़ताली मजदूर को बुरी तरह पीटा और उसे घायल कर दिया। अत्तार खुद संतुष्ट था कि उसने संपत्ति के पवित्र कानूनों के दायरे में रहकर काम किया है और बड़ी उम्मीद के साथ पुलिस के आने का इंतजार कर रहा था। पुलिस खाकी वर्दी और लाल बेरेट पहने आई। अत्तार को पूरा यकीन था कि वे कानून के लिए उसके इस काम की सराहना करेंगे। वह उनका स्वागत करने बाहर गया। पुलिस ने तुरंत उसे और निज़ाम अली को गिरफ्तार कर लिया और हथकड़ी लगाकर पालघाट कस्बे ले गए। 'कारखाना' ठप हो गया, लेनदारों ने बीड़ी और तंबाकू का स्टॉक जब्त कर लिया। जल्द ही पालघाट कस्बे के एक बड़े निर्माता ने कूमनकावु में एक शाखा खोल दी। इसी के साथ विद्रोह और अत्तार के व्यापारिक राजवंश के सपने दोनों का अंत हो गया।
निज़ाम अली पुलिस की कोठरी में बुरी तरह पिटे पड़े थे। भोर की हवाओं के साथ वे धीरे-धीरे उठे। उन पर लगे आरोप गंभीर थे—विदेशी शक्ति के साथ मिलीभगत, राज्य के विरुद्ध युद्ध, हत्या के लिए उकसाना। निज़ाम अली को ये सारी बदनामी सहन करने योग्य लगी, लेकिन वो दर्द नहीं जो बीच-बीच में राहत भरी खामोशी के साथ आता था। दर्द और खालीपन के बीच, एक सवाल उन्हें कचोटता रहा—मुल्लाओं के साथ उनके इस संघर्ष में पुलिस क्या कर रही थी?
भोर की रोशनी से कोठरियाँ जगमगा उठीं। निज़ाम अली ने सलाखों को पकड़कर खुद को ऊपर उठाया। उसने बाहर मुर्गे की बांग सुनी और एक पल के लिए कल्पनाओं में खो गया—क्या यह खसक से भोर का पक्षी बांग दे रहा था? बड़ी मुश्किल से वह खड़ा रहा और पास से गुज़रे पहले पुलिसकर्मी को पुकारा, 'यजमान, मेरी एक विनती है, एक विनम्र कैदी की विनती।'
'चलो इसे सुनते हैं।'
मैं इंस्पेक्टर-यजमान से बात करना चाहता हूँ।
निज़ाम अली इंस्पेक्टर के सामने लड़खड़ाते पैरों पर खड़ा हुआ।

'यजमान,' निज़ाम अली ने कहा, 'मैंने यह सब छोड़ दिया।'
इंस्पेक्टर ने कैदी को उत्सुकता भरी नजरों से देखा।
उन्होंने कहा, 'बुद्धि देर से आती है। क्या ऐसा नहीं है?'
'Yes, Yajaman. Such is maya.'
यह तो वाकई एक अलग तरह का राजनीतिक बंदी था। इंस्पेक्टर मुस्कुराया, 'माया?'
'जी हां, यजमान। चीजों का अवास्तविक पहलू। लेकिन माया का अंत हो गया है। कल रात वृद्ध ने मुझे कोठरी में दर्शन दिए।'
'बूढ़ा वाला? कोठरी में?'
'Yes, Yajaman. Sayed Mian Sheikh.'
इंस्पेक्टर ने कांस्टेबल की ओर रुख किया।
'ये मैं क्या सुन रहा हूँ? कोई बिना अनुमति के कोठरी में है...'
कांस्टेबल हैरान था। निज़ाम अली ने तुरंत हस्तक्षेप करते हुए कहा, 'यजमान, यह एक जिन्न है, एक भूत है...'
इंस्पेक्टर ने राहत की सांस ली, कुर्सी पर पीछे झुककर कांस्टेबल को फटकार लगाते हुए कहा, 'तुम लोग कभी नहीं सुधरोगे! क्या तुम्हें इन्हें सिर पर मारना ही है?' फिर निज़ाम अली की ओर मुड़ते हुए, जो स्तब्ध खड़ा था, इंस्पेक्टर ने कहा, 'कुर्सी पर बैठ जाओ। अब क्या तुम हमें तुम्हें फिर से जेल में डालने पर मजबूर करोगे?'
'इंशा अल्लाह, अब मेरी तरफ से कोई परेशानी नहीं होगी। मियां शेख मुझे सही राह दिखाएंगे।'
'कौन? भूत?'
'Yes, Yajaman.'
'अब सुनो, अली। मैं तुम्हें यह बयान पढ़कर सुनाता हूँ। क्या तुम इस पर हस्ताक्षर करोगे?'
'Yes, Yajaman.'
इंस्पेक्टर ने सरकारी स्टेशनरी के ढेर में से एक फटा हुआ पीला कागज निकाला और उस पर भगोड़े के लिए एक दस्तावेज लिखा: मैं, निज़ाम अली, यह प्रतिज्ञा करता/करती हूँ कि मैं हिंसा का त्याग करूँगा/करूँगी और केवल संवैधानिक तरीकों से ही सरकार परिवर्तन के लिए काम करूँगा/करूँगी, और...

निज़ाम अली ने अपना बायां अंगूठा आगे बढ़ाया जिस पर इंस्पेक्टर ने स्याही लगाई। अंगूठे का निशान बन जाने पर निज़ाम अली ने हिचकिचाते हुए कहा, 'एक निवेदन...'
'बिल्कुल,' इंस्पेक्टर ने कहा।
मेरे नाम और अंगूठे के निशान के नीचे...
'जी हां, अली?'
'खाज़ी शब्द जोड़ें।'
'बिल्कुल। लेकिन इसका क्या मतलब है?'
'मुझे कल रात ईश्वर ने नियुक्त किया, मैं अब से उनका खाज़ी हूँ।'
इंस्पेक्टर को ऐसा महसूस हुआ जैसे वह किसी ऐसे व्यक्ति से निपटते समय सहज और उदार महसूस कर रहा हो जो थोड़ा-बहुत पागल हो।
'जैसी तुम्हारी इच्छा, अली,' उसने कहा। 'अब अपनी कोठरी में वापस जाओ और आराम करो। कल या परसों हम आरोप वापस ले लेंगे।' और उसने अपने कांस्टेबल की ओर मुड़कर कहा, 'कुछ हर्बल तेल लाओ और उसे खूब ठंडे पानी से नहलाओ।'
निज़ाम अली ने इंस्पेक्टर पर अपनी सांवली निगाहें डालीं और एक सौम्य मंत्र का जाप किया, 'अल हम्दो लिल्लाहे रब्बिल आलेमीन। अर रहमानिर रहीम। मलिके यौमिद्दीन...'
निज़ाम अली पहाड़ी बकरी की तरह फुर्तीले कदमों से चेताली की चट्टानों पर चल रहे थे। उन्हें वर्जित मधुमक्खी के छत्तों की निकटता का आभास हुआ, उन्होंने उस समाधि के समक्ष सिर झुकाया जहाँ से शेख खासक के जीवित और मृत लोगों की रक्षा के लिए उठे थे। निज़ाम अली चेताली की चोटी पर खड़े होकर ऊपर की ओर निहार रहे थे, उनके हाथ चील के पंखों की तरह फैले हुए थे। हवा बेरोक बह रही थी, और अद्भुत नन्हे-मुन्ने उनके पास से पतली-सी आकाश-नावों में सवार होकर गुजर रहे थे। निज़ाम अली आसमान में छलांग लगा बैठे, जो मानो उनकी पहुँच में था, और अगले ही पल वे हवा और बादलों के बीच से नीचे गिर रहे थे।
कुछ देर बाद, वह नम, गीली मिट्टी से उठा। उसे नहीं पता था कि वह कितनी देर तक वहाँ पड़ा रहा। असहनीय पीड़ा में वह खासक की ओर चलने लगा... उसकी अलौकिक आवाज़ ने खासक को सचेत कर दिया; कुछ बुजुर्गों ने एक दुबले-पतले व्यक्ति को कब्रगाह के दलदल से होते हुए राजा की मस्जिद में गायब होते देखा।

‘दीक्षा!’ बड़े-बुजुर्ग आपस में फुसफुसा रहे थे। गाँव में एक रहस्यमयी शक्ति की मौजूदगी की खबर फैल गई थी, लेकिन यह मुल्ला तक नहीं पहुँची, जो उस रात मस्जिद में लंबी और एकांत प्रार्थना में लीन थे... पाँचवें दिन निज़ाम अली खासक में दाखिल हुए और विशाल बरगद के पेड़ के नीचे खड़े हो गए। यही वह दिन था जब अल्लाह-पिच्चा ने स्कूल को लेकर भयंकर विवाद खड़ा किया था।
‘तुमने मुझे उसके लौटने की सूचना क्यों नहीं दी?’ मुल्ला चिल्लाया। अलियार की चाय की दुकान में मौजूद एकमात्र श्रोता, पोन्थु रावुथर, जो उस समय तक उसके साथ था, ने दुख से अपना सिर हिला दिया।
बाहर, खाज़ी, जो कि खासाक जनजाति का पहला खाज़ी था, श्रद्धालुओं को उपदेश दे रहा था।

स्कूलों

खाज़ी लोगों के बीच जाकर शेख की खुशखबरी का प्रचार करने लगा। मुल्ला ने बच्चों को स्कूल जाने से रोक दिया था, लेकिन अब खाज़ी ने वहाँ की नई शिक्षा की प्रशंसा की। खाज़ी की शक्ति क्या थी? चमत्कारिक संकेतों के सिवा और क्या? शापित तालाब में आधी रात को स्नान, दलदल और मस्जिद में आत्माओं का वशीकरण, कब्रों के बीच बिखरी हुई मूर्तियाँ।
‘खाज़ी का सत्य क्या है?’ परेशान बुजुर्गों ने एक-दूसरे से पूछा।
उन्हें मुल्ला द्वारा निज़ाम अली पर किए गए जादू की याद आ गई। उन्होंने देखा था कि वह जादू विफल हो गया था।
उन्होंने मन ही मन कहा, ‘खाज़ी का सत्य ही शेख का सत्य है।’
‘यदि ऐसा है,’ व्याकुल मन निश्चितता की तलाश में थे, ‘तो क्या मोल्लाक्का असत्य है?’
‘वह सत्य भी है।’
‘ऐसा कैसे है?’
अनेक सत्य मिलकर एक महान सत्य बनाते हैं।
पौधशाला में, रवि मकान मालिक को शांत करने की कोशिश कर रहा था, जो बहुत उत्तेजित होकर अचानक अंदर घुस आया था।
'बौद्ध हमारे खिलाफ हैं,' शिवरामन नायर ने फुसफुसाते हुए कहा।

उन्हें रहने दो।
वे बच्चों को पीछे खींच रहे हैं।
'चिंता मत करो।'
सिवरमन नायर शांत हो गए, लेकिन उनकी सांसें अभी भी फूल रही थीं। फिर, दोबारा सोचते हुए उन्होंने कहा, 'अच्छा ही हुआ, माश। बेहतर है कि वे दूसरी तरफ हों।'
तभी उन्होंने इमली के पेड़ की छाया में एक दुबली-पतली आकृति को सुस्त बैठे हुए देखा।
‘अस्सलाम वालेकुम!’ आगंतुक ने दूर से ही उनका अभिवादन किया।
‘वालेकुम सलाम!’ रवि ने अभिवादन का जवाब दिया।
‘क्या मैं पास आ सकता हूँ?’
'करने की कृपा करे ...'
वह उछलते-कूदते कदमों से आगे बढ़ा, इमली के झरझरे पत्तों के नीचे से एक चित्तीदार आकृति उभरती हुई दिखाई दी।
मैं सैयद मियां शेख का खाजी हूँ।
'मैं जिला बोर्ड का स्कूल मास्टर हूं,' रवि ने कहा, उसे ठीक से समझ नहीं आ रहा था कि क्या कहे।
बालों को बीच से अलग करके कंधों तक कंघी किया गया था, उसके बाल स्त्रीत्वपूर्ण और गहरे रंग के थे, खाज़ी वहां लंबा और अजीब तरह से सुरुचिपूर्ण खड़ा था।
‘मैं आपके लिए सैयद मियां शेख का आशीर्वाद लेकर आया हूँ,’ खाज़ी ने कहा।
‘आपका स्कूल खूब तरक्की करेगा।’ और फिर वह उतनी ही अचानक चला गया जितनी अचानक आया था।
रवि ने कहा, 'मुझे बताओ, सिवरमन नायर, यह सैयद मियां शेख कौन है?'
शिवरामन नायर शर्मिंदा थे; शेख के काज़ी ने ठीक उसी समय स्कूल को बौद्ध धर्म का समर्थन देने का वादा किया जब वे बौद्ध धर्म का मुद्दा उठा रहे थे। सौभाग्य से रवि को इन अंतर्निहित शत्रुताओं की कोई परवाह नहीं थी। वह तो बस उत्सुक थे।
‘डरो मत, माश,’ सिवरमन नायर ने कहा।
मुझे डर नहीं है। लेकिन वह कौन है?
‘वह... वह एक भूत है।’

‘एक भूत!’ रवि हँसा और कुर्सी पर अंगड़ाई ली। उसने सिगरेट जलाई। शिवरामन नायर को यह अपमानजनक व्यवहार पसंद नहीं आया।
‘माश, भूत सचमुच का है,’ मकान मालिक ने कहा, ‘और वह एक मुस्लिम भूत है, एक अपवित्र भूत। लेकिन जैसा कि मैंने कई बार कहा है, अगर हम हिंदू एकजुट रहें तो वह हमें छू भी नहीं सकता। कोझनास्सेरी के मंदिर की देवी इस मुस्लिम आत्मा को भय से शौच करवा सकती हैं।’
उस विजयी संभावना को देखकर शिवरामन नायर ने कविता में स्वर मिला दिया:
‘यह वो गंजे सिर की बात नहीं है जो
भारत का ताज धारण करेगा।
उन्होंने चुपचाप उस पर दोबारा विचार किया, हँसे और बोले, 'माश, ये पंक्तियाँ मुझे मेरी बेटी कल्याणीकुट्टी ने सिखाई थीं। क्या कवि सही नहीं है?'
'बिल्कुल।'
लेकिन घर लौटते समय अकेले ही शिवरामन नायर बार-बार पहाड़ की ओर देखने लगे; एक बादल ने जंगली मधुमक्खी के छत्तों को ढक लिया था... जब वे घर पहुँचे, तो उनकी पत्नी नारायणी बरामदे में कमर पर एक गीले और फटे तौलिए के अलावा कुछ भी नहीं पहने बैठी थीं। वे अपने शरीर पर चंदन का लेप लगा रही थीं। जैसे ही उन्होंने सुगंधित लेप को अपने स्तनों और जांघों पर मलना शुरू किया, शिवरामन नायर एक पल के लिए उन्हें देखते रह गए, उनका मन व्याकुल हो गया; नारायणी इन तीस वर्षों में, जब से वह उनकी पत्नी थीं, बिल्कुल नहीं बदली थीं।
वह गाते-गाते बीच में ही रुक गई और अपने पति की ओर तीखे लहजे में बोली, 'क्या मेरे नायर का उन्माद शांत हो गया है? और पौधशाला को लेकर चल रहा विवाद कैसा चल रहा है?'
शिवरामन नायर ने अनसुना करने का नाटक किया, भगवान का नाम जपा और उसके पास से गुज़रकर घर में चले गए। उन्होंने अपनी बेटी को पुकारा, 'कल्याणिकुट्टी, मेरी बच्ची, क्या खाने के लिए कुछ है?'
एक गलियारे में पायल की झंकार सुनाई दी, चूड़ियों की हल्की खनक सुनाई दी, फिर हाथ चूल्हे और बर्तन पर काम करने लगे।
नारायणी अभी भी बरामदे में थी... यह सिलसिला तीस साल पहले, उनकी शादी के कुछ ही दिनों बाद शुरू हुआ था। नारायणी सुबह की धूप में नंगे बदन होकर अपने पूरे

शरीर पर चंदन का लेप लगाती थी। शिवरामन नायर ने इस पर आपत्ति जताई थी। उसने फिर वही किया। वह अपने स्तनों पर फ़िरोज़ी रंग का झुमका पहनती और धान के खेतों से होते हुए नाले में स्नान करने जाती, और लौटने में उसे काफ़ी समय लगता था।
'तुम इतने समय तक कहाँ थीं?' एक बार शिवरामन नायर ने उनसे पूछा था।
'पौधों का घर।'
'वहाँ तुम्हारा क्या काम है?'
मेरी मां ने मुझे बताया था कि धान की फफूंदी त्वचा के लिए अच्छी होती है।
मुझे ऐसी किसी खोज की जानकारी नहीं है।
'मां को पता है।'
'अपनी माँ को अपनी जानकारी अपने तक ही रखने दो। तुम अब उस घिनौनी झोपड़ी में नहीं जाओगे।'
लेकिन वह बार-बार जाती रही, जब तक कि सिवरमन नायर ने उसका सामना नहीं किया।
'पौधों के घर के इमली वाले आंगन में कौन था?' उसने पूछा।
नारायणी ने चुपचाप और धमकी भरे अंदाज़ में उसकी आँखों में देखा। शिवरामन नायर ने दोहराया, 'कौन था?'
'कुप्पू,' उसने कहा, 'कुप्पू, ताड़ के पेड़ पर चढ़ने वाला।'
वह वहां किसलिए आया था?
उसे अपनी बीड़ी जलाने के लिए आग चाहिए थी।
लेकिन पौधशाला में आग कहाँ मिल सकती है?
साल बीतते गए... शिवरामन नायर को सब कुछ याद आ गया, स्तनों पर जमी फफूंद और ताड़ पर चढ़ने वाली उस स्त्री की अग्नि की खोज। वह कल्याणीकुट्टी के चेहरे को, उसकी आँखों, नाक और होंठों को देखता, कभी भयभीत होकर, कभी उदास और क्षमाशील प्रेम से।
पास के गाँव में एक उच्च-प्राथमिक विद्यालय था, जहाँ टूटी-फूटी अंग्रेज़ी और गणित पढ़ाई जाती थी, लेकिन इससे मुल्ला को कोई फ़िक्र नहीं थी, क्योंकि उन्हें पूरा यकीन था कि जून में विद्यालय खुलने पर बहुत कम मुस्लिम बच्चे दो मील दूर खुले खेतों से होकर विद्यालय तक पैदल जाएँगे। जून बारिश और बिजली का महीना था। यह

विद्यालय केलन का था, जो एक अछूत था, लेकिन अपनी नीची जाति को नहीं भूला था; वह शिवरामन नायर के पास आशीर्वाद लेने आया था।
‘हे अछूत, खूब तरक्की करो!’ सामंती सरदार ने कहा था—यह बहुत समय पहले की बात है और उसका मतलब था हद से ज्यादा तरक्की मत करना। लेकिन केलन ने तरक्की की थी। केलन की पत्नी चमकीली साड़ियों में सज-धज कर आई और खासक के छोटे देवताओं को भेंट चढ़ाई। कल्याणीकुट्टी, अपने सामंती घर में कैद एक दुखी कुंवारी, पुराने झाँकियों से बाहर चमकते रेशम और रंगों को देखती रही। केलन का स्कूल और उसकी बढ़ती हुई संपत्ति शिवरामन नायर को परेशान करने लगी; उसने नीच कुल के लोगों द्वारा दी जाने वाली हर शिक्षा की निंदा की, वह ग्रामीणों से बेतरतीब बातें करता रहा और उससे भी ज्यादा खुद से। वह बीमार था। पालघाट कस्बे के डॉक्टरों ने उसकी बांह पर एक हवा से चलने वाली ट्यूब लगाई, रीडिंग ली और उसे बेहोश कर दिया... जब खासक में नया स्कूल बना, तो शिवरामन नायर को नई ऊर्जा मिली। यह उसकी संपत्ति पर बनना था, और एक बेहतर स्कूल साबित होगा। उसने अपना छोटा सा घर जिला बोर्ड को दे दिया। अब से पौधशाला ही विद्यालय होगी, न कि किसी के मिलने-जुलने का स्थान।
नारायणी ने लगभग छिपाए हुए गुस्से में पूछा, 'आप पौधों को कहाँ रखेंगे?'
‘पौधों की तो ऐसी-तैसी!’ शिवरामन नायर ने जवाब में कहा। पंचायत की उस विनाशकारी बैठक के बाद की रात थी; मुल्ला अपने छोटे से बरामदे में बैठकर अपनी टूटी हुई चप्पल ठीक करने की कोशिश कर रहा था। तिथि बी अपने पति की मेहनत, घिसे हुए चमड़े और रसोई के चाकू को देख रही थी। उसने कहा, ‘शेख हमें नहीं छोड़ेंगे।’ मुल्ला व्यर्थ ही कुरेदता और टाँके लगाता रहा। उसने उसे चप्पल ठीक करने के लिए पैसे दिए; इसके बदले में उसने उसे तराशे हुए कांच के टुकड़े से जड़ी तांबे की अंगूठी खरीद कर दी।
‘आपने चप्पल की मरम्मत क्यों नहीं करवाई?’
उसने अपना हाथ मिट्टी के तेल की बत्ती के छोटे से घेरे में बढ़ाया और अंगूठी वाली उंगली बाहर निकाली। अल्लाह-पिच्चा उसकी ओर मुड़ा, मुस्कुराया और मरम्मत का काम फिर से शुरू कर दिया।
‘ब्रह्मांड के महान राजा,’ उसने कहा, ‘हमारी रक्षा करो!’

वादे पूरे नहीं हुए; कई बच्चे स्कूल में दाखिला लेने लगे, यहाँ तक कि लाल दाढ़ी वाले रूढ़िवादी लोगों के पोते-पोतियाँ भी। स्कूल खुलने में एक दिन और बाकी था। आखिरी नमाज़ खत्म हो चुकी थी; नमाज़ में सिर्फ़ दो बूढ़े लोग थे। मुल्ला काफी देर तक मस्जिद में अकेले बैठे रहे। पुजारी और उनके अनुयायी, और यहाँ तक कि यह पूजास्थल भी कठिन दौर से गुज़र रहे थे; मुल्ला ने अपनी दाढ़ी सहलाई, जो चांदी और भूरे रंग के बालों का एक झुरमुट मात्र थी, जैसा कि वे अपनी मृत्यु के बारे में सोचते समय करते थे। मस्जिद से मुल्ला दूर स्कूल देख सकते थे। रवि के बिस्तर के पास का दीपक तेज़ जल रहा था, स्कूल मास्टर शायद पढ़ रहे थे, जैसा कि विद्वान लोग सोने से पहले पढ़ते हैं। मुल्ला ने उन्हें आमने-सामने नहीं देखा था। गाँव की महिलाओं ने कहा कि वे जवान और सुंदर थे। एक पल के लिए अल्लाह-पिच्चा ने उनसे मिलने, उनसे बात करने का सोचा, लेकिन हिम्मत नहीं कर पाए; आखिर वे एक अनपढ़ पुजारी ही तो थे? स्कूल से मुल्ला की नज़र चेताली की ओर मुड़ी। पहाड़ के उस पार अनछुए रास्ते थे। उन शाश्वत जलस्रोतों पर भारी अदृश्य वर्षा हुई और पानी कीचड़युक्त और उग्र रूप से नीचे बह निकला, जिससे कमजोर तीर्थयात्री पर युग की गाद जम गई।
मुल्ला अपनी छड़ी के सहारे मस्जिद से बाहर निकले। उनका घर स्कूल के पास से होकर गुजरता था। उन्होंने आंगन पार किया और मस्जिद के द्वार पर थोड़ी देर रुके। उन्होंने उस अजनबी के बारे में सोचा जो छोटे-छोटे पौधों वाले घर में था, उनके मन में सहानुभूति और प्रेम का भाव था। हे भोले मुसाफिर, कर्म का कौन सा बंधन तुम्हें यहाँ ले आया है?
फिर पौधशाला में लगा दीपक बुझ गया।

एक समय की बात है

स्कूल का पहला दिन था और रवि ब्लैकबोर्ड के पास खड़ा था। मुल्ला की तरह वह भी सोच रहा था: किस कर्म के बंधन ने मुझे यहाँ लाया है? क्या उद्देश्य है, क्या सुनियोजित योजना है? तभी हवा का एक झोंका आया और उसके पीछे की खिड़की खुल गई। रवि खिड़की के पास गया और बाहर देखने लगा। बच्चे अपनी सीटों से उठकर उसके चारों ओर जमा हो गए ताकि खिड़की से बाहर देख सकें और उस खूबसूरत नज़ारे को निहार सकें जो उनके गाँव ने उनके शिक्षक के लिए बनाया था।

यह खासक का कमल तालाब था, जो नव खिले बैंगनी फूलों से सुशोभित था।
‘अरे,’ रवि ने कहा, ‘कमल की जाली में एक छोटी चिड़िया फंसी हुई है!’
‘सार, जलपक्षी का एक बच्चा!’ बच्चों ने कहा और अपने शिक्षक की ओर देखा। क्या वे भी उनकी तरह उत्साहित थे?
रवि ने पूछा, 'जलपक्षी?' 'तो फिर यह डूबेगा नहीं।'
'अगर यह थक जाए तो शायद ऐसा हो सकता है, सार।'
‘क्या हम इसे बाहर निकाल लें?’ रवि ने कक्षा से पूछा।
एक दर्जन आवाजें एक साथ गूंज उठीं, 'हमें अनुमति दें!'
‘एक मिनट रुको,’ रवि ने कहा, ‘अब दो और पक्षी हैं...’
'इसका अत्था और उम्मा।'
माता-पिता पक्षियों ने चोंच मारकर जालों को तोड़ दिया। थोड़ी देर में चूजा, अपने माता-पिता के साथ दोनों ओर, नदी के किनारे-किनारे इतराते हुए चलने लगा।
वह एक धूप भरा दिन था। हवा से उड़ते छोटे-छोटे बादल इधर-उधर तैर रहे थे, उनकी परछाइयाँ खासक के चरागाहों में चरती गायों की तरह हिल रही थीं। रवि अपनी सीट पर वापस आया और कक्षा को व्यवस्थित होने का आदेश दिया। वह काफी देर तक चुपचाप बैठा रहा, अपने सामने बैठे उन बीस विद्यार्थियों के साथ उस दृश्य की स्मृति साझा करता रहा, जिनके चेहरे जिज्ञासा से भरे थे।
‘माश!’
गेट से माधवन नायर की आवाज आ रही थी।
‘क्या हम पाठों में बाधा डाल सकते हैं?’
रवि ने कहा, 'स्वागत है, यह विद्यालय आपका है।'
माधवन नायर अपने साथ दो बिखरे बालों वाले बच्चों को लेकर आए। वे पिछली रात तक अभिभावकों को अपने बच्चों को स्कूल भेजने के लिए मनाने में व्यस्त थे।
‘क्या आपको बर्बर लोगों से कोई आपत्ति है?’ माधवन नायर ने पूछा।
दोनों लड़के अचंभित खड़े थे, उनके दुबले-पतले शरीर घने बालों और इतने ढीले-ढाले कमीजों में खो गए थे जैसे कि वे सरप्लस हों।
‘तुम्हारे नाम सूची में दो और जुड़ गए,’ माधवन नायर ने कहा। ‘पहाड़ों के टोकरी बुनने वालों के बेटे। उन्होंने भागने की कोशिश की, लेकिन मैंने उन्हें पकड़ लिया और उनसे वादा करवाया कि वे दाखिला लेंगे। अरे, तुम!’

उनमें से एक को नाक बह रही थी और वह नाक से निकले बलगम में सांस लेने की कोशिश कर रहा था।
‘अशुद्ध व्यक्ति, अपनी नाक साफ करो,’ माधवन नायर ने चेतावनी दी।
रवि ने बच्चे को थपथपाया और हौसला बढ़ाते हुए कहा, 'चिंता मत करो। कुआँ उधर है, थोड़ा पानी निकालो और नहा लो।'
वह छोटा सा जंगली जानवर उछलकर चला गया और पलक झपकते ही वापस आ गया।
‘अय्यो!’ माधवन नायर चिल्लाया। ‘यह तो विपत्ति है...’ बच्चे ने पहले अपना चेहरा धोया और फिर नाक साफ की, और अब उसकी कमीज का अगला हिस्सा गंदा हो गया था।
रवि ने कमीज पर लगी गंदगी और बच्चे की प्यारी सी मुस्कान देखी।
‘कमरा!’ दर्जी ने विलाप करते हुए कहा। ‘यह तो बर्बाद हो गया!’
अभी तक धुला न गया वह कपड़ा, कैलेंडरिंग की वजह से चमकदार हो गया था और पानी को सोख नहीं पा रहा था।
‘मेरा समय और पैसा दोनों बर्बाद हो गया,’ दर्जी ने आगे कहा। ‘मैंने ये कमीजें इतनी ढीली बनाई हैं कि बच्चे बड़े होने तक इन्हें पहन सकें।’
‘शाबाश बेटा,’ रवि ने प्यार से कहा, ‘क्या मैं तुम्हारा नाम इस बड़ी किताब में लिख दूं?’
‘माश, इन्हें लिख लो!’ माधवन नायर ने कहा। ‘यह चत्थन है और यह पेराक्कड़न, राम और लक्ष्मण की तरह अविभाज्य। और अगर ये स्कूल आना बंद कर दें, तो मैं इनके शरीर से ये कमीजें फाड़ दूंगा।’
रवि ने रजिस्टर में नाम लिख लिए और दर्जी की ओर मुड़कर कहा, 'आप सभी ने बहुत मदद की है...'
माधवन नायर शरमा गए और तारीफ अनसुनी करने का नाटक किया; वे बेंचों के बीच बने छोटे से गलियारे में चले गए और बच्चों का उत्साहवर्धन करने लगे, जैसे कोई फुटबॉल टीम का करता है। ‘आलम खान!’ उन्होंने पुकारा, ‘कुन्हमीना, मेरी प्यारी!’ उन्होंने उसकी ठुड्डी के नीचे हल्के से हाथ फेरा, ‘और हे भगवान, ये कौन है, खोलूसु...’
कक्षा में सुखद हलचल मच गई। माधवन नायर चाहें तो पूरी कक्षा को अपने हाथ में ले सकते थे, लेकिन उन्होंने एक छोटी सी सलाह देकर बातचीत समाप्त करना उचित समझा, ‘देखो इस मास्टर-एटा को। इन्होंने चौदहवीं कक्षा पास कर ली है। तुम बच्चों को भी इनकी तरह पढ़ाई करनी चाहिए और इंजीनियर बनना चाहिए। बनोगे ना?’

बच्चों ने एक साथ कहा, 'हम करेंगे!'
माधवन नायर चले गए, और रवि फिर से कक्षा में अकेला रह गया; उसने रजिस्टर खोला और चुपचाप नाम पढ़े। फिर उसने उन्हें दोबारा पढ़ा, खलीफाओं और रानियों के नाम, निर्धन राजवंश जो रेगिस्तानी अभयारण्यों से भटककर खासक में फंस गए थे। दिन ढलने लगा, ताड़ के पत्तों वाली हवा चलने लगी। यह गुरु का समय था। रवि ने अपने बाईस बच्चों को देखकर मुस्कुराया, और वे भी मुस्कुराए, खलीफा और रानियाँ, और इस तरह पूरा घर मुस्कानों से भर गया। रवि जानता था कि यह मिथक का समय था। उसने बच्चों से कहा, 'चलो एक कहानी सुनाते हैं।' वे अत्यंत प्रसन्न हुए।
रवि ने पूछा, 'किस तरह की कहानी?'
बच्चे एक साथ चहचहाना शुरू कर दिए, और आगे की पंक्ति में बैठी एक दस वर्षीय बच्ची ने कुछ कहने के लिए हाथ उठाया। मेज के नीचे पैर हिलाते ही उसकी चांदी की पायल बज उठी, और सुरमा से गहरे रंग की उसकी घनी पलकें उसकी चौड़ी निगाहों को घेरे हुए थीं।
‘जी?’ रवि ने कहा।
‘सार, सार...’ उसने कहा, फिर शर्मा गई। ‘बिना मरे एक कहानी, सार!’
रवि हंसते हुए बोला, 'तुम्हारा नाम क्या है, बच्चे?'
'गरीबो को।'
रवि ने उसके भीतर खसक की गाथा सुनी, उसके वीर युगों को, उसकी प्रचंड हवाओं को और बरगद की हल्की हवाओं को। उसमें मृत्यु का कोई नामोनिशान नहीं था, बस चांदी की पायलें और सुरमा से चमकती उसकी आंखें थीं। रवि ने उसकी आंखों में गहराई से देखा; कहानी में मृत्यु का कोई नामोनिशान नहीं था, बस एक धीमी और रहस्यमय यात्रा थी। उसने प्राचीन कथाकार की शैली में कहानी शुरू की।
'एक समय की बात है ...'
रवि के दिन सुचारु और व्यवस्थित रूप से बीत रहे थे। माधवन नायर उसके लिए एक नौकरानी लाए थे जो झाड़ू-पोछा करती और दिनभर के लिए सादा खाना बनाती थी। आबिदा, चुक्करु नामक गोताखोर की पिछली शादी से हुई बेटी थी। उसकी माँ गाँव के एक कुएँ में मृत पाई गई थी। कुछ लोगों का कहना था कि चुक्करु ने उसे डुबो दिया था, जबकि अन्य का मानना था कि यह किसी ईर्ष्यालु प्रेमी का काम था। जब यह घटना घटी तब आबिदा बच्ची थी। शोक के दिनों के बाद, चुक्करु फिर से दूर-दराज के

इलाकों में भटकता रहा और आधी रात को घर लौटा। छोटी आबिदा रोते-रोते बड़ी हुई। उसकी आँखों पर एक नम, अनाथ जैसी चमक थी, मानो उनमें आँसू सूखे ही न हों।
जिन दिनों स्कूल नहीं होता था, उन दिनों अबिदा ज्यादा देर तक रुकती थी और पुराने पौधशाला को जितना हो सके साफ-सुथरा रखती थी।
एक रविवार को रवि ने आबिदा के चेहरे की पीलापन देखा। उसने पूछा, 'आबिदा, तबीयत ठीक नहीं है?'
'मैं ठीक हूँ, सार। मुझे हल्का बुखार है जो कभी-कभी हो जाता है।'
आपको डॉक्टर या वैद्य से मिलना चाहिए।
उसने उदासीनता से उत्तर दिया, 'मुझे लगता है ऐसा ही है।'
एक और रविवार को, काम पर उसे झुकते और डगमगाते हुए देखकर, रवि को एहसास हुआ कि वह कितनी छोटी और कितनी दुबली-पतली थी।
रवि ने उसकी उम्र का अनुमान लगाते हुए पूछा, 'क्या तुम पंद्रह साल की हो या उससे छोटी?'
उसने उदास चेहरे से जवाब देते हुए कहा, 'बीस।'
'अबिदा, क्या तुम पढ़ और लिख सकती हो?'
'नहीं।'
'सुनो, अबिदा...'
'जी हां, सार?'
मैं तुम्हें स्कूल भेजूंगा।
वह घुटनों के बल बैठी फर्श की एक दरार साफ कर रही थी। वह उठी, बाहें कमर पर रखीं और हंस पड़ी।
'Me, Saar?'
हां। आपको पालघाट में नौकरी मिल सकती है, जैसे किसी नर्सिंग होम में।
अब वह हंसी नहीं, बल्कि बचपन के अनछुए आंसुओं से भरी आंखों से उसे देखती रही। उसने कहा, 'मुझे यह गांव नहीं छोड़ना चाहिए। अगर मैं छोड़ देती हूं, तो अत्था की देखभाल करने वाला कोई नहीं होगा।'
'उसकी पत्नी...' रवि ने कहना शुरू किया और चुप हो गया। उदास भाव से आबिदा ने अपना काम फिर से शुरू कर दिया। अत्था की पत्नी सुंदर थी, लेकिन वह अकेलेपन में

जी रहा था, कुओं पर भटकता रहता था, कीचड़ में गिरी हुई चीज़ें निकालता रहता था। उसके सिवा उसका कोई नहीं था, वह बच्ची जिसे उसने अकेलेपन के कुएँ में पाला-पोसा था।

लेकिन उसके अपने लोग थे, एक तरह से कहें तो, दूर के कालिकावु गाँव में उसके चाचा और नानी रहते थे। पहाड़ी पर बना पैतृक घर अब खंडहर हो चुका था, पुरानी ईंटों की कतारें ज़मीन में धंस रही थीं। इसी घर के भीतर मिट्टी और घास-फूस की एक झोपड़ी थी जिसमें नानी और चाचा रहते थे। नानी अंधी थीं और चाचा कुष्ठ रोगी थे। कभी-कभी, साफ आसमान वाली शाम को, नीचे गाँव वाले उन्हें खंडहरों के बीच बैठे हुए देख लेते थे, उनकी सख्त, चपटी हथेलियाँ धूप सेंकने के लिए फैली होती थीं।

रवि अपनी चारपाई पर तकियों के ढेर पर टेक लगाकर बैठा था और खिड़की से बाहर देख रहा था। सूरज डूब रहा था। चरते बादलों का झुंड गायब हो गया था। जल्द ही अंधेरा हो गया, और कल्पना लौट आई, यात्रा की कल्पना। पौधशाला एक ट्रेन के डिब्बे में बदल गई, और वह अकेला और कैद यात्री बन गया। दोनों ओर अंधेरा सन्नाटा छाया हुआ था; वहाँ से क्षणिक संकेत रवि से बात कर रहे थे—एक अकेला जुगनू, एक धीमी गति से जलती लालटेन। पहिए पटरी पर धीमी, भ्रामक धमक के साथ आगे बढ़ रहे थे। तभी उसने दूर से आती हुई एक और पटरी की तेज़ आवाज़ सुनी, किसी और का दुख, जो व्यर्थ ही सांत्वना की तलाश कर रहा था। पटरियाँ एक पल के लिए मिलीं, शोरगुल के साथ, फिर अलग हो गईं। कई रहस्यों से भरी रात में दूर भाग गईं।

असहज पड़ोसी

मानसून की पहली प्रचंड बौछार में खुद को समेट लेने के बाद, वह खासक के ऊपर समाहित होकर, समाधि की अवस्था में पड़ा रहा।

एक शिक्षक वाला यह स्कूल अब तीन महीने पुराना था, और इसमें छात्रों की संख्या अस्थिर रूप से बीस थी। बच्चे चलती-फिरती झोपड़ियों की तरह आते थे, ताड़ के पत्तों से बनी बड़ी-बड़ी छतरियों की छांव में इकट्ठा होते थे, समय की परवाह किए बिना, बारिश की धाराओं में खेलने के लिए रुकते थे; वे स्कूल के द्वार पर ठहरते थे, कुछ अंदर आते थे, जबकि कुछ पानी उछालते और चिल्लाते हुए, बारिश के जीवों का पीछा करते हुए वापस चले जाते थे। रवि असहाय होकर ताड़ के पत्तों से बनी उन छतरियों

को निरक्षरता की ओर लौटते हुए देखता रहा। उनमें से कुछ कभी वापस नहीं आए, लेकिन कुछ अप्रत्याशित रूप से आने वाले बच्चे भी थे जो राजा की टेढ़ी-मेढ़ी वर्णमाला को ब्लैकबोर्ड पर लिखे जाते देखने आते थे। कभी-कभी कोई पहले भागा हुआ बच्चा पुरानी यादों में खोकर वापस लौट आता था।

एक सुबह रवि हाजिरी ले रहा था। जब हैदर हजरत का नाम आया, तो एक अपरिचित आवाज सुनाई दी। रवि ने ऊपर देखा।

‘वो कौन है?’

नवागंतुक खड़ा हो गया।

‘आप हैदर हजरत नहीं हैं।’

नहीं, सार।

'तब?'

‘सार, उसने मुझे अपनी स्लेट और पेंसिल उधार दी थी।’

‘बहुत खूब। आपका नाम?’

लड़का खड़ा रहा और मुस्कुराता रहा लेकिन कुछ नहीं बोला। दूसरे बच्चों ने उसे फुसलाते हुए कहा, 'अरे अनाड़ी, सार को अपना नाम बताओ।'

‘करुवु,’ लड़के ने कहा। यह एक लुप्त हो चुकी बोली का नाम था।

'सुनने में बहुत अच्छा लग रहा है,' रवि ने कहा।

कक्षा में हलचल मच गई। सभी आपस में बात करते हुए रवि को बताने लगे कि यह नाम थोत्तिया जाति के लड़कों को दिया जाता था; थोत्तिया एक प्राचीन योद्धा जाति थी, लेकिन अब वे अपने करतब दिखाने वाले बंदरों के साथ गांवों में घूमकर जीविका कमाते थे।

दस वर्षीय करुवु को यह परिचय कुछ खास पसंद नहीं आया, लेकिन वह बहुत नाराज़ भी नहीं था। वह मुस्कुराता हुआ खड़ा था।

‘अच्छा, करुवु,’ रवि ने कहा, ‘अब जाओ और बाहर जाकर अपनी नाक साफ करो, और वापस आओ।’

‘सार जो कहे वही करो,’ छोटी सोहरा ने उकसाते हुए कहा।

जब करुवु वापस आया, तो रवि ने उसे मेज के पास खड़ा कर दिया।

‘तुम्हें स्कूल पसंद है,’ रवि ने कहा, ‘है ना?’ करुवु मुस्कुराती रही।

रवि ने आगे कहा, 'चूंकि आपको यह नापसंद नहीं है, तो मान लेते हैं कि आपको यह कल और परसों भी पसंद आएगा...'
'वह करेगा, सार!' बच्चों ने एक साथ कहा।
रवि ने प्रवेश रजिस्टर निकाला।
'आपके पिता का नाम?'
'चेंथियावू थोटिया, बंदर प्रशिक्षक।'
'दिलचस्प,' रवि ने कहा, और बातचीत शुरू करने का कोई बेहतर तरीका न सूझने पर उसने पूछा, 'आपके पिताजी के पास कितने बंदर हैं?'
'सोलह।'
'झूठ बोल रहे हो, सार!' कुन्हामिना ने कहा। 'वह शेखी बघार रहा है, सार! उसके पिता के पास तो सिर्फ दो बंदर हैं।'
रवि ने कहा, 'गिनती करते समय गलतियाँ हो जाती हैं।' 'अब
मैं तुम्हारा नाम इस बड़ी किताब में लिखूंगा।
रवि ने लिखा: सी. करुवु, श्री चेंथियावु थोटिया के पुत्र, प्रमुख बंदर-प्रशिक्षक।
इसी बीच, टोकरी बुनने वालों ने स्कूल में कुछ अशुभ दौरे किए थे। अपने आखिरी दौरे में उन्होंने रवि से कहा था कि उसे उनके बच्चों को उस शपथ से मुक्त करना चाहिए जो दर्जी ने दबाव में उनसे ली थी।
रवि हैरान था; बहुत मनाने के बाद ही उन जंगली आगंतुकों ने उसे अपने कबीले के रहस्य में शामिल होने दिया। उनकी भाषा की कोई लिपि नहीं थी, क्योंकि केवल एक लिपिहीन भाषा ही उन्हें जंगल की गहराई में प्रवेश करने में मदद कर सकती थी।
चत्थन और पेराक्कदान ने स्कूल में बेचैनी भरे दिन बिताए, पहाड़ों के देवताओं के प्रति अपनी शपथ के अनुसार खुद को प्रस्तुत किया, लेकिन स्पष्ट भय के कारण अक्षरों से दूर रहे। अंततः, जो होना था वही हुआ। रवि और माधवन नायर असहाय होकर देखते रहे जब लड़कों को उनके अभी तक बिना धुले हुए वस्त्रों में ले जाया गया।
माधवन नायर ने यह अफवाह फैला दी थी कि रवि ने कला स्नातक की उपाधि प्राप्त की है। यह सुनकर मुल्ला ने कहा, 'असंभव!' स्नातक की डिग्री से तो बड़ी और बेहतर नौकरियाँ मिल सकती थीं। इसी बीच अलियार ने एक खोज की। सप्ताहांत में वह पालघाट कस्बे में अपना सामान भरने और कबाड़ वाले से पुराने अखबार खरीदने जाता था। अलियार कहता था, वड़े पैक करने के लिए कागज, हालाँकि कम ही लोग

उस पर विश्वास करते थे, क्योंकि अखबारों में अक्सर कम कपड़ों वाली महिलाओं की तस्वीरें होती थीं। एक बार जब रवि चाय की दुकान के पास से गुजर रहा था, अलियार ने उसे अंदर बुलाया और पूछा, 'मैश्टर, क्या तुम बता सकते हो कि इस अखबार में क्या है?'
रवि अंदर आया और अलियार से कागज लेकर उस पर एक नजर डाली।
'ये महिला जिसने कुछ भी नहीं पहना है, आखिर ये सब क्या है?'
रवि ने अखबार वापस कर दिया, यह एक पुराना जर्मन टैब्लॉइड था।
उन्होंने कहा, 'मैं इसे पढ़ नहीं सकता।'
बातचीत रुक गई।
बाद में, अलियार ने खासक के सबसे शिक्षित युवक अप्पा मुत्थु को बुलवाया, जो केलन के स्कूल में आठवीं कक्षा में फेल हो गया था।
'इसे पढ़ो, हे शैतान के बच्चे!' अलियार ने कहा।
पिन-अप तस्वीर देखकर अप्पा मुत्थु का चेहरा खिल उठा और उन्होंने पूरे आत्मविश्वास के साथ पढ़ा, 'एल... सी... पीईईई...'। वे बड़ी गंभीरता से पढ़ते रहे, मानो कोई पहेली सुलझा रहे हों। श्रोता और जानना चाहते थे, उन्होंने उनसे पूछा कि महिलाएं नग्न अवस्था में कहाँ घूमती हैं। अप्पा मुत्थु ने ध्यान लगाकर पढ़ना शुरू किया।
'ऊऊ... ईईई... अरे, यहाँ कुछ गड़बड़ है, इस O के ऊपर एक उल्टा V है, और इस E पर एक गुच्छा है...'
हमें उस महिला के बारे में बताएं।
ये कैसा स्नातक है, जो वो नहीं पढ़ सकता जो अप्पा मुत्थु पढ़ सकते थे? रवि के डॉक्टर का बेटा होने की कहानी भी झूठ ही होगी। माधवन नायर ने ही उन्हें बताया था कि रवि के पिता एक बड़े बागान में डॉक्टर हैं। 'झूठ!' मुल्ला ने कहा। ये तो सीधी सी बात थी कि ऐसे खानदान का नौजवान किसी गाँव के स्कूल में पढ़ाएगा ही नहीं।
बाहर से एक आवाज़ आई, 'कृपा करके मान लें कि इसमें कुछ सच्चाई हो सकती है।'
सामान रखने वाले स्टैंड पर बैठी गपशप करने वाली चिड़िया, कुप्पू-अच्चन, ये सब सुन रही थी।
'सच?' मुल्ला ने कहा। 'यह तो धोखा है!'
'हो सकता है कि वह किसी निम्न श्रेणी के डॉक्टर का बेटा हो, शायद कोई होमावती हो।'

एक होमावथी, जो कि खासक भाषा में होम्योपैथ के लिए इस्तेमाल होने वाला एक बोलचाल का शब्द है, को तिरस्कार की नजर से देखा जाता था क्योंकि वह सभी बीमारियों के लिए चीनी की गोलियां देता था।
‘यह एक धोखा है,’ मुल्ला ने कहा।
अंधेरा छा गया था। मुल्ला ने अपनी लालटेन पुलिया की दीवार पर रख दी, जहाँ से रास्ता दो भागों में बँटता था। वह वहाँ खड़ा रहा, उसका मन खाली था। माधवन नायर, जो उसी रास्ते से गुजर रहा था, ने उसे थपथपाकर जगाया।
‘अब ये कैसी मूर्खतापूर्ण योजना है?’ उसने पुजारी को ताना मारा।
'कोई नहीं।'
माधवन नायर ने मुल्ला की कमीज पर नजर डाली, जो धागों के टुकड़ों से बनी थी और उम्र के साथ जर्जर हो चुकी थी। उन्हें उस पर दया आई और उन्होंने कहा, 'खेल खेलना बंद करो।'
मुल्ला ने कमजोर आवाज में विरोध किया और हकलाते हुए बोला, 'मैंने... मैंने क्या किया है?'
‘कुछ नहीं,’ दर्जी ने कहा, ‘यह सब केलान कर रहा है। बोर्ड के स्कूल से आप जितने बच्चों को रोकते हैं, केलान आपको रिश्वत देता है। अगर आप काफी संख्या में बच्चों को रोकते हैं, तो हमारा स्कूल बंद हो जाएगा। तब आपको रिश्वत कौन देगा?’
माधवन नायर ने मुल्ला का हाथ छोड़ दिया और खेतों की ओर चल दिए। मुल्ला ने विद्यालय की खिड़की में रोशनी देखी। लगभग हर शाम वह उस रोशनी के पास से गुजरता था। आज भी वह उसी रोशनी के पास से गुजरा। थके हुए स्वर में वह गांव के चौक की ओर मुड़ा...
मैमूना ने अपने बरामदे को एक छोटी सी दुकान में बदल दिया था जहाँ वह किराने का सामान बेचती थी। मुल्ला ने उसे एक लटकते हुए दीपक की रोशनी में बैठे देखा। मन ही मन उसने सोचा, वह किसी फरिश्ते जैसी सुंदर है, और उसने चुपचाप उसे आशीर्वाद दिया... वह आया और दुकान के सामने रखी बेंच पर बैठ गया। मैमूना ने ऊपर नहीं देखा।
‘मैमू,’ उसने पूछा, ‘क्या चुक्करू अभी तक वापस नहीं आया है?’
'नहीं,' उसने संक्षिप्त रूप से उत्तर दिया।
‘क्या आपके कूल्हों का दर्द कुछ कम हुआ है?’

‘हम्म।’
मुल्ला वहीं रुका रहा, बातचीत करने में असमर्थ। उसने कुछ नाजुक पतंगों को उड़ते और लटकते दीपक पर अपने पंख जलाते हुए देखा।
‘मैमू, मेरी बच्ची,’ उसने एक कठिन चुप्पी के बाद कहा, ‘क्या तुम मुझे एक लीटर नारियल का तेल दे सकती हो? मैं तुम्हें जल्द ही भुगतान कर दूंगा।’
'हमारे पास अतिरिक्त तेल नहीं बचा है।'
‘तुम्हारी अम्मा के बाल रूखे हो गए हैं...’
‘चले जाओ, अत्था!’
‘ठीक है,’ मुल्ला ने और भी कमजोर आवाज में कहा, ‘तो मैं आपको परेशान नहीं करूंगा। अपने कूल्हे के दर्द का ध्यान रखें, कोई जड़ी-बूटी की दवा ले लें।’
मुल्ला उठा, उदास मन से गाँव का एक और चक्कर लगाया और स्कूल की ओर वापस चल दिया। रवि ने एक भटकती हुई रोशनी देखी, मानो कोई जादुई लालटेन स्कूल की ओर बढ़ रही हो... मुल्ला ने खांसकर रवि को अपनी उपस्थिति का आगाह किया।
‘अंदर आइए,’ रवि ने कहा। मुल्ला हिचकिचाते हुए अंदर आ गया।
‘कितना सुखद आश्चर्य!’ रवि ने कहा।
अस्सलामु अलैकुम!
'वालेकुम सलाम। खासक के महान मुल्ला अपने मेहमानों की अनदेखी कर रहे हैं।'
मुल्ला ने बड़ी धीमी गति से और काफी मशक्कत के बाद खुद को मोड़कर रवि के आराम कर रहे पलंग के पास फर्श पर पालथी मारकर बैठ गया।
‘चारपाई पर बैठ जाओ, मोल्लाक्का।’
‘मैं यहाँ सहज महसूस कर रहा हूँ, कुट्टी।’
मुल्ला ने मिट्टी का तेल बचाने के लिए लालटेन बुझा दी।
‘कुट्टी, तुम क्या पढ़ रहे हो? क्या यह कोई वेद है?’
‘अरे नहीं! यह तो बस एक कहानी है।’
‘इस पुस्तक को समझने के लिए किस कक्षा का अध्ययन करना होगा?’
रवि हँसते हुए बोला, 'अच्छा...'
क्या यह अंग्रेजी में है?
'हाँ।'

एक क्षण के लिए पुजारी अपने भीतर ही सिमट गया और यादों की एक अंधेरी किताब में कुछ लिखने लगा।
'एक सिगरेट लो, मोल्लाक्का।'
नहीं, कुट्टी। मेरे पास बीड़ी है। सिगरेट मेरे गले को रास नहीं आती। या फिर, चलो, मैं तुम्हारी दी हुई सिगरेट को दोस्ती के तौर पर पी ही लेता हूँ।
मुल्ला ने सिगरेट को अंगूठे और तर्जनी के बीच पकड़ रखा था और उसे तेजी से कश लेकर बुझा रहा था।
मुल्ला ने कहा, 'मैं एक खास मामले पर बात करने आया हूं, और यह आपके हाथ में है।'
अगर मैं किसी भी तरह से आपकी मदद कर सकूं तो मुझे खुशी होगी...
मैंने सुना है कि आप कम वेतन वाले रख-रखाव करने वाले व्यक्ति, एक मसालाजी की तलाश कर रहे हैं।
'ओह, हाँ। मुझे स्कूल में झाड़ू-पोछा करने के लिए एक व्यक्ति चाहिए। यह अबिदा के लिए बहुत ज़्यादा काम है, इसलिए मैंने तय किया कि वह खाना बनाने का काम करेगी। ज़िला बोर्ड पाँच रुपये प्रति माह देगा, जो ज़्यादा नहीं है। क्या आप किसी ऐसे व्यक्ति को जानते हैं जो यह काम कर सके?'
मैं... मैं यह करूँगा।
मुल्ला की आवाज़ मुश्किल से सुनाई दे रही थी, और रवि शर्मिंदा हो गया। इस काम को कुछ हद तक नापसंद किया जाता था। समझ न आने पर रवि ने कहा, 'जैसा आप चाहें, मुल्ला।'
अब मैं चलता हूँ।
मुल्ला उठा। उसने रवि की माचिस की डिब्बी से एक तीली निकाली और अपनी लालटेन जलाई।

पहले पाठ

बरसात थम गई थी, आसमान चमक रहा था, और खासक गांव ओणम, धन्यवादोत्सव के त्योहार के लिए तैयार हो रहा था। बच्चे सूर्योदय के समय फूल इकट्ठा करने के लिए पहाड़ियों पर चले गए। दस दिनों तक वे त्योहार के देवी-देवताओं का स्वागत करने के

लिए अपने आंगनों में फूलों की पंखुड़ियों से रंग-बिरंगी आकृतियाँ बनाते रहे। रवि ने पहाड़ियों पर बच्चों के गीत सुने, और एक पल के लिए उन्हें सौ बार घर लौटने की खुशी का एहसास हुआ। वह पल बीत गया, और एक बार फिर वह भगोड़ा बन गया। भगोड़े का कोई घर नहीं होता, और सराय का कोई त्योहार नहीं।
रवि ने माधवन नायर के साथ अपनी चिंताओं को साझा करने की कोशिश की—ओणम की छुट्टी दो सप्ताह तक चलेगी। क्या बच्चे उस आजादी के बाद नीरस दिनचर्या में वापस लौट आएंगे?
‘अगर मैं उनकी उम्र का होता, तो मैं ऐसा नहीं करता!’ रवि ने कहा।
‘माश, तुमने अपना बचपन कहीं खो दिया है। मुझे उम्मीद है कि बच्चे उसे तुम्हारे लिए ढूंढ निकालेंगे।’
विदा लेते समय माधवन नायर ने कुछ हिचकिचाहट के साथ कहा, 'यदि आप जोखिम उठा सकते हैं तो आपके लिए एक और छात्र है।'
‘क्या यह जोखिम है? आखिर यह कौन है?’
अपराधबोध और पश्चाताप ने माधवन नायर को रवि को यह सुझाव देने के लिए प्रेरित किया। कुछ दिन पहले अप्पू-किली की माँ नीली उसकी दुकान पर उसके द्वारा उसके लिए बनाई जा रही ब्लाउज की अंतिम सिलाई का इंतज़ार कर रही थी। वह वहाँ नग्न अवस्था में बैठी, दर्जी को ब्लाउज के आकार को निहारते हुए देख रही थी।
‘अरे, अरे!’ उसने अचानक कहा। ‘देखो, हे पूज्य नायर...’
चौक के दूसरी ओर बच्चे खेल रहे थे। उनके बीच वह मंदबुद्धि व्यक्ति खड़ा था, जो उनसे लंबा था और भड़कीले कपड़ों में लिपटा हुआ था। माधवन नायर को याद है कि कैसे वह अप्पू-किली की ओर इशारा करते हुए फूट-फूट कर रो पड़ी और बोली, 'मेरे बेटे को देखो!'
अभी कुछ ही दिन पहले माधवन नायर ने कपड़े के टुकड़ों से उनके लिए वह अजीब सा चोगा बनाया था। उन्होंने पुराने बोरे से गांधी जी की आकृति और हंसिया-हथौड़ा काटकर चोगे के दोनों ओर सिल दिए थे।
‘काश तुम माएष्टार को बता पाते...’ नीली सिसकते हुए बोली।
माधवन नायर ने उसकी नंगी छाती पर आंसू गिरते देखे।
‘मैं माश से बात करूँगा, नीली।’
'मेरे अप्पू को सिखाने के लिए नहीं, बल्कि उसे बच्चों के साथ घूमने से रोकने के लिए।'

त्योहारों की छुट्टी के बाद जब स्कूल दोबारा खुला, तो रवि यह देखकर सुखद आश्चर्यचकित रह गया कि स्कूल छुट्टियों के दौरान भी सही सलामत था... माधवन नायर अप्पू-किली के साथ वहाँ पहुँचे। बच्चे उस मंदबुद्धि व्यक्ति के चारों ओर जमा हो गए जो न तो आदमी था और न ही बच्चा। रवि ने उन्हें वापस उनकी सीटों पर बिठाया, इस बात का ध्यान रखते हुए कि मंदबुद्धि व्यक्ति का साथी, ड्रैगनफ्लाई, कहीं खो न जाए। उसने तोते को एक तरफ बुलाया और धीरे से पूछा, 'किली, क्या तुम स्कूल में आना चाहोगे?'

माधवन नायर ने बच्चों को अनुशासित करने के लिए हाथ उठाया और कहा, 'शांत हो जाओ, दुष्टों! तुम मेरे तोते को परेशान कर रहे हो!' और किली से कहा, 'क्या तुमने नहीं सुना कि माश-एट्टा ने तुमसे क्या पूछा? बोलो, हे ताड़ के तोते!'

अप्पू-किली उदासीन भाव से खड़ा था, उसकी निगाहें अपने पैरों की उंगलियों पर टिकी थीं।

'तुम क्यों डर रहे हो?' माधवन नायर ने तर्क दिया। 'क्या यह हमारा अपना स्कूल नहीं है?'

इससे तोते को तसल्ली नहीं मिली। स्कूल के सभी बच्चे उसके साथी थे, वे उसे प्रोत्साहित करने के इशारे कर रहे थे। बेंचों से दबी आवाज़ में पुकार आ रही थी: आओ, किली, इधर आओ, मेरे पास बैठो! जैसे ही माधवन नायर जाने के लिए मुड़े, अप्पू-किली ने ज़ोर से आवाज़ लगाई, 'मुझे भी अपने साथ ले चलो, माधवन-एट्टो!'

'हे पक्षी!' दर्जी ने हताशा से कहा, 'तुमने मुझे शर्मिंदा कर दिया!'

माधवन नायर ने अपने पर्स से चार तांबे के सिक्के निकाले और एक छात्र आलम खान को मुरुक्कू लाने को कहा। उन्होंने किली से कहा कि अगर वह चुपचाप बैठकर पढ़ाई करेगा तो शिक्षक उसे मुरुक्कू दे देंगे। अप्पू-किली खुश हो गया।

रवि ने फुसफुसाते हुए कहा, 'माधवन नायर, मेरी जान खतरे में है। तुम्हारा यह प्रागैतिहासिक पालतू जानवर...'

'डरने की कोई बात नहीं, माश।'

रवि ने उस बालक-पुरुष के लिए छोटी सोहरा के बगल में एक जगह ढूंढ ली।

'सोहरा तुम्हारा ख्याल रखेगी, मेरे प्यारे पंख वाले जीव!' माधवन नायर ने कहा और विदाई के समय यह सलाह दी: 'अच्छी तरह पढ़ाई करो और इंजीनियर बनो।'

'वह करेगा!' कक्षा ने जवाब दिया।

जैसे ही रवि ब्लैकबोर्ड पर एक सवाल हल करने के लिए मुड़ा, सोहरा ने किली को अपने पास बुलाया और उसे एक मीठा बेर दिया।
‘डरो मत, किली, मैं तुम्हारे साथ हूँ।’
ओणम की छुट्टियों के दौरान पौधशाला में मकड़ी के जाले लग गए थे, इसलिए रवि ने शिक्षकों और विद्यार्थियों के लिए स्कूल की सफाई हेतु एक दिन निर्धारित किया। यह मकड़ियों के खिलाफ जंग में बदल गया। आदम ने चाक से फर्श पर एक रेखा खींची और मरी हुई मकड़ियों को उस पर रख दिया। अप्पू-किली ने उनमें से सबसे बड़ी मकड़ी को उठाया और उसमें जान डालने की कोशिश की।
‘सार, सार,’ कुन्हामिना ने पूछा, ‘वास्तव में बड़ी मकड़ियां कितनी बड़ी होती हैं?’
रवि ने मस्जिद के गुंबद की ओर इशारा करते हुए कहा, 'इतना बड़ा।'
‘हे परम कृपालु!’
दीवारों की दरारों में रहने वाली मकड़ियाँ भूरे रंग की थीं और हथेली के आकार की मात्र थीं। परन्तु बाहर, वर्षा के जंगलों में, वे शक्ति और वैभव के साथ जन्म लेती थीं। पुराने राजाओं की तरह वे शिकार में मग्न रहती थीं। और भय से भरी रातों में वे अंधकार के तारों की तरह चमकती थीं... रवि ने बच्चों को मकड़ियों की कहानी सुनाई, कि कैसे संभोग के बाद मादा मकड़ी अपने नर साथी को खा जाती है। बच्चों को विश्वास नहीं हो रहा था कि खासक की शांत घास और फर्न पर ऐसे रक्तपात करने वाले वंशों का शासन था। तभी करुवु खड़ी हुई और बोली कि नर मकड़ी अपने पिछले जन्म के पापों का प्रायश्चित कर रही है। बच्चे समझ गए कि यह कर्म का फल है, और कक्षा में अचानक सन्नाटा छा गया।
कर्म की कहानी समाप्त हो गई, लेकिन रवि ने बच्चों को एक जादुई राह पर डाल दिया था। उन्होंने गणित और पाठ करने से इनकार कर दिया, और अगले दो दिनों तक रवि ने उन्हें केवल पेड़-पौधों और जानवरों की कहानियाँ सुनाईं। इन्हीं रोमांचक कहानियों में से एक के दौरान कुन्हामिना कक्षा में एक झाड़ीनुमा छिपकली ले आई। छिपकली ने भागने की कोई कोशिश नहीं की।
‘क्या तुमने इसे चोट पहुँचाई है?’ रवि ने कुन्हामिना से पूछा।
'नहीं, सार। मैंने इसमें अरंडी का रस मिला दिया है।'
छिपकली ने रवि की मेज पर कुछ लड़खड़ाते कदम बढ़ाए, फिर हार मानकर चारों ओर तिरस्कार भरी निगाहों से देखने लगी। कुन्हामिना ने सोचा था कि रवि इस शिकार

से खुश होगा, लेकिन उसकी नाराज़गी देखकर वह जम सी गई।
‘क्या यह मर जाएगा?’ रवि ने कुन्हमीना से पूछा। उसने कोई जवाब नहीं दिया, लेकिन बाकी कक्षा ने बोलना शुरू कर दिया। माधवी ने कहा कि अरंडी का रस खासक में बनने वाली शराब जैसा होता है, यह तभी जानलेवा होता है जब इसका अधिक सेवन कर लिया जाए। आदम ने कहा कि काठी की छिपकलियों का इस्तेमाल जादू-टोने में किया जाता है, वह जादूगर द्वारा बुलाए गए शनिदेवों के विचार से भयभीत हो गया। करुवु ने कहा कि खासक का कोई भी बच्चा काठी की छिपकली से दोस्ती नहीं करता, क्योंकि यह बच्चों का खून चूसती है, दूर से हवा के ज़रिए खून चूसती है। इसका पता तभी चलता है जब कोई छिपकली का सिर अचानक लाल होते हुए देखता है, जो पिशाच का संकेत होता है।
झाड़ीनुमा छिपकली के बारे में और भी बहुत कुछ था—ज्योतिषियों द्वारा भगाई गई बुरी आत्माएँ झाड़ीनुमा छिपकली पर सवार होकर निर्वासन में चली गईं। उन्होंने इसके बारे में और कुछ नहीं बताया क्योंकि यह खासक का रहस्य था।
रवि और बच्चे कहानियों में इतने मग्न थे कि किसी ने भी कुन्हामिना के रोने पर ध्यान नहीं दिया।
रवि ने कहा, 'कुन्हमिना, मेरा इरादा तुम्हें चोट पहुंचाने का नहीं था।'
इससे उसका रोना और भी बढ़ गया। आँसुओं से सुरमा उसके गालों पर जगह-जगह बह रहा था, और जब वह अपनी मेज के नीचे उदास होकर पैर हिला रही थी, तो उसकी चांदी की पायल बज उठी। इसी बीच छिपकली संभली, और सबको आखिरी बार देखकर, कक्षा से निकलकर झाड़ियों की ओर चली गई। कुन्हामिना मुस्कुराई।
उस दिन रवि ने बच्चों को छिपकलियों की कहानी सुनाई। मनुष्य के धरती पर अधिकार करने से पहले के समय में, छिपकलियों का ही राज था। एक चमत्कारिक किताब खुली, बच्चों ने उसके पन्ने उठते, पलटते और फड़फड़ाते देखे। उसमें से विशालकाय सरीसृप निकले जो शिकार की हल्की गंध का पीछा करते हुए गहरी घाटियों में धीरे-धीरे चल रहे थे, और टेरोडैक्टाइल अपने घोंसलों वाली चट्टानों से चीखते हुए ऊपर उठे। दोपहर के भोजन के लिए कहानी अनिच्छा से रोकी गई; जल्दी-जल्दी निवाला खाने के बाद बच्चे दौड़कर स्कूल वापस गए और अपने शिक्षक के चारों ओर जमा हो गए। पन्ने फिर उठे और गिरे... छिपकलियों से बहुत पहले, डायनासोर से भी

पहले, दो बीजाणु एक अविश्वसनीय यात्रा पर निकले। वे सूर्यास्त की शांत रोशनी में नहाए एक घाटी में पहुँचे।
छोटी बीजाणु ने बड़ी बीजाणु से कहा, "मेरी बड़ी बहन, चलो देखते हैं कि आगे क्या है।"
यह घाटी हरी-भरी है, बड़े बीजाणु ने उत्तर दिया, मैं इससे आगे नहीं जाऊंगा।
नन्हे बीजाणु ने कहा, "मैं यात्रा करना चाहती हूँ, मैं खोज करना चाहती हूँ।" उसने अपने सामने के रास्ते को आश्चर्य से देखा।
क्या तुम अपनी बहन को भूल जाओगे? बड़े बीजाणु ने पूछा।
कभी नहीं, उस नन्हे बीजाणु ने कहा।
तुम देख पाओगी, नन्ही बच्ची, क्योंकि यह कर्म की प्रेमहीन कहानी है; इसमें केवल बिछड़ना और दुख ही है।
छोटा बीजाणु आगे बढ़ गया। बड़ा बीजाणु घाटी में ही रुक गया। उसकी जड़ें नम मिट्टी में समा गईं और मृत्यु और स्मृति के पोषक तत्वों की तलाश करने लगीं। वह धरती पर अंकुरित हुई, हरी-भरी और संतुष्ट... चांदी की पायल पहने और सुरमा से सजी आँखों वाली एक लड़की चेताली की घाटी में फूल तोड़ने आई। चंपक का पेड़ अकेला खड़ा था—खिलता हुआ, शांत। फूल तोड़ने वाली ने हाथ बढ़ाया और फूल तोड़ने के लिए एक नरम टहनी को नीचे दबाया। जैसे ही टहनी टूटी, चंपक ने कहा, मेरी छोटी बहन, तुम मुझे भूल गई हो!
बच्चे घर जा चुके थे। रवि ने अपनी आँखें बंद कर लीं, कुर्सी पर पीछे झुक गया और उस सुखद उदासी में डूब गया। उसके चारों ओर अगरबत्ती की खुशबू और घंटियों व झांझों की आवाज़ गूंज रही थी।
भगवान के अवतारों का गुणगान करने वाला श्लोक - वेदन उद्धारते जगन्निवहते - मछली से लेकर सूअर, मनुष्य और देवता तक के उनके विकसित अवतारों की महिमा का बखान करते हुए, हर जगह गूंज उठा।
वह क्षण बीत गया। रवि, जो अब जाग चुका था, बाहर देखने लगा। चेताली की घाटी पर सूरज डूब रहा था। सूर्यास्त ने पौधशाला को एक कामुक बुखार की गर्माहट से भर दिया।

भीतर का कुआँ

चुक्कु ने मैमूना से विवाह तब किया जब उनकी उम्र पचास वर्ष थी। कुप्पू-अच्चन ने तीखे व्यंग्य में कहा, "वह तो सिर्फ साठ वर्ष के दिखते थे..."
चुक्कु का पेशा अनोखा था। वह कुओं में गोता लगाकर गिरी हुई चीज़ें निकालता था। कभी कोई पुली, कभी कोई टूटी-फूटी बाल्टी, कभी तांबे या कांसे का घड़ा, कभी सोने या चांदी का कोई आभूषण। अक्सर निकालने के लिए कुछ नहीं होता था, फिर भी वह एक कुएँ से दूसरे कुएँ और एक गाँव से दूसरे गाँव, सुनसान रास्तों और दूरियों पर भटकता रहता था। ये वो समय था जब पाइप से पानी नहीं आता था, और लगभग हर घर में कुआँ होता था—जितना समृद्ध परिवार होता था, कुआँ उतना ही गहरा होता था। चुक्कु पालघाट के ग्रामीण इलाकों में घूमता रहता था, और अब तक वह अपने इस काम की आवाज़ से परिचित हो चुका था—एक लंबी, उदास गूंज जिसमें बर्तन कुओं की कीचड़ में खोए हुए लगते थे। लोग उसे गोता लगाने वाला मुर्गा कहते थे।
खतरनाक गोताखोरी के उन वर्षों में, चुक्करु का नाम क्षीण हो गया, वह एक गोताखोर पक्षी बन गया; कुप्पू-अच्चन ने कहा कि अगर कोई उसके रास्ते में मुट्ठी भर चावल फेंक दे तो वह पक्षी उसे चोंच मारकर खा जाएगा।
जब शादी तय हुई तो गांव वालों ने कहा कि यह कभी होगी ही नहीं और अगर हुई भी तो दुल्हन ज्यादा दिन नहीं रुकेगी। लेकिन ये सारी उम्मीदें झूठी साबित हुईं। मैमूना ने निडर होकर शादी कर ली। हनीमून नहीं हुआ; अगले दिन सुबह होने से पहले ही वह खासक से निकल गया और आधी रात के बाद घर लौटा, उसके शरीर पर जोंक और काई लगी हुई थी। मैमूना ने उसकी खाल साफ की और उसे अपनी नाभि पर लिटाकर सुला दिया। वह सुबह उठी और अपने दिन की शुरुआत रोज़ की तरह करने लगी और चौक पर टहलते हुए, बालों से थट्टन (एक तरह का कपड़ा) हटाती हुई, आस्तीनें बड़े ही शान से ऊपर चढ़ाए हुए चल रही थी।
और वह अपनी दुकान में गपशप और मनोरंजन के लिए बैठी रहती थी, लाभ कमाने के लिए नहीं; वह वहाँ अपनी सहेली और विश्वासपात्र, गुड़ बेचने वाली थांका के साथ घंटों बिताती थी... आबिदा ने मैमूना को दूर से देखते हुए अपना बचपन बिताया था, और अपनी उम्र की अधिकांश लड़कियों की तरह, उसकी सुंदरता के प्रति एक अजीब से आकर्षण से ग्रस्त थी। लेकिन जब मैमूना उनके घर में रहने आई, तो आबिदा को पहले से कहीं अधिक अकेलापन महसूस हुआ। उसके लिए नई आने वाली को सौतेली

माँ मानना मुश्किल था; मैमूना उससे सिर्फ सात साल बड़ी थी। आबिदा उसे 'बड़ी बहन' भी नहीं कह सकती थी।
अबिदा हमेशा अकेली रही थी। यह शर्मीली और सहमी हुई लड़की, जिसके गालों की पीली रंगत में उदासी छिपी थी, बचपन में उसे कोई साथी नहीं मिला और जवानी में भी उसे कोई युवक नहीं मिला। जब हवा सूरज की गर्मी को बहा ले जाती, तो वह धान के खेतों के पार बने बड़े टीले पर घूमती या कमल के तालाब के किनारे बैठकर जलपक्षियों को देखती रहती। अक्सर थित्थी बी उससे पूछतीं, 'क्या तुम्हारा कोई दोस्त नहीं है, मेरी बच्ची?' और अबिदा जवाब देती, 'नहीं, उम्मा।' और थित्थी बी उसे आशीर्वाद देतीं, 'पवित्र शेख तुम्हारा साथी बनें!'
लेकिन प्यार करने, सेवा करने और देखभाल करने के लिए कोई तो था—उसके अत्था। वह आधी रात के आसपास दलिया गर्म करती और अत्था का इंतज़ार करती। अब दलिया मैमूना गर्म करती थी, और कई रातों को अत्था अपनी बेटी को देखे बिना ही सो जाते थे। फिर भी आबिदा अपने गलियारे में तब तक जागती रहती जब तक मैमूना की मधुर गुनगुनाहट उसके अत्था के रुक-रुक कर आने वाले खर्राटों में तब्दील नहीं हो जाती।
अबिदा कभी-कभी संकोचपूर्ण और विनम्र लहजे में बातचीत शुरू करने की कोशिश करती, 'मुझे एक कहानी सुनाओ।'
‘तुम्हारी मां के प्रेमी की कहानी,’ मैमूना पूछती, ‘वही जिसने उसकी हत्या की?’
ऐसे ही मौकों पर आबिदा चुपके से किसी का ध्यान खींचे बिना घर से निकल जाती थी, मानो कोई आत्मा हो। एक बार वह भाग निकली और अरसु वृक्षों के झुरमुट में चली गई। वह एक वृक्ष के नीचे बैठ गई और बोली, ‘हे पवित्र शेख, क्या आप मेरे साथ हैं?’
अचानक नदी का पानी और भी गहरा नीला हो गया और फूलों की वर्षा होने लगी।
‘यह रहमान,’ उसने कहा। उसका अंतर्मन ध्यान से सुन रहा था। उस परमानंद में वह फिर से बच्ची बन गई। उसने हवा में घोड़े की सरपट चाल सुनी।
‘घोड़े की आत्मा, घोड़े की आत्मा,’ उसने कहा, ‘क्या तुम मुझे आकाश में सैर कराओगे?’ वह घोड़े की आत्मा पर सवार हो गई, और वे दोनों हवा में, जंगलों के पार और समुद्रों के ऊपर से दौड़ पड़े। फिर उसने अपनी माँ को देखा, जो एक बार फिर जवान और तेजस्वी लग रही थी, लेकिन अबिदा के स्पर्श से वह मुरझाने और सड़ने

लगी। अबिदा ने खुद को पहाड़ी पर बने उस वीरान घर में पाया। बाहर, उसके चाचा एक चट्टान पर बैठे थे और डूबते सूरज की गर्मी का आनंद ले रहे थे।
'घोड़े की आत्मा, घोड़े की आत्मा!' अबिदा ने पुकारा। उसे घोड़ों के खुरों की आवाज़ सुनाई नहीं दे रही थी, वह पेड़ के नीचे अकेली थी। अरासुस के उपवन में पूरब से तेज़ हवा बह रही थी।
'मैमूना,' अल्लाह-पिचा ने एक बार अपनी बेटी से तर्क करते हुए कहा, 'मुझे नहीं लगता कि आबिदा को नौकरानी के रूप में भेजना बुद्धिमानी है। वह अब लड़की नहीं रही।'
'उसे कौन भेज रहा है?' मैमूना ने ताना मारा, 'उसे इधर-उधर इश्कबाजी करना पसंद है।'
अगले दिन अबिदा स्कूल नहीं गई। जैसे-जैसे दिन गर्म होता गया, गुड़ बेचने वाली थांका आराम करने और गपशप करने के लिए आ गई। अबिदा उनकी फुसफुसाहट और हंसी सुन सकती थी।
'गलियारे में कौन है?' मैमूना ने पीछे झुकते हुए खिड़की की ओर देखते हुए पूछा।
'यह मैं हूं,' अबिदा ने जवाब दिया।
'क्या तुम स्कूल में झाड़ू लगाने नहीं गए थे?'
अबिदा की ओर से कोई जवाब नहीं आया।
'क्या तुम नहीं जा रही हो?' अबिदा चुप रही।
'तुम्हें चले जाना चाहिए,' मैमूना ने कहा। 'क्या तुम्हें उम्मीद है कि गोता लगाने वाला पक्षी तुम्हारा खाना लेकर घर वापस उड़ जाएगा?'
रविवार का दिन था। चुपके से आबिदा बाहर निकली और पौधशाला की ओर जाने वाले रास्ते पर चल पड़ी। उसने रवि को झाड़ू हाथ में लिए सफाई करते देखा। झट से आबिदा ने झाड़ू छीन ली।
'तुम नहीं, सार!' उसने कहा।
'सच है,' रवि हँसते हुए बोला, 'मैं तो इतनी अच्छी तरह से झाड़ू भी नहीं लगा सकता...'
'या अल्लाह!' उसने कहा। उसी दिन, अनजाने में ही, उसने उसे अपनी कहानी सुनाई।
'तुम अकेली नहीं हो, अबिदा,' रवि ने कहा, 'मैं भी एक अनाथ बच्चा हूँ।'
'संसार के स्वामी!'
अबिदा झाड़ू लगाने के लिए झुकी। रवि पास ही खड़ा था। 'अबिदा,' उसने उससे कहा।
'जी हां, सार?'

आप ठीक नहीं लग रहे हैं।
उसने स्नेहपूर्वक अपना हाथ उसके माथे पर रखा।
'तुम्हें बुखार है, मेरी प्यारी बच्ची।'
उसने कृतज्ञता से मुस्कुराते हुए कहा, 'अरे हाँ, यह आता-जाता रहता है।'
घर जाओ और लेट जाओ।
घर जाते समय वह बेकाबू होकर रो रही थी। अचानक वह रुक गई; इस हालत में घर जाना ठीक नहीं था। उसने अपना चेहरा धोने और पैर ठंडे करने के लिए नदी की ओर रुख किया। अप्पू-किली वहीं था, बड़ी हरी ड्रैगनफ्लाई का पीछा कर रहा था। उसे देखकर वह बहुत खुश हुआ।
‘मुझसे मिलने आए हो?’
‘बेशक, मैं यहाँ और किसलिए आऊँगा, मेरे तोते?’
अजीब बात यह है कि अबिदा को एहसास हुआ कि उसने सच कहा था और उसे सांत्वना का एक रहस्यमय स्रोत मिल गया था।
इसी बीच अप्पू-किली ने एक ड्रैगनफ्लाई पकड़ी और अपनी फुर्तीली उंगलियों से उसकी पूंछ में फंदा डाल दिया। आबिदा ने ड्रैगनफ्लाई को देखा, उसकी हज़ारों क्रिस्टल जैसी आँखों में। आँखें मृतकों की गाथाओं से धुंधली चमक रही थीं। अगर ड्रैगनफ्लाई मृतकों की यादें थीं, जैसा कि खासक में माना जाता था, तो यह किसकी याद थी? शायद यह उसकी माँ के पाप, पश्चाताप और डूबने की पीड़ादायक छवियाँ थीं। क्रिस्टल जैसी आँखें उस पर टिक गईं।
‘मेरे तोते,’ अबिदा ने कहा, ‘तुम उस बूढ़े को अपने फंदे में क्यों जकड़े हुए हो? उसे अपने रास्ते जाने दो।’
अप्पू-किली रोने लगी। उसने जल्दी से कहा, 'मुझे माफ कर दो। मेरा ऐसा कोई इरादा नहीं था।'
आंसू रुक गए, उस मूर्ख के चेहरे पर एक बड़ी और आनंदमयी मुस्कान फैल गई।
'क्या तुम मुझसे उसे छोड़ने के लिए कहोगे?'
'अरे नहीं!'
अप्पू-किली ने कपड़े का एक टुकड़ा खोला और उसे मैमूना के सामने रखते हुए कहा, 'इसे ले लो।' चंपा के फूल। उसने अपना थट्टन (एक प्रकार का कपड़ा) मोड़ा और

उसमें फूल समेट लिए। वह अपने दोनों कानों में एक-एक चंपा का फूल लिए घर चली गई और फूलों से भरा थट्टन मैमूना के सामने रख दिया।
थांका अभी भी वहीं थी, फुसफुसाती और खिलखिलाती हुई। मैमूना ने फूल लिए, उन्हें अपनी बालियों में सजाया और थांका को मुट्ठी भर फूल दे दिए। अबिदा अपने अंधेरे गलियारे में चली गई। मैमूना ने अबिदा के कान में कहा, 'फूलों को सजाकर, हड्डियों के ढेर जैसी!'
अबिदा ने उन शब्दों का ज़हर सहा। उसने प्रार्थना करके उसे शांत करने की कोशिश की। उसने झाड़ू उठाई और गलियारे को साफ करने की कोशिश की, लेकिन सफल नहीं हुई। उसने झाड़ू को दीवार के सहारे टिका दिया। वहाँ खट्टी दलिया का एक कटोरा रखा था, उसने एक चम्मच लिया, लेकिन उसका स्वाद खराब था और उसने आगे नहीं खाया।
अबिदा फिर बाहर चली गई। मैमूना ने उससे नहीं पूछा कि वह कहाँ जा रही है।
अबिदा अरासुस के उपवन में लौट गई। वह स्थान सुनसान था। उपवन के जादू में वह एक ड्रैगनफ्लाई बन गई; वह किसकी स्मृति थी? शायद अपने पिछले जन्म के दुखों की स्मृति। उपवन से वह नाले की ओर चली, उसने अपने कानों से दो चंपक तोड़े और उनकी पंखुड़ियों को छोटे-छोटे टुकड़ों में तोड़कर धीरे से पानी में डाल दिया।
अप्पू-किली अभी भी चीड़ के पेड़ों के बीच था। उसने अबिदा को फूलों की पंखुड़ियाँ पानी में गिराते देखा और दुखी हो गया।
‘अच्छी,’ उसने कहा, ‘तुम फोवर्स के साथ क्या कर रही हो?’
‘ओह मेरे तोते, मैं खेल रहा था।’
वह पास आकर उसके करीब खड़ा हो गया। उसने प्यार से कहा, 'तुम बहुत खूबसूरत हो। मैं तुमसे शादी करता हूँ।'
'बिल्कुल, मेरे तोते।'
‘आपको और अधिक प्यार मिलेगा।’
अप्पू-किली वापस चीड़ के पेड़ों के पास चला गया। फिर से, आबिदा नाले के किनारे अकेली रह गई। वह नीले फूलों वाली कृष्णा कांटिस घास की मुलायम कालीन पर बैठ गई। नाला कई चीजों के अवशेषों को अपने साथ बहाता चला गया।
गांव वालों का कहना था कि मैमूना और भी खूबसूरत होती जा रही थी। वह हमेशा की तरह खासक में घूमती थी, और थांका के साथ घंटों अपनी दुकान में बैठी रहती थी।

एक दिन आबिदा आकर उनके सामने खड़ी हो गई। उसे अब डर नहीं लग रहा था। उसने कहा, 'अत्था को घर आने दो। मैं उसे बता दूंगी।'
कुछ क्षणों के लिए मैमूना का चेहरा पीला पड़ गया, लेकिन जल्द ही वह पहले जैसी सामान्य हो गई।
मुंह फुलाकर उसने कहा, 'तुम क्या बताने वाले हो?'
'खाज़ी यहाँ आता है...'
थांका भड़क उठा और बोला, 'अहा! क्या खाज़ी यहाँ बुरी आत्माओं को भगाने नहीं आ सकते?'
'मैं बताता हूं ...'
'देखते हैं तुम यह कर पाती हो या नहीं, छोटी बदचलन!' थांका ने भयंकर क्रोध में कहा। फिर मैमूना से बोली, 'इसे शुरू में ही रोक दो...'
'थैंका, कुछ नहीं है...' मैमूना ने कहा।
आधी रात को खसक चीखों और पीछा करने की आवाज़ों से जाग गया; आबिदा मुल्ला के घर की ओर भाग रही थी, उसके माथे पर लगे घाव से खून बह रहा था, और चुक्करू लकड़ी का लट्ठा लहराते हुए उसका पीछा कर रहा था।
थित्थी बी ने झट से लड़की को अंदर लिया और दरवाजा बंद कर दिया।
'तुम्हें क्या हो गया है, बूढ़े पापी?' थित्थी बी ने उसका रास्ता रोकते हुए कहा।
गोता लगाने वाला पक्षी क्रोध और थकावट से हांफ रहा था।
'दरवाजा खोलो, थित्थी बी-अक्का,' वह हांफते हुए बोला, 'उसे बाहर लाओ!'
चुक्करू गुस्से से आग बबूला होकर आंगन में खड़ा था।
अब मुल्ला आंगन में उतरा, अपनी चौड़ी कैनवास की बेल्ट में लगी म्यान से चाकू निकाला और उसे ऊपर उठाया।
'इसे लो,' मुल्ला ने कहा, 'और इसे भी,' उसने चाकू से अपने सिर को छूते हुए कहा, 'यह भूरा हो गया है, इसे काट दो, और फिर जो चाहो कर लो।'
डाइविंग फाउल ने लकड़ी का लट्ठा फेंक दिया और उदास होकर घर की ओर चल दिया। मुल्ला बंद दरवाजे के पास गया और बोला, 'अबिदा, मेरी बच्ची, वापस मत जाओ, यहीं सो जाओ।'
अगली सुबह हूर फिर से चलने लगी, उसकी बालियों में ताजे गुलाब थे... अबिदा पूरे दिन सोती रही और सूर्यास्त के समय उठी।

‘उम्मा,’ अबिदा ने कहा, ‘मुझे नदी तक जाने दो। डुबकी लगाने के बाद मुझे अच्छा लगेगा।’
ढलता सूरज लाल रंग में बदल रहा था। अबिदा को उस धारा में दबे हुए कई अवशेष याद आए, उसे पानी का झाग और भंवर याद आया जो उन्हें बहा ले जा रहा था। उसने धारा पार की और पहाड़ी की ओर चलना शुरू किया। खासक से बहुत दूर, उसने ट्रेन को पहाड़ के दर्रे की ओर ऐसे दौड़ते देखा जैसे माथे पर जलता हुआ रत्न लिए कोई सांप हो। अब काले ताड़ के पेड़ आने वाली रात में खो गए थे। कलिकावु गांव बहुत दूर था।
खासक से कई मील दूर, उस लाल और गहरे होते गोधूलि में, गोताखोर पक्षी एक कुएँ के चारों ओर की दीवार पर बैठा था। कुआँ प्राचीन था, जो चारों ओर से पुराने हवेली के चार हिस्सों से घिरा हुआ था। गोताखोर पक्षी वहाँ बैठा रहा और डुबकी लगाने के बारे में सोचने लगा। गहराई में पानी था, अंधेरे में चमकता हुआ, मानो किसी ज्योतिषी का क्रिस्टल हो। एक गीत था जो उसने वर्षों पहले रचा था, माँ-बाप विहीन अबिदा के लिए एक लोरी। जैसे ही उसने नीचे की चमकती लहरों का अनुमान लगाया, वह गीत उसे याद आ गया। अपने ठिकाने से, चुक्कु ने उसे अपनी जंग लगी और बेसुरी आवाज़ में गाया:
‘ओह मेरी पुरानी मछली
उस मोटे बूढ़े सिर के साथ!
मेरी रोती हुई बेटी को ले आओ
एक बड़ा चमकता हुआ मोती।
वह कुएँ में कूदा, और फिर कुएँ के भीतर स्थित दूसरे कुएँ में। पानी कई क्रिस्टल के दरवाजों और रेशमी पर्दों जैसा था। चुक्कु क्रिस्टल और रेशम के बीच से रास्ता बनाते हुए उस रहस्य की ओर बढ़ा जिसने उसे जीवन भर आकर्षित किया था। जैसे-जैसे चुक्कु आगे बढ़ता गया, क्रिस्टल का आखिरी दरवाजा भी उसके पीछे बंद हो गया।

बाघ

खाज़ी चुक्करू की कब्र पर खड़ा हुआ और उसके गीले आवरण पर पैर पटका; वह सुनसान कब्रिस्तान में खड़ा रहा और दोपहर की गुप्त आवाज़ों को सुनता रहा। फिर

वह मुड़ा और पहाड़ी की चोटी से होते हुए उस झोपड़ी की ओर चल पड़ा जो चूना पत्थर और सूखी घास के एक टुकड़े पर बनी थी। वह द्वार पर रुका और पुकारा, 'कोई अंदर है?'
यह वह झोपड़ी थी जिसमें नीली अपनी चार बहनों और उनके पतियों के साथ रहती थी। पुरुष पेड़ काटने का काम करते थे और अक्सर कई दिनों तक घर से बाहर रहते थे। पत्नियां खासक के खेतों में काम करती थीं।
नीली घर की देखभाल के लिए वहीं रुक गई, जबकि घर का एकमात्र दूसरा सदस्य, अप्पू-किली, या तो स्कूल में था या फिर अपने मनमौजी स्वभाव के कारण इधर-उधर भटकता रहता था।
नीली ने पुकारने वाले की ओर झाँका। खाज़ी ने हाथ उठाया और दरवेश के स्वर में बोला, 'मैं शेख का आशीर्वाद लेकर आया हूँ!'
नीली ने कुछ बुदबुदाते हुए स्वागत किया, जो फुसफुसाहट भरी आवाज़ों में खो गया। खाज़ी अंदर आया और उस चटाई पर बैठ गया जो नीली ने उसके लिए ज़मीन पर बिछाई थी।
‘आपका बेटा?’ खाज़ी ने थोड़ी घबराहट के साथ पूछा।
'स्कूल में, हे खाज़ी। पढ़ना!'
शुभ समाचार!
‘मेरा बेटा...’ वह सिसकते हुए बोली, क्योंकि उसकी स्कूली शिक्षा का भ्रम कठोर वास्तविकता में तब्दील हो गया था।
‘तुम्हारा बेटा प्रेतबाधित है। उसके भीतर बड़े-बड़े राक्षस, पूथम निवास करते हैं।’
‘सचमुच, हे खाज़ी?’
और तुम भी प्रेतबाधित हो।
नीली हताश होकर दीवार से टिक गई।
खाज़ी ने कहा, 'डरो मत, मैं उन्हें जादू से बाहर निकाल लाऊंगा और हमेशा के लिए भगा दूंगा!'
बीस साल पहले इसी एकांत झोपड़ी में अप्पू-किली का जन्म हुआ था, जो पाँच माताओं की संतान था। नाची, कोची, पेची, काली और नीली बहनें थीं। पहली चार बहनों की शादी हो चुकी थी, लेकिन उनकी कोई संतान नहीं थी। नीली, जिसका कोई पति नहीं था, ने सोलह वर्ष की आयु में बच्चे को जन्म दिया। तीनों बड़े देवर उसे घर से निकालना

चाहते थे, लेकिन काली के पति कुट्टप्पू ने कहा कि माँ और बच्चा यहीं रहेंगे, और चूंकि वह बहुत हिंसक स्वभाव का था, इसलिए बाकी सब मान गए। माँ और बच्चा वहीं रह गए। बच्चा कुट्टप्पू से बहुत मिलता-जुलता था, जिसके बारे में काली और नीली ने कहा कि शायद यह उनके द्वारा दिए गए नाम के कारण था—अप्पू, कुट्टप्पू का आधा हिस्सा था। जल्द ही चारों निःसंतान महिलाओं ने अपनी झिझक को दूर किया और नन्हे अप्पू के इर्द-गिर्द मातृत्व की खूबसूरत कल्पनाएँ बुन लीं। जब बच्चे ने बोलना शुरू किया तो उसकी आवाज़ तुतलाहट और गले से निकलने वाली ध्वनियों का एक अजीब मिश्रण थी। निःसंतान महिलाओं ने कहा कि इससे पहले किसी बच्चे ने ऐसा नहीं किया था। उन्होंने कहा, 'वह बोलता है, पुराणों के तोते की तरह बोलता है। वह हमारा किली है!' इस प्रकार अप्पू का पुनर्जन्म हुआ और वह अप्पू-किली बन गया। पाँचों माताएँ उसे एक गोद से दूसरी गोद में देती रहीं और जल्द ही उसी की तरह तुतलाकर और गले से निकलने वाली आवाज़ में बोलने लगीं। वे उससे अंतहीन रूप से मनमोहक और विचित्र बातें करती रहीं।

कुट्टप्पू एक प्रवासी था, वह अपनी पत्नी काली के गाँव खासक में आकर बस गया था; ऐसे प्रवासों का उपहास किया जाता था क्योंकि वे महिलाओं के पदचिह्नों का अनुसरण करते थे। लेकिन कुट्टप्पू जैसे व्यक्ति पर उपहास का कोई असर नहीं होता था, जिसकी विशाल मांसपेशियों, लाल आँखों और आकर्षक, कामुक होठों का अद्भुत मेल था। अपने पहाड़ी गाँव में, उसके पूर्वजों की कई पीढ़ियाँ बाघों का शिकार और व्यापार करके फली-फूली थीं। कुट्टप्पू ने यह व्यापार छोड़ दिया क्योंकि वह बाघों से प्रेम करता था और उनकी खाल उतारना राजा की हत्या के समान घृणित मानता था। वह लंगड़ाकर चलता था, मानो धारीदार बाघों का राजा हो; खासक के लोग उसे कुट्टप्पू-नारी, यानी बाघ कुट्टप्पू कहते थे।

अप्पू-किली बढ़ रहा था, लेकिन उसका पूरा शरीर नहीं। जब वह दस साल का हुआ, तो उसके हाथ-पैर बढ़ना बंद हो गए और वे अपने विकृत बचपन में ही रह गए। धड़ और सिर दोनों बढ़े, और उसके लटकते होठों पर एक शाश्वत मुस्कान छा गई। कुट्टप्पू और बांझ औरतें उन लोगों से झगड़ती थीं जो बच्चे में कुछ गड़बड़ होने का दावा करने की हिम्मत करते थे। वे कहती थीं, 'बड़ा होकर वह ठीक हो जाएगा, हमारा नन्हा राजकुमार, हमारा पंचरंग तोता!'

नीली अकेले ही शोक मनाती रही और उसने अपना दुख अपनी बहनों से छिपाए रखा।

नीली की यात्रा के कुछ दिनों बाद, खाज़ी अलियार की चाय की दुकान में बैठे हुए पालघाट कस्बे के बाहर एक जिन्न के साथ हुए अपने द्वंद्वयुद्ध का वर्णन कर रहे थे।
‘आप सभी को नदी के किनारे प्रचारकों द्वारा बनाई गई टाइल फैक्ट्री के बारे में पता है, वही फैक्ट्री जो लोगों को ईसाई बनाती है, है ना? अच्छा, तो फिर आपको पता है कि मुसलमान शरबत की दुकान कहाँ रखता है? वहाँ, झोपड़ी के पीछे, जहाँ से आप अंधेरे रास्ते से नदी की ओर जाते हैं, जी हाँ, वहीं! एक जिन्न, बेहद भयानक। आप में से कोई भी यहाँ डर से मर जाता। लेकिन मेरी ज़बान पर एक बड़ा मंत्र था, मैंने उसे बोला, और...’
एक कोने से एक आवाज आई, 'खाजी, निकम्मे! सड़क किनारे का जादूगर!'
वह कुट्टप्पू बाघ था।
‘जादूगर, आवारा!’ बाघ गरजा, ‘जिन्नों को अपनी इच्छा अनुसार उड़ा दो, लेकिन हमारे बच्चे पर अपनी सांस मत डालो!’
बाघ गुस्से में चाय की दुकान से बाहर निकल गया। जिन्न की कहानी गुम हो गई, खाज़ी इस ईशनिंदा से थोड़ा विचलित हो गया, और उसके श्रोता बाघ के इस उन्माद को देखकर अचंभित रह गए।
यह सिलसिला पूरे दिन चलता रहा। सूर्यास्त के समय बाघ ने खूब पानी पिया और सो गया।
अगले दिन जब कुट्टप्पू जागा तो सूरज ढल चुका था। क्रोध शांत हो चुका था और उसकी जगह ठंडी समझदारी ने ले ली थी। खाज़ी शेख का चुना हुआ था। अगर शेख ने हमला करने का फैसला किया तो कुट्टप्पू की रक्षा कौन करेगा? कुट्टप्पू ने नीली से सलाह और साथ मांगा। लेकिन नीली असामान्य रूप से ठंडी थी, बात करने को तैयार नहीं थी। निराश और स्तब्ध होकर, बाघ निचली जातियों के भविष्यवक्ता कुट्टादान के पास गया। कुट्टादान अपनी देवी की मूर्ति के सामने बैठा और कुछ देर के लिए समाधि में चला गया। आंखें खोलकर उसने कहा, 'हे बाघ, हम ऐसा नहीं कर सकते...' उसकी देवी ने हिंदू और मुस्लिम देवताओं के बीच किसी भी तरह के झगड़े को सख्ती से मना किया था; ये देवता खासक के मूल निवासी थे।
कुट्टादान ने कहा, 'हम देवताओं को आपस में नहीं लड़वा सकते, हम उन्हें आपस में झगड़ने नहीं दे सकते।'

कुट्टप्पू ने कुट्टादान से विनती की, यह जीवन और मृत्यु का मामला था; लेकिन कोई भी बात उस भविष्यवक्ता को अपना निर्णय बदलने के लिए राजी नहीं कर सकी।
कुट्टप्पू नींद में चलने वाले की तरह बहता चला गया, और जल्द ही उसे पता ही नहीं चला कि उसके कदम उसे कहाँ ले जा रहे हैं, जब तक कि वह चेताली की तलहटी में पहुँचकर अचानक चौंककर जाग नहीं गया! उसे यहाँ कौन लाया था, वह अदृश्य हाथ किसका था, वह अदृश्य लगाम किसकी थी? आस-पास कोई भी दिखाई या सुनाई नहीं दे रहा था। बाघ का सिर चकरा रहा था, और मामूली सी भी वस्तु या हरकत उसे भयानक भय से भर देती थी—सूखे पत्तों का ढेर, रेंगता हुआ चूहा, तितलियों का उड़ता झुंड। कुट्टप्पू मुड़ा और धीरे-धीरे नीचे उतरने लगा, तभी अचानक एक चिड़िया चहकी और वह दौड़ पड़ा।
वह मैदानों में पहुँच गया, अपने घर नहीं। खुद को भी नहीं पता था कि क्यों, वह कूमनकावु की ओर चल पड़ा। लंबी पैदल यात्रा दौड़ में बदल गई, फिर जानलेवा पलायन में। लेकिन कूमनकावु भी कोई शरणस्थल नहीं था, क्योंकि उसे अभी भी पहाड़ का खतरा महसूस हो रहा था। वह एक अड्डे में गया जहाँ अवैध शराब बेची जाती थी, और वहाँ से तरोताज़ा होकर निकला। उसने खुद को पालघाट कस्बे की सड़क पर पाया। सड़क पतली डामर की थी जिसके किनारे जोते हुए थे, फिर भी उसमें राज्य की शान और स्वतंत्रता झलक रही थी और अवैध शराब एक बेरहम नशा थी। भ्रम और शक्ति के आवेश में कुट्टप्पू ने चुनौती दी, 'आओ, चेताली के पूथम, हिम्मत है तो मेरी पीठ पर हमला करो!' यह सुनिश्चित करने के लिए कि शेख ने उसकी चुनौती को सही समझा है, कुट्टप्पू ने अपना मुंडू उठाया और अपनी पीठ नंगी कर दी।
वह पालघाट के बाजारों की ओर लौट रहे बैलगाड़ियों के काफिले के पास पहुँच गया। कुट्टप्पू जिस बैलगाड़ी के बगल में चल रहा था, उसमें बैठे एक मुस्लिम ने उससे पूछा, 'तुम अपनी पीठ क्यों दिखा रहे हो?'
बाघ बैल के साथ-साथ चलने लगा और गाड़ीवाले से पूछा कि क्या उसके पास एक बीड़ी है। वह तेज़ गंध वाली तंबाकू का कश लेते हुए और बैल की पीठ खुजलाते हुए चलता रहा और जवाब देने में उसे कोई जल्दी नहीं थी। गाड़ीवाले ने फिर पूछा, 'तुमने ऐसा क्यों किया?'
‘क्या मैं आपसे लिफ्ट मांग सकता हूँ?’
'अंदर आना।'

कुट्टप्पू आराम से बैठ गया और उससे कहा, 'एक पूथम मेरा पीछा कर रहा है।'
'पूथम को तुमसे क्या दुश्मनी है?'
वह एक मुस्लिम शैतान है।
'इससे कोई फर्क नहीं पड़ता,' गाड़ीवाले ने कहा। 'सरकार ने यह सड़क तुम्हारे और मेरे जैसे ईमानदार उपयोगकर्ताओं के लिए बनाई है, भूत-प्रेत भगाने के लिए नहीं। देखते हैं कि क्या यह पूथम सरकार के इस राजमार्ग पर तुम्हें छूने की हिम्मत करता है।'
आप उसे रोक नहीं सकते...
'यह एक शर्त है, अगर शैतान सड़क के नियम को तोड़ता है तो मैं यह धंधा छोड़ दूंगा!'
'कौन सा व्यापार?'
बैलगाड़ियों को चलाना।
काफिला धीरे-धीरे आगे बढ़ रहा था। जब वे पालघाट कस्बे पहुँचे तो दोपहर ढल चुकी थी। कुट्टप्पू ने गाड़ीवाले से विदा ली और कस्बे में घूमने निकल पड़ा। पुराने सुल्तान के किले के मैदान में एक सभा चल रही थी। वक्ताओं के ऊपर लाल झंडा लहरा रहा था, जो उन विषयों पर बहस कर रहे थे जो बाघ से भी संबंधित थे—काम और मजदूरी। वह श्रोताओं के बीच घास पर बैठ गया, लेकिन जल्द ही उसकी रुचि समाप्त हो गई, क्योंकि उसका संघर्ष कहीं अधिक भयावह था। वह उठा और खौलते पेय की तलाश में चल पड़ा; कुछ और घूंट पीने के बाद कुट्टप्पू लड़ने के लिए बेताब हो गया। अब पलड़ा वीरता की ओर झुक गया था। कुट्टप्पू ने उसी रात शेख के किले को अपवित्र करने की कसम खाई। उसने एक पुराने ट्रक में लिफ्ट ली, जिसने उसे कूमनकावु के पास उतार दिया। कुट्टप्पू खासक की ओर वापस चलने लगा। उसने रास्ते में ही एक गीत रचा, 'आओ पूथम, मुझे पकड़ सको तो पकड़ लो, ता रा ना ना!'
आधी रात हो चुकी थी। चाँद की हल्की रोशनी रास्तों को रोशन कर रही थी; दूर कहीं दिख रही भयानक आकृति को पहचानने में कोई गलती नहीं हो सकती थी, वह थी चेताली की चोटी! अचानक उसका आकार बदलने लगा। कुट्टप्पू को वह एक विशालकाय बालाक्लावा पहने बूढ़े मुस्लिम दरवेश की तरह लग रही थी। अवैध औषधि का असर कम हो रहा था। अब पीछा करते घुड़सवारों की घंटियों की आवाज साफ सुनाई दे रही थी! शेर को पसीना आ रहा था। शेख के जिन्न उसके ठीक पीछे थे। शेर ने मदद के लिए पुकारने की कोशिश की, लेकिन उसकी आवाज दब गई। जिन्न

आ रहे थे! खसक कहाँ था? घर? कुट्टप्पू-नारी चाँदनी में अंधाधुंध और खतरनाक तरीके से भागने लगा।

गोधूलि बेला

कुट्टप्पू बेहोशी की हालत में करवटें बदल रहा था। बेबसी से काली और नीली खाज़ी के पास गईं। खाज़ी पद्मासन में बैठे थे। उन्होंने कोमल भूरी आँखों से उन महिलाओं की ओर देखा। काफी देर बाद उन्होंने कहा, 'अब आप जा सकती हैं!'

क्या यह क्षमादान था या बर्खास्तगी? बहनें असमंजस में थीं। नीली बात करना चाहती थी, सवाल पूछना चाहती थी। लेकिन मस्जिद का सन्नाटा उसे डरा रहा था।

'जाओ!' खाज़ी ने कहा, 'न्याय होगा। जाओ!'

दोपहर होते ही खाज़ी अपने पद्मासन से उठे। उन्होंने मस्जिद के आसपास की अनाम कब्रों पर अगरबत्ती जलाई और गांव की ओर जाने वाले घुमावदार रास्ते पर चल पड़े। एक उत्तेजित ग्रामीण ने उसे बताया, 'ओ खाजी, बाघ मर गया है!'

खाज़ी नीली के घर की ओर चल पड़ा... वह कुछ पल उसके द्वार पर रुका। उसके शरीर में एक गहरी कंपकंपी दौड़ गई। उसने कुछ बुदबुदाया और हाथ उठाया। फिर अचानक, वह मुड़ा और दलदल की ओर वापस चल पड़ा।

चैत्र का अगला महीना फूलों के खिलने और नवीनीकरण का समय था। नीली के अपने मंदबुद्धि बेटे को जन्म दिए बीस साल बीत चुके थे। जब खज़ी हमेशा की तरह झोपड़ी को आशीर्वाद देने आया, तो नीली ने चिंता में फुसफुसाते हुए उससे कहा, 'हे खज़ी...'

'क्या...क्या तकलीफ है तुम्हें?'

उसने देखा कि सूरज की एक किरण उसके होठों पर पड़ रही है, उसके होंठ चमक रहे हैं। उसने कहा, 'मैं अस्वस्थ हूँ।'

खाज़ी सोच में पड़ गया और चुप हो गया। अगले दिन वह उसके लिए मीठे और कड़वे काढ़े लेकर आया... चैत्र का मौसम कठोर होता चला गया। नीली की बीमारी अब दूर की चिंता नहीं रही, वह निराशा में चिल्लाई, 'ओ खाज़ी!'

वह चेताली से दुर्लभ पत्ते और जड़ें लेकर आया और उन्हें किण्वित किया।

'क्या मैं फिर से ठीक हो जाऊंगी, हे खाज़ी?' उसने आनंद के अंतिम क्षणों का स्वाद लेते हुए पूछा।

‘इंशा अल्लाह, आप ऐसा कर पाएंगे।’
आधी रात। उसकी नाभि के नीचे हल्का दर्द शुरू हुआ, फिर अचानक वह असहनीय पीड़ा से भर गया; नीली चीख पड़ी। खासक के लालटेन जल उठे और वे नीली की झोपड़ी की ओर बढ़े। नीली खून के तालाब में नग्न अवस्था में लोट रही थी। भोर होते ही उसकी मृत्यु हो गई। उन्होंने उसे बाघ के बगल में दफना दिया।
अप्पू-किली चुपके से घर से निकल गया। किसी को उसकी कमी महसूस नहीं हुई। वह श्मशान के पास घनी झाड़ियों में घुस गया और दिन भर वहीं छिपा रहा। रात होते ही वह बाहर आया और नीली की कब्र के पास सो गया। रुक-रुक कर बारिश हो रही थी, और जब रुकती तो पत्तों में जमा पानी बड़ी-बड़ी बूंदों के रूप में गिरता, जिससे कड़ाके की ठंड लगती। वह कलां कोझी पक्षियों की आवाज़ सुन रहा था, जो रात में चहचहाते हैं और जिनकी डरावनी आवाज़ मौत का संकेत मानी जाती है। वे ऊपर डालियों पर बैठे उसके लिए मधुर गीत गा रहे थे।
दो दिन बाद, रवि और माधवन नायर को अप्पू-किली का शव मिला। वह कब्रिस्तान की सड़ती हुई मिट्टी से ढका हुआ था।
‘तुम बीमार लग रहे हो, नन्हे बच्चे,’ माधवन नायर ने कहा।
रवि ने किली के माथे पर हाथ रख दिया।
‘माधवन नायर, अच्छा नहीं लग रहा,’ उसने कहा और बौने के ऊपर झुककर पूछा, ‘किली, तुम यहाँ बाहर क्यों सोए थे?’
अप्पू-किली मुस्कुराया लेकिन कुछ नहीं बोला।
‘उठो, मेरे पंख वाले मित्र,’ माधवन नायर ने कहा, ‘चलो चलें।’
अप्पू-किली माधवन नायर और रवि की तर्जनी उंगलियों को पकड़कर वापस चलने लगा। पौधशाला पहुँचते ही रवि ने किली को कंबल में लपेटकर गलियारे में लिटा दिया और गरमागरम कॉफी बनाई। रवि अपनी दवाइयों की पेटी में कुछ ढूंढने लगा।
‘माश, तुम क्या ढूंढ रही हो?’
'बुखार की दवा चाहिए। कहीं मिल नहीं रही।'
'अगर आप चाहें तो आप उसे गोलियां दे सकते हैं, माश। लेकिन मैं किसी भी दवा की सलाह नहीं दूंगा।'
रवि ने थर्मामीटर को प्रकाश के सामने रखा। पारा एक सौ चार पर था।
‘किली!’ रवि ने उसे पुकारा।

किली ने अपनी आँखें नहीं खोलीं। उसने थकी हुई मुस्कान दी।
माधवन नायर ने किली को उठाया और रवि ने कॉफी उसके होठों तक पहुंचाई। किली ने कॉफी पी और फिर से सो गया।
‘कोई दवा नहीं, माधवन नायर? फिर क्या?’
‘कुट्टादान को पुकारो। ये भविष्यवाणियां बुरी आत्माओं को भगा देती हैं।’
लेकिन आत्माएं कहां हैं?
'बिल्कुल यहीं। तोते के अंदर ही।'
दर्जी का रवैया रवि को चिंतित कर रहा था। 'यह गंभीर मामला है, माधवन नायर, 104 डिग्री का बुखार।'
माधवन नायर सोए हुए बौने के बगल में बैठ गए।
रवि ने कहा, 'मुझे लगता है कोझानास्सेरी में एक डॉक्टर है। मैं वहां जाकर कुछ दवा ले आता हूं।'
‘मैं ऐसा नहीं करूँगा, माश।’
‘यह एक बड़ी जिम्मेदारी है। कम से कम हमें उनके लोगों को तो बता देना चाहिए।’
‘उसके लोग? तोते के अब कोई लोग नहीं बचे हैं।’
स्कूल के बाद रवि ने अलियार की साइकिल उधार ली और खतरनाक रास्तों से होते हुए कोझानास्सेरी के लिए निकल पड़ा... रवि दवाइयाँ लेकर रात में घर लौटा। वहाँ एक विचित्र दृश्य उसका इंतज़ार कर रहा था। स्कूल का प्रांगण एक अनुष्ठान के लिए तैयार किया गया था और बड़े-बड़े तेल के दीयों से जगमगा रहा था। अप्पू-किली पालथी मारकर ज़मीन पर बैठा था और उसके बगल में माधवन नायर एक प्राचीन ढोल पर लगातार थाप दे रहा था। इन सबके बीच कुट्टादान अपनी देवी के वस्त्र, लाल साड़ी पहने खड़ा था। थाप तेज़ होती गई और जैसे ही वह अपने चरम पर पहुँची, कुट्टादान ने भविष्यवक्ता की घुमावदार तलवार से अपना सिर काट लिया। देवी ने उसे अपने वश में कर लिया था और उसकी आवाज़ में बोली, 'दुःख मत करो, नीली-अच्ची! और अब यहाँ मत ठहरो!'
रवि ने साइकिल को दीवार से टिकाया, पास आया और माधवन नायर के पास बैठ गया। कुट्टादान की तलवार पर खून जम गया; आवाज जारी रही, 'रो मत, नीली-अच्ची! यह मूर्ख हमारा बच्चा है। हम इसे भूखा नहीं रहने देंगे। शांति से जाओ।' और अंत में दिव्य आदेश, 'जाओ, जाओ!'

अप्पू-किली पीठ के बल ज़मीन पर गिर पड़ा था। कुट्टादान ने तलवार नीचे रख दी और नाचने लगा; उसके रहस्यमय कदमों में उमंग थी। फिर उसने नाचना बंद किया, तलवार उठाई और घर चला गया। गाँव वाले भी तितर-बितर हो गए। रवि और माधवन नायर अप्पू-किली को उठाकर गलियारे में ले गए। रवि ने लड़के का माथा छुआ, बुखार उतर चुका था। उसने दवाइयाँ खिड़की की चौखट पर रख दीं।
‘क्या तुमने पेड़ काटने वालों और उनकी महिलाओं को बताया?’ रवि ने माधवन नायर से पूछा।
मैंने किया।
‘भूत भगाने के लिए कोई नहीं आया?’
कोई नहीं, कोई नहीं।
दर्जी का मन कई बातों में उलझ गया और उसने कहा, 'बेचारी नीली इस मूर्ख के कारण बहुत दुखी हुई थी। यह बंधन तोड़ना मुश्किल है, माँ। वह फिर वापस आएगी।'
बाहर, रात के घने जंगलों में कहीं, अपने दुःख को शांत किए बिना, नीली अपनी यात्रा रोककर रुक गई। वह मुड़ी, उसने पीछे मुड़कर देखा। अप्पू-किली के अंग फड़फड़ाए और वह नींद में ही कुछ बोला।
कुट्टप्पू और नीली के गुज़र जाने के बाद हालात बिगड़ने लगे। काली, पाची के पति के साथ भाग गई। मवेशी दलाल रामाच्चर ने बताया कि उसने भगोड़े जोड़े को तमिलनाडु सीमा के एक गाँव में देखा था। पाची शर्म और अकेलेपन में खासक में नहीं रहना चाहती थी। वह दस मील दूर बांध स्थल पर काम की तलाश में खदानों में चली गई। कुछ दिनों बाद, नाची ने अपनी छोटी बहन के पीछे जाने का फैसला किया। खासक ने उनके बारे में फिर कभी नहीं सुना। अफवाह थी कि दोनों की चट्टान विस्फोट में मौत हो गई। एक और सनसनीखेज कहानी यह थी कि दोनों बहनों को एक चालाक दक्षिणी व्यक्ति ने बहला-फुसलाकर दक्षिण की ओर भगा दिया था। कोची गर्भाशय की बीमारी से बीमार पड़ गई और पालघाट कस्बे के बड़े अस्पताल में खून बहने से उसकी मौत हो गई। झोपड़ी में रहने वाला बड़ा परिवार अचानक दो पेड़ काटने वालों में सिमट गया, जिनकी पत्नियाँ जा चुकी थीं और वे एक-दूसरे के लिए अजनबी बन गए थे। वे आपस में झगड़ते और दंगे करते थे; त्यागा हुआ तोता कुछ देर देखता और फिर चला जाता। जल्द ही, जैसे किसी निर्जीव शरीर से अंतिम तत्व अलग हो जाते हैं, वैसे ही दोनों लकड़हारे अपने दूर-दराज के पैतृक गांवों की ओर लौट गए। अप्पू-किली खासक में

इधर-उधर भटकता रहा। गांववाले उसे खाना खिलाकर खुश होते थे। वह गांव के चौक के चारों ओर बनी छोटी-छोटी दुकानों में घूमता और अपनी ज़रूरत की चीज़ें चुनता, किराने वाले से ताड़ के गुड़ का एक टुकड़ा, अलियार की चाय की दुकान से मुरुक्कू। केवल मैमूना ही उसे बीड़ी मांगने पर भगा देती थी। 'सूअर!' वह कहती, 'जाओ बीड़ी के टुकड़े ढूंढो!'

यह एक तरह का अपमान था, इससे वह रोने लगता... बिना किसी उद्देश्य के इधर-उधर भटकते हुए, अप्पू-किली बार-बार उस सुनसान झोपड़ी में आता। अगर उसका मन करता तो वह अंदर चला जाता और कुछ देर रुक जाता। एक रात सड़ी हुई घास-फूस की छत गिर गई और मिट्टी की दीवारें ढह गईं। अगली सुबह अप्पू-किली माधवन नायर की दुकान पर आया और कटे हुए टुकड़ों के ढेर के बीच बैठ गया।

‘तुम्हारा घर तोड़ा, नन्हे बच्चे?’ माधवन नायर ने तोते को दिलासा देते हुए कहा, ‘मेरे साथ रहो।’ किली वैसे भी मेहमान या भिखारी बनकर नहीं आया था। किली ने एक पुराना तकिया उठाया और तुरंत माधव-एट्टा से अपने लिए एक झूला बनाने को कहा। माधवन नायर ने कपड़े के सिरों में गांठें लगाईं और उसे इमली की डाल से लटका दिया। वह झूला बैल के लिए भी काफी बड़ा था; बच्चा उसमें लेट गया, पैर बाहर निकले हुए, और झूलते-झूलते सो गया।

माधवन नायर अपनी सिलाई मशीन पर बैठे उस विचित्र दृश्य को देख रहे थे। उन्हें अपना बचपन याद आ गया, उस समय से बहुत पहले जब उनके चाचा शिवरामन नायर ने उन्हें त्याग दिया था। उन्हें याद आया कि कैसे वे और उनके चचेरे भाई कल्याणिक्कुट्टी इमली के पेड़ों के नीचे कंकड़ों को बच्चों की तरह और फटे हुए कपड़ों के टुकड़ों को पालने की तरह इस्तेमाल करके 'माता-पिता' का खेल खेलते थे। सपनों के बच्चे, बहुत दूर। एक रात पुराना बिस्तर का कवर फट गया। जब वे जागे, तो माधवन नायर ने देखा कि अप्पू-किली कपड़े के ढेर के पास बैठा है, जो कुछ समय पहले तक उसका झूला घर हुआ करता था।

‘हे पक्षी!’ दर्जी ने कहा, ‘यह सब कैसे हुआ?’

अलियार, जो सुबह के लिए अपनी दुकान की सफाई कर रहा था, ने चौक के उस पार से आवाज़ लगाई, 'कल शाम तोते ने बहुत सारे वड़े खा लिए थे - पालना उसे सहन नहीं कर सका।'

‘हे मुसलमान! ऐसी घिनौनी बातें मत कहो। कल रात ज़रूर भूकंप आया होगा। इसके अलावा और कोई चीज़ इस कपड़े को नहीं फाड़ सकती थी।’
‘बिल्कुल,’ अलियार हँसते हुए बोला, ‘इसकी संभावना अधिक है। खासक में बहुत लंबे समय से भूकंप नहीं आया है।’
वह चादर उसके पास बचा हुआ आखिरी कपड़ा था। माधवन नायर चिंता से बैठे रहे।
‘तोते,’ उसने कहा, ‘क्या तुम बैठने की जगह से संतुष्ट हो जाओगे?’
अप्पू-किली मुस्कुराया और सिर हिलाया।
उस शाम माधवन नायर अप्पू-किली के साथ स्कूल आए। उन्होंने द्वार से पुकारा,
'माश! क्या आप हमें बैठने की जगह देंगी?'
‘क्या हुआ, माधवन नायर?’
‘भूकंप...’
‘भूकंप?’
'हां। इसने पालना फाड़ दिया।'
माधवन नायर की दुकान में एक आदमी के लिए जितनी जगह होनी चाहिए थी, उतनी ही थी; उसमें दूसरे के लिए जगह नहीं थी, तो क्या पंखों वाला प्राणी स्कूल में बैठ सकता था?
रवि ने कहा, 'रात में अकेले में, अगर वह मुझे चूमने का फैसला करे तो...'
‘डरने की कोई बात नहीं, माश!’
माधवन नायर किली को रवि के साथ छोड़कर अपनी दुकान पर वापस चले गए।
अगली शाम उन्होंने फिर फोन करके पूछा कि मछली पकड़ने का काम कैसा चल रहा है।
रवि ने कहा, ‘अब मुझे एक अद्भुत साथी मिल गया है, जो पूरी तरह से साहित्य के प्रति समर्पित है। देखो—’
ब्लैकबोर्ड पर, दीवारों पर, बरामदे के उस पार, जहाँ भी भित्तिचित्र के लिए जगह थी, मलयालम व्यंजन 'था' की मंत्रमुग्ध कर देने वाली पुनरावृत्ति दिखाई दी, जिसे एक गोल 'ओ' के रूप में लिखा गया था। माधवन नायर विस्मय से देखता रहा।
‘मेरा तोता!’ माधवन नायर ने पुकारा।
अप्पू-किली पौधशाला के पीछे से उछलता हुआ आया, उसके हाथों में चूना और कोयला भरा हुआ था।

‘हे महान पक्षी,’ माधवन नायर ने कहा, ‘तुमने हमारे राष्ट्र को गौरवान्वित किया है... अब सुनो, माश। कौन कहता है कि मेरा किली बुद्धिमान नहीं है? मैंने उसे लगभग दस साल पहले यह एक अक्षर सिखाया था...’
'अविश्वसनीय!'
अप्पू-किली अपने भित्तिचित्रों में वापस लग गए, माधवन नायर आरामकुर्सी पर सहजता से बैठ गए जबकि रवि सीढ़ियों पर तकियों के सहारे झुककर बैठ गए।
माधवन नायर ने कहा, 'कभी-कभी मुझे लगता है कि हमें बस एक अक्षर सीखना चाहिए...'
'सत्य।'
‘मैं ये बात मजाक में नहीं कह रहा, माश।’
माधवन नायर अपने गुरु को याद कर रहे थे। मन्नूर गाँव में एक अनपढ़ छुरी बनाने वाला अंधा हो गया। वह अपने शागिर्द द्वारा छुरी बनाते समय पत्थर की घिसाई की आवाज़ सुनता रहा। अंधा व्यक्ति अंधकार की गहराई में डूबा रहा; लोग उसके पास अपनी पीड़ाएँ लेकर आते रहे। उसने उन ग्रंथों पर प्रवचन दिए जिन्हें उसने कभी नहीं देखा था, और अपने भक्तों से कहा कि वे अपने घरों को लौटें और देखने के भ्रम से परे देखें... माधवन नायर ने अपनी यादें समाप्त कीं, फिर भी वे मंत्रमुग्ध होकर बैठे रहे।
शाम ढलते-ढलते खासक के ताड़ के पेड़ों पर कालिख जमने लगी।
‘देखो!’ रवि ने कहा।
अप्पू-किली स्कूल के गेट पर खड़ा होकर घर लौटते तोतों के झुंड को देख रहा था।
माधवन नायर ने कहा, 'इस नन्हे बच्चे के लिए तो हमेशा सूर्यास्त ही सब कुछ होता है। और उसके पास जाने के लिए कोई घोंसला भी नहीं है।'
‘कौन पहुंचता है?’
'सच है, माश। असल में कोई नहीं करता।'
वह मूर्ख जन्म और मृत्यु के धुंधलके में खड़ा था। वह अकेला खड़ा था। तोतों का आखिरी झुंड क्षितिज पर दूर चला गया।

जांच

एक साल बीत गया। गर्मी की छुट्टियों के बाद स्कूल खुला, जिसमें छात्रों की संख्या बीस थी (जो स्थिर नहीं थी)। रवि ने छुट्टियाँ खासक में बिताईं, माधवन नायर के साथ पहाड़ियों पर ट्रेकिंग की, या देर रात तक अप्पू-किली की कहानियाँ सुनाता रहा।
अब वह स्कूल को वार्षिक निरीक्षण के लिए तैयार कर रहा था, जो सामान्य से पहले हो रहा था। निरीक्षक नया था। 'वह कैसा है?' माधवन नायर ने सोचा। 'सख्त है या नरम?'
रवि ने कहा, 'जहां तक मुझे पता है, वह कह सकता है, इसे बंद कर दो, यहां पर्याप्त बच्चे नहीं हैं!'
‘वे शिक्षकों की सूची को बढ़ा-चढ़ाकर पेश करते हैं—शिक्षण संस्थानों में। क्या हम सूची में एक दर्जन डमी नहीं डाल सकते?’
'इंस्पेक्टर यह सुनिश्चित करने के लिए आता है कि रजिस्टर में फर्जीवाड़े न हों। और मैं उसे उन शिक्षण संस्थानों की तरह रिश्वत नहीं दे सकता।'
स्कूल निरीक्षक आने वाले थे—यह खबर चारों ओर फैल गई। दूरदराज की झुग्गी-झोपड़ियों में रहने वाले अछूतों ने इसे खूंखार टीकाकरण अधिकारी का दौरा समझ लिया। समाज से बहिष्कृत बच्चे भूसे के ढेरों के पीछे छिप गए। लेकिन खासक में माहौल उत्सव जैसा था, झोपड़ियों के सामने के आंगन और चौक के आसपास के घरों की सफाई कर दी गई थी, और महिलाओं ने अपने सुंदर वस्त्र पहन रखे थे।
इस मेले में एक दुबला-पतला बूढ़ा व्यक्ति आया। उसके मुरझाए गालों पर उगी काली-चांदी रंग की छोटी-छोटी दाढ़ी कई दिनों पुरानी थी, उसका पारंपरिक कोट फटा हुआ और बेतरतीब ढंग से सिला हुआ था। खुरदुरे भैंस के चमड़े की चप्पलों में, वह हर कदम डरते-डरते, लगभग माफी मांगते हुए उठा रहा था। यह राज्य का एक घटिया रूप था। खासक को निराशा हुई।
इंस्पेक्टर के चपरासी ने खासक के लिए इस दृश्य को संभाला। उसने किनारों पर लटकन वाली लाल कैनवास की कमरबंद पहनी हुई थी, और उस पर एक बड़ा पीतल का पदक लगा हुआ था जिस पर राज्य का प्रतीक चिन्ह और यह लिखा था: चपरासी। चपरासी, सेवक, निहत्था पैदल सैनिक।
अलियार ने कहा, 'लाल रंग की पोशाक पहने उस आदमी के पास निश्चित रूप से इस्पैककेत्तार से भी अधिक शक्तियां हैं।'
भगवा वस्त्रधारी भिक्षु मुथु पंडारम ने कहा, 'इस पर कौन संदेह कर सकता है? पीतल की चमक तो देखो!'

'यह कोई इस्पैककेत्तर नहीं है,' कुप्पू-अच्चन ने भार रखने वाले स्टैंड से टिप्पणी की, 'यह असली नहीं है।'
‘तो फिर वास्तविकता क्या है?’ चाय की दुकान के अंदर से किसी ने पूछा।
‘यह सैलामैंडर की तरह है। जब हेज लिज़र्ड बूढ़ी हो जाती है और उसमें समुद्री अर्चिन नहीं होते, तो वह सैलामैंडर में बदल जाती है। ठीक वैसे ही, जब एक मेश्टार बहुत बूढ़ा हो जाता है, तो वह इस तरह के इस्पैककेटार में बदल जाता है।’
‘बिल्कुल,’ अल्ला-पिचा उस कोने से बोला जहाँ वह छिप गया था, ‘सैलामैंडर की सच्चाई यही है।’
अचानक चाय पीने वालों को मुल्ला की उपस्थिति का आभास हुआ। मुत्थु पंदारम ने पूछा, 'मोल्लाक्का, क्या आप इस्पैककेत्तर से मिलने नहीं जा रहे हैं?'
‘नहीं!’ मुल्ला ने कहा।
यह सच है कि वह स्कूल के साजो-सामान का हिस्सा था और उसे मासिक वेतन मिलता था। लेकिन स्कूलों की लड़ाई, उसकी अमिट यादें मुल्ला के मन में लौट आईं और खासक के पुजारी ने बार-बार कहा, 'नहीं!'
इंस्पेक्टर बैठ गया और अपने पैरों के तलवों से धूल झाड़ने लगा, उन्हें आपस में रगड़ने लगा जैसे किसान करते हैं।
‘सिरदर्द बहुत तेज है,’ उसने रवि की ओर देखते हुए कहा।
‘क्या आप एस्पिरिन लेना चाहेंगे, महोदय?’
‘नहीं, धन्यवाद! यह बहुत लंबी यात्रा थी, और धूप...’ इंस्पेक्टर अपनी कुर्सी पर घूमा और अपने पीछे की खिड़की पूरी तरह खोल दी। ‘अच्छी हवा चल रही है,’ उसने कहा। ‘और, अरे, देखो बाहर क्या है...’
‘कमल में,’ रवि ने कहा।
इंस्पेक्टर मुस्कुराया। रवि ने रजिस्टरों और दस्तावेजों को अपडेट करने के लिए कई दिनों तक काम किया था, और उसने उन्हें इंस्पेक्टर के सामने रख दिया।
इंस्पेक्टर ने कहा, 'मैं फिर भी उन सभी पर हस्ताक्षर कर दूंगा। बच्चों को घर जाने दो।'
रवि ने कक्षा समाप्त की और बच्चों को बताया कि अगले दिन भी छुट्टी है, जैसा कि निरीक्षण के बाद हमेशा होता है। कुछ देर तक बच्चे आंगन में रुके रहे, फिर धीरे-धीरे चले गए।
‘बैठ जाओ, माश!’

वे सब एक साथ बैठकर सामान्य विषयों, स्कूलों और शिक्षण संस्थानों के बारे में बातें कर रहे थे।
‘माश, तुम कहाँ से हो?’
रवि ने कोई जवाब नहीं दिया। मैं कहाँ से आया हूँ, और मैं अभी कहाँ हूँ, उसने खुद से पूछा, मैं किसका चेहरा देख रहा हूँ, और यह काली-चाँदी जैसी दाढ़ी किसकी है?
‘बेटे, तकियों को ऊपर उठाओ,’ रवि ने प्यारी सी आवाज सुनी।
'मुझ पर सहारा लो, पापा।'
सुस्त जोड़, अनिच्छुक नसें।
‘क्या आप आराम से हैं, पापा?’
'जी हां, बेटे।'
रवि अपने पिता के छिपे हुए दर्द को महसूस कर सकता था। दाढ़ी के छोटे-छोटे बाल दो दिनों में बढ़ गए थे।
‘क्या मैं आपकी दाढ़ी बना दूं, पापा?’
नर्स यह काम कर देगी।
‘केरल का कौन सा हिस्सा?’ बूढ़े इंस्पेक्टर की आवाज फिर से सुनाई दी।
‘अच्छा,’ रवि ने कहा, ‘हमारा परिवार पट्टाम्बी से है, जो ज्यादा दूर नहीं है।’
रवि गलियारे में गया और संतरे से भरी एक ट्रे लेकर वापस आया।
'गर्मी से बचने के लिए, महोदय।'
एक संतरा खाने के बाद, इंस्पेक्टर ने फिर पूछा, 'क्या आप प्रशिक्षण विद्यालय गए हैं?'
मैंने इस बारे में सोचा ही नहीं है...
'आजकल प्रशिक्षित शिक्षकों को उचित वेतन मिलता है।'
'मुझे ऐसा लगता है।'
इंस्पेक्टर ने बेमन से रजिस्टरों के पन्ने पलटे। उन्होंने कहा, 'शायद आप कॉलेज जाने की योजना बना रहे हैं। हालांकि, यह काफी महंगा होता जा रहा है...'
‘एक तरह से मैंने कॉलेज की पढ़ाई पूरी कर ली है...’
‘कॉलेज की पढ़ाई पूरी कर ली? तो फिर यहाँ क्या कर रहे हो, मैट्रिक पास वालों के लिए ये नौकरी क्यों कर रहे हो?’
मैंने अपनी परीक्षाएं नहीं दीं। मैं ऑनर्स कोर्स कर रहा था।
‘आपने किस कॉलेज से पढ़ाई की? पालघाट से?’

'तांबरम.
‘क्रिश्चियन कॉलेज?’
कॉलेज का परिसर असाधारण रूप से सुंदर था, जिसमें झाड़ियों और जंगलों के विशाल क्षेत्र थे जहाँ खरगोश और साही फलते-फूलते थे। शिक्षण और आवासीय भवन इस हरे-भरे वातावरण के बीच रत्न-जैसे लाल द्वीपों की तरह प्रतीत होते थे। घास से ढके खुले मैदान ऐसे लगते थे मानो वे अनमोल कश्मीरी ऊन के कालीन हों।
‘आप कौन-कौन से सम्मान कार्यक्रम कर रहे थे?’
खगोल भौतिकी।
प्रयोगशाला की रोशनी रवि के सामने लौट आई, वे लेंस जो दूर-दूर तक, बहुत दूर तक देखने की कोशिश करते थे, और वह अथाह गहराई जो हर छिद्र से वापस झाँकती थी।
‘क्या माता-पिता जीवित हैं?’
मेरी माँ का बहुत कम उम्र में निधन हो गया था। मेरे पिता एक बागान में डॉक्टर थे। कुछ वर्षों से वे बीमार हैं। मेरी एक सौतेली माँ है, और दो सौतेली बहनें विदेश में पढ़ाई कर रही हैं...
सौतेली बहनें सुमा और रामा अजनबी जैसी निगाहों से पारिवारिक एल्बम को देख रही थीं। उसने वह एल्बम कहाँ छोड़ दी थी, अपने अशांत मन के अंधकार में उसने अपनी बहनों को कहाँ त्याग दिया था?
इंस्पेक्टर ने कहा, 'मेरी एक बेटी थी, माश...'
दो घुमक्कड़, इस सराय में मिले और एक-दूसरे को अपनी दुख भरी जीवन कहानियाँ सुनाने लगे। बूढ़े ने रवि को अपनी बेटी के बारे में बताया, जो उनकी सबसे प्रतिभाशाली बेटी थी, जिसके लिए उन्होंने अपने बाकी बच्चों को स्कूल से आगे पढ़ने नहीं दिया था —वे केवल एक ही बच्चे को विश्वविद्यालय तक पहुँचाने का खर्च उठा सकते थे। अंतिम परीक्षाओं से पहले के हफ्तों में, धात्री किताबें नहीं छोड़ती थी। वह देर रात तक पढ़ती रहती थी, कभी-कभी तो अगली सुबह तक। परीक्षा में केवल एक सप्ताह शेष था, असहनीय थकान से धात्री छपे हुए पन्नों को देखते ही सो जाती थी। वह खुद को झटककर जगाती और अपने पिता को खुश करने के लिए मुस्कुराती, जो उन कठिन रातों में उसके साथ जागते रहते थे। एक रात धात्री आँगन में गई जहाँ कुएँ का पानी बड़े मिट्टी के बर्तनों में रखा था। पिता ने पानी डालने की आवाज़ सुनी, उन्होंने झाँका।

'सिर पर पानी डाल रही हो?' वे चौंक गए। लड़की ने कहा, 'नींद आँखों से उतर ही नहीं रही, पिताजी।'
उसने उसके घने बालों के बारे में सोचा और यह भी कि रात में उन्हें सुखाना कितना मुश्किल होगा।
‘क्या मैं तुम्हारे बाल पोंछ दूं, मेरी नन्ही बच्ची?’
'अरे नहीं, पिताजी। आप अंदर जाइए और थोड़ी देर सो जाइए।'
अपने बालों को अच्छे से सुखाना सुनिश्चित करें।
उसने जवाब में उसकी हंसी सुनी, एक थकी हुई, कोमल हंसी। जब वह अपने छोटे से अध्ययन कक्ष में लौटा, तो उसने धात्री को मेज पर झुकी हुई, गहरी नींद में सोई हुई पाया। अगली शाम उसने सीने में दर्द की शिकायत की। दर्द बढ़ता गया, फेफड़ों में सूजन तेजी से फैल गई। धात्री की मृत्यु हो गई।
‘तुमने कहा था ना कि तुम्हारे पिता बीमार हैं, माश?’
'जी हां, सर। यह एक रुमेटॉइड बीमारी है। शरीर का आधा हिस्सा लकवाग्रस्त है।'
‘दर्द और निर्भरता...’
‘जिस तरह से सब लोग जाते हैं।’
इंस्पेक्टर ने फिर से मुस्कुराते हुए रजिस्टरों की ओर रुख किया और उनमें मौजूद सभी बेतुकी और विशाल जानकारी की पुष्टि की।
क्या आपके पिता पट्टाम्बी में रहते हैं?
नहीं, महोदय। ऊटी में पहाड़ियों में हमारा एक घर है, जो मेरे पिता के बागान के दिनों में बनाया गया था...
घर के चारों ओर की ज़मीन विशाल थी, पूरी एक पहाड़ी ढलान। एक सुव्यवस्थित रास्ता बरामदे तक जाता था। घर के अंदर नक्काशीदार लकड़ी का काम, कालीन बिछे फर्श, हाथ से तराशे हुए क्रिस्टल और एक भव्य पियानो था जो वर्षों से खामोश पड़ा था। इसी घर में उसने अपनी सौतेली माँ के साथ पाप किया था। तब वह कॉलेज में पढ़ रहा था; छुट्टियों में घर आया था। यह दस साल पहले की बात है।
इंस्पेक्टर ने कहा, 'माश, मैं तुम्हारे जैसे होनहार युवक को परीक्षा न देते हुए सोच भी नहीं सकता। सम्मान की डिग्री तो पैक है और बस लेने ही बाकी है! मैं तुम्हें उन गाउन में, हाथ में डिग्री का प्रमाण पत्र लिए देखना चाहता हूँ।'

रवि को वह अतिथि प्रोफेसर याद आया, जो प्रिंसटन का छात्र था और जिसने एक दिन उसे कॉलेज के गेस्ट हाउस में बुलाया था।
आगंतुक ने कहा, 'आपका वह शोधपत्र, आपके प्रोफेसर ने मुझे दिया था...' भारी आवाज और चौड़े जबड़ों पर फैलती मुस्कान दोस्ताना थी।
आगंतुक ने आगे कहा, 'यह बेहद रोचक है, हालांकि मुझे संदेह है कि आपकी बुनियादी भौतिकी पूरी तरह से गलत है।'
'मैं तथ्यों को लेकर कभी भी दृढ़ निश्चयी नहीं रहा हूँ, महोदय।'
लेकिन क्या आपको एहसास है कि आप हिंदू ज्ञान को पश्चिमी विज्ञान के विरुद्ध नहीं खड़ा कर रहे हैं? आप कुछ अधिक साहसिक कर रहे हैं। आप अपने स्वयं के ज्ञान का उपयोग कर रहे हैं।'
उन्होंने धुंधली पहेलियों पर चर्चा की और विचार-विमर्श किया, और ऐसा लगा मानो गंगा उनके सामने प्रलय के रूप में, समय के रूप में प्रकट हुई हो; उसकी रहस्यमय गहराइयों में सत्य छिपा हुआ था।
कैंपस में उनकी पसंदीदा खुली जगह पर एक शाम। उनकी सहपाठी पद्मा ने रवि से कहा, 'प्रिंसटन वाले व्यक्ति घर आए थे, और उन्होंने और पापा ने ज्यादातर समय तुम्हारे बारे में ही बात की। उन्हें लगता है कि तुम गैलील के बाद के सभी विज्ञानों के खिलाफ अकेले विद्रोह करने वाले व्यक्ति हो।'
पद्मा के पिता रवि के प्रोफेसर थे। रवि की निराशा फिर से शुरू हो गई: मैं न जानने के लिए ही बना हूँ, फिर भी यह अभिशाप मुझ पर है—सत्य का ज्ञान, और वह भी मनुष्य के लिए वर्जित। पीड़ा और शोक में डूबा वह अपने बचपन की ओर मुड़ा और दोपहर की सुनहरी रोशनी ने उसे घेर लिया। कोई खोज नहीं थी, आकाश फिर से निर्मल और प्रेममय हो गया था, प्रेम कल्पक के खोलों और मुकुटधारी सर्पों के दर्शन के रूप में प्रकट हुआ।
‘पद्मा, वह अमेरिकी मेरे साथ क्या करना चाहता है?’
'शायद तुम्हें खिलाऊं, तुम्हें मोटा करूं।'
‘पद्मा, अगर मैं इस परीक्षा में पास नहीं हुई तो?’ वह नाराज़ थी।
'मैं तुम्हें खुशखबरी देता हूँ, और बदले में तुम मुझे बुरी तरह चिढ़ाते हो।'
‘पद्मा...’ उसने बेबसी से कहना शुरू किया। वह मन ही मन सोचने लगा, मैं आकाशगंगाओं की दूरियों का अध्ययन करके और साधारण प्रिज्मों द्वारा तारों के

प्रकाश से अलग हुई रंगीन पट्टियों को पढ़कर क्या हासिल करने की कोशिश कर रहा हूँ? क्या मेरा पाप मेरे भीतर ही नहीं है?
परीक्षाएं, उनकी तीव्र निकटता। छात्रावास में सभी जागते रहे। रवि लेट गया, मानो खुद को आकाश की गहराइयों में समर्पित कर दिया हो।
दिनों के बाद।
'मेरे नखरेबाज़ प्रेमी,' पद्मा ने कहा, 'कल मैं तुम्हें बाहर ले चलती हूँ। समुद्र की ठंडी हवा तुम्हें अच्छा महसूस कराएगी।'
'मरीना?'
'थोड़ा आगे, लूज़ के पास। वहाँ ज्यादा भीड़ नहीं है। बुजुर्ग लोग बाहर खाना खा रहे हैं।'
रेत पर, अगले दिन
रवि ने एक पत्र निकाला और पद्मा को दे दिया। उसमें लिखा था, "बेटा, मैं ज़्यादा बीमार नहीं हूँ, हालाँकि कभी-कभी सब कुछ गड़बड़ हो जाता है। दिन बीतते जा रहे हैं, हर दिन की तरह। तुम्हारी चित्तम्मा मुझे व्हीलचेयर पर बिठाकर बरामदे में सूर्यास्त देखने ले जाती हैं।"
मेरी बीमारी से भी कहीं अधिक, एक और बड़ा दुख मुझे तब सताता है जब मैं सूरज को डूबते हुए देखता हूँ। मैं किस बात से दुखी हूँ? हर गोधूलि बेला दुख से भरी होती है...
शाम और भी गहरी और ठंडी होती जा रही थी। आसमान में ऊँचाई पर उड़ते रात्रि पक्षियों के एक झुंड ने शहर की रोशनी को पकड़ लिया और धुंधले उल्कापिंडों की तरह चमक उठे...
दोपहर के समय रवि और इंस्पेक्टर कूमनकावु पहुंचे। पालघाट कस्बे के लिए आखिरी बस उनका इंतजार कर रही थी। उन्होंने बातूनी विक्रेता द्वारा तैयार किए गए शरबत के गिलास पीकर खुद को तृप्त किया।
इंस्पेक्टर ने कहा, 'इस सुनसान गांव में तुम, किस्मत के बड़े-बड़े दांव होते हैं, रवि।'
सचमुच अजीब; अनछुए रास्ते रवि को सम्मोहक शक्ति से अपनी ओर खींच रहे थे।
परीक्षा से एक रात पहले, वह हॉस्टल से चुपके से निकल गया। उसकी यात्रा शुरू हो चुकी थी।
विशाल, अशांत ब्रह्मांड की यात्रा, रेल के डिब्बों में बैठे लोगों के चेहरों की निगाहों के सामने, जो सहनशील और उदासीन थे। रातों में रवि सामान रखने वाले रैक पर सिमटकर रेल की धीमी आवाज़ में सो जाता था। रेलवे स्टेशनों के नाम बदलते रहे,

उनकी लिपि बदलती रही। फिर सड़क पर, ऊँची पर्वत श्रृंखलाओं पर, पेट्रोल की गंध से भरी बसों में घुमावदार मोड़ों से गुज़रते हुए। सड़क की धूल का रंग बदलता रहा, सूर्योदय और सूर्यास्त की जगहें बदलती रहीं, अनंत के आक्रमण में दिशाएँ खोती चली गईं। यह यात्रा उसे उदास उपनगरों से, गंदे धंधों वाली गलियों से, कैक्टस के गाँवों और कुष्ठ रोगियों की खोई हुई बस्तियों से, और आश्रमों से ले गई जहाँ केसरिया बिस्तरों में कामुक स्वामिनियाँ निर्वाण की प्रतीक्षा कर रही थीं। और अंत में, यह विश्राम, खासक में यह सराय...
इंस्पेक्टर ने कहा, 'हमें फिर से मिलना चाहिए।'
रवि ने उस बूढ़े आदमी के हाथों को पकड़ा, उसकी झुर्रीदार, पीड़ा से भरी हथेलियों को।
'जी हां, महोदय।'
मैं इस साल के मध्य में सेवानिवृत्त हो रहा हूँ।
‘आप अभी भी पालघाट में ही होंगे। यह कोई बहुत दूर नहीं है।’
‘कौन जाने, माश। जो पास रहते हैं, कभी-कभी उनसे पहुंचना सबसे मुश्किल होता है। कौन जाने, शायद यह हमारी आखिरी मुलाकात हो!’
वे हँस पड़े। इंस्पेक्टर और चपरासी इंतज़ार कर रही बस में चढ़ गए।
‘सिरदर्द कैसा है?’
हवाओं ने इसे ठीक कर दिया है।
'नमस्ते!'
बस चल पड़ी। रवि ने धूल के बैठने का इंतज़ार किया। उसने ताड़ के रेशों से बनी मशालों का एक बंडल खरीदा और खासक की ओर लंबी पैदल यात्रा शुरू की। जल्द ही अंधेरा हो गया। रवि ने एक मशाल जलाई और उसे हवा में लहराया। वह एक तेज़ लौ में बदल गई।
रवि जब लौटा तो नदी का पानी अभी भी गर्म था। उसने कपड़े उतारे और कुछ देर तक तेज़ धारा में बैठा रहा, फिर उठा और पौधशाला की ओर जाने वाले रास्ते पर चल पड़ा... जब वह सोने जा रहा था, तभी खामोश रात में रोने की आवाज़ सुनाई दी।
अल्लाहू अक़बर!
अल्लाहू अक़बर!

यह मुअज़्ज़िन की आहट थी, अंतिम नमाज़ के लिए। "हे भगवान," रवि ने मौन स्वर में कहा। अब वह शब्द कठोर या दूर का नहीं लग रहा था। वह पानी पीने के लिए उठा, वापस बिस्तर पर आया और शांत हो गया। मुअज़्ज़िन की आहट ने उसकी बेचैनी को विराम दे दिया था।
बाहर, रात अपनी विशालता के नशे में डूबी हुई थी। खसक के ताड़ के पेड़ों पर हवा चल रही थी। गाँव की सीमा से परे, देर रात राहगीर अपनी फाइबर की मशालें लहरा रहे थे, लौ और अंगारों की चिंगारियाँ फूट रही थीं। संकटग्रस्त अंतरिक्ष यानों की तरह, जो अपने दीप्तिमान एंटीना से संकट का संकेत दे रहे हों, वे अपनी सुनसान यात्रा जारी रखे हुए थे।

ड्रैगनफ्लाइज़

सिवरमन नायर इंस्पेक्टर का स्वागत करने नहीं आए, स्कूल में उनकी रुचि कम हो गई थी। छोटी-छोटी बातें उन्हें परेशान करती थीं। वे अपने अंदर गहरे गुस्से को लिए घूमते रहते थे, जिसका कारण वे समझ नहीं पाते थे। उन्हें किसी ऐसे व्यक्ति की ज़रूरत थी जिस पर वे अपना सारा दोष मढ़ सकें। उन्होंने एक मुसलमान को चुना। लेकिन उन्हें कोई सुनने वाला नहीं मिला—न तो हिंदू और न ही मुसलमान झगड़े के लिए तैयार थे, क्योंकि दोनों धर्मों में एक जैसी कोमल बेतुकी बातें भरी पड़ी थीं। खासक का इतिहास एक महान मौखिक कथा थी; यही और साझा गरीबी खासक को एक साथ जोड़े रखती थी। स्कूल के आने से सिवरमन नायर खुश हो गए थे, आखिरकार उन्हें अपनी गुस्से भरी कल्पनाओं के लिए एक प्रतीक, एक केंद्र मिल गया था। मुल्ला स्कूल के खिलाफ था, फिर भी स्कूल चलता रहा। रवि इस निजी संघर्ष से अनजान था। युवा शिक्षक ने मुल्ला से एक समझौता भी कर लिया था, जिसके तहत मुस्लिम बच्चों को मदरसे में कुरान की पढ़ाई पूरी करने के बाद स्कूल आने की अनुमति मिल गई थी। जब शिवरामन नायर ने रवि को माधवन नायर के साथ मेलजोल बढ़ाते देखा, तो उनकी निराशा और बढ़ गई। माधवन नायर परिवार का बिगड़ा हुआ भतीजा था जिसने दर्जी बनकर परिवार को कलंकित किया था। इसके बाद शिवरामन नायर का स्कूल आना-जाना कम हो गया।

रवि को सुखद आश्चर्य हुआ जब मकान मालिक बांस के फाटक पर प्रकट हुआ और बड़ी सावधानी से उसे खोलता और बंद करता रहा। एक नज़र में ही रवि को परेशानी का आभास हो गया। बूढ़े चेहरे पर अस्पष्ट शिकायत के भाव स्पष्ट थे। रवि द्वारा उसके लिए खींची गई कुर्सी को लेने से इनकार करते हुए शिवरामन नायर सीढ़ियों पर बैठ गया, कुछ विरोध के रूप में और कुछ प्लास्टर पर पड़ रही सूर्यास्त की गर्माहट का आनंद लेने के लिए। रवि भी उसके पास जाकर बैठ गया।
रवि ने कहा, 'आप ठीक नहीं लग रहे हैं, सिवरमन नायर।'
'मैं कैसे हो सकता हूँ?' रहस्यमय जवाब आया।
शिवरामन नायर हांफने और पसीना आने लगा, उसके शरीर में खून का प्रवाह तेज हो गया था। एक अधेड़ उम्र की मुस्लिम महिला कुएं पर रवि के अस्थायी स्नानघर और रसोई के लिए पानी भर रही थी।
'ये कौन है, माश?'
'चंद उम्मा, मेरी सेविका।'
शिवरामन नायर ने अपनी स्मृति में एक निशान बनाने के लिए कुछ पल रुके, और कुछ कड़वे और मौन क्षणों के बाद, रवि की ओर मुड़े, 'तो यह फिर से एक बौद्ध महिला है...'
'हां। और इसमें मेरी कोई गलती नहीं है—ऐसा नहीं है कि मुझे मुसलमानों से कोई दुश्मनी है। मैंने तुमसे कहा था कि मुझे एक नौकर चाहिए, तुम मेरे लिए एक नहीं ढूंढ पाए।'
सिवरमन नायर को अपनी गलती का एहसास हुआ और शर्मिंदा होकर उन्होंने बातचीत का रुख मोड़ दिया। 'कभी-कभी मुझे आश्चर्य होता है कि क्या आपका जिला बोर्ड दिवालिया हो गया है? क्या वे उचित वेतन पर किसी कार्यवाहक को नियुक्त नहीं कर सकते?'
बोर्ड बेवकूफ है, वे कंजूसी से अनुदान देते हैं और मुझसे उम्मीद करते हैं कि मैं स्कूल के सर्व-उपयोगी कर्मचारी को काम पर रखूँ...
और वो पैसा कहाँ है?
'तुम्हें पता है कहाँ, सिवरमन नायर। मुल्ला कागजों पर हमारा सहायक है।'
'और तुम उसे अनुदान राशि देते हो, और इस नौकर को काम पर रखने के लिए अपनी जेब से खर्च करते हो—'
तर्क दिन-ब-दिन और अधिक उलझता जा रहा था।

बातचीत फिर धीमी पड़ गई, तभी रवि ने अधीरता से पूछा, 'सिवरामन नायर, हम किस बारे में बात कर रहे हैं?'
‘काफिरों के बारे में, यवनों के बारे में, बौद्धों के बारे में, तुम्हारे नए-नए रिश्तेदारों के बारे में।’
रवि ने राहत की सांस लेते हुए हँस दिया।
‘हंसो मत, माश। मुझे वो पैसा दो, मैं तेल खरीदूंगा और नाग देवताओं का अभिषेक करूंगा जो तुम्हारे पापों को दूर कर सकते हैं।’
महिला का दिन का काम समाप्त हो चुका था। शिवरामन नायर उसे जाते हुए देखता रहा, मानो पागलों की तरह उसे निहार रहा हो। जल्द ही वह भी उठकर जाने लगा। वह अपने शरीर के बोझ तले लड़खड़ाते हुए आंगन पार करने लगा। उसका गुस्सा, उसकी उलझन अब स्कूल या घरेलू नौकरों के बारे में नहीं थी, बल्कि अज्ञात और पागलपन भरे युद्धों का अवशेष थी।
माधवन नायर ने ही उसे पौधशाला भेजा था। चंद उम्मा रवि के सामने खड़ी थी, एक पीली और उदास महिला जिसके गालों और आंखों के आसपास काले धब्बे थे, जो कुपोषण के लक्षण थे।
‘उम्मा, क्या आप खाना बनाने में मेरी मदद कर सकती हैं?’ रवि ने पूछा।
‘मैं कर सकता हूँ, सार।’
आप चाहें तो यहां खाना खा सकते हैं।
उसे इसकी उम्मीद नहीं थी—वह भावविभोर हो गई और अपने छोटे बेटे के बिखरे बालों को सहलाने लगी, जो उसके पीछे छिपा हुआ था।
'मेरी पहली संतान, सार,' उसने शरमाते हुए कहा।
‘तुम्हारा नाम क्या है, युवक?’ रवि ने कहा।
‘सार को बताओ,’ उसकी माँ ने प्यार से कहा। लड़के ने झाँक कर उत्तर दिया, ‘कुन्हू नूरू।’
‘शाबाश,’ रवि ने कहा, ‘ऐसा कैसे हो सकता है कि मैं तुम्हें स्कूल में नहीं देखता? तुम्हारी उम्र कितनी है?’
‘आठ,’ माँ ने उत्तर दिया।
रवि ने देखा कि लड़के ने कमीज़ नहीं पहनी थी, और उसने कमर पर केवल एक फटा हुआ कपड़ा बांध रखा था। रवि ने कुछ पैसे निकाले और चंद उम्मा को दे दिए।

उन्होंने कहा, 'यह एक शर्ट और शॉर्ट्स के लिए है। इसे माधवन नायर को दे दो और उनसे कह दो कि मुझे यह जल्द से जल्द चाहिए। और मैं नूरू को तुरंत काम पर लगा रहा हूँ।'
शिक्षक और माता-पिता कुछ देर के लिए चुप हो गए। फिर चांद उम्मा कांपती हुई आवाज में बोलीं, 'हम पर श्राप है, साहब।'
'शाप?' रवि हँसा। 'मैं ध्यान रखूँगा कि शाप नूरू के साथ स्कूल न जाए।'
'या अल्लाह!' उसने कहा।
अगली शाम कुन्हू नूरू अपनी नई कमीज और शॉर्ट्स पहनकर आया। उसके पीछे उसकी चार साल की बहन चंदू मुत्थु बिना कपड़ों के चल रही थी।
'माफ़ करना, नन्हे बच्चे,' रवि ने कहा, 'मैंने तुम्हें छोड़ दिया। मैं बता दूंगा। माधवन नायर आपके लिए कुछ फ्रॉक बनाएंगे।'
'नहीं चाहिए,' चंदू मुत्थु ने तुतलाया।
'क्या आपको फ्रॉक नहीं चाहिए?'
'इसे लड़के को दे दो।'
क्या आपको प्रिंटेड फूलों वाली फ्रॉक पसंद नहीं हैं?
'लड़के को जल्दी बड़ा होने दो।'
चांद उम्मा खड़ी देख और सुन रही थी। वह ज़ोर से हंस पड़ी, फिर अपने आंसू पोंछे। उसने कहा, 'यह उसका स्वभाव है।'
घर पर, जहाँ वे ज्यादातर समय पतले चावल के दलिया से ही काम चलाते थे, चंदू मुत्थू अपने मिट्टी के कटोरे में हाथ डालती, चावल के दानों की छोटी-छोटी तलछट इकट्ठा करती और उसे कुन्हू नूरू के कटोरे में डाल देती।
'उम्मा,' वह अपनी मां से कहती थी, 'लड़के को जल्दी बड़ा होने दो।'
'इंशा अल्लाह, मेरे प्यारे बच्चे,' चांद उम्मा कहती थीं, 'और फिर तुम्हारे सारे दुख दूर हो जाएंगे।'
'अम्मा, लड़का कब बड़ा होगा?'
'अगली ईद तक, मेरे बच्चे।'
'उम्मा, अगली ईद कब है?'
'चार महीने बीतने के बाद, मेरे प्रिय।'
और इस तरह मां और बेटी ने लड़के के बड़े होने का इंतजार किया...

जल्द ही कुन्हू नूरू को उसकी स्लेट और पेंसिल मिल गई। वह छोटी सी तेल की बाती के पास बैठकर अपना होमवर्क करने लगा। चांद उम्मा दीपक की हल्की रोशनी में खड़ी होकर अपने सबसे बड़े बेटे को फ्रेम वाली स्लेट पर लिखते, मिटाते और फिर लिखते देखती रही, अक्षर, अंक, जिनमें से कुछ भी उसे समझ नहीं आता था। वह काफी देर तक खड़ी रही, अपने घर में हो रही अद्भुत घटनाओं में खोई हुई। कुन्हू नूरू को अपनी त्वचा और बालों पर उसकी स्नेह भरी निगाहें महसूस हुईं और वह बेचैन हो गया।

‘क्या बात है, अम्मा?’

'कुछ नहीं, मेरी प्यारी।'

स्कूल के बाद रवि अपनी आरामकुर्सी पर लेटा हुआ था। चंदू मुत्थू सीढ़ियों पर सिकुड़कर बैठी अपनी माँ को कुएँ तक जाते और वापस आते हुए नीरस ढंग से देखती रही।

‘उम्मा ...’

'हां, मेरे बच्चे?'

‘थक गई हो, उम्मा?’

नहीं, मेरे प्यारे बच्चे।

चंदू मुत्थु हर बार अपनी मां के भरे हुए घड़े के साथ वापस आने पर वही सवाल दोहराती थी।

‘उम्मा ...’

'जी हां, मेरी प्यारी?'

‘जब लड़का बड़ा हो जाएगा, तो आपको पानी ढोने की जरूरत नहीं पड़ेगी, अम्मा?’

‘इंशा अल्लाह, मेरे प्यारे।’

‘यह कब होगा, उम्मा?’

जब हम अगली ईद का चांद देखेंगे...

रवि आरामकुर्सी पर लेटा हुआ सुन रहा था। अब तक वह आशा और चंद्रमाओं के जादुई कैलेंडर के इस दिलचस्प संवाद से परिचित हो चुका था।

एक बार सप्ताहांत में उन्होंने कोझनास्सेरी नामक छोटे कस्बे से चॉकलेट खरीदी। उन्होंने भाई और बहन को चार-चार टुकड़े दिए। रवि ने चिढ़ाते हुए कहा, 'चंदू मुत्थू, क्या तुम अपना हिस्सा उस लड़के को नहीं देना चाहते?'

चंदू मुत्थु झिझके, फिर गहन विचार के बाद कुन्हु नूरू के लिए एक टुकड़ा बढ़ाया।
‘छोटी बच्ची,’ कुन्हू नूरू ने कहा, ‘तुम अपना हिस्सा रख लो।’ राहत महसूस करते हुए उसने चॉकलेट निकाल ली। रवि हंस पड़ा।
चांद उम्मा झाड़ू लगाने आई थीं, तभी उन्होंने नन्ही बच्ची की चॉकलेट खाने की ललक को देख लिया। उनकी आँखों में एक कोमल उदासी झलक रही थी। उन्होंने कहा, 'इन्हें चॉकलेट की आदत मत लगने देना, साहब। जब आप यहाँ से चली जाएंगी, तो मेरे बच्चे परेशान और दुखी होंगे।'
दिन बीतते गए, चांद उम्मा के गालों पर मौजूद धब्बे धीरे-धीरे साफ होने लगे और जल्द ही पूरी तरह से गायब हो गए, त्वचा गहराई से साफ हो गई।
पिछली बार गुस्से में आने के एक महीने बाद शिवरामन नायर फिर से आए।
'मुझे लगा कि आप यहां का रास्ता भूल गए हैं,' रवि ने हल्की-फुल्की बातचीत शुरू करने की कोशिश करते हुए कहा, लेकिन शिवरामन नायर शिष्टाचार के मूड में नहीं थे।
उसने सीधे-सीधे पूछा, 'तो क्या वह अभी भी यहीं है?'
'कौन?'
‘बुद्ध स्त्री।’
‘हां,’ रवि ने दृढ़ता से कहा।
‘माश,’ मकान मालिक ने धमकी भरे लहजे में कहना शुरू किया, ‘मैं तुम्हें कुछ बताने आया हूँ, हालाँकि इससे मेरा कोई लेना-देना नहीं है। तुम इस मुस्लिम महिला के साथ क्यों रह रहे हो?’
रवि दंग रह गया। 'यह घिनौना झूठ कौन फैला रहा है?'
क्या तुम उसके साथ नहीं रह रहे हो?
लेकिन आपको यह झूठ किसने बताया?
‘कोई भी हो। क्या तुमने ही उसे इस नन्हे से स्कूल में नहीं रखा? तुम अपनी गलती क्यों नहीं मान लेते?’
‘किस बात की जिम्मेदारी लेनी है?’
‘जो भी हो,’ सिवरमन नायर बुढ़ापे की सुस्ती में वापस लौट गए। वे जाने के लिए उठे, लेकिन अपने छोटे-छोटे बालों और गर्दन के पिछले हिस्से पर दिख रहे पसीने को पोंछने के लिए रुक गए।

‘हे महामाया!’ उसने बुदबुदाते हुए कहा, ‘मुझे किन घिनौने पापों का साक्षी बनना पड़ेगा!’
एक पल के लिए रवि ने शिवरामन नायर को वापस बुलाने के बारे में सोचा—वह इस दुर्बल मुखिया से बात करके मामला सुलझा सकता था। फिर, इस प्रयास की निरर्थकता को समझते हुए, वह उन्हें जाते हुए देखने के लिए बैठ गया।
अगले दिन छुट्टी थी। चंद उम्मा दोपहर से कुछ पहले खाना बनाने आई। रवि उनके पीछे-पीछे गलियारे में गया, जो उसका रसोईघर और शयनकक्ष दोनों था। रवि पलंग पर बैठ गया। चंद उम्मा चूल्हे के पास झुकी हुई थी। वह तनाव में थी और उसने रवि की ओर नहीं देखा।
‘उम्मा!’ रवि ने उनका ध्यान आकर्षित करने के लिए कहा। किसी कारणवश उन्हें इसका पूर्वाभास हो गया था और वे बिना किसी झिझक के रवि के सामने आकर खड़ी हो गईं।
बैठ जाओ।
उसने फर्श पर बैठना चुना।
‘हमारे बारे में ये झूठ क्या है जो मैं सुन रहा हूँ?’ रवि ने पूछा। ‘शिवरमन नायर को किसने बताया है कि तुम मेरी प्रेमिका हो?’
‘कुप्पू-अच्चन,’ उसने धीमी, सूखी फुसफुसाहट में कहा।
‘कुप्पू-अच्चन को मुझसे क्या शिकायत है?’
‘यह उसका स्वभाव है।’
चूल्हा बुझ गया था।
‘मुझे चूल्हा जलाने दो,’ उसने कहा।
बैठ जाओ!
छत पर लगी अकेली कांच की टाइल से सूरज की रोशनी अंदर आ रही थी। रोशनी की किरणें उसके चेहरे पर एक अद्‌भुत चमक के साथ पड़ रही थीं, जहां कांच के धब्बे हटकर एकदम पारदर्शी हो गए थे।
‘आपके पति की मृत्यु को कितना समय हो गया है?’
'चार साल। चंदू मुत्थु के जन्म के कुछ ही समय बाद।'
जब उसने यह कहा तो उसके चेहरे पर गहरा दुख झलक रहा था, मानो किसी अस्पष्ट अभिशाप का पर्दा उस पर पड़ा हो...

यह खासक के बीते समय में घटित हुआ था, लेकिन यह एक गहरे, प्रतिशोधी दुख के रूप में जीवित रहा। कब्रिस्तान के किनारे खड़ा विशाल इमली का वृक्ष उस दुख का साक्षी था। अनगिनत वर्षों से, खासक का मानना था कि जब तक किसी न किसी तरह से इसका उद्धार नहीं हो जाता, तब तक यह वृक्ष नहीं मरेगा। इसी वृक्ष के नीचे, बीते समय में, एक बूढ़े, विधवा ज्योतिषी और उसकी बेटी ने अपनी कुटिया बनाई थी। सफेद घुड़सवारों का एक दल अपने ऊंटों के लिए पानी की तलाश में वहाँ आया। उन्होंने बूढ़े ज्योतिषी को मार डाला और बेटी का बलात्कार किया। उन्होंने उसे दलदल में मरने के लिए छोड़ दिया और पहाड़ों की ओर चल दिए, लेकिन जैसे ही वे तलहटी में पहुँचे, बिच्छू उनके युद्ध वस्त्रों में घुस गए और काले कोबरा ने ऊंटों को काट लिया। ऊंट और सवार जंगल में मर गए, और पहाड़ की मिट्टी उनकी हड्डियों पर जम गई। मृत लड़की दलदल से उठी और इमली के वृक्ष को अपना निवास स्थान बना लिया। देवी के रूप में पूजी जाने वाली, वह पवित्रता की रक्षक थी। इमली का पेड़ बहुत विशाल हो गया था और इतनी उम्र होने के बावजूद उस पर खूब फल लगते थे। कूमनकावु और आसपास के इलाकों से इमली के व्यापारी और उनके साथ चढ़ने वाले लोग आते-जाते रहते थे। पेड़ पर इमली की भरपूर फसल होती थी, फिर भी चढ़ने की हिम्मत कम ही लोग करते थे। क्योंकि पेड़ का तना फिसलन भरी काई से ढका था और ऊपरी शाखाओं में जहरीली चींटियाँ थीं। लेकिन अगर चढ़ने वाले की पत्नी पवित्र होती, तो देवी काई को मजबूत पकड़ में बदल देतीं और चींटियाँ रास्ता छोड़ देतीं। पुरुष इस परीक्षा से बचना चाहते थे, इसलिए हर मौसम में मीठे-खट्टे फल दलदल में गिर जाते थे या चमगादड़ों के झुंड उन्हें खा जाते थे... चार साल पहले, चंद उम्मा के पति पेड़ की तलहटी में खड़े होकर ऊपर देख रहे थे। वे चकित रह गए, उन्हें लगा जैसे वहाँ खजाना छिपा हो। उन्होंने चढ़ना शुरू किया। अगले दिन ग्रामीणों ने उसे दलदल के किनारे पड़ा हुआ पाया, खोपड़ी के टुकड़े-टुकड़े होने के बावजूद खून बह रहा था और बैंगनी और मैजेंटा रंग की चींटियों के झुंड उसकी आँखों और जननांगों पर मंडरा रहे थे। उसी दिन चांद उम्मा के पिता ने खसक छोड़कर घुमंतू फकीर बनने का फैसला किया।

विधवा होने की इस पीड़ादायक स्थिति ने अलगाव और असहनीय अकेलेपन को जन्म दिया। गाँव वालों की यह प्रथा थी कि वे एक-दूसरे की छतों की मरम्मत में मदद करते थे, लेकिन अब कोई भी उसकी छत की मरम्मत करने नहीं आता था। मानसूनी हवाओं

में ताड़ के पत्तों की सड़ती हुई पत्तियाँ फड़फड़ा रही थीं और बिजली की चमक से झोपड़ी ठंडी नीली आग से भर गई थी। इसी झोपड़ी में माँ और बेटी अपने बेटे के बड़े होने की प्रार्थना कर रही थीं...
रवि ने चंद उम्मा से पूरी कहानी दोबारा सुनाने को कहा। वह प्रकाशमान सूर्य की किरण गायब हो गई। कहानी समाप्त होने पर रवि ने पूछा, 'उम्मा, क्या आपको लगता है कि देवी आपको दंड दे रही थीं?'
उसने कठोर और आरोप भरी निगाहों से उसकी ओर देखा। फिर साहस शर्म में बदल गया, और चांद उम्मा फूट-फूटकर रोने लगी। रवि ने उसका सिर ऊपर उठाया और उसकी आँखों और गालों से आँसू पोंछने लगा। उसने उसे कंधों से पकड़कर पलंग पर बिठाने की कोशिश की। चांद उम्मा ने खुद को छुड़ाया और दीवार से टेक लगाकर खड़ी हो गई, उसकी छाती ज़ोर-ज़ोर से धड़क रही थी। रवि समझ नहीं पाया कि यह दृश्य कितनी देर तक चला। वह पास आकर उसके बगल में बैठ गई।
रवि ने धीरे से अपना हाथ उसके कंधे पर रखा।
‘तुम नहीं जानते, सार—’ उसने कहना शुरू किया।
'क्या आप नहीं जानते हो?'
‘छोटे बच्चों का दुख।’
रवि का हाथ उसके कंधे से नीचे सरक गया। बाहर दोपहर का शांत वातावरण था, और उस अद्भुत खोखले स्थान से बच्चों के खेलने की आवाज़ें, एक प्रवासी पक्षी की अनोखी चहचाहट, और बिना ग्रीस वाले बैलगाड़ी के पहिये की थकी हुई चरमराहट सुनाई दे रही थी। वह उदास होकर और करीब आ गई।
‘उम्मा!’
गलियारे के प्रवेश द्वार पर कुन्हू नूरू खड़ी थी। चांद उम्मा पलंग से उठी। उसने बुझे हुए चूल्हे की ओर देखा।
‘मैं अब जा रहा हूँ, सार...’
उस दिन उसने खाना नहीं बनाया।
रवि अलियार की चाय की दुकान की ओर चल पड़ा। आप्पम में ताड़ी की महक आ रही थी, जिससे आटे को खमीर उठाया गया था। कुप्पू-अच्चन लोड-रेस्ट पर धूप सेंक रहा था।
‘चलिए साथ में चाय पीते हैं,’ रवि ने आमंत्रित किया।

‘आए, आए!’ कहानी सुनाने वाले ने कहा, ‘मेरे लिए नहीं।’
'ओह अब छोड़िए भी!'
'ठीक है, अगर तुम ज़िद कर रहे हो तो—अलियार, दो-तीन अप्पम भी निकाल दो।'
‘लो, भूखे भूत,’ चाय की दुकान के मालिक ने आप्पम और चाय को भार-ढक्कन पर रख दिया। कुप्पू-अच्चन लालच से खाने-पीने पर टूट पड़ा, उसका चेहरा बिगड़ गया था। उसने चाय की दुकान के अंदर रवि को पुकारा, ‘कुट्टी, धूप सुहावनी है और नदियाँ भरी हुई हैं। क्या हम मछली पकड़ने चलें?’
‘मैं नहीं, कुप्पू-अच्चन,’ रवि ने उत्तर दिया।
'यही वह समय है जब बड़ी मछलियाँ सूरज की रोशनी में बाहर आती हैं।'
'मुझे इसमें शामिल मत करो, कुप्पू-अच्चन।'
रवि चाय की दुकान से बाहर निकला। वह रुककर खासक के उस कमजोर और निंदक को गौर से देखने लगा।
'मजेदार मछली पकड़ने, कुप्पू-अच्चन!'
रवि धान के खेतों की ओर चला गया। अप्पू-किली चीड़ के पेड़ों के बीच ड्रैगनफ्लाई की तलाश कर रहा था।
‘वान दागोनफीस, एटो?’ किली ने अपनी बेहद खराब तुतलाहट के साथ पूछा।
‘अभी नहीं, मेरे तोते,’ रवि ने उस मंदबुद्धि तोते के विशाल सिर पर थपथपाते हुए कहा। ‘जब तुम सोने के लिए घर आओ तो मेरे लिए एक ले आना।’
चलते-चलते रवि उस दिन की घटनाओं पर फिर से विचार करने लगा - इच्छा, उदासीनता और संतुष्टि, और अनपेक्षित जिज्ञासा। वह कहाँ था, और इस जीवंत और मृत घटनाओं के भंवर में वह क्या था?
रवि पहाड़ी की चोटी पर चल पड़ा; ऊपर आसमान में लाखों तितलियाँ मंद धूप में उड़ रही थीं। मृतकों की यादें, चमत्कारिक मुक्ति की लालसा करती तड़पती ...

खंडहर

अतीत के कुप्पू-अच्चन को कोई याद नहीं करता था, युवा कुप्पू जो ताड़ी निकालता था; जीवितों की यादों को कोई मक्खी भी नहीं ले जाती थी। कुप्पू-अच्चन को स्वयं भी यादें बोझिल लगती थीं...

पंद्रह साल पहले, दोपहर के समय, कुप्पू की ताड़ी की दुकान में। ग्राहक कम थे और कुप्पू मन ही मन चिंतित था। पीले पड़ते धान के खेतों को निहारते हुए, उसकी नज़र डाकिया केलू मेनन पर पड़ी, जो पहाड़ी से नीचे खसक की ओर जा रहा था।
वह दुकान में दाखिल हुआ और एक मग भर ताड़ी और भुनी हुई बकरी की आंत का एक टुकड़ा लेकर बैठ गया।
केलू मेनन ने हंसमुख अंदाज में कहा, "इससे बेहतर जलपान के बारे में सोच भी नहीं सकता, लेकिन आप इसे कब तक खुला रखेंगे?"
कुप्पू की पत्नी कल्लू ने पीछे के बैठक कक्ष से झाँका। उसने कहा, 'हम इसे बंद नहीं करेंगे।'
कुप्पू ने कुछ नहीं कहा।
‘यह नया कानून है,’ डाकिया ने सरकार के एक सदस्य के रूप में बोलते हुए कहा। ‘हम कानून का उल्लंघन नहीं होने दे सकते।’
इसके कुछ दिनों बाद, कुप्पू सूर्यास्त के समय ताड़ के पेड़ों के नीचे टहल रहा था। उसने पेड़ों को छुआ और उनमें से बहने वाले रस का अंदाज़ा लगाया, जो तनों से होते हुए ऊपर की कलियों तक पहुँचता था। उसने उस रस को निकालकर खट्टी-मीठी ताड़ी बनाई। उसने इस ताड़ी को अपनी छोटी सी दुकान में बेचा। यह उसका व्यापार था, एक ईमानदार और निडर आजीविका; लाख कोशिश करने के बावजूद वह समझ नहीं पा रहा था कि कोई इसे असंभव क्यों बनाएगा। उसने उदास होकर उन भव्य ताड़ के पेड़ों को ढलती हुई शाम में धुंधली परछाइयों में बदलते देखा।
कुप्पू ने अपनी दुकान खुली रखी। अब वहाँ कोई पीने नहीं आता था। कुप्पू ताड़ के बागों में घूमता रहता था; वह एक दिन में बीस ताड़ के पेड़ों पर चढ़कर रस निकाल सकता था; उसके हाथों और छाती पर सुनहरे रंग के कठोर निशान थे, जो रस निकालने वाले की ताकत का प्रतीक थे।
गांववाले उससे तर्क करने की हिम्मत नहीं करते थे; वह केवल माधवन नायर की बात सुनता था, जो उससे कई साल छोटा था। वे एक-दूसरे को कुशल कारीगर और स्वतंत्र व्यक्ति मानते हुए सम्मान करते थे। जब माधवन नायर ने उस शाम ताड़ के पेड़ों के बीच कुप्पू को देखा, तो उसे अहसास हुआ कि वह पीड़ा का एक मूक अभिनय देख रहा है, ताड़ पर चढ़ने वाले का प्रेम-क्रीड़ा का नाटक।
‘मैंने अपने जीवन में बहुत सारी गलतियाँ की हैं,’ कुप्पू ने कहना शुरू किया।

‘ऐसा कौन नहीं है?’ माधवन नायर ने विरोध जताया।
‘मैंने किया है। लेकिन मैंने किसी की जान नहीं ली। कल शाम को लगभग ऐसा कर ही दिया था। क्या आप अनुमान लगा सकते हैं कि मायांडी ने मुझे क्या करने की सलाह दी थी?’
दर्जी चुपचाप खड़ा होकर सुन रहा था।
‘मयंदी चाहती है कि मैं कचरे और जहर से नकली ताड़ी बनाऊं...’ कुप्पू ने बड़े गुस्से में कहा।
कुप्पू ताड़ के पेड़ से टेक लगाकर खड़ा था; माधवन नायर ताड़ के पेड़ से लकड़ी निकालने वाले की मजबूत मांसपेशियों और मेहनती आदमी के सम्मान को देखकर चकित रह गया। ताड़ की हवाओं ने कुप्पू को शांत कर दिया।
वे ठंडी रात में चल रहे थे; दर्जी बातें कर रहा था और तर्क दे रहा था।
‘मुझे क्या करना चाहिए?’ ताश बजाने वाले ने फिर पूछा।
'इसे बंद कर दो,' माधवन नायर ने नरमी से कहा।
और इस तरह ताड़ी निकालने वाले की गाथा समाप्त हुई, एक ऐसे युग की गाथा, जब उड़ने वाले सर्प अपनी रहस्यमयी यात्राओं के दौरान ताड़ के पेड़ों की चोटियों पर विश्राम करते थे। ताड़ी निकालने वाला इन आगंतुकों को प्रसन्न करने के लिए मीठी ताड़ी का अर्पण करता था। वह अपने कुल की भलाई के लिए ताड़ के पेड़ की तलहटी में फूल रखता था। उन दिनों ताड़ी निकालने वाले को चढ़ना नहीं पड़ता था, ताड़ का पेड़ उसके लिए झुक जाता था। लेकिन जब ताड़ी निकालने वाले की पत्नी ने अपना कौमार्य खो दिया, तब ताड़ का पेड़ झुकना बंद हो गया...
कुप्पू की पत्नी कल्लू, खासक से कुछ मील दूर स्थित यक्कारा गाँव की रहने वाली थी। एक समृद्ध किरायेदार किसान की बेटी, वह सात बहनों में सबसे छोटी थी; किसान ने उनमें से छह की शादी कर दी थी, और जब कल्लू की बारी आई, तो परिवार के सोने और धन में बहुत कम बचा था।
इस तरह वह खासक में एक तपस्वी की दुल्हन बनकर आई, जिसका सामाजिक स्तर एक किरायेदार किसान से भी नीचा था। चौदह साल की दुल्हन, अपने विशाल पारिवारिक फार्महाउस, उसके चारों ओर के आंगन और उन अस्तबलों से दूर आ गई थी, जहाँ भूरे भैंस के बछड़े पहचान में अपना सिर हिलाते और नथुने फुलाते थे। उसने अपने पति को अकेला पाया और घर धूल, मकड़ी के जालों, काई और कूड़े से भरा

हुआ था। उसने अपनी सिसकियों को दबाया और कसम खाई कि वह अपने पति को कुछ ठोस कदम उठाने के लिए प्रेरित करेगी। शादी के कुछ ही हफ्तों बाद कल्लू ने कहा, 'चलो कुछ जमीन किराए पर लेते हैं।' कुप्पू अपनी बाल-पत्नी की हर इच्छा का ख्याल रखता था, हालाँकि उसे किरायेदारी की सामंती बेइज्जती से नफरत थी। उसने उसके लिए जमीन ली, लेकिन पहली ही फसल के समय जमींदार के अभद्र व्यवहार के कारण उसे छोड़ना पड़ा। फिर भी कल्लू ने हार नहीं मानी।
एक रात बिस्तर पर लेटे हुए उसने उससे कहा, 'यहाँ एक ताड़ी की दुकान थी, जो बहुत पहले बंद हो गई थी। चलो हम उसके लिए बोली लगाते हैं।'
कुप्पू को वह बेहद आकर्षक लगी, लेकिन उतनी ही मोहक थी रात में हवा से लहराते ताड़ के पेड़ों की पुकार।
उन्होंने कहा, 'मैं उन्हें छोड़ नहीं सकता। वे मुझसे प्यार करते हैं।'
कल्लू ने पीछे हटकर उसे बेहतर ढंग से देखा, उस व्यक्ति को जिसने अपनी अपार शक्ति को कोमलता में बदल दिया था। फिर उसने उसे अपने करीब खींचा और खिलखिलाकर हंसते हुए कहा, 'मुझे जलन हो रही है!'
कल्लू को ताड़ के पेड़ विशालकाय काली दैत्यों की तरह लगते थे जो हवा में अपने बालों को लहरा रही हों।
उन्होंने कहा, 'मैं टैप करूंगा।'
‘हम दोनों चीजें लेंगे,’ उसने कहा। ‘जब आप ताड़ के पेड़ों पर होंगे, तब मैं दुकान तक देख लूंगी।’
उसके लिए ताड़ी की दुकान रुतबे की निशानी थी। बेशक किसान होना ज़्यादा रुतबे की बात थी, लेकिन उसने ताड़ी बेचकर अमीर बनने वाले लोगों के बारे में सुना था। इस अंतहीन कल्पना में वह खुद अमीर बन गई और अमीरों की तरह कपड़े पहनने लगी; गहनों से लदी हुई, वह यक्कारा गई, अपने पिता के खेत में, उन बछड़ों के पास जो यादों में खोकर गुनगुना रहे थे... दुकान कई सालों तक कम ग्राहकों के कारण चलती रही, और कल्लू कभी भी उस शानदार सफर पर नहीं जा पाई।
दुकान बंद होने के बाद, कुप्पू एक सुबह ताड़ के बाग की ओर चल पड़ा, उसने ताड़ काटने वाले का वेश धारण किया हुआ था—सीने पर भैंस की खाल की ढाल और कमरबंद से लटकी हुई म्यान में एक चौड़ा चाकू। खेतों में टहल रहे मुल्ला को इस सशस्त्र आकृति को देखकर डर लग गया।

‘कुप्पू, तुम कहाँ जा रहे हो?’ उसने हिचकिचाते हुए पूछा।
वास्तविकता की दुनिया से आए इस प्रश्न से कुप्पू को गहरा सदमा लगा।
‘अरे,’ उसने कहा, ‘पत्तियों को काटना...’
छप्पर ठीक करने का मौसम नहीं था, लेकिन मुल्ला ने उससे और कोई सवाल नहीं किया। वह ताड़ी निकालने वाले को जाते हुए देखने लगा और इस सम्मानित व्यक्ति को मतिभ्रम में दोबारा न जाने देने की प्रार्थना की। उपवन में, कुप्पू अपने पसंदीदा ताड़ के पेड़ पर चढ़ गया, जो उसकी काली रखैलियों में रानी जैसा था; वह एक पत्ते के तने पर बैठा, शून्यता का चिंतन कर रहा था; हवा उसके चारों ओर पहाड़ी धुंध को घुमा रही थी, और धरती बहुत दूर लग रही थी... नीचे घर में, कल्लू उन बड़े मिट्टी के कलशों से धूल झाड़ रही थी जिनमें कभी उनकी मेहनत और उम्मीदों का पेय रखा जाता था, जो अब संयम कानून और अवैध शराब बेचने वाले ने नष्ट कर दिया था। ताड़ी की गंध अभी भी लंबे समय से सूखे कलशों में बसी हुई थी, शायद उसकी आकाशीय प्रतिरूप; उदासी उस पर छा गई। वह पिछवाड़े में गई और दूर-दूर तक देखने लगी, उसे लगा जैसे उसने यक्कारा का छोटा पुल, अपने पिता के खेत का द्वार, बाड़ों के किनारे लगे फलदार पेड़, और वह अस्तबल देखा जहाँ उसके मूक रिश्तेदार रहते थे। वह फिर से अपने घर में लौट आई, उसकी घोर एकांत में। उसका पति तब तक ताड़ के पेड़ से नीचे नहीं उतरेगा जब तक कि वह पागलपन का जादू खत्म नहीं हो जाता। उसका किशोर बेटा पहाड़ी इलाके में एक चाय बागान में काम करता था। जल्द ही कलशों में वह रहस्यमयी सुगंध भी सूख जाएगी। वह अपने साथ जो थोड़े-बहुत गहने लाई थी, उन्हें या तो गिरवी रख दिया गया था या बेच दिया गया था। अब उसे एक बोझ हल्का होने जैसा महसूस हो रहा था। बस उसकी चांदी की पायलें ही बची थीं। उसने उन्हें अपनी छोटी सी पान की टोकरी में रख दिया। उसने सामने के आंगन की ओर देखा—पुरानी फिसलन भरी काई फिर से उग आई थी। कल्लू सामने के दरवाजे से अंदर आई थी। वह पीछे के दरवाजे से बाहर चली गई। गिरवी रखे गहनों की तरह यादों को पीछे छोड़ते हुए, कल्लू ने खासक को छोड़ दिया।
पालघाट का ग्रामीण इलाका संयम के दौर से गुजर रहा था। जल्द ही आदिम रसायनशास्त्रियों ने मादक पेय पदार्थों का व्यापार अपने हाथ में ले लिया। शराब बनाने और आसवन करने का काम उन पदार्थों से शुरू हुआ जो मनमाने ढंग से इकट्ठा किए जाते थे, जिनमें मिठाई बनाने वालों के एसेंस से लेकर कीड़े-मकोड़े तक शामिल थे।

ग्रामीण स्कूलों में उपस्थिति कम हो गई, और अक्सर जब कोई शिक्षक किसी छात्र के अनुपस्थित होने का कारण पूछता, तो बच्चे जवाब देते, 'सर, वो कनखजूरे पकड़ने गए हैं!'
सबसे लोकप्रिय पेय किण्वित ताड़ी थी जिसमें अमोनियम सल्फेट मिलाया जाता था, जिसे सरकार खाद के रूप में उदारतापूर्वक वितरित करती थी। यह प्राकृतिक ताड़ी के सबसे करीब थी। हालांकि, सल्फेट युक्त इस पेय के साथ एक शर्मनाक खतरा भी था - रसायन की अधिक मात्रा लेने से तुरंत पेट खराब हो जाता था।
कुप्पू इस छल-कपट के दलदल में अकेला खड़ा था, उसने संयम कानून को अराजकता की जननी कहकर कोसा। कल्लू इसका शिकार था। उसके मतिभ्रम के लंबे दौर समाप्त हुए, वह अपनी झोपड़ी में लौट गया। उसने सीने का कवच और ताड़ी निकालने वाला चाकू दीवार पर टांग दिया और फिर कभी उन्हें छुआ तक नहीं, और कुछ समय बाद बड़े-बड़े बालों वाले मकड़ियों ने बिना पकाए चमड़े के पीछे अपना घर बना लिया। उस झोपड़ी में, जो कभी उनका घर और ताड़ी की दुकान हुआ करती थी, कुप्पू कई दिनों तक जमा धूल और कूड़े में पड़ा रहा, कई दिनों तक बिना भोजन के रहा। फिर, वह खासक में भटकता रहा, हर बार पहले से अधिक पतला और सूखा हुआ दिखाई देता; किसी ने ध्यान नहीं दिया, कोई ड्रैगनफ्लाई जीवितों की यादें नहीं संजोए हुए थी। कभी-कभी अगर हवा उसे बहा ले जाती, तो वह चेताली तक चला जाता। वह वापस आता, और उस छवि के चिंतन में डूब जाता जो आने वाले वर्षों तक उसके मन में एकमात्र छवि रहने वाली थी। कल्लू के माता-पिता मर चुके थे, और अपने पीछे गठिया से पीड़ित दादी को छोड़ गए थे। कुप्पू एक ऐसे पागलपन भरे निराशा के दौर में डूब गया, जिसमें वह चीजों को अपनी मर्जी से देखता था; उसने कल्लू को यक्कारा की छोटी नदी में नहाते हुए देखा, अब चट्टानों पर बैठी, धूप सेंकती हुई, नग्न स्तनों वाली, कमर पर एक पतला तौलिया लपेटे हुए, नारायणी की तरह। पास के टाइल कारखाने के लड़के नदी के किनारे मंडराते रहते थे, वे घूरते और सीटी बजाते थे। वे गठिया से पीड़ित दादी के घर के आसपास रातों में सीटी बजाते थे। नदी में कल्लू की छवि कुप्पू के मन में घर कर गई। वह छवि उसके दिमाग में सड़ती रही और फिर रिसकर उसे पूरी तरह से घेर लिया। कुप्पू पंद्रह साल तक इस सड़न के दौर में सिकुड़कर सोता रहा...

किसी को ठीक से पता नहीं था कि वह अलियार की दुकान के सामने लोड-रेस्ट पर कब प्रकट हुआ। ऐसा लगता था मानो वह हमेशा से वहीं रहा हो। उसके माथे पर भूरे बालों की एक लट लटकी हुई थी, गाल पिचके हुए थे, उसके दांतहीन चेहरे में गड्ढा सा बन गया था, सिर झुके हुए घुटनों के बीच दबा हुआ था, वह बेहद बूढ़ा लग रहा था, वह राहगीरों या चाय की दुकान के अंदर बैठे लोगों से बात करता और कोई अश्लील कहानी सुनाना शुरू कर देता।

‘आपको पता है,’ वह बात शुरू करते हुए कहते, ‘पंगेलन की पत्नी नौवें महीने में गर्भवती हैं, और बेचारे पंगेलन को तमिलनाडु में इतना काम है कि वह लगभग दो साल से बाहर हैं। बेशक, इससे मेरा कोई लेना-देना नहीं है...’

कुप्पू-अच्चन को मानो यह अफवाह हवा के झोंके से फैलती हुई, पनपती हुई और बढ़ती हुई दिखाई दे रही थी। अक्सर अलियार कड़वी चाय का एक बर्तन और कुरकुरे बिस्कुट के कुछ टुकड़े लेकर ताली बजाता था। 'आओ और चुगली करो, बूढ़े कौवे,' अलियार स्नेहपूर्वक गाँव के उस गपशप करने वाले कौवे को कौवों की रहस्यमयी शक्तियाँ प्रदान करते हुए कहता था, जिनके कारण पूर्वजों को प्रसन्न करने के अनुष्ठानों में उन्हें भोजन अर्पित किया जाता था।

शिवरामन नायर द्वारा रवि पर अपने नौकर के साथ रहने का आरोप लगाने के एक दिन बाद, माधवन नायर ने लोड-रेस्ट के पास आकर यह ताना मारा, 'तो तुम एक चटख झूठ का विरोध नहीं कर सकते, है ना?'

‘हाय, हाय, माधव! क्या मैं हवा से बात नहीं कर रहा था?’

‘बस भार-रेस्ट पर टिके रहो, और अपनी मुट्ठी कसकर बंद रखो।’

‘और क्या?’ अलियार ने समोवर के पीछे से कहा। ‘अगर वह अपनी मुट्ठी खोलेगा तो उसकी आत्मा उड़ जाएगी!’

‘बहुत अच्छा,’ माधवन नायर ने कहा, ‘चाय पीजिए। अलियार, ये मेरी तरफ से है।’

‘अरे, अरे! चाय के साथ खाने के लिए मेरे लिए एक मुरुक्कू क्यों नहीं लाते?’

‘क्या तुम भी दूसरे अप्पू-किली बनते जा रहे हो?’

खासक को कुप्पू-अच्चन को चिढ़ाने की आदत थी। उसकी नुकीली नाक के नीचे उगी छोटी-छोटी दाढ़ी में एक पल के लिए एक भद्दी सी मुस्कान फैल गई, मानो किसी तेज हवा से उड़ती हुई राख। चाय की दुकान के अंदर, माधवन नायर को ताड़ के बाग की

यादें सताने लगीं, उस शानदार ताड़ी निकालने वाले की याद आई जो अपने पेशे की इज्जत की रक्षा करने वाले एक क्रोधित प्रहरी की तरह खड़ा रहता था।
दर्जी का इरादा वास्तव में उस बूढ़े व्यक्ति को चिढ़ाने का नहीं था, जो अब पूरे गांव के भद्दे उपहास को सहने के लिए भार-ढेर पर बैठा था।
दुकान के अंदर बातचीत प्रवासी मछलियों की ओर मुड़ गई। मछलियाँ नाले में प्रवेश करती हैं, धारा के विपरीत तैरती हैं और कीचड़ पर रेंगते हुए अरबी मछलीघर में प्रजनन करने पहुँचती हैं।
‘आपको बस इतना करना है कि एक बोरी लें और उन्हें इकट्ठा करें। रात में अगर आप रोशनी दिखाएंगे, तो वे झुंड में आपके पास आ जाएंगे।’
भार-ढक्कन से आती कमजोर आवाज ने कहा, 'अच्छा, मैं तैयार हूँ!'
अलियार ने अपनी दुकान से बाहर झाँककर भार रखने वाले स्टैंड की ओर देखा। उसने कहा, 'किसी ने तुमसे नहीं पूछा।'
‘Hai, hai, Aliyar ...’
कुप्पू-अच्चन कभी-कभार अकेले ही मछली पकड़ने जाते थे। गपशप की गंदगी से तंग आकर, अपनी विचित्र स्थिति से ऊबकर, वे बोझ ढोने वाली कुर्सी से उतरकर नदी के किनारे-किनारे चलते, धूप में काफी दूर तक धारा के विपरीत दिशा में जाते और सारस की तरह घुटनों तक गहरे पानी में खड़े हो जाते। मछलियाँ तैरती हुई आतीं, नन्ही-नन्ही मछलियाँ उनकी टांगों को कुतरतीं। कुप्पू-अच्चन स्थिर खड़े रहते, मछली पकड़ने का जाल अभी भी उनकी बांह में टिका होता, जो कुछ वे देखते उससे भयभीत और प्रसन्न होते। मछलियाँ चालाकी से फिसल जातीं; फिर भी जब वे पानी में आकाश का प्रतिबिंब देखते, तो वे फिर से आकाश के सवार बन जाते, और अब उनकी टांगों के पास से गुजरने वाली मछलियाँ नहीं बल्कि छोटे-छोटे बादलों के झुंड होते।
कुप्पू-अच्चन ने अलियार और माधवन नायर को प्रवासी मछलियों के बारे में बात करते हुए सुन लिया। वह भार ढोने वाली गाड़ी से नीचे उतरा और हल्की धूप में टहलने लगा। शाम को वह पौधशाला में आया और अचानक बोला, 'मैश्तर, आज रात तुम मेरे साथ खाना खाओगे।'
मेरा खाना तो पहले से ही पका हुआ है।
'अरे नहीं! आज रात मेरे छोटे से घर में मछली करी बनेगी। मैं आपका पका हुआ खाना ले जा सकती हूँ ताकि वह बर्बाद न हो।'

‘कुप्पू-अच्चन, क्या तुम ज़िद कर रहे हो?’
कुप्पू-अच्चन पहले ही अंदर जाकर खाना पैक कर चुका था। रवि के पास जाने के अलावा कोई चारा नहीं था।
जब वह वहाँ पहुँचा तो रात हो चुकी थी। रवि संकरे बरामदे में बिछी चटाई पर बैठ गया। कुप्पू-अच्चन बरामदे की ओर खुलने वाले कमरे की ओर मुड़ा और पुकार कर बोला, 'मेरी नन्ही बच्ची, देखो कौन रात के खाने पर आया है।'
महिला ने बाहर झाँका, फिर अनौपचारिक पोशाक में, एक छोटी सी मुंडू और ब्रा पहने हुए बाहर निकली।
‘केसी, मेरी बहू,’ कुप्पू-अच्चन ने उसका परिचय कराया। वह मेहमान के लिए पीतल के बर्तन में पानी लेकर आई ताकि वह अपने हाथ-पैर धो सके।
‘कुट्टी,’ कुप्पू-अच्चन ने कहा, ‘क्या तुम कुछ पीना चाहोगी— चमेली की शराब?’
मिठाई बनाने वाले का फ्लेवरिंग एसेंस; रवि हिचकिचा रहा था।
'डरने की कोई बात नहीं है,' कुप्पू-अच्चन ने कहा।
'यह एक सुरक्षित पेय है,' केसी ने आश्वासन देते हुए कहा।
वह तीन चीनी मिट्टी के कटोरे लेकर आई। रवि इंतजार करता रहा।
'मैं तो इसके बारे में पूरी तरह भूल ही गया था,' कुप्पू-अच्चन ने अश्लील मुस्कान के साथ कहा।
‘क्या भूल गए?’
‘मैं ड्रिंक लाना भूल गया था।’
‘हमें पीने की जरूरत नहीं है, कुप्पू-अच्चन। मुझे कोई आपत्ति नहीं है।’
‘अरे नहीं!’ कुप्पू-अच्चन उठते हुए बोला। ‘मैं अपने अतिथि का अपमान नहीं कर सकता। मुझे दस रुपये दो, मैश्टर-कुट्टी।’
रवि ने असमंजस में उसे पैसे सौंप दिए और अपने मेज़बान को लड़खड़ाते हुए अंधेरे में जाते हुए देखा। बूढ़े के चले जाने के बाद, केसी पास आई और रवि की चटाई पर बैठ गई।
उसने कहा, 'वह तुम्हारे बारे में बहुत बातें करता है। वह तुम्हें लंबे समय से खाने पर यहाँ लाना चाहता है।'
रवि ने बस औपचारिक धन्यवाद कहा और बातचीत भटकती चली गई। रवि ने उससे पूछा, 'तुम्हारा पति कब लौटेगा?'

‘वह तमिलनाडु के ग्रामीण इलाके में, पहाड़ों पर चाय की पत्तियां तोड़ रहा है। कोई नहीं जानता कि वह कब लौटेगा। वैसे भी वह यहां नहीं रुक रहा था। अपनी मां के करीब। बूढ़ी मां यहां अकेली थी, इसलिए वह मुझे कुछ समय पहले यहां ले आया।’
कुप्पू-अच्चन एक बड़ी बोतल हानिकारक घोल लेकर लौटा।
'क्या तुम एक घूंट पीना चाहोगी, लड़की?' उसने केसी से पूछा, जब वह ठीक से कपड़े पहनने के लिए अपनी ब्रा को बार-बार खोल और बंद कर रही थी।
‘हाय, हाय! क्या अप्पा मुझे शरारती नहीं बना रहे हैं?’ वह खिलखिलाकर हंस पड़ी।
कुप्पू-अच्चन ने कहा, 'अगर शराब तस्कर ने ज़रूरत से ज़्यादा वार्निश लगा दी है, तो हम सब या तो मर जाएँगे या अंधे हो जाएँगे। इसलिए जल्दी से एक घूँट पी लो, कुट्टी!'
उन्होंने जमकर पिया। रवि ने इसकी बदनामी का आनंद लिया और कहा, 'बहुत अच्छा लग रहा है, कुप्पू-अच्चन! हम देख सकते हैं और हम मरे नहीं हैं।'
अचानक कुप्पू-अच्चन फिर से खड़ा हो गया। 'मैं भूल गया था...'
‘क्या भूल गए?’ रवि ने पूछा।
‘मछली,’ कुप्पू-अच्चन ने कहा। उसने बांस का मछली पकड़ने का जाल हुक से उतारा और फिर चला गया... जब वह चाय की दुकान पर पहुँचा तो वह सुनसान थी। अलियार अंदर दिन भर का हिसाब-किताब कर रही थी। समोवर का कारोबार ठप हो चुका था।
‘हे मुसलमान,’ कुप्पू-अच्चन ने पूछा, ‘मेरा छोटा नायर कहाँ है?’
‘दर्जी ने कहा कि वह मछली पकड़ना नहीं चाहता। मेरा भी मन नहीं है।’
‘तुम ही लोग थे जिन्होंने मुझे इसमें फंसाया...’
'बिल्कुल नहीं।'
कुप्पू-अच्चन अपनी जानी-पहचानी गांठों में सिमट गया और अलियार को ताने मारने के लिए दरवाजे पर बैठ गया। अंतिम हिसाब-किताब हो जाने पर अलियार अपने उत्पीड़क पर भड़क उठा। फिर, उस धीमी ढोल की एकरस ध्वनि को सहन न कर पाने के कारण, अलियार ने हार मान ली।
दोनों अराबी टैंक की ओर चल पड़े।
‘बुजुर्ग,’ अलियार ने कहा, ‘क्या आपको पता है हम कहाँ जा रहे हैं? अरबी तालाब की ओर। वह जगह भूतों से भरी पड़ी है।’
'है, है, ऐ सैयद मियां शेख के रिश्तेदारों, आज रात मुझे डराओ मत।'
वे अब मुसलमानों के कब्रिस्तान के पास थे।

‘ओ गंजे सिर वाले मुसलमान...’ कुप्पू-अच्चन ने ताना मारा।
‘क्या बात है? और मेरी खोपड़ी के बारे में बात करना बंद करो। इससे मेरे धर्म को ठेस पहुंचती है और मैं तुम्हें जान से मार सकता हूँ।’
‘मैं इस बारे में बात नहीं करूंगा, गोल सिर वाले। लेकिन रात ठंडी होती जा रही है।’
रात और क्या कर सकती है?
'हाय, हाय! यह मेरी हड्डियों में छेद कर रहा है।'
‘आपको किसने आमंत्रित किया?’
‘यहीं रुको, गोल सिर वाले! मुझे जल्दी से घर जाकर अपना कंबल लाने दो!’
'यह पागल है!'
कोहरा छाने लगा और कुप्पू-अच्चन कांपने लगा। सीने पर हाथ रखकर और कंधों को थामे हुए वह अलियार के पीछे-पीछे चलने लगा। वह केसी और रवि की कल्पनाओं में खोया रहता, जैसे वह लंबे समय से कल्लू के साथ उस छोटी नदी में खोया रहता था, जहां ठंड और अंधेरे के साथ-साथ नदी की क्रूरता और अश्लीलता भी व्याप्त थी।
कुप्पू-अच्चन लड़खड़ाते हुए कोसता रहा।
‘गोल सिर वाला, मुंडा हुआ सिर, अच्छा मुसलमान...’
तभी दफन दलदल से एक अलौकिक आवाज सुनाई दी:
'रुकना!'
इसके बाद गहरे स्वर में मंत्रोच्चार किया गया।
‘वह कौन है?’ अलियार ने पूछा।
'मई हु ...'
‘ओह, खाज़ी?’
'हाँ।'
तेल के दीपक की मंद रोशनी में उन्होंने खाज़ी की विशाल आकृति देखी। खाज़ी ने सावधानी से अपना हाथ ऊपर उठाया और कहा, 'चुप रहो! यहाँ एक जिन्न है।'
कुप्पू-अच्चन जम गये।
खाज़ी ने आश्वस्त करते हुए कहा, 'डरो मत, बस वहीं खड़े रहो और अपनी लार मत निगलो।'
कुप्पू-अच्चन ने ठीक वैसा ही किया, उसने निगल लिया। उसकी सारी जान निकल गई। थोड़ी देर बाद खाज़ी ने कहा, 'पूजनीय व्यक्ति का देहांत हो गया है।'

अलियार और खाज़ी ने एक-दूसरे से शिष्टाचारवश बात की। कुप्पू-अच्चन ने शोकपूर्ण ढंग से सिर हिलाकर और घुरघुराकर जवाब दिया। थोड़ी दूर जाने पर कुप्पू-अच्चन फिर से रोने लगा।
‘या अल्लाह!’ अलियार ने कसम खाते हुए कहा। ‘इस बार क्या बात है?’
'मुझे घर जाने दो, गोमांस खाने वाले गोल सिर वाले, और अपना कंबल उठा लेने दो।'
तब तक मछलियाँ सो चुकी होंगी। हमें उन्हें जगाना पड़ेगा।
मैं अभी आता हूँ...
'जाओ, जाओ, और किसी सोए हुए शराब तस्कर से एक घूंट शराब मांग लो।'
कुप्पू-अचन घर लौट आया... केसी का दरवाजा बंद था, लेकिन लकड़ी में चौड़ी दरारें थीं। एक छोटी सी बत्ती से कमरा हल्का रोशन था। कुप्पू-अचन ने अंदर झाँका, उसकी नज़रें गुस्से से भरी थीं। रवि की टॉर्च और जूते बरामदे में पड़े थे। कुप्पू-अचन मुँह फेरकर उस बोतल के पास आया जिसमें अभी भी काफी कुछ बचा था। उसने बड़े-बड़े घूंट पी लिए, फिर अपना पुराना कंबल उठाया, उसे अपने चारों ओर लपेटा और नशे और डर से लथपथ अरबी तालाब की ओर चल पड़ा... अलियार वहाँ नहीं था जहाँ उसने उसे छोड़ा था। उसने सोचा कि अलियार ज़रूर अकेले ही अरबी तालाब गया होगा।
जब कुप्पू-अच्चन तालाब के पास पहुँचा, तो उसे एहसास हुआ कि अलियार ने उसे छोड़कर पूथमों और जिन्नों के हवाले कर दिया है। यह विश्वासघात था। कुप्पू-अच्चन ने रात में पुकारा, 'हे अलियार! तुम कहाँ हो?' रात भयानक समय में बदल रही थी; जल्द ही कबन्ध तालाब में मौज-मस्ती करने आ जाएँगे।
‘ओह अलियार!’
मानो जवाब में, कब्रों से एक हवा बहकर आई।
‘धोखेबाज! पापी!’ कुप्पू-अच्चन रोने लगा; वह भाग जाना चाहता था, लेकिन राक्षस जल्द ही उसका पीछा करेंगे। तभी उसे मछलियों के खेलने की आवाज़ सुनाई दी। उसे मछली करी के बारे में कुछ धुंधला सा याद आया।
कुप्पू अच्चन तालाब की ओर बढ़ा और चमकते पानी को निहारने लगा। उसने चुपचाप मछलियों को आवाज़ दी, और मछलियों ने उसकी आवाज़ सुन ली—एक बड़े सिर वाली बूढ़ी मछली सतह पर आई और उसकी ओर तैरने लगी। कुप्पू-अच्चन मछली

पकड़ने का जाल लेकर आगे झुका। जिस किनारे पर वह खड़ा था, वह पानी से भीगा हुआ था। वह धंस गया।
कुप्पू-अच्चन को लगा मानो चारों ओर आकाश गिर पड़ा हो। कंबल पानी सोखकर सीसे की तरह भारी हो गया। वह सांस लेने और संतुलन बनाने के लिए काफी संघर्ष करता रहा, और अंत में किसी तरह सुरक्षित स्थान पर पहुँच गया। गीले कंबल और काई से ढका हुआ कुप्पू-अच्चन एक चट्टान पर कबन्ध की तरह बैठ गया और विलाप करने लगा।
'कोई मेरी मदद करो! मैं मर रहा हूँ!'

पूर्व की ओर जाने वाला मार्ग

खासक के मूल निवासी यात्रा के शौकीन नहीं थे, लेकिन पंडारम एक स्पष्ट अपवाद थे। सदियों पहले पालघाट दर्रे से होकर आए इस प्रवासी समुदाय ने भिक्षावृत्ति और तपस्वी जीवन शैली को अपना लिया था। समय के साथ ये परंपराएं कुछ हद तक लुप्त हो गईं; पंडारम अपनी वार्षिक तीर्थयात्रा के लिए उसी दर्रे से होकर वापस जाते थे। भगवा वस्त्र पहने हुए उनका आतिथ्य सत्कार किया जाता था और उन्हें उदारतापूर्वक दान दिया जाता था।
पंडारम लोगों ने अपने इतिहास के कुछ प्रतीकों को संरक्षित रखा है - उनके सिर के पीछे बालों का गुच्छा, और तमिल भाषा, जो मेजबान भाषा के साथ मिलकर हास्यास्पद विचित्रताओं को जन्म देती है।
इन तीर्थयात्राओं के दौरान, भगवा वस्त्रों की तरह ही, वे नए नाम भी धारण कर लेते थे —ये नाम पौराणिक कथाओं और किंवदंतियों से लिए गए थे—और मानो किसी लुप्त देवमंडल के देवताओं की तरह व्यवहार करते थे। यह देवयात्रा वर्ष के आधे भाग तक चलती थी, जिसके अंत में पंडारम अपने पर्याप्त लाभ के साथ खासक लौट आते थे। उनके पास एक गुप्त कौशल था जो भिक्षुक जीवन के अनुकूल नहीं था—पक्षियों को पकड़ना। खासक में इससे कोई शर्मिंदगी नहीं होती थी। खासक के आसपास के बंजर इलाके बटेरों और तीतरों से भरे हुए थे, और भिक्षुक वर्ष के उत्तरार्ध में पक्षियों का मांस और अवैध ताड़ी पीकर अपना जीवन व्यतीत करते थे।

पंडारम परिवार घुमंतू स्वभाव का था, इसलिए वे बड़े कथाकार थे। शराबखाने में बैठकर आग पर बटेरों के भुनने का इंतज़ार करते हुए वे तमिलनाडु के बारे में अनगिनत कहानियाँ सुनाते रहते थे। इन कहानियों में तीर्थयात्री चिलचिलाती धूप में कठोर, पथरीले मैदानों पर आगे बढ़ता था, लेकिन दिन भर की यात्रा के अंत में हमेशा कोई न कोई गाँव, कोई स्त्री या कोई देवता ज़रूर मिल जाता था। कुप्पू-अच्चन कभी-कभी श्रोताओं के साथ बैठ जाता था, और यहाँ तक कि मुल्ला भी, ताकि लोगों की सांसारिक जिज्ञासा शांत हो सके।

गाँव के ज्योतिषी और वर्णमाला शिक्षक गोपालु पणिक्कर का शराबखाने में होना एक अजीब बात थी, और उससे भी ज़्यादा अजीब तब लगा जब वे एक अनपढ़ भिक्षु की बातें सुन रहे थे। वैसे, अब गोपालु के पास काफ़ी समय था, क्योंकि ज्योतिषी की शिक्षण पद्धति को दिन-ब-दिन कम लोग सीखने लगे थे। यह पद्धति शास्त्रीय युग की थी; बच्चे रेत पर अक्षर लिखते थे और उन्हें गीत की तरह गाते थे। वे अपनी तर्जनी उंगलियों से लिखते थे, जिन पर वे सुरक्षा के लिए एक सूखा लौकी रखते थे। आठ साल तक इस धीमी और कठिन परीक्षा के बाद, सिर कलम करने के सिवा कोई और रास्ता नहीं था जिससे विद्वान को अक्षरों का अभ्यास करने की अनुमति मिल सके। लेकिन ज़िला बोर्ड के नए स्कूल ने बच्चे को कुछ ही महीनों में साक्षर बना दिया। गोपालु ने निराशावादी अंदाज़ में कहा, 'यह कैसी शिक्षा है? हमारा देश बर्बाद हो रहा है!'

वह देश बेशक पालघाट था, जिसके भव्य महानगर से प्राचीन काल में नंगे पैर चलने वाले राजा बीस मील के दायरे पर राज करते थे। उस कभी संप्रभु देश ने अब आठ कठिन वर्षों के बजाय छह महीनों में वर्णमाला सीखने का विकल्प चुना; गोपालू को सभ्यता के अंत का आभास हो गया। जो लोग गुफा में बैठकर उसकी विनाशकारी बातें सुन रहे थे—कुप्पू-अच्चन, मुल्ला और शराब तस्कर मयंदी—वे देश और उसके निर्मल प्रांत खासक के लिए दुखी थे। लेकिन मयिलवाहन पंडारम को कोई खास चिंता नहीं थी। वह एक घुमंतू था, और अगर खासक का अंत निश्चित था, तो उसके पास वापस जाने के लिए हमेशा उसका जन्मस्थान तो था ही।

गोपालू के मन में कई सवाल थे, वो सवाल उसके भीतर व्याकुल थे, वो उन सभी को बोल नहीं पा रहा था क्योंकि ऐसा करने से परिवार के संघ के पतन की बात स्वीकार हो जाती। भुनते हुए मांस पर लालची निगाहें डालते हुए, शाकाहारी और पंडित गोपालू ने पूछा, 'हे भिक्षु, आपकी यात्राओं का सत्य क्या है?'

सच्चाई एक अंतहीन दृश्य के रूप में सामने आई—गांवों पर देवता पहरा दे रहे थे, विशाल टेराकोटा की मूर्तियां कठोर चट्टानी परिदृश्य के बीच चमकीले रंगों में चित्रित थीं। ये देवता पूर्वी हवा पर सवार होकर आए और खासक के भिक्षु को जगाया।
‘हे ज्योतिषी,’ पंडारम ने अंत में कहा, ‘यह एक ऐसा आह्वान है जिसका विरोध करना कठिन है।’
कई रातों तक गोपालु हवा की आवाज़ सुनता रहा; केवल ताड़ के पत्तों की गहरी गड़गड़ाहट सुनाई देती थी, व्याकुल ज्योतिषी के लिए हवा पर सवार कोई देवता नहीं था...
अंततः, वे आठ वर्षीय ज्योतिषीय अनुष्ठान को उसके पुराने महत्व को पुनः स्थापित करने के तरीकों का पता लगाने के लिए पालघाट कस्बे में एक साथी ज्योतिषी से मिलने गए। वे वहाँ एक सप्ताह तक रहे। जब वे घर लौटे, तो उन्हें लगा कि उनके जाने के दौरान कुछ अशुभ घटित हुआ है।
उन्होंने पूछा, 'हमारा बेटा रामनकुत्री कहां है?'
उनकी पत्नी लक्ष्मी ने उनसे मौन भाव से मुलाकात की।
उन्होंने बार-बार पूछा, ‘क्या उसने बोर्ड के स्कूल में दाखिला ले लिया है? उसे किसने दाखिला दिलाया?’
लक्ष्मी की ओर से एक शब्द भी नहीं निकला। गोपाल की अनुपस्थिति में उसने जो किया था, उसके लिए उसे ज़रा भी पछतावा नहीं था। उसने एक ऐसा कदम उठा लिया था जिससे पीछे हटना नामुमकिन था; उसने बच्चे की विकृत उंगली से अंगुली उतारी और स्कूल में घुस गई। उसने रवि से कहा, 'माँ, इसे अंग्रेज़ी सिखाओ। इसे एक नेक इंसान बनाओ।'
उसने उस बड़े आदमी की छवि को एक गहरे राज़ की तरह अपने मन और स्मृति में छुपा रखा था—उसका शहर का चचेरा भाई रघु नंदन, जो एक सरकारी दफ्तर में क्लर्क का काम करता था। वह चाहती थी कि रामनकुट्टी किसी उपनगरीय स्कूल में दाखिला लेकर अपने उस सभ्य चचेरे भाई की तरह क्लर्क बने। वह चाहती थी कि वह रैले साइकिल पर सवार होकर, बिना फ्रेम का चश्मा पहने, होठों में एक सुगंधित सिगरेट लिए घर आए।
अंतर्ज्ञान किसी भी रहस्य को नहीं जानता; गोपालु पणिक्कर ने अपनी पत्नी से पूछा, 'मुझे बताओ कि तुम्हें यह सलाह किसने दी - रघु नंदन ने?'

लक्ष्मी रोने लगी। अब गोपालू की चुप रहने की बारी थी।
उन्होंने बच्चे को स्कूल से नहीं निकाला। परिवार में चार दिन तक सन्नाटा छाया रहा। पाँचवें दिन उन्होंने अपनी पत्नी से विदा लेने के लिए चुप्पी तोड़ी और कहा, 'लक्ष्मी, मैं जल्द ही लौट आऊंगा।'
वह भोर से पहले ही निकल पड़ा, अपने निजी सामान को एक थैले में रखकर, ताड़ के रेशे की मशाल से रास्ता रोशन करते हुए। लक्ष्मी द्वार के पीछे खड़ी रहीं, काफी देर तक खड़ी रहीं, जब तक कि मशाल और यात्री दोनों सूर्योदय में ओझल नहीं हो गए। 'हे इमली की देवी,' लक्ष्मी ने प्रार्थना की, 'उनकी रक्षा करो।'
किसी को नहीं पता था कि गोपालू कहाँ गायब हो गया था। लक्ष्मी सवालों के सतही जवाब देती थी, जिन पर वैसे भी किसी को विश्वास नहीं होता था।
'मुझे नहीं लगता कि गोपालू जल्दी लौट आएगा,' कुप्पू-अच्चन ने भार-ढोने से कहा। 'वैसे भी इससे मुझे कोई लेना-देना नहीं है...'
अलियार ने यह बात सुनी और भूल गया, लेकिन यह उसके मन में तबाही की भयानक कल्पनाओं के रूप में बार-बार आती रही, जिनमें ज्योतिषी की हमेशा मृत्यु हो जाती थी। गोपालू पर चाय की दुकान का कुछ कर्ज़ था, अगर ये कल्पनाएँ सच हो जातीं तो ये पैसे गायब हो जाते। इसलिए, एक शाम चुपके से, अलियार बिना बुलाए लक्ष्मी के साथ पैदल रास्तों पर चलने लगा। उसने कहा, 'हे ज्योतिषी की पत्नी, भले ज्योतिषी पर ... का कर्ज़ था।'
लक्ष्मी ने अलियार के प्रस्ताव को पहले ही भांपते हुए कहा, 'तुम अकेले नहीं हो,' उसने उससे कहा, 'उस पर बहुत से लोगों का बहुत सारा कर्ज है। अगर मेरे पास पैसे होते, तो मैं सबका कर्ज चुका देती, ओ अलियार।'
जब मुल्ला को इस बात का पता चला तो उसने फटकार लगाई।
अलियार.
'मुझे ऐसा नहीं करना चाहिए था, मोल्लाक्का,' अलियार ने स्वीकार किया।
इसे अल्लाह की कृपा मानिए।
तीसरे महीने में गोपालु रात के अंधेरे में लौट आया, और आधी रात तक खसाक पर एक हल्की सी सुगंध छा गई। यह सुगंध लक्ष्मी के रसोईघर से उठ रही थी। दो सप्ताह बाद गोपालु फिर गायब हो गया। और चूंकि लक्ष्मी कम बोलती थी, इसलिए बाकी लोग उसकी फुसफुसाहट पर विश्वास करने से खुद को रोक नहीं पाए। कुप्पू-अच्चन ने

गुमनाम सूत्रों का हवाला दिया जिन्होंने दावा किया था कि उन्होंने ज्योतिषी को सबसे घटिया काम करते देखा था—एक कसाई और गोमांस विक्रेता के रूप में। लक्ष्मी ने इस निराधार द्वेष को नजरअंदाज कर दिया, और नकली माणिक जड़े लटकन वाले सोने के हार को शान से खसाक में घूमती रही।

पशु दलाल रामाच्चर, खासक की सुस्ती का एक और अपवाद था; वह हर महीने तमिलनाडु के पोलाची कस्बे में प्रसिद्ध पशु मेले में व्यापार करने जाता था। वह बस से जाता था और बस के किराए और खाने पर खर्च हुए पैसे भी बड़ी मुश्किल से बचा पाता था। बाजार में अफरा-तफरी मची रहती थी; अनगिनत जानवरों की खरीद-फरोख्त होती थी, और गोबर, धूल और शोरगुल के बीच दलाल ठगी करते या डराते-धमकाते हुए उन सौदों से कमीशन छीन लेते थे जिनमें उनका कोई लेना-देना नहीं होता था। रामाच्छर एक सीधा-सादा दलाल था; उस दिन उसने जो सौदे बिगाड़े, उनसे वह उस अनजान शहर में कंगाल और भूखा रह गया। तभी उसका सामना भगवा वस्त्रधारी संत से हुआ।

‘हे ज्योतिषी!’

‘हा, रामाच्छर, मेरे देशवासी!’

गोपालु पणिक्कर ने रामाच्चर को गले लगाया और उन्हें एक चाय की दुकान पर ले गए, जहाँ उन्होंने उन्हें तमिल व्यंजनों का लुत्फ़ कराया—चाय और भुनी हुई पत्ता (मौसम परिवर्तन के दौरान पंख उगाने वाली चींटियाँ)। रामाच्चर ने गोपालु की कहानी सुनी। ज्योतिषी ने कहा, 'मैं यहां अपने उपचार मंत्रों के लिए व्यापक रूप से सम्मानित हूं।'

‘वो वाले जो खासक में नहीं चलेंगे?’ रामाचर ने शरारती मुस्कान के साथ पूछा।

“जी हां,” गोपालू ने सफलता और संतोष की विनम्रता से कहा। “अब चलिए मेरे घर चलते हैं। यह तीन मील दूर है, क्या आप पैदल चल सकते हैं?”

रामाच्छर ने डकार ली।

‘हे ज्योतिषी, आपके भुने हुए पतंगे ने मुझे पंख दिए हैं।’

बाज़ार से तीन मील दूर एक बस्ती में, एक सज्जन किसान ने गोपालू को अपनी विशाल जागीर का आधा हिस्सा परामर्श और जादू-टोने के लिए दे दिया था... गोपालू ने बाज़ार में अपना काम बीच में ही छोड़ दिया और रामाच्चर के साथ घर की ओर चल पड़ा। रास्ते में उसने उत्तेजित मवेशी व्यापारी को चेतावनी देते हुए कहा, 'रामा, मेरे संरक्षक की उपस्थिति में हमारी पुरानी आत्मीयता मत दिखाओ। थोड़ा संभलकर रहो...'

भगवा वस्त्रधारी के पीछे-पीछे रामाच्छर विनम्रतापूर्वक झुकते हुए चलने लगे... गोपालू मंत्रों का जाप करते हुए फार्महाउस में दाखिल हुए। उन्होंने रामाच्छर का परिचय अपने मेज़बान से कराते हुए कहा, 'मेरे पुराने शिष्य रामानंद...' किसान ने हाथ जोड़कर आदरपूर्वक उनका स्वागत किया।
किसान ने कहा, 'आपके स्वामी ने हमारी बहुत मदद की है। उन्होंने इस गांव से कई बुरी आत्माओं को भगाया है।'
रामाच्छर, जो अब रामानन्द बन चुके थे, ने झुककर कहा, 'उनके मंत्र बहुत शक्तिशाली हैं। मेरा अनुमान है कि अभी और भी कई बुरी आत्माओं को भगाना बाकी है?'
'हे पवित्र आत्मा, हाँ, बिल्कुल हैं।'
ज्योतिषी और पशु व्यापारी रात को सोने के लिए लेट गए, लेकिन दोनों में से किसी को नींद नहीं आई, इसलिए वे सुबह तक बातें करते रहे। इसी तरह गोपालू को अपनी बेटी की बीमारी के बारे में पता चला।
'हे ज्योतिषी, यह टाइफाइड था। वह बहुत अच्छे से ठीक हो गई है।'
'क्या उसे बहुत कष्ट सहना पड़ा, रामाच्छर?'
मुझे यह कहते हुए बुरा लग रहा है, लेकिन उसने ऐसा किया।
रामाच्छर ने गोपालू को बताया कि कैसे भविष्यवक्ता कुट्टादान ने छोटी रुक्मिणी का इलाज अपने मंत्रों से किया और बाद में मुल्ला का इलाज मुस्लिम मंत्रों से किया, फिर भी बुखार कम नहीं हुआ। तब रवि उन रंगीन कैप्सूलों को लेने के लिए कोझनास्सेरी कस्बे तक गया...
'रवि कौन?' गोपालू ने पूछा। 'द माश?'
'हाँ।'
कितना भटकना, कितनी थकावट! मिट्टी के दीपक की बत्ती बुझती जा रही थी। गोपालू को बच्चों, स्त्रियों और बूढ़े-बुजुर्गों की याद आ रही थी; खसक रात के अंधेरे में कहीं दूर पड़ा था।
'हे ज्योतिषी, क्या आप सो गए हैं?'
'No, Ramacchar.'
उस क्षण रामाच्चर ने अच्छाई की एक लहर को उठते हुए महसूस किया और वह ज्योतिषी के दुख तक पहुँच गई।

‘मैं हार मान चुका हूँ,’ रामाच्चर ने कहा और फूट-फूट कर रोने लगा। ‘कोई सौदा नहीं हो सका और मेरा आखिरी पैसा भी खर्च हो गया। हे ज्योतिषी, मेरी मदद करो!’
इस प्रकार, मवेशी व्यापारी रामाच्चर गोपालु का साथी जादूगर बन गया। हवेली में पहले दिन, रामाच्चर सुबह जल्दी उठा, स्नान किया और पवित्र राख से लेप लगाकर सभा कक्ष में गया।
थोड़ी देर बाद आए गोपालू चकित रह गए। रामाच्छर ने ताबीजों का एक शानदार संग्रह सजा रखा था—मछली की हड्डी, कछुए का खोल, पान के पत्ते, लाल गुड़हल के फूल, कई तरह के अनाज।
‘तुम्हें यह सब किसने सिखाया?’ गोपालू ने फुसफुसाते हुए पूछा।
‘हे ज्योतिषी, आपकी कृपा!’
और वे ग्राहकों का इंतज़ार करने लगे। लगभग एक दर्जन लोग मामूली भविष्यवाणियाँ करवाने आए; चंदा मामूली था। दोपहर में एक तमिल महिला एक कठिन विनती लेकर आई। उसके पति ने उसे एक प्रेमिका के लिए छोड़ दिया था, क्या खासक का महान जादूगर कोई ऐसा प्रेम औषधि बना सकता है जिससे वह वापस आ जाए? गोपाल ने महिला द्वारा उसके चरणों में रखे नोटों के साफ-सुथरे बंडल को तिरस्कार भरी नज़र से देखा। उसने भविष्य जानने के लिए कौड़ियों को उछाला, वर्तमान को लेकर वह बेहद परेशान था, और अपने साथी जादूगर के मंत्रों और अटकलों की लंबी सूची को बेबसी से सुनता रहा।
गोपालू ने कौड़ी के खोल वापस रख दिए और उस स्त्री से कहा, ‘हमें एक रास्ता दिख रहा है। तीन सूर्योदय के बाद हमारे पास वापस आना।’ स्त्री जा चुकी थी। गोपालू खोया-खोया सा बैठा रहा और अपने बगल में खड़े व्यंग्यकार की ओर देखा। गोपालू ने कहा, ‘इसे प्रेम औषधि चाहिए। मैं इसे क्या दूं? कलाबाजी का तेल?’
व्यंग्य की अपवित्रता के बाद प्रार्थना हुई; गोपालू ने एक तांबे के बर्तन में एक करछुल शहद उंडेला, उसने अपने हाथ बर्तन पर रखे और किसी देवता की नहीं बल्कि खसक की प्रार्थना की, जो लोगों को जीवनदान देता है; उस मौन और शब्दहीन प्रार्थना में गोपालू ने छोटी रुक्मिणी को देखा, जिसके चेहरे पर अभी भी पीलापन था। उसने प्रेम और दुःख के जादू से उस औषधि को पवित्र कर दिया था।
जब वह स्त्री प्रेम औषधि लेने आती थी, तो वह उसे वह औषधि दे देता था।

अनुपयुक्त स्वनिम

नल्लम्मा देवी के दूत कुट्टादान नदी किनारे धूप सेंक रहे थे। उन्होंने गोपालु पणिक्कर के बेटे रामनकुट्टी को चीड़ की झाड़ियों के बीच संदिग्ध रूप से घूमते देखा। वे लड़के के पास गए और उससे बातचीत करते हुए पूछा, 'क्या तुम्हारे पिता तमिलनाडु से लौट आए हैं?'
'हाँ,' रमनकुट्टी ने उत्तर दिया।
कुट्टादान लड़के की झिझक को भांप गया था।
‘क्या यह पूजा है?’
‘खैर, कुछ खास नहीं...’
‘तो फिर छिपकली क्यों? क्या तुम उसका शिकार नहीं कर रहे हो?’
आठ साल का बच्चा, चाहे वह जादूगर का बेटा ही क्यों न हो, किसी रहस्य को ज्यादा देर तक छुपा नहीं सकता। इसलिए रामनकुट्टी ने सारी कहानी बता दी, जिसे गोपालू गांव वालों के सामने समय से पहले उजागर नहीं करना चाहता था।
रामनकुट्टी ने कहा, 'उन भूतों में से एक।'
'ओह-'
‘यह एक आदमी के अंदर प्रवेश कर चुका है। एक अमीर आदमी के अंदर।’
‘तमिलनाडु के इलाके का कोई आदमी?’
'हां। और उसके पास एक चावल की चक्की और एक कार भी है।'
भविष्यवक्ता के भीतर कुछ उठा, कुछ तरल, क्रोधित और ठोस, जैसे बासी ताड़ का काढ़ा, यह धुंधली यादों के भीतर फूट पड़ा। उस पर काबू पाते हुए, कुट्टादान ने कहा, 'यह अच्छी खबर है। तो चलो एक बड़ा शिकार करते हैं। वहाँ...'
एक पेड़ के ठूंठ पर एक मोटी छिपकली अपने पूरे ठाठ-बाठ में बैठी थी, जो विलुप्त हो चुके सरीसृपों की वंशज थी।
‘चलो उसे पकड़ते हैं, रामनकुट्टी!’
‘रुको, मूर्ख!’
'शुल्क!'
जब दो तरफ से हमला हुआ, तो छिपकली ने अपना सिर हिलाया और पेड़ के ठूंठ से नीचे उतरने लगी। कुट्टादान ने अपना ऊपरी कपड़ा जाल की तरह फेंका और धीरे-

धीरे चलने वाले उस जीव को पकड़ लिया। उसने उसे रामनकुट्टी के कपड़े के थैले में सुरक्षित रखा और कहा, 'अपने पिता को बताना कि यह मेरी तरफ से उपहार है।'
रामनकुट्टी ने कृतज्ञतापूर्वक कहा, 'एक बहुत बड़ा वाला, मगरमच्छ जैसा।'
जादूगर का बेटा घर चला गया, और कुट्टादान नहाने के लिए नदी के किनारे नीचे उतर गया। पानी सुखद रूप से गर्म था। स्नान के बाद कुट्टादान अपनी देवी के मिट्टी की दीवारों वाले मंदिर में गया और उनकी विचित्र मूर्ति के सामने बैठ गया। इसी निर्मल लालसा में, दिन-प्रतिदिन, उसने दस वर्षों तक ब्रह्मचर्य का पालन करते हुए उनकी पूजा की थी... उस दिन जब वह उनके सामने बैठा था, उसके मन में एक ही विचार उमड़ रहा था: लोग गोपालु पणिक्कर को देखने के लिए दूर-दूर से आते हैं।
‘इसे पढ़ो, मूर्ख!’
कुट्टादान ने अपने मृत शिक्षक राम पणिक्कर की आवाज सुनी...
कुट्टादान एक-एक अक्षर पढ़ तो सकता था, लेकिन उन्हें जोड़कर शब्द नहीं बना पाता था। रामा पणिक्कर ने उसे छड़ी से खूब पीटा था, लेकिन इससे कुट्टादान की अचंभा और बढ़ गया था।
एक दोपहर, बिखरे हुए और अस्पष्ट अक्षरों से पीछा छुड़ाते हुए, कुट्टादान रामा पणिक्कर के घर के पास से गुजर रहा था। इसी घर के आंगन में सुबह अक्षर सिखाए जाते थे। शिक्षक की बेटी लक्ष्मी, नहाने के बाद धूप सेंकते हुए द्वार पर खड़ी थी, उसके नंगे स्तनों पर चंदन का सुगंधित लेप लगा था, जो अभी किशोरावस्था में थे। उसने कुट्टादान को देखकर मुस्कुराया।
‘क्या मैं तुम्हें सिखाऊं?’ उसने पूछा।
जैसे-जैसे वह जवाब गढ़ने के लिए शब्दों से जूझता गया, वैसे-वैसे उसके शब्द और भी भद्दे होते गए, 'हम? अकेले, साथ में?'
‘हां,’ लक्ष्मी ने शांत मुस्कान के साथ कहा। ‘घर पर कोई नहीं है।’
वह उसके पीछे-पीछे एक ऐसे कमरे में गया जहाँ सड़ते हुए ताड़ के पत्तों पर लिखे ग्रंथों की गंध आ रही थी। उसने उसे अपने पास बिठाया और उसके लिए अक्षर लिखने लगी। उदासी का पर्दा फिर से उस पर छा गया, और वह शब्द और अक्षर दोनों को एक साथ समझने में असफल रहा। लक्ष्मी उसे दंडित करना चाहती थी। फुर्ती से उसने उसका मुंडू हटाया और अपनी उंगलियाँ उसकी जांघों पर फिरा दीं। फिर उसने उसे

चुटकी काटना शुरू कर दिया। दर्द तो हुआ, लेकिन वह चाहता था कि वह उसे और चुटकी काटे।
‘गुस्से में हो?’ उसने पूछा।
'नहीं।'
‘यह कहाँ है? मुझे देखने दो...’
उसने एक बार फिर उसका मुंडू खोला, उसकी त्वचा पर बने लाल अर्धचंद्राकार चिह्नों को लालच भरी निगाहों से देखा, उन्हें महसूस किया और चंचल भाव से उन्हें गिना।
‘क्या तुम इसके बारे में किसी को बताओगे?’ लक्ष्मी ने पूछा।
'नहीं।'
उसने शब्दों और अक्षरों का हमेशा के लिए त्याग कर दिया, और लिपि से मुंह मोड़कर उस रहस्यमय असीम ध्वनि की ओर मुड़ गया, उस देवी की वाणी की ओर जो उसके भीतर अनभिज्ञता से गूंज रही थी। तब से वह उस द्वार से कई बार गुजरा था। लक्ष्मी हमेशा वहाँ धूप सेंकती हुई मिलती थीं, पर उन्होंने उसे पहचानने का कोई संकेत नहीं दिया। वह उन्हें कुछ बताना चाहता था, लेकिन जैसे ही शब्द बनते, ध्वनियाँ लुप्त हो जातीं।
लक्ष्मी गोपालु की पत्नी बनी... दूर देश से एक धनी चक्कीवाला गोपालु के पास भूत-प्रेत भगाने के लिए आ रहा था...
‘वांगो! वांगो!’ गोपालु पणिक्कर ने मिलर का तमिल में स्वागत किया ताकि वह सहज महसूस करे। तमिलनाडु के उस सांवले विशालकाय व्यक्ति को देखकर लग रहा था कि उसके अंदर कोई बुरी आत्मा बैठी है। गोपालु ने उसे दिलासा दिया और चटाई पर बैठा दिया। रात का अंधेरा था, चांद निकलने से पहले का समय था। टिड्डियों और तरह-तरह के कीड़ों की भनभनाहट से रात में सन्नाटा पसरा हुआ था।
चक्कीवाला और ज्योतिषी भोजन करने बैठ गए। चक्कीवाला लक्ष्मी की कलाई और हथेली को लालच भरी निगाहों से देख रहा था, जब वह चावल और करी परोस रही थी: पालघाट की स्त्रियों को धनी तमिल पुरुष उनके रूप और गोरे रंग के कारण खरीद लेते थे। चक्कीवाले ने उनके बारे में सुना था, उसने खसक के जादू-टोने के बारे में भी सुना था, उसके काले और सौम्य दोनों तरह के गीतों के बारे में भी।
आधी रात। चेताली की ढलान पर जंगली आग की एक छोटी सी लपट अचानक भड़क उठी।

‘शुभ संकेत,’ रामानन्द ने कहा।
'शंभो महात्मन,' गोपालू ने धीमे स्वर में कहा, 'सैयद मियां शेख!'
गोपालु, रामानंदा और चक्कीवाला अंत्येष्टि स्थल की ओर चल पड़े। गोपालु के इशारे पर रामानंदा ने छोटे देवताओं और मित्रवत राक्षसों को पुकारना शुरू कर दिया, एक पागलपन भरी प्रार्थना, जिसमें चक्कीवाले के वश में आई आत्मा को गंभीर धमकियाँ भी शामिल थीं। गोपालु सीने तक ऊँची अंत्येष्टि वनस्पति में घुस गए, जिसके आगे अस्थियों से सजी और पूर्वजों की राख से पुती हुई अंत्येष्टि भूमि थी।
रामानंद ने चक्की वाले को खूब शराब पिलाकर वश में कर लिया था और धूप से उसका गला घोंट दिया था। रामानंद दलदल के सूखे किनारे पर आगे बढ़े और महान जादूगर के अंतिम आदेश की प्रतीक्षा करने लगे।
‘जाओ!’ गोपालू ने कहा।
रामानन्द झुके और उस दुष्ट आत्मा को निर्वासित कर दिया। ठीक उसी क्षण चक्कीवाले ने दलदल के किनारे एक छोटी सी लौ जलती देखी। चक्कीवाला आश्चर्यचकित होकर उस निर्वासित आत्मा को जलते हुए भागते हुए देखता रहा।
जादूगर और चक्की वाला चले गए; एक अकेला आदमी दलदल से, जहाँ वह छिपा हुआ था, सत्य की तरह उभरा। वह कुट्टादान भविष्यवक्ता था। उसने सुबह पकड़ी गई छिपकली को उठाया और उसकी जली हुई पूंछ से अधजले कपड़े की पट्टी को धीरे से खोला। भविष्यवक्ता ने छिपकली की आँखों में, उसके प्राचीन रहस्यों में झाँका। एक पल के लिए उसे लगा कि वह छिपकली को नहीं, बल्कि एक आत्मा को देख रहा है। वह उसे जीवित नहीं रखना चाहता था, उसने उसका गला घोंट दिया।
कुट्टादान काफी देर तक मृत छिपकली को पकड़े मौत के दलदल पर खड़ा रहा। तभी उसे अपने सिर में एक बार फिर वही अजीब सी हलचल महसूस हुई। उसके मन में मिलर का पीछा करने और छिपकली के साथ उसका सामना करने की तीव्र इच्छा जागी। लेकिन अगले ही पल, वह हलचल चांदनी और धुंध में तब्दील हो गई; उसने महीन मलमल और लाल गुड़हल के फूल देखे। उसने महसूस किया कि उसके नाखूनों ने उसकी जांघों पर छोटे-छोटे लाल अर्धचंद्राकार निशान बना दिए हैं।
‘क्या तुम्हें दर्द हुआ? क्या तुम किसी को बताओगे?’
असंबद्ध ध्वनियों पर गोपनीयता की मुहर!

कुट्टादान ने उस नन्हे शव को रात के अंधेरे में फेंक दिया। वह लाखों अंतों के कीचड़ और दलदल के बीच जा गिरा।

महोत्सव

उस रात, जलती हुई छिपकली वाली रात के बाद, कुट्टादान ने स्वयं को मंदिर में बंद कर लिया। वह चेचक की देवी नल्लाम्मा के समक्ष अंध भक्ति में तड़पता रहा। इस तपस्या की खबर खासक में फैली और जल्द ही धान के खेतों के पार के गांवों तक पहुंच गई। सातवें दिन कुट्टादान ने मंदिर का दरवाजा खोल दिया और भविष्यवाणी भरी चीखों के साथ खासक में आ गया। उसने देवी की घुमावदार तलवार से अपना सिर फोड़ लिया। भविष्यवक्ता उन्माद और पीड़ा में अपना सिर फोड़ते थे, लेकिन घाव शायद ही कभी गहरे होते थे। खासक ने अब जो देखा वह केवल एक रस्म नहीं थी: तलवार ने खोपड़ी पर गहरे घाव कर दिए और भविष्यवक्ता के उलझे हुए बालों पर खून जम गया... अगले दिनों में कुट्टादान ने अपने शरीर को कष्ट देना बंद नहीं किया। वह जलते हुए अंगारों के ढेर पर चला।

“सचमुच, शेख ने उसे आशीर्वाद दिया है। अब हम उस देवी की वाणी सुनेंगे जिसने उसे अपने वश में कर लिया है।”

कुट्टादान का उन्माद शांत हुआ, लेकिन तलवार की धार की तरह दर्दनाक, आग की भट्टी की तरह झुलसा देने वाली एक याद उसका पीछा करती रही, बाकी सभी यादों को धुंधला कर रही थी। वहाँ, ध्वनियों के अथाह भ्रम के बीच, स्नान के बाद वह लड़की खड़ी थी, उसकी कमर पर पावु मुंडू लिपटा हुआ था, और पारदर्शी लबादे के नीचे से लाल अंतर्वस्त्र गुड़हल के फूल की तरह दिख रहा था। तपस्या के उन्माद में उसने देवी की कमर पर मुंडू लपेट दिया। उसने तब तक प्रार्थना की जब तक कि उसकी कठोर नाभि के नीचे लाल गुड़हल खिल नहीं गया।

कुट्टादान का छोटा सा मंदिर जीर्ण-शीर्ण अवस्था से निकलकर समाधि और भविष्यवाणी का स्थल बन गया। देवी सप्ताह में दो दिन, कभी-कभी इससे भी अधिक बार, अपने दिव्यदर्शी के माध्यम से वाणी प्रकट करती थीं...

रविवार को नाश्ते के बाद रवि आराम कुर्सी पर लेट गया। वह शांत था, और उस शांति में दूर से कुछ आवाज़ें आ रही थीं - दर्द और आनंद की चीखें, जैसे तलवार मांस को चीर रही हो। पीतल की पायल की लयबद्ध झंकार उस आवाज़ के साथ घुलमिल गई।

रवि पूरी एकाग्रता से सुन रहा था, और जैसे-जैसे वह सुनता गया, वह आवाज़ और भी दूर से सुनाई देने लगी, मानो उस आवाज़ की तलवार उसे शुद्धिकरण और दीक्षा के लिए किसी अज्ञात जंगल में बुला रही हो।
उस शाम उन्होंने माधवन नायर से कहा, 'चलो कुट्टादान के मंदिर चलते हैं। अगले रविवार को?'
'भविष्यवाणी सुनने के लिए?'
'पूर्ण रूप से हाँ।'
माधवन नायर मुस्कुराए और उत्सुकता से देखने लगे।
'लेकिन क्यों, माश?'
रवि ने मन ही मन सोचा, वह मंदिर क्यों जा रहा है? उस छोटे से गड्ढे में क्यों जा रहा है जहाँ एक विचित्र मूर्ति खड़ी है? रवि के भीतर एक गहरा प्रेम उमड़ रहा था। देवी, रवि निराश हो गया, आपने इस तुच्छ अवतार को क्यों चुना? क्या उन्होंने अपने ही विशाल ब्रह्मांडीय स्वरूप से बचने के लिए खसक की कोख में शरण ली थी? उसने मन ही मन सोचा कि वह उनका सगोत्र है, और इस अंतरंग पवित्र स्थान में वह अपने जुड़वांपन को खोज लेगा। फिर वह अपना दुख उनके साथ बाँटेगा, गर्भस्थ दुख, पीढ़ी दर पीढ़ी; जैसे ही उसने यह सोचा, उसका दुख कर्म के दुख में बदल गया, यह पापी का घाव था, अनाथ की तड़प थी, ज्ञान की प्यास रखने वाले की निराशा थी।
रवि ने कभी वह तीर्थयात्रा नहीं की।
'बेचारे कुट्टादान को आखिरकार पैसा मिल ही गया,' माधवन ने कहा।
खेतों में टहलते समय नायर ने यह बात देखी।
'तो फिर उसकी देवी सचमुच में मौजूद होगी,' रवि ने कहा।
खासक से आने वाले श्रद्धालुओं की संख्या जल्द ही बाहर से आने वालों से कम हो गई। चढ़ावे की वस्तुओं का प्रबंधन करना था, हिसाब-किताब रखना था। कुट्टादान ने थेइनागन नाम के एक कुशल कारीगर को काम पर रखा, जो कभी पहाड़ों पर लकड़ी चोरों के साथ काम करता था...
एक दिन, प्रवासी नहर खोदने वालों की पूरी भीड़ मंदिर में दर्शन करने, हुंडियों में पैसे डालने और चले जाने के बाद, कुट्टादान मंदिर में पालथी मारकर बैठ गया और कई बातों पर विचार करने लगा।
उन्होंने अत्यंत गंभीरता से थेइनागन से कहा, 'हम अब कोई छोटा तीर्थस्थल नहीं रहे।'

‘सच है, हे भविष्यवक्ता।’
'हम एक मंदिर हैं। हमें वार्षिक उत्सव अवश्य मनाना चाहिए।'
‘हमें अवश्य ही करना चाहिए, हे भविष्यवक्ता।’
उत्सव का मुख्य आकर्षण घुड़सवार नर्तक थे, जो कथकली वेशभूषा में सजे नकाबपोश पुरुष थे, जिनके सिर पर विशाल झिलमिलाते मुकुट थे। उन्हें बांस के चबूतरे पर ले जाया जाता था, जहाँ वे खड़े होकर मुंह बनाते और चिल्लाते थे। शाम को बांसुरी और ढोल बजते थे और आतिशबाजी होती थी। दोपहर में मुर्गों की बलि दी जाती थी और भविष्यवाणी का उन्मादपूर्ण प्रदर्शन होता था।
त्योहार का दिन आ गया। बादशाह की मस्जिद और मैमूना की दुकान के सामने रिबन लटके हुए थे, माधवन नायर की सिंगर सिलाई मशीन की पतली गर्दन पर मालाएं सजी हुई थीं। दोपहर ढलते-ढलते केंद्रीय चौक पर भीड़ जमा हो गई थी, आस-पास के गांवों के खाली बैठे लोग और ज़ाहिर तौर पर नहर खोदने वाले मज़दूर भी। फेरीवाले भीड़ के बीच से रास्ता बनाते हुए चल रहे थे, देहाती खिलौने बनाने वाले, सस्ते और तेज़ गंध वाले सौंदर्य प्रसाधन बेचने वाले, और छोटी-छोटी चीज़ों से भरी थालियां लिए महिलाएं। मुल्ला और खाज़ी दोनों ही दरगाह पर आए और अगरबत्तियां जलाईं। त्योहार के लिए सब कुछ तैयार था, देवी के अपने संदेश को खासक के केंद्र में ले जाने के लिए।
मंदिर के अंदर, कुट्टादान ने उस योद्धा देवी की लाल साड़ी पहन ली, जो किसी भी क्षण उस पर अवतरित हो सकती थी। ऐसे समय में भक्तों को मंदिर के बहुत करीब जाने की अनुमति नहीं थी, लेकिन माधवन नायर ने भविष्यवक्ता से बात करने की इच्छा व्यक्त की।
'आदरणीय दर्जी नायर भगवती का आशीर्वाद चाहते हैं,' थेइनगन ने फुसफुसाते हुए माधवन नायर का अनुरोध बताया।
देवी ने पूछा, ‘उसकी क्या बीमारी हो सकती है?’
वह बाहर इंतजार कर रहा है।
उसे अंदर आने के लिए कहो।
माधवन नायर ने प्रवेश किया और प्रणाम किया।
‘क्या बात है, पूज्य नायर?’ देवी ने पूछा।
‘हे सर्वशक्तिमान देवी, मैं माश के लिए आया हूँ।’

'हमें खुशी है,' देवी ने कहा, जो अब पूरी तरह से कुट्टादान के नश्वर शरीर में आ चुकी थीं, 'माश आ सकता है।'
‘जब उन्माद चरम पर पहुंचेगा, तब मैं उसे ले आऊंगा।’
'हां, यह बेहतर है। और दुनिया को यह पता चलने दो कि महान लोग भगवती की शरण लेते हैं।'
Madhavan Nair left. Theinagan peeped in again.
‘हे सर्वशक्तिमान देवी,’ उसने कहा, ‘ये तो शहरवासी हैं। उन्माद इतना भयानक होना चाहिए कि और भी शिक्षक आपकी वेदी पर आएं।’
‘बेशक वे आएंगे।’
अब थिनागन दो दुनियाओं के बीच फंस गया था।
उन्होंने कहा, ‘कल, भविष्यवक्ता के नश्वर शरीर को सिरदर्द हो रहा था। हमें आज ऐसा नहीं होने देना चाहिए। मैं एक अवैध पेय भेंट लाया हूँ, यह चैटेलन का विशेष मिश्रण है।’
‘The Bhagavati needs no such stimulation.’
'बिल्कुल, सर्वशक्तिमान माता।'
देवी सोचने लगीं। दूसरी दुनिया से प्रश्न आया, 'सल्फेट का क्या हुआ?' 'हमारा मानना है कि उस बूढ़े पापी ने इसे बहुत अधिक खाद के साथ नहीं मिलाया होगा।'
‘बिल्कुल सही मिश्रण, हे सर्वशक्तिमान देवी।’
थिनागन ऐसे बर्तन लेकर आया जिनमें वह रसायन भरा हुआ था जो खुशी देता है। आदेश आया, 'इसे कोने में ही रखो, और नर्तकों और नृत्य मंच ढोने वालों को इसका सेवन करने दो।'
कुट्टादान ने स्वयं भी उदारतापूर्वक इसका सेवन किया और उसे यह अच्छा लगा। नर्तक अपने पारंपरिक वस्त्रों में, सिर पर मुकुट लिए, जो धागे और गोंद से मजबूती से जड़े हुए थे, आए। वे एक के बाद एक मंदिर में दाखिल हुए, जल्दी-जल्दी और भरपूर मात्रा में पेय पिया और चले गए। देवी का नश्वर शरीर लकड़ी के स्टूल पर पालथी मारकर बैठा था, उसका नश्वर मस्तिष्क तर्क कर रहा था, अनियमित ध्वनियों, पारदर्शी मुंडू, अर्धचंद्र चिह्नों और रहस्यमयी छिपकली के बारे में सोच रहा था। जल्द ही वह नश्वर शरीर पीछे हट गया। बाहर एक विशाल पटाखा फूटा, और देवी ने अपनी दैवीय गर्जना से उत्तर दिया, 'आआआआह्ह्ह्ह!'
बहिष्कृत नर्तकों ने अपने मंचों के ऊपर से उत्तर दिया, 'हूय्याह!'

उत्सव शुरू हो गया। थिनागन ने फिर से झाँका और ढोल की आवाज़ के बीच अपनी आवाज़ बुलंद करते हुए, होंठों को सिकोड़कर अपनी बात को पूरा करते हुए कहा, 'माश आ रहा है।'

देवदूत का नश्वर शरीर ज़मीन पर पटका, पीतल की पायलें खनक उठीं, देवदूत की पुकार मंदिर से फिर गूंजी। भीड़ सांस रोके इंतज़ार कर रही थी। लेकिन कुछ अनहोनी हो रही थी—स्वरूप प्रकट देवी, जैसे ही उन्होंने फिर पुकारा, रहस्यमय तरीके से मनुष्यों के अंतर्मन में भी अपनी उपस्थिति का एहसास करा रही थीं। कुट्टादान तलवार पर झुके खड़े थे, उनके पैर एक दूसरे से लिपट जाने की व्यर्थ कोशिश कर रहे थे, जैसे प्रसव पीड़ा से पीड़ित कोई स्त्री। थेइनगन देख सकते थे कि देवदूत कुछ कहने की कोशिश कर रहे थे, लेकिन दर्द के भंवर में ध्वनियाँ खो गईं। उनके भीतर एक घना सर्प रेंग रहा था, सल्फेट का चमत्कारी जीव। विक्षिप्त शब्दों में देवदूत ने थेइनगन को भीड़ को बताने के लिए संदेश दिया, 'कोई अभिव्यक्ति नहीं—भगवती—क्रोधित—बताओ —'

थिनागन ने दौड़ते हुए ये अनमोल शब्द कहे: 'कोई उत्सव नहीं है, देवी क्रोधित हैं!' भीड़ में अफरा-तफरी मची हुई थी, सारे चबूतरे ज़मीन पर गिरे हुए थे और नर्तक उन पर बेजान से बैठे थे, मानो अपनी ही बेबसी और दुर्गंध में डूबे हुए हों। किसी ने भी थेइनागन के अनमोल शब्द नहीं सुने। तीन मुकुटधारी नर्तक कुत्तों से पीछा पाते हुए खेतों की ओर दौड़ रहे थे। हे सर्वशक्तिमान देवी, थेइनागन विलाप करते हुए बोले, आपने हमें क्यों बर्बाद कर दिया? मानो उत्तर में, उनके भीतर से एक ध्वनि उठी, प्रतिशोधी देवी की शंख की पुकार; उन्होंने अपने पेट पर हथेलियों को ज़ोर से दबाया, लेकिन ब्रह्मांडीय प्रलय को कोई नहीं रोक सका। थेइनागन भी नर्तकों के पीछे-पीछे खेतों की ओर दौड़ पड़े।

भीड़ जा चुकी थी, और कुत्ते भी गायब हो गए थे। रवि खड़ा रहा, चीड़ की झाड़ियों की ओर देखता रहा जहाँ अप्पू-किली अपनी ड्रैगनफ्लाई का शिकार करता था। झाड़ियों के पीछे नर्तक दुबके हुए थे, वह केवल उनके झिलमिलाते मुकुटों को ही देख पा रहा था जो सूरज की रोशनी में चमक रहे थे।

फूल की खुशबू

अगली सुबह रवि जागता रहा। त्योहार की भयावह कॉमेडी घृणा की लहर बनकर उसके दिमाग में फिर से उमड़ आई—पुरुषों का कम आवरण के पीछे शौच करने की शर्मनाक हरकतें, झाड़ियों के ऊपर उनके चमकीले मुकुटों की चमक। जल्द ही ये दृश्य उदासी में बदल गए। उस शाम अपनी रोज़ाना की सैर पर माधवन नायर ने रवि से कहा, 'माश, तुमने पूरी कहानी नहीं सुनी है। ये कुप्पू-अच्चन का गंदा काम था। उसने चत्थेलन से उस शराब में ज़रूरत से ज़्यादा सल्फेट डलवा दिया था, जितना आंतें सहन नहीं कर सकती थीं। बेचारा शराब तस्कर भोलेपन से उसके साथ चला गया, उसे पता ही नहीं था कि वह शराब तुरंत पेट साफ़ कर देगी।'

‘हे भगवान!’ रवि ने कहा, ‘कुप्पू-अच्चन को ऐसा क्यों करना पड़ा?’

'यह उसका एक तरह का शरारती मज़ाक था।'

रवि चुपचाप दर्जी के बगल में चलता रहा। उसने एक दिव्य युद्ध देखा था, एक देवी का अंत।

उस मौन के बाद रवि बोला, 'मैं इस रविवार को भविष्यवक्ता से मिलना चाहता हूँ।'

‘इन सब घटनाओं के बाद, माश?’

'हाँ।'

माधवन नायर ने सोचा, इस नौजवान के कितने अजीब तरीके हैं! रविवार आने में तीन दिन बाकी थे; रवि उन दिनों को अपने लिए समर्पित रखता था। वह सूर्यास्त के समय अकेले ही सैर करता था और गोधूलि बेला में खसक के देवताओं को देखता था। वे मनुष्य की मूर्खताओं की रक्षा करते थे। उसने उन्हें मस्जिद के विशाल आंतरिक भाग में, सड़ते हुए शवों की दीप्तिमान साँस में, विशाल इमली के वृक्ष पर, सर्प की मूर्तियों के भीतर, सुनसान रास्तों के किनारे देखा। वे किस रहस्य की रक्षा कर रहे थे? क्या वे खजूर के उस जंगल की रक्षा कर रहे थे जो अनंत तक फैला हुआ था, उस गोधूलि बेला का रहस्य जिसे न सूर्योदय और न सूर्यास्त सुलझा सकता था? शायद यही उसका पाप और उसका देवत्व था, और देवी-देवता इसके साक्षी थे।

रविवार। जैसे ही रवि और माधवन नायर स्कूल से निकले, अप्पू-किली उनके पीछे-पीछे चलने लगा।

‘किली, तुम यहाँ क्यों आना चाहते हो?’ माधवन नायर ने अपने शिष्य को हतोत्साहित किया।

'जाओ, किली, ड्रैगनफ्लाई पकड़ो,' रवि ने धीमी आवाज़ में कहा।

अप्पू-किली ने अपनी आदत के अनुसार मुस्कुराया नहीं। उसने उदास होकर कुट्टादान के मंदिर की ओर देखा।
‘कोई बात नहीं,’ रवि मान गया। ‘हमारे साथ चलो, किली।’
मंदिर सुनसान था। भीड़भाड़ का समय होने के बावजूद कुट्टादान कहीं नज़र नहीं आ रहा था। लाल कलगी वाला एक मुर्गा आंगन में जमा कूड़े के ढेर पर इतरा रहा था। मंदिर का दरवाज़ा थोड़ा खुला हुआ था। रवि कुट्टादान के घर की ओर मुड़ा। ताड़ के पत्तों से बनी नई छत ने बरामदे का ज़्यादातर हिस्सा छिपा रखा था। रवि पत्तों के नीचे झुककर अंदर झाँका। वहाँ चिकनी मिट्टी के फर्श पर कुट्टादान की बूढ़ी माँ बैठी थीं।
‘भविष्यवाणी करने वाला कहाँ है?’ रवि ने पूछा। माधवन नायर ने थोड़ा ऊँची आवाज़ में वही सवाल दोहराया।
धीरे-धीरे उसने उन पर एक अनदेखी निगाह डाली, मोतियाबिंद के दोहरे धब्बों से झुर्रियाँ फैल रही थीं। अप्पू-किली बेचैन हो गया। उसने कहा, 'एट्टो, चलो चलते हैं!'
'शश!' माधवन नायर ने उसे चुप कराया। अप्पू-किली कराह उठी।
‘अरे, अरे!’ दर्जी चिल्लाया। घर के पीछे एक गड्ढे में इतने समय से छिपा हुआ भविष्यवक्ता उछल पड़ा और आंगन पार करके भागा। उसके हाथ में घुमावदार रस्मों वाली तलवार थी। रवि और माधवन नायर एक तरफ हट गए। कुट्टादान ने भविष्यवक्ता की तरह चीख मारी, ‘हाआआआर्च्ह्ह!’
कलगीदार मुर्गा फड़फड़ाते हुए छत पर चढ़ गया और खतरे की चेतावनी देते हुए बांग दी। कुट्टादान ने उसका सिर पीटना शुरू कर दिया; संक्रामक रोगों की रानी नल्लाम्मा मूर्ति से बाहर निकलकर अपने देवदूत के शरीर में प्रवेश कर चुकी थी।
‘Parighatam!’ Kuttadan raged, ‘Parighatam!’
परिघटम, परिहासम का विकृत रूप, उपहास! वरन् ने मंदिर से मुट्ठी भर पवित्र राख ली और रवि पर फेंक दी। रवि को पसीना आ गया। उन्माद समाप्त हुआ, कुट्टादान मंदिर में दाखिल हुआ और खुद को अंदर बंद कर लिया।
पौधशाला में वापस आकर रवि के दिल की धड़कन तेज़ हो गई। माधवन नायर ने उसे आरामकुर्सी तक बैठने में मदद की और कुछ चिंता के साथ उसके पास खड़े हो गए।
‘बेहतर?’ दर्जी ने पूछा।
रवि मुस्कुराया।
उन्होंने कहा, 'यह एक क्षणिक दौरा था।'

रवि ने आराम किया और जल्द ही ठीक हो गया।
उन्होंने कहा, 'मुझे प्यास लगी है, पानी और हवा की। मुझे टहलने की जरूरत है।'
क्या आप चलने के लिए पर्याप्त रूप से स्वस्थ महसूस कर रहे हैं?
'मैं ठीक हूँ।'
दोनों कमल के तालाब के पास से गुज़रे और पहाड़ी की चोटी पर चढ़ गए; उन्होंने पूरब की ओर जाने वाली ट्रेन की पटरी पार की। पटरी के उस पार एक छोटा सा बाग था जहाँ आम की पुरानी डालियों पर उल्लू सपने देखते और ऊँघते हुए बैठे थे; और उससे आगे सागौन के जंगल थे। बंदरों का एक पूरा झुंड सागौन की कोमल टहनियों को मसलकर लाल पेस्ट बना रहा था जिसे वे अपने चेहरों पर मल रहे थे... ऊँचाई से रवि ने नीचे देखा। पहाड़ियों के बीच बसा एक सुंदर गाँव।
‘यह कौन सी जगह है, माधवन नायर?’
‘तुम्हें कभी शक नहीं हुआ था कि यह वहाँ है, है ना, माश?’
'ये पहाड़ियाँ आश्चर्यों से भरी होती हैं।'
वे रंगीन घाटी में नीचे उतरे।
‘इस गांव का कोई नाम नहीं है, माश। यह एक भगोड़ा स्थान है।’
बस्ती के प्रवेश द्वार पर एक जीर्ण-शीर्ण मंदिर स्थित था।
माधवन नायर ने दरवाजे को हल्के से धक्का दिया, जिससे एक पैनल जमीन पर गिर गया।
‘हे मेरे प्यारे भगवान,’ उसने कहा, ‘दीमक तुम पर टूट पड़े हैं!’
एक झोपड़ी से धुआँ उठ रहा था, जिसके सामने आँगन में एक आग का गड्ढा था, जिसके ऊपर एक बड़े बर्तन में सड़ा हुआ पानी उबल रहा था। एक हष्ट-पुष्ट अधेड़ उम्र की महिला आग को हवा दे रही थी। माधवन नायर ने बांस के फाटक से पुकारा, 'हम प्यासे हैं—हमें कुछ पीने को दो जिससे हमारा गला तर हो जाए।'
‘क्या आप अंदर आकर बैठेंगे, आदरणीय नायर?’
रवि और माधवन नायर छोटी-छोटी चटाइयों पर बैठ गए।
‘मैं अभी आती हूँ,’ उसने कहा और बर्तन को एक बार फिर हिलाया। उसने बर्तन को आग से उतारा और ठंडा होने के लिए रख दिया। उसके नंगे स्तनों पर पसीना चमक रहा था और उनकी दरारों से रिस रहा था। वह अपनी झोपड़ी के पिछले हिस्से में गई और एक बोतल अराक और दो टूटे हुए चीनी मिट्टी के फूलदान लेकर लौटी।

उसने कहा, 'यह ताजा है, लगभग गर्म है।'
‘और इसके साथ क्या है? मेरी यह दोस्त हमारे नए स्कूल की माश है,’ और फिर माधवन नायर ने रवि से उसका परिचय कराते हुए कहा, ‘यह कोडाची है, हमारी पुरानी वफादार।’ कोडाची ने नए आने वाले का खास मुस्कान के साथ स्वागत किया और माधवन नायर से पूछा, ‘क्या वह सूखी बकरी की आंत खाना चाहेंगे?’
रवि ने असहाय होकर माधवन नायर की ओर देखा।
'उसे यह बर्बर लगता है, मेरी बच्ची,' माधवन नायर ने उससे कहा, और रवि से कहा, 'तुम्हें इसमें मजा आएगा, माश।'
कोडाची ने एक गज लंबा टुकड़ा निकाला और उसे आग पर भून लिया।
माधवन नायर ने एक टुकड़ा चखते हुए कहा, 'स्वादिष्ट।'
‘आपके पति तमिलनाडु से कब लौट रहे हैं?’ माधवन नायर ने बातचीत को आगे बढ़ाते हुए पूछा।
झोपड़ी के अंदर एक दो साल का बच्चा रोने लगा; थोड़ी देर बाद वह रेंगकर बाहर आया और घबराकर उनकी तरफ देखने लगा। कोडाची ने उसे उठाया और चुप कराने के लिए अपना स्तन उसके मुंह पर दबा दिया।
उसने कहा, 'वह शायद दो महीने में वापस आ जाए, शायद एक महीने में। इस बार उसने बेचने के लिए काफी मात्रा में काला पदार्थ लिया है।'
‘वह पहाड़ के उस पार जाता है, माश,’ माधवन नायर ने भरपूर प्रशंसा करते हुए कहा, ‘और आधे तमिलनाडु को नशा करा देता है। कोडाची, वह जो सारा पैसा लाता है, उसका तुम क्या करते हो?’
उसकी आँखों में देहाती नज़ाकत झलक रही थी। 'मैं तो इसे कभी देखती ही नहीं।'
बाकी की झोपड़ियों में कोई हिल-डुल नहीं रहा था और न ही कोई बोल रहा था...
सूरज डूब रहा था जब रवि अफीम के नशे जैसी गहरी नींद से जागा। कमरे में एक अजीब सी गंध फैली हुई थी, दुर्गंधयुक्त और कामुक, जैसे सड़े हुए गुलदाउदी के फूल। चटाई से भी उसी फूल की महक आ रही थी, और उसके बगल में लेटी महिला से भी। उसने उसके शरीर पर बिछे भूरे रंग के आवरण से सुगंधित पसीने को पोंछा।
‘क्या तुम्हें बुखार है, कोडाची?’
शायद बुखार नहीं, उसने सोचा, बल्कि शरीर की उत्तेजना की गर्माहट। उसका लाल चेहरा उसके चेहरे से सटा हुआ था, मानो आसमान और भयानक शाम को ढक रहा

हो... रवि ने ट्रेनों की सीटी और पटरियों की धीमी खड़खड़ाहट सुनी; फिर से वही सफ़र शुरू हो गया था। उस सफ़र की भारी थकान में झोपड़ी, औरत और उसका नन्हा बच्चा विलीन हो गए। दूर की घाटियों में दुष्ट आत्माएँ अपवित्र मृतकों के चारों ओर नाच रही थीं। उनके कांसे के पायल भविष्यवक्ता के श्राप की लय में बज रहे थे: परिघातम! परिघातम!

फिर से नींद आ गई, और अजीब तरह से जाग उठी। उसे अपने पूरे शरीर पर ठंडे क्रिस्टल महसूस हुए। उसने उन्हें छूने की कोशिश की, लेकिन इस कोशिश से असहनीय दर्द हुआ।

उसने देखा कि चूड़ियों से सजी एक हथेली उसके चेहरे की ओर बढ़ी और उसकी आँखों में एक सुखदायक तरल पदार्थ डाला। वह इसके बाद कुछ नहीं देख सका, ऊपर फैले अँधेरे के घेरे में उसकी दृष्टि खो गई। अब वह अपना सिर उसकी गोद में रखकर लेटा था। वह कल्पक के तैरते हुए छिलकों को गिन रहा था।

रवि कराहते हुए बोला, 'माँ!'

उसने कहा, 'हिलो मत।'

धीरे-धीरे आंखें साफ हुईं, नम और ठंडी। रवि ने देखा कि मैमूना उसकी चटाई के पास बैठी है।

मैं कहाँ हूँ?

‘राजा की मस्जिद में,’ उसने कहा।

बाहर साइकिल की घंटी बजी। कोई साइकिल को दीवार के सहारे टिकाए खड़ा था। कोई कमरे में सामान लेकर आ रहा था।

'निज़ाम-अन्नान,' मैमूना ने कहा।

खाज़ी ने अंदर आते हुए कहा, 'कच्चे नारियल, मैमूना, उसे अभी एक दे दो।'

‘कच्चे नारियल?’ रवि ने पूछा।

'उनमें से बहुत सारे हैं। वे आपको जल्द स्वस्थ होने में मदद करेंगे।'

गांव के मध्य से ढोल की आवाज आई, और चेचक की देवी से की गई प्रार्थना, उन्मादपूर्ण पुकार, 'देविये, अम्माए!'

क्रिस्टल, भयानक फुंसियां, फट गईं। रिसता हुआ मवाद देवी का पवित्र संस्कार था। इसी पवित्र संस्कार से सुगंध उठी, रात में खिलते गुलदाउदी की सुगंध।

प्रेम प्रसंग

गुलदाउदी। वे हर जगह खिले हुए थे, खासक में, कूमनकावु में, चेताली की घाटी में; हवा उनकी तीव्र सुगंध को अपने साथ ले जा रही थी। अछूत लोग अपवित्र मृतकों को ले जा रहे थे, वे टपकते हुए शवों के भार के नीचे पागलों जैसी खुशी में लंगड़ाते हुए चल रहे थे।

आइए सुनते हैं ज्योतिषी क्या कहते हैं—

'संकेत शुभ हैं। देवी प्रसन्न हैं—'

'आइए हम अपने प्रिय खाज़ी की बात सुनें—'

'फुंसियां सही जगहों पर निकल आई हैं—'

'चली जाओ, अम्मा!'

रवि ने बातचीत के ये कुछ अंश सुने। उसने उन छवियों को देखा, जो कुछ वास्तविक थीं, कुछ स्वप्निल। उसने अपने चारों ओर कुछ चेहरे देखे—मैमूना, माधवन नायर, खाज़ी, गोपालु पणिक्कर। और भी लोग थे, लेकिन इससे पहले कि वह सब कुछ समझ पाता, पर्दा गिर गया। अब वह उस यात्रा का सपना देख रहा था—भागते हुए गाँव से उन्मादपूर्ण वापसी, देवताओं की तरह एक ऐसी यात्रा जो धरती को छुए बिना चलती थी।

दूर से आती ढोलों की आवाज़ हवा में गूंज रही थी; ढोल बजना बंद हो गया, रवि पसीने से तरबतर था। कोई उसके पसीने को पोंछ रहा था, मज़बूत हाथों से उसे सहला रहा था; उसके पिता! उसने अपने पिता को कहते सुना, "अब ठीक है, बुखार उतर गया है।"

वह फिर से सो गया था, अब वह शाम की सैर पर अपने पिता की छोटी उंगली को चंचल अंदाज़ में पकड़े हुए है। सूर्यास्त के बैंगनी रंग के रास्तों पर, कॉफी की झाड़ियाँ गोधूलि बेला की रोशनी से जगमगा रही हैं।

बेटा, क्या तुमने वह छोटी चिड़िया देखी?

जी पापा।

यह दर्जी पक्षी है। क्या आपको इसका छोटा सा घर दिखाई दे रहा है?

जी पापा। सिले हुए पत्तों का घर।

जब वे जाने लगे तो रवि ने पूछा, पापा, क्या दर्जी चिड़ियों के अंडों पर धब्बे होते हैं?

छोटे-छोटे नीले धब्बे।
वह उन छोटे नीले धब्बों के बारे में सोचता है और खुश हो जाता है। वह एक नन्हे पक्षी की तरह अपनी माँ के पेट से लिपट जाता है। माँ उसकी पलकों को सहलाती है; मेरे नन्हे सितारे, वह कहती है, क्या तुम जानते हो कि ये आँखें किसकी हैं?
किसका, माँ?
पापा का।
और मेरी नाक, माँ? वो तो मेरी माँ की है।
और भौंहें? पापा की।
कान?
मम्मी और पापा के।
माँ उसे हर्षोल्लास से गले लगा लेती है। दोपहर के धुंधलके में अपनी अंतिम भव्य यात्रा पर निकलते हुए, वह उसे यह संदेश देती है—यह सब तुम्हारी अनमोल विरासत है। फिर मृत्यु से मुक्ति और पुनर्जन्म का अभिशाप।
चित्तम्मा, वह पूछता है, क्या तुम रो रही हो?
वह कहती है, मैं इसका सामना नहीं कर सकती।
पाप?
यह मृत्यु के समान है।
रवि उसके कोमल ऊपरी होंठ पर चुंबन करता है। वह उससे पूछता है, पश्चाताप क्या होता है?
वहाँ, उधर, वह कहती है, सुनो।
यह उसके पिता की घरघराहट की आवाज है, जब वह लकवाग्रस्त होकर सो रहा होता है।
रवि खिड़की से बाहर देखता है, घाटी के ऊपर चाँद निकल आया है, उसकी रोशनी कॉफी के पौधों पर पड़ रही है। रवि को उन पौधों के बीच की अपनी सैर याद आती है।
चित्तम्मा, वह कहता है, मुझे अपने कमरे में जाने दो।
वह उसका रास्ता रोक देती है। रवि उसे सख्ती से कहता है, अपने कपड़े पहनो।
फिर विदाई। पिता को जगाए बिना, धीरे से अपना माथा उनके चरणों पर टिकाकर, रवि ने मौन प्रार्थना की, “पिताजी, जिन्होंने मुझे ये भौंहें और ये आंखें दीं, मैं पत्तों के इस घोंसले को त्यागकर फिर से यात्रा पर जा रहा हूँ। मेरे मार्ग को आशीर्वाद दीजिए।”

रवि ने किसी को कहते सुना, 'बारिश ने हमारी माश को बचा लिया है, अब फुंसियां ठीक हो जाएंगी।'
'दयालु देवी!'
बुखार उतर चुका था, रवि को अजीब तरह से भारहीनता का एहसास हो रहा था। चटाई पर करवट बदलते समय उसे हल्का-हल्का दर्द होता था और वह फुंसियों को समय से पहले ही मसल देता था... सात दिनों में रवि बोलने लायक हो गया।
'माश,' माधवन नायर ने सुबह की मुलाकात के दौरान कहा, 'तुम्हें देवी की कृपा प्राप्त हुई है। मुझे विश्वास नहीं हो रहा कि तुम इतनी जल्दी ठीक हो रहे हो।'
रवि मुस्कुराया।
'क्या तुमने मेरे चाचा द्वारा भेजे गए कच्चे नारियल देखे?' माधवन नायर ने पूछा।
'उसने पूरा बागान भेज दिया है। क्या इसका मतलब क्षमादान है?'
माधवन नायर हँसे। उन्होंने कहा, 'ऐसा बिलकुल नहीं है। युद्ध एक अलग ही स्तर पर पहुँच गया है। वह मुसलमानों से इसलिए नाराज़ है क्योंकि उन्होंने तुम्हें मस्जिद में रखा है! मैंने उनसे पूछा, और किस बात पर? वह बस मुसलमानों से नाराज़ हैं।'
'तुम्हारा चाचा पागल है। एक बूढ़ा पागल आदमी जिसका दिल सोने का है।'
जब रवि के शरीर पर फुंसियां फूट पड़ीं, तो शिवरामन नायर को रवि की हालत देखकर बहुत दुख हुआ और वे चाहते थे कि उसे किसी ऐसे घर में भेज दिया जाए जहाँ उसकी देखभाल हो सके। एक और बात थी जिसने मकान मालिक को, और बाकी सबको भी, परेशान कर रखा था; महामारी के कारण गर्मी की छुट्टियां जल्दी शुरू हो गई थीं, बच्चे दहशत में घर पर ही रहे, और अगर रवि को उस छोटे से घर में और रखा जाता, तो महामारी का भयानक साया मंडराता रहता और बच्चों को स्कूल से पूरी तरह भगा देता। शिवरामन नायर को बीमार गुरु के लिए कोई ऐसा व्यक्ति ढूंढना मुश्किल हो रहा था जो उन्हें अपने घर में ठहरा सके; जब वे सब बैठकर निराश हो रहे थे, तभी खाज़ी गुस्से में उन पर टूट पड़ा और बोला, 'मेश्टर मेरे साथ रहेगा। मेरे उस भूतिया घर में!'
गाँव एक विशाल फूलों की क्यारी जैसा था। नल्लाम्मा ने मवाद और मृत्यु की मालाएँ बनाईं, उसने घातक गुलदाउदी के मंडप बनाए; खासक के पुरुष उसे देखकर वासना से भर गए, यह बीमारी उनके लिए एक असहनीय आनंद बन गई जिसमें वे खून बहने से मर गए। छोटे बच्चे उसकी राक्षसी मातृत्व भरी गोद में पलते-बढ़ते मर गए।

रवि के स्वास्थ्य में काफी सुधार हो रहा था। एक दिन जब मैमूना उसके ऊपर झुककर उसकी आँखों में दूध की बूँदें डाल रही थी, तो उसने कहा, 'थोड़ी देर बाद, मैमूना। मुझे माफ़ करना कि मैं तुमसे ये अंतरंग काम करवाता हूँ।'
'यह जानकी का दूध है, मेरा नहीं।'
वे हँसे।
लेकिन मुझे इस बात की बहुत चिंता है कि आप इतने करीब आ रहे हैं। अगर आपको बीमारी हो गई तो क्या होगा?
'मैंने अपनी कमर पर निज़ाम-अन्नान का ताबीज़ बांध रखा है।' उसने लड़खड़ाती आवाज़ में आगे कहा, 'मैंने टीका भी लगवा लिया है।'
क्या कई अन्य लोगों ने भी टीका लगवाया है?
'हां, काफी सारे। अफसोस की बात है कि आप नहीं आए। आप किस तरह के स्कूल मास्टर हैं?'
मैं मृत्यु का अनुभव करना चाहता था।
'तुम्हारे सामने अभी समय है, कई बार मरने के लिए पर्याप्त समय। अब मुझे तुम्हारी आँखों में दूध की कुछ बूँदें डालने दो।'
'इंतज़ार ...'
मैमूना ने ड्रॉपर को रोक लिया।
'तुम क्या देख रहे हो?' उसने पूछा।
रवि ने कहा, 'तुम्हारे हाथ, मैं उन पर निशान देखना बिल्कुल नहीं चाहता था।'
मैमूना ने अपनी आस्तीनें जितनी हो सकती थीं उतनी ऊपर चढ़ा लीं। रवि नीली नसों की बारीक नक्काशी को निहार रहा था।
'तुम मुझे इतनी घूर क्यों रहे हो?' वह चिढ़कर बोली।
मैं उन नीली नसों को देख रहा था।
'तुम्हें ऐसा नहीं करना चाहिए। जब तक यह बीमारी तुम पर है, नल्लाम्मा तुम्हारी रखैल है। और वह बहुत ईर्ष्यालु है।'
पपड़ी उतरने लगी। रवि अपने पहले स्नान के लिए तैयार था। खज़ी ने प्रार्थना की, मुल्ला ने चना और औषधीय हल्दी-नीम का पेस्ट भेजा, जिसे साबुन के स्थान पर इस्तेमाल किया जाना था। माधवन नायर ने स्नान की ज़िम्मेदारी संभाली।
'मैं तुम्हें ये सब बातें इतने समय से बताना नहीं चाहता था,' दर्जी ने कहा, 'कुत्तादान...'

किसी कारणवश रवि को पता था कि क्या होने वाला है।
‘क्या माधवन नायर चले गए?’
'हां, माश।'
देवी ने कठोर व्यवहार किया है।
माधवन नायर रवि पर गर्म पानी डालते हुए थोड़ी देर रुके। उन्होंने कहा, 'मैं ऐसा नहीं कहूंगा। उसने उसे चिरस्थायी प्रेम दिया।'
माधवन नायर ने अन्य त्रासदियों का वर्णन किया। कुप्पू-अच्चन की आँखें चली गई थीं —कल्पना और बदनामी के वे दो रक्षक अब खून के गड्ढे बन गए थे, देवी के कुचले हुए क्रिस्टल। अब न तो भार-ढेर पर गपशप करने वाला पक्षी होगा, न ही उथले पानी में प्रतिबिंबित आकाश को विस्मित रूप से निहारने वाला सारस।
रवि ने सात बार स्नान किया और बीमारी का आखिरी निशान भी धुल गया। फिर भी वह उस भूतिया मस्जिद में ही रुका रहा। खाज़ी एक दूसरी खंडहर मस्जिद में चला गया। दिन बीतते गए। महामारी अपने अंतिम पीड़ितों को घसीटते हुए पीछे हट रही थी...
एक दोपहर रवि खसक में बहती हुई सुहावनी और मुक्त गर्मी की हवा को सुन रहा था। उसने कोने में छिपी हुई तेज़ शराब की एक बोतल निकाली।
‘क्या मैं तुम्हारे लिए थोड़ा सा डाल दूं, मैमूना?’
‘ची! ची!’ उसने अपना चेहरा दूसरी तरफ मोड़ लिया।
जैसे ही रवि ने एक घूंट लिया, मैमूना चिंता से उसे देखती रही।
रवि ने कहा, 'मैं अब बीमार नहीं हूं।'
‘लेकिन यह भावना घातक है,’ उसने कहा।
उसने एक और घूंट लिया। 'मुल्ला कैसा है?'
‘वह आपसे मिलना चाहता है, लेकिन उसके पैर के अंगूठे में दर्द है, और यहाँ दलदल और फिसलन है...’
‘पैर का अंगूठा? जहाँ सैंडल चुभ रही थी?’
'जी हां। निज़ाम-अन्नान दवा लेने कोझानास्सेरी गए हैं।'
शराब धीरे-धीरे, कोमल आग की तरह गले से नीचे उतरती गई।
‘मैमूना,’ रवि ने कहा, ‘वो नीली नसें—’

वह असहज होकर रुक गया। मैमूना ने शरारती अंदाज़ में अपनी आस्तीनें ऊपर चढ़ा लीं।
‘क्या ये ड्रेस गर्मियों के हिसाब से बहुत तंग नहीं है?’
उसने कोई जवाब नहीं दिया। वह जाने के लिए उठी।
उन्होंने कहा, 'यहीं रहो।'
नहीं। मुझे जाना होगा!
'बाहर बहुत गर्मी है ...'
वह अरबी तालाब की ओर चली गई; रवि मस्जिद की ठंडी हवा में लेटा रहा और उसकी निगाहें तालाब और उसके पार फैले वीरान इलाकों पर टिकी रहीं, वे भूतिया जगहें थीं जहाँ गाँव वाले अब भी जाने से बचते थे। उसने मैमूना को भूतिया पानी में नहाते देखा... दोपहर की गहरी शांति में, मैमूना मस्जिद लौटी, उसके कपड़े धुले हुए और गीले थे, जो उसके शरीर पर सूख रहे थे। रवि ने कमरे के अंदर एक कपड़े सुखाने वाली रस्सी की ओर इशारा किया। एक-एक करके, उसने अपने गीले कपड़े उतारे और उन्हें सूखने के लिए रस्सी पर टांग दिया। जब उसने सारे कपड़े टांग दिए, तो वह मुड़ी और रवि के सामने खड़ी हो गई। उसने देखा कि उसकी नीली नसें बांह से कंधे तक, जांघ से नाभि तक नाजुक रूप से फैली हुई हैं। खाज़ी का ताबीज़ उसकी कमर के चारों ओर एक काले धागे से लटका हुआ था। रवि ने ताबीज़ को अपनी उंगलियों के बीच पकड़ लिया।
उसने कहा, 'जब तक यह मेरी कमर के चारों ओर है, मुझे कोई नुकसान नहीं होगा।'
मुस्कुराते हुए रवि ने गांठ खोल दी। ताबीज को रखते समय उसने कोई विरोध नहीं किया। उसने सपने में खोई हुई निगाहों से रस्सी पर टंगे अपने कपड़ों को देखा और कहा, 'तुम्हारी बीमारी के बाद अभी एक महीना ही बीता है। मुझे आश्चर्य है कि सब ठीक है या नहीं—'
जब वे दोनों उठे तो दोपहर ढल चुकी थी। अभी भी थोड़ी सी अराक बची थी, रवि ने बोतल उसकी ओर बढ़ा दी। उसने बड़े चाव से घूंट भरे। जाते समय उसने रवि को याद दिलाया, 'अपना ख्याल रखना।'
रवि पर शांति छा गई; अब वह असहाय शिशु देवता की तरह प्रलय में तैरता हुआ, पीपल के पत्ते पर लेटा हुआ था, सृष्टिकर्ता अपने दुखों को फिर से शुरू करने के लिए हमेशा के लिए तैयार था।

शेख का गीत

चंद उम्मा राजा की मस्जिद में आईं जहाँ रवि स्वास्थ्य लाभ कर रहे थे। रवि ने उनके घावों से भरे चेहरे को देखा और कहा, 'तुम्हें नहीं आना चाहिए था। मैं देख सकता हूँ कि तुम्हें और आराम की ज़रूरत है।'
उसने कहा, 'अल्लाह की यही इच्छा नहीं थी। जब आपको मेरी ज़रूरत थी, तब मैं नहीं आ सकी।'
दोनों चुप हो गए। फिर रवि ने पूछा, 'बच्चे कैसे हैं?'
चांद उम्मा फूट-फूटकर रोने लगी।
रवि चिंता से व्याकुल होकर उठ बैठा।
‘मेरे कुन्हू नूरू, मेरे बेटे—’ वह सिसकते हुए बोली।
‘चांद उम्मा!’
मेरा बेटा बिल्कुल भी ठीक नहीं है।
उस सुबह रवि लड़खड़ाते कदमों से पहली बार गांव की ओर बढ़ा, चांद उम्मा के घर की ओर... कुन्हू नूरू और चंदू मुत्थू फर्श पर बिछी फटी हुई दरी पर लेटे हुए थे।
'अन्नो!' चंदू मुत्थु ने हमेशा की तरह अदम्य भाव से रवि का अभिवादन किया। 'सलाम!'
‘सलाम, नन्हे बच्चे!’
तेज़ हवा चली और छप्पर हिल गया, सूखी पत्तियाँ खाँसते कुत्ते पर चिपके कीड़ों की तरह ऊपर-नीचे हो रही थीं। रवि कुन्हू नूरू के पास घुटनों के बल बैठ गया और उसका माथा छुआ। उसे हल्का बुखार था। फुंसियाँ अंदर की ओर, शरीर के भीतर समा गई थीं। जहाँ फुंसियाँ थीं, वहाँ अब दूर पहाड़ियों पर फूलों की क्यारियों जैसी हल्की लाल चकत्ते पड़ गए थे, जो देखने में भ्रामक और जानलेवा थे।
‘कुन्हू नूरू!’ रवि ने उसे पुकारा। लड़के के चेहरे पर एक हल्की सी मुस्कान झलक उठी। वह उस मुस्कान के पीछे कहीं छिपा हुआ था, मानो किसी रहस्यमय किले में दूर बैठा कोई श्रोता हो।
एक चमकीली नीली मक्खी तेज भिनभिनाहट करती हुई अंदर आई; वह कोई शुभ समाचार नहीं लाई थी। वह कुन्हू नूरू के चारों ओर बड़े-बड़े चक्कर लगा रही थी। चंद उम्मा इस भिनभिनाती मक्खी को देखकर भयभीत हो उठीं। अपने बच्चे के अचानक होने वाले गुस्से के विस्फोटों की तरह, वह अपने आप में सिमट गईं। रवि बच्चों के लिए

संतरे लाया था; जैसे ही उन्होंने एक संतरा छीला, उन्हें लगा कि फल और उनकी उंगलियां एक अथाह दूरी पर हैं।
चंदू मुत्थु को चॉकलेट याद आ गई.
'एनो,' उसने पूछा, 'क्या तुम कुछ और लाओगे?'
'मैं करूँगा,' रवि ने कहा।
'चांदी के कागज के साथ?'
'हां, मेरी प्यारी बच्ची।'
कुन्हू नूरू की उसी रात मृत्यु हो गई। चंद उम्मा ने चंदू मुत्थु को बताया कि रवि उसके भाई को पौधशाला ले गया था।
'उम्मा,' उस छोटे बच्चे ने पूछा, 'क्या लड़का ठीक हो गया है?'
'हां, मेरी प्यारी।'
'अब वो बड़ा हो जाएगा ना, उम्मा?'
चंद उम्मा अपने पिछवाड़े में गईं। उन्होंने अपना माथा पपीते के पेड़ के तने पर पटका, पागलों की तरह बार-बार पेड़ पर झपटीं। उन्हें न दर्द हुआ, न आंसू बहे। गुस्से से भरी आँखों से वह घर लौट आईं। वह चंदू मुत्थू के बगल में बैठ गईं। वह इंतज़ार करती रहीं।
दो दिन बाद चंदू मुत्थु ने अपनी मां से कहा, 'मुझे देखो, उम्मा। मैं ठीक हूँ, है ना, उम्मा?'
चांद उम्मा ने अपनी बच्ची की नन्ही हथेलियों को अपने हाथों में लिया और उसके चेहरे को देर तक निहारा। फुंसियां अंदर की ओर बढ़ गई थीं। यह एक धूर्त, रक्तस्रावी बीमारी थी। बच्ची के चेहरे, गर्दन, बांहों और कंधों पर, मुश्किल से दिखाई देने वाले, भयंकर दाने फैले हुए थे।
'उम्मा, संतरे कौन लाया?' चंदू मुत्थु ने कमजोर आवाज में पूछा।
'मैश्तर-अन्नान।'
क्या वह चॉकलेट लाएगा?
'वह करेगा, मेरे प्यारे बच्चे।'
'चांदी के कागज से, उम्मा?'
'चांदी के कागज के साथ।'
'उम्मा—'
'क्या बात है, मेरे बच्चे?'

‘आंगन में, उम्मा—’
‘क्या, मेरी प्यारी?’
‘लड़का आ गया है, उम्मा। वो मुझे खेलने के लिए बुला रहा है।’ फिर उसने अंधेरे में देखा और कहा, ‘लड़के, उस बड़े काले कुत्ते को मेरे रास्ते से हटाओ।’
आधी रात को ग्रामीणों ने वह गीत सुना, शेख के चुने हुए पागल का गीत: 'मैं तुम्हें अपनी बाहों में उठा लूँगा। मैं तुम्हें उफनती धरती के हवाले नहीं करूँगा!'
पैर के अंगूठे में दर्द के कारण नींद न आने पर अल्लाह-पिच्चा उठकर बैठ गया और सुनने लगा। थिथी बी ने कहा, 'यह तो घुमक्कड़ फकीर है!'
घुमंतू फकीर, चांद उम्मा के पिता, इमली की देवी के श्राप से भाग निकले थे। उनकी दूधिया सफेद दाढ़ी कमर तक पहुँचती थी, पैरों पर धूल और अनेक रास्तों के निशान थे। वे खासक के सोए हुए घरों और दुकानों के पास से गुजरे। वे एक चट्टान की चोटी पर खड़े होकर अपनी दागदार बेटी के घर की ओर देखने लगे...
सुबह-सुबह कई आवाजों के शोर से रवि की नींद खुल गई: बूढ़े पुरुष जोर-जोर से गिड़गिड़ा रहे थे, महिलाएं विलाप कर रही थीं। कुछ ही देर बाद माधवन नायर मस्जिद में आए।
उन्होंने कहा, 'अगर तुम्हें लगता है कि तुम चल सकते हो, तो मेरे साथ आओ, माश।'
‘यह कैसी आवाज है, माधवन नायर?’
‘चंदू मुत्थु का निधन हो गया है।’
रवि ने बिस्तर पर वापस बैठते हुए कहा, 'माधवन नायर, आराम करो।'
उसके मुंह से निकले शब्द प्रेरणा से भरे हुए थे, मृत्यु की गरिमा से परिपूर्ण थे। रवि ने चूल्हा जलाया और केतली चढ़ाने के लिए रख दी।
‘माधवन नायर, पहले चाय पी लेते हैं।’
‘तुम समझदार हो, माश। मौत से दौड़ लगाने का कोई फायदा नहीं।’
उन्होंने आराम से चाय पी और चांद उम्मा के घर के लिए निकल पड़े।
भीड़ तितर-बितर हो गई थी। एक समूह पहाड़ी की चोटी पर चेतली की ओर बढ़ रहा था और किसानों के युद्धघोष कर रहा था। मुस्लिम बुजुर्ग पोन्थु रावुथर चंद उम्मा के द्वार पर पहरा दे रहे थे।
‘पोंथु रावुथर अन्नो, क्या हो रहा है?’ माधवन नायर ने बड़े से पूछा।
‘मुझे समझ नहीं आ रहा, माधवन। मुझे बिल्कुल समझ नहीं आ रहा।’

अलियार उनके पास आया और बोला, 'हमारे साथ आओ!'
रवि और माधवन नायर पहाड़ की ओर बढ़ते हुए आखिरी लोगों के साथ शामिल हो गए। भीड़ का नेतृत्व कर रहे लोगों ने अपने मुंह के चारों ओर हथेलियों को जोड़कर पुकारा, 'हमें मय्यत दे दो, फकीर! हमें शव दे दो!'
कुछ दूरी तय करने के बाद, उन्हें घुमंतू फकीर दिखाई दिया। वह सौ गज आगे चल रहा था, एक विशालकाय, जंगली आदमी, जिसके हाथों में चंदू मुत्थु का छोटा सा शव था।
'वह बेचारा आदमी...'
जब पीछा करने वाली भीड़ करीब आई, तो फकीर ने अपनी गुलेल से उन पर पत्थर फेंके।
'हार मान लो, फकीर! हमें लाश दे दो!'
पत्थरों ने भीड़ को रोक दिया। माधवन नायर रुक गए और एक तरफ हट गए।
'माश,' उसने कहा, 'उस बूढ़े ने मुझे पकड़ लिया है।'
माथे पर खून की एक हल्की सी बूंद दिखाई दी; जल्द ही वह पतली धारियों में बहने लगी।
रवि ने उसे अपने रुमाल से पोंछा।
'भगवान को हमें इस भयावह दृश्य से बचा लेना चाहिए था, माश।'
सूर्योदय के समय की धूप रवि पर मतिभ्रम पैदा करने वाले पदार्थ की तरह असर करती थी।
'Madhavan Nair,' Ravi said, 'Hold me!'
रवि अपना संतुलन खोकर गोल-गोल घूमने लगा। उसने एक अराली के पेड़ को पकड़ लिया। उसकी आँखें काली पड़ गईं, उसे उल्टी आने लगी और उसने बिना पची चाय और पित्त उगल दिया।
रवि अरली के पेड़ की छांव में बैठ गया।
माधवन नायर अपने दोस्त के ऊपर झुक गए।
'अब बेहतर है, माश?'
'चलो वापस चलते हैं।'
वे धीरे-धीरे गांव की ओर वापस चल पड़े।
दूर-दूर तक धीमी आवाज में अभी भी वो पुकार सुनाई दे रही थी, 'लाश! लाश!'

फकीर ने अपने पीछा करने वालों पर जादू करने की धमकी दी। इससे भीड़ की रफ्तार धीमी हो गई और अंततः वे निराश होकर वापस लौट गए।
फकीर शेख की मजार पर चढ़ गया। उसने प्रियतम के शरीर को चट्टानी मीनारों के बीच लिटा दिया। वह उसके पास बैठ गया और मृत्यु की लोरी गाने लगा। जो भी दखल देने की हिम्मत करता, उसे गुलेल से पत्थरों का सामना करना पड़ता। यह शोक सभा पाँच रातों तक चली। छठे दिन अप्पू-किली पहाड़ से नीचे आया।
ग्रामीण ऊपर गए। फकीर जा चुका था। चंदू मुत्थु शेख की समाधि के बगल में पिघलते मांस के एक पोखर की तरह पड़ा था।
उस दोपहर रवि, माधवन नायर के साथ पौधशाला लौट आया। अप्पू-किली भी उनके साथ था।
अपने शिष्य को देखकर दर्जी ने कहा, 'हे दीमक के टीले के संत वाल्मीकि! नदी के किनारे जाओ और धो लो। तुम्हारे ऊपर दीमक रेंग रहे हैं।'
जब रवि पौधशाला में दाखिल हुआ, तो उसे लगा कि वह कई जन्मों का सफर तय करके इस स्वर्ग में फिर से पहुंचा है। आधी पढ़ी किताब, स्याही की बोतल, शेविंग किट, चायदानी और कप—सब कुछ वहीं था जहाँ उसने छोड़ा था।
कमरे में एक हल्की सी सुगंध फैली हुई थी, यात्री की कोमल अगरबत्ती की खुशबू। यह स्थिर और निष्क्रिय वस्तुओं की यात्रा थी, समय के माध्यम से एक यात्रा। जैसे ही उसने धूल साफ की और कमरे को हवादार बनाया, उसे इस बात का दुख हुआ कि उसने एक अविश्वसनीय तीर्थयात्रा में बाधा डाली थी।

रूपांतरण

और ग्रीष्म ऋतु समाप्त हो गई; खासक की सुबह की घास पर ओस की बूँदें फिर से चमक उठीं। स्कूल फिर से खुल गया।
रवि ने अपने सामने पड़े रजिस्टर पर सरसरी नज़र डाली; उसने कुछ नामों को हरे रंग से रेखांकित किया था—उन लोगों के नाम जो अब स्कूल नहीं आएंगे: वावर, नूरजहाँ, यूनिपराथी, किन्नरी, करुवु। उसने केवल नामों को रेखांकित किया था, उन्हें मिटाने की उसकी हिम्मत नहीं हुई। उस फकीर की तरह जिसने अपनी मृत पोती को पहाड़ पर रखा था और उसे कब्र खोदने वाले को नहीं सौंपा था, रवि ने उन नामों को सहेज कर

रखा था। हरे रंग की रेखाएँ उसके मंदिर की छोटी खिड़कियाँ बन गई थीं जिनसे वह उदास होकर देखता रहता था। बाहर, सूरज और ओस, घास और ताड़ के पेड़, पुनरावृति और पुनर्जन्म में, अंतहीन विकास में, दुःख रहित और इच्छा रहित...
रवि ने रजिस्टर से नज़र उठाकर उन जगहों को देखा जहाँ मृत बच्चे बैठते थे। उस दिन उसने हाजिरी नहीं ली।
महामारी के दौरान अप्पू-किली पहाड़ों पर चला गया था, जहाँ उसके बाल लंबे और उलझे हुए हो गए थे। जब वह वापस स्कूल आया, तो उसके बालों में जूँएँ बढ़ती जा रही थीं। जूँएँ इधर-उधर चरती थीं और कभी-कभी झुंड में निकलकर दूसरे सिरों की तलाश में निकल आती थीं।
रवि इतिहास पढ़ाता था और उसने सोचा कि यह उदाहरण काम आएगा।
उन्होंने बच्चों से कहा, 'आर्यन ठीक इसी तरह आए थे। वे अपने मवेशियों के झुंड को चराते हुए नए चरागाहों की तलाश में आए थे।'
जूँ का मामला इतिहास में ही समाप्त नहीं हुआ। उस शाम कुन्हामिना की माँ चोलयुम्मा ने उसे नहलाया और सुगंधित तेलों से उसके बालों को संवार रही थी, तभी एक जूँ बाहर कूद गई।
'यह जूं कहां से आई?' चोलयुम्मा ने पूछा।
'माँ, वो अप्पू-किली का जूँ था,' कुन्हामिना ने कहा। 'वो आर्यों की तरह ही आया होगा।'
'तुम क्या बकवास कर रहे हो, बच्चे?'
कुन्हमीना ने चोलयुम्मा को आर्यों की कहानी सुनाई। लेकिन चोलयुम्मा पर इसका कोई असर नहीं हुआ। अगले दिन चोलयुम्मा ने रवि से शिकायत की। अप्पू की उलझी हुई लटें मुंडवानी ही जुओं से छुटकारा पाने का एकमात्र उपाय था। रवि तोते को नाराज़ नहीं करना चाहता था, इसलिए उसने माधवन नायर से कहा कि वह अप्पू को यह बात नरमी से समझाए। हैरानी की बात यह थी कि तोता बिना किसी विरोध के मान गया...
जब अप्पू-किली नाई की दुकान पर पहुँचा, तो वहाँ एक भिखारी अपना सिर मुंडवा रहा था और पीछे बालों का एक गुच्छा छोड़ रहा था।
'क्या मैं तुम्हें ऐसी चोटी दूं, हे तोते?' हिंदू नाई ने चलते-फिरते पूछा।
'मेरी देखो,' भिक्षु ने प्रोत्साहन देते हुए कहा। 'जानते हो क्या—अगर तुम एक को अपने पास रखोगे तो वे तुम्हें अपनी बेटियाँ शादी के लिए दे देंगे।'

तोते ने अपनी चिरस्थायी मुस्कान बिखेरी और पूछा, 'क्या तुम्हें कोई लड़की चाहिए?'
उसने नाई से कहा, 'मुझे एक मजबूत लड़की चाहिए।'
और जब तोता मुंडा हुआ जा रहा था, सिवाय उसके पीछे लटकते हुए बालों के गुच्छे के, तो नाई ने उसे यह सलाह दी, 'अगर कभी तुम पेड़ से गिर जाओ, तो अपने आप को बालों के गुच्छे से खींच लेना।'
अप्पू-किली माधवन नायर के सामने खड़ा था, उसके चेहरे पर अभी भी वही मुस्कान थी।
'Look at me, Madhavan-Etto!'
माधवन नायर को पहले तो गुस्सा आया, उन्हें तोते का मजाक उड़ाना बिल्कुल पसंद नहीं था, लेकिन उसकी मनमोहक बेतुकी बातों को वे ज्यादा देर तक बर्दाश्त नहीं कर सके। आखिर किस्मत का खेल है, उन्होंने मन ही मन कहा।
'अय्यो! मेरे तोते!' उसने कहा। 'तुम्हें देखने के लिए इंदरजीत की हजार आँखों की जरूरत है!'
अगले दिन स्कूल में अफरा-तफरी मच गई। फूलों, बेरों और चांदी के कागज से गुच्छे को सजाने के इच्छुक बच्चों को रोकना मुश्किल हो गया। केवल कुन्हामिना ही दूर रही —वह दुखी थी कि उसकी माँ और जूँ ने किली पर यह सब मुसीबत ला दी थी।
रवि ब्लैकबोर्ड पर एक सवाल हल कर रहा था; जब उसने मुड़कर देखा, तो उसने कुन्हमीना को विचलित अवस्था में पाया।
'अब क्या हुआ, मेरे प्यारे बच्चे?'
उसने कोई जवाब नहीं दिया।
'मुझे बताओ,' रवि ने फिर कहा।
उसने हिचकिचाते हुए कहना शुरू किया, 'ओह, सार...'
रवि इंतजार करता रहा। कुन्हमीना को आखिरकार शब्द मिल ही गए, 'क्या जूँओं की भी आत्मा होती है, साहब?'
वह रुका, फिर बोला, 'अगर हमारे पास आत्माएं हैं...'
'हमारे पास है, सार।'
'तो फिर, मुझे लगता है, जूँ भी ऐसा ही करती हैं।'
रामनकुट्टी ने हस्तक्षेप करते हुए कहा, 'जूँ की भी आत्मा होती है, साहब।' इससे मामला सुलझ गया क्योंकि वह जादूगर का पुत्र था।

कुन्हामिना और अधिक जानना चाहती थी, 'अप्पू की जूँ अगले जन्म में क्या बनेंगी?' क्या वे जूँ बनकर पुनर्जन्म लेंगे? या वे मनुष्य बनकर लौटेंगे, या जंगली हाथी, व्हेल, या छोटे-छोटे रोगाणु बनकर? रवि का मन अचानक चमेली की खुशबू से भरी उस रात में चला गया, जब उसने चुपके से अपने पिता से विदा ली थी। हे मेरे पिता, क्या आप अगले जन्म में मेरे पास लौटेंगे, यदि आपको अपने पापों का प्रायश्चित करना है? और कौन पाप नहीं करता? क्या आप उस प्राणी के रूप में लौटेंगे जिससे मुझे सबसे अधिक घृणा है? वह मकड़ी दीवार पर चिपकी हुई थी, उसके आठ पैर फैले हुए थे, प्रेम और असीम दुःख से भरी आँखों से उसे देख रही थी। उसने कागज के एक टुकड़े को मसलकर गेंद बना ली और मकड़ी पर फेंक दी। मकड़ी बेतहाशा गोल-गोल दौड़ी और फिर दीवार पर अपनी बेसुध अवस्था में लौट आई। रवि ने उसे अपनी चप्पल से मारा। वह दीवार पर ही रह गई, टूटे अंगों, चिपचिपे पदार्थ और रोएँ का एक धब्बा। रवि कुछ देर तक चिंतन में डूबा रहा। उसके भीतर कृतज्ञता उमड़ पड़ी, पीढ़ियों की कृतज्ञता। वह काँप उठा और चप्पल उसके हाथ से गिर गई। दिवंगत पूर्वजों को यह कितनी अद्भुत भेंट है, कितनी श्रद्धा है!

और अब उन्होंने कुन्हामिना के सवाल की ओर रुख किया, 'सच कहूँ तो, मेरी प्यारी बच्ची, मेरे पास इसका जवाब नहीं है।'

लेकिन बच्चों के पास जवाब था। वे जानते थे कि जो चले गए उन्हें वापस आना ही था, और वावर, नूरजहाँ, यूनिपराथी, किन्नरी और करुवु फिर से सुंदर बच्चे बन जाएँगे। उन्होंने रवि को खसक की कथाएँ सुनाईं, उन लोगों की जो सुदूर निर्जन स्थानों से वापस आए थे, इमली के वृक्ष पर विराजमान देवी की, खसक के पूर्वजों की, जिनके जन्म चक्र समाप्त होने पर वे अपनी संतानों की भेंट ग्रहण करने के लिए फिर से जीवित हो उठे थे; फिर विक्रम के सिंहासन पर विराजमान मूर्तियों की तरह, जो राजा के सुखमय किस्से सुनाती थीं, प्रत्येक बच्चे ने रवि को एक कहानी सुनाई:

कुंजुवेल्ला ताड़ी निकालने वाले नागन और थायम्मा की बेटी थी। जब वह पाँच साल की थी, तब वे कूमनकावु में अपने रिश्तेदारों से मिलने गए थे। वहीं कुंजुवेल्ला का निधन हो गया। उसी साल कूमनकावु में, अय्यावु की पत्नी कन्नाम्मा ने एक बेटी को जन्म दिया। उन्होंने उसका नाम देवकी रखा। छोटी बच्ची होने के बावजूद, देवकी घंटों तक खाली निगाहों से किसी वास्तविक और रहस्यमयी चीज़ को याद करती रहती थी। कन्नाम्मा उसे अपनी गोद में बिठाकर पूछतीं, 'क्या बात है, मेरी बच्ची, तुम बैठकर सोचती क्यों

रहती हो?' बच्ची कहती, 'मैं सोच रही हूँ, माँ।' अपने पाँचवें जन्मदिन पर उसने कन्नाम्मा से कहा, 'माँ, मेरी एक और माँ है।' कन्नाम्मा ने इस पर ज्यादा ध्यान नहीं दिया। पाँच साल के बच्चों की कल्पनाओं की कोई सीमा नहीं होती। लेकिन देवकी ज़िद करती रही और रोती रही। वह अपनी दूसरी माँ को देखना चाहती थी। वह आगे-आगे चलने लगी और परिवार नागन और थायम्मा के घर पहुँच गया। 'यह मेरा घर है!' देवकी ने द्वार से चिल्लाकर कहा। उसे घर का हर कोना पहचान में आ गया। उसे अटारी में छिपा हुआ एक पुराना मटर का गोला मिला और अपने पुराने खिलौने को देखकर वह बहुत खुश हुई। 'माँ,' उसने थायम्मा से पूछा, 'पिताजी कहाँ हैं?'

थायम्मा रो पड़ीं। उन्होंने उस भयानक शून्य में अपने हाथ फैलाकर अपने बच्चे को थामने की कोशिश की। उन्होंने कहा, 'पिताजी चले गए, वे ताड़ के पेड़ से गिर गए।' वहाँ मौजूद महिलाओं ने अपने आँसू पोंछे; देवकी को समझ नहीं आया, क्या उनका घर वापसी का अनुभव साधारण नहीं था?

उसने कन्नाम्मा से पूछा, 'मां, क्या आपको वह दिन याद नहीं जब हम पूल पर थे?'

कन्नाम्मा ने पूछा, 'किस दिन?'

'उस दिन, उस दिन, कई दिन पहले जब तुम नहा रही थी, क्या मैं तुम्हारे पास कदमों की आहट के साथ नहीं आई थी?'

कन्नाम्मा को पुरानी यादें ताजा हो गईं। उन्हें सूर्यास्त के समय तालाब में स्नान करना और एक जनाज़े का जुलूस गुजरते हुए देखना याद आया। यह सब पांच साल और दस महीने पहले की बात है... देवकी के बड़े होने के साथ-साथ ये यादें धुंधली होती गईं, और जल्द ही सांसारिक और भौतिकवादी प्रवाह में पूरी तरह खो गईं...

अप्पू-किली द्वारा चोटी पहनने के दो दिन बाद एक मुस्लिम त्योहार था। सिर मुंडवाए और सुगंधित बालों वाले मुस्लिम बच्चे खुशी और रंग-बिरंगे समूह में मस्जिद के सामने इकट्ठा हुए। अप्पू-किली कभी कोई त्योहार नहीं चूकता था।

'अरे, तोते!' मुसलमानों ने उसका अभिवादन किया, 'लेकिन तुम्हारे सिर के पीछे यह हैंडल क्या है?'

'एक लड़की पटा लो,' तोते ने मुस्कुराते हुए कहा।

'या अल्लाह! हिंदुओं ने तुम्हारे सिर का क्या हाल कर दिया है?' मुस्लिम लड़कों ने कहा। 'ज़रूर नगीने ही कसूरवार हैं। ऐसे बालों के साथ तो तुम भी नगीने बन जाओगे और लड़की पटाने का यह कोई पक्का तरीका नहीं है।'

तोता अचंभित खड़ा था, फिर भी मुस्कुरा रहा था।
मुसलमानों ने कहा, 'इसे मुंडवा लो, अपना सिर पूरी तरह से मुंडवा लो।'
‘लड़की चाहिए?’
‘हम तुम्हें इतने समय से क्या कहते आ रहे हैं? तुम बस उस गांठ को मुंडवा लो और जाकर मैमूना अक्का से शादी का प्रस्ताव रखो।’
तोता तब तक मुस्कुराता रहा जब तक उसके गाल गायब नहीं हो गए। मुस्लिम बच्चों ने उसका हाथ पकड़ा और उसे मुस्लिम नाई के पास ले गए। जब उसके बाल मुंडवा दिए गए, तो उनमें से एक ने कहा, 'अब जब बात इतनी बढ़ गई है और वह मैमूना अक्का से शादी करने जा रहा है, तो क्यों न उसे इस्लाम में परिवर्तित कर दिया जाए? कैसा रहेगा?'
‘बिल्कुल,’ मुस्लिम नाई ने सहमति जताई।
अंततः मूर्तिपूजा से जुड़े बंधनों से मुक्त होकर, तोता मुस्कुराते हुए बाहर निकल गया। किसी ने एक घिसी-पिटी टोपी लाकर अप्पू-किली के सिर पर रख दी।
शाम को रवि ने अभी-अभी दीपक जलाया ही था कि वह पढ़ने के लिए बिस्तर पर लेट गया, तभी मैमूना कमरे में गुस्से में दाखिल हुई।
उन्होंने कहा, 'शिक्षक और छात्र दोनों ही उपद्रवी होते जा रहे हैं।'
'क्या हुआ?'
उस पागल को काबू में रखो।
‘कौन सा पागल?’
‘तुम्हारा वो तोता!’
रवि ने अपनी किताब बंद की और उठ बैठा। जब वह बत्ती जला रहा था, तभी उसने गुस्से में अपनी कोमलता छुपाते हुए कहा, 'मैं तुमसे फिर कभी बात नहीं करूंगी।'
जब वह जा रही थी तभी माधवन नायर अंदर आए।
‘माश, वो हूरी किसलिए आई थी?’
‘तोते के बारे में कुछ। हमें कल पता चल जाएगा।’
माधवन नायर पलंग के निचले हिस्से में बैठ गए।
‘क्या तुमने नहीं सुना, माश? तोते का धर्म परिवर्तन हो गया है।’
‘हे भगवान! किसमें?’
‘क्या आपको पूछने की ज़रूरत है? चौथा मार्ग, इस्लाम।’

तोता खिड़की से अंदर कूद गया, उसके सिर पर फेज़ टोपी थी...
अगले दिन शिवरामन नायर बड़े गुस्से में खासक से गुजरे। “क्या काफिरों ने इतनी हद पार कर दी है?” वे खांसते और लड़खड़ाते हुए स्कूल के सामने खड़े हुए और चिल्लाकर बोले, “माह, यह ठीक नहीं है। हिंदू सभ्यता अभी भी बाकी है। इसे मिटाया नहीं जा सकता।”
‘लेकिन सिवरमन नायर,’ रवि ने उसे शांत करने की कोशिश की, ‘क्या इसमें मेरी कोई गलती थी?’
लेकिन यह बिल्कुल भी अच्छा नहीं है। आपको उस माधवन के बहकावे में नहीं आना चाहिए। उसी ने परिवार को कलंकित किया है। वह एक कम्युनिस्ट है।
खासक के चौक में विशाल बरगद के पेड़ की तलहटी में लोग तोते के धर्म परिवर्तन पर खुशी-खुशी चर्चा कर रहे थे। अपने पैरों पर तेल से मालिश करते हुए मुल्ला ने तर्क दिया कि एक बार धर्म परिवर्तन करने के बाद न तो इंसान और न ही तोते को वापस लौटने का अधिकार है। खासक ने कहा, 'हम बहुमत का पालन करेंगे।'
बहुमत का फैसला अभी आना बाकी था। अप्पू-किली कक्षा की पहली पंक्ति में फटी हुई टोपी पहने बैठा था। मुसलमान होने के कारण उसे नया नाम दिया गया था—अप्पू-रौथर। रवि ने हाजिरी लेते समय अप्पू का नाम नहीं लिया। उसने बहुमत के फैसले का इंतजार करने का फैसला किया।
शिवरामन नायर ने विद्यालय निरीक्षक को एक लंबी याचिका लिखी। रवि खासक में धार्मिक अशांति फैला रहा था और नाबालिगों को गुमराह कर रहा था। उन्होंने पत्र का समापन एक पुरानी याचिका से चुने गए शब्दों से किया: इस दयालु कार्य के लिए प्रार्थना करना मेरा परम कर्तव्य है।
कुछ ही दिनों में पंचायत का फैसला आ गया। तोते को दोनों धर्मों का पालन करने की स्वतंत्रता दी जानी थी। सप्ताह के कुछ दिनों में वह मुसलमान हो सकता था, बाकी दिनों में हिंदू। जरूरत पड़ने पर वह एक ही समय में हिंदू, मुसलमान और तोता तीनों बन सकता था।
जब महीने बीत गए और अप्पू की टोपी घिस गई, जब उसके बाल लंबे और उलझे हुए हो गए, तो जूँ फिर से पैदा हो गईं। वे छोटे-छोटे कदमों से आती थीं। वावर, नूरजहाँ, यूनिपराथी, किन्नरी, करुवु और सभी। उनके माता-पिता उन्हें नहीं पहचानते थे। बालों की उन उलझी हुई लटों के बीच वे शोक मनाते और प्रतीक्षा करते बैठे रहे।

रवि सोने के लिए लेट गया। खिड़की से आकाश चमक रहा था और कांप रहा था। हे भगवान, इस ज्ञान से मुक्ति पाना, सोने का सौभाग्य। जन्म-जन्मांतर तक सिर रखकर विश्राम करना, जैसे जंगल, जैसे छाया, जैसे धरती, जैसे आकाश... ज्ञान से भरी आँखें भारी हो गईं, पलकें बंद होने लगीं। आकाश को छोड़कर तारे कड़क चीड़ के पेड़ों पर उतर आए और खसक के जुगनुओं में विलीन हो गए। इन अनंतों में से दया की एक बूँद उसकी नींद पर गिरी और उसे पवित्र कर दिया।

मुअज़्ज़िन की पुकार

उस सुबह तड़के खाज़ी पौधशाला में आया। रवि बिस्तर पर जाग रहा था।
'Maeshtar!'
'आओ, आओ, खाज़ी।'
'यह एक अत्यावश्यक मामला है,' खाज़ी ने बीच में दखल दिए बिना कहा। 'क्या आप पाँच रुपये दे सकते हैं?'
'निश्चित रूप से।'
रवि उठा और पैसे निकाले। उसने यह नहीं पूछा कि पैसा किसलिए है; खाज़ी ने खुद ही जानकारी दी, 'हम मोल्लाक्का को पालघाट ले जा रहे हैं। अस्पताल।'
रवि को दो दिन पहले खेतों में मुल्ला को देखकर बहुत शर्मिंदगी हुई थी—पुजारी चीड़ की झाड़ियों के पीछे शौच करने के लिए बैठा था। वह असहाय लग रहा था, उसकी आँखें पुरानी चीनी मिट्टी की तरह बेजान थीं... अब रवि ने खाज़ी से पूछा, 'वह घाव जहाँ चंदन चुभ गया था?'
'वही घाव, मैश्टर। यह ठीक नहीं हो रहा है।'
'बैठ जाओ, मेरे दोस्त। मैं तुम्हारे साथ आऊंगा। लेकिन मुझे चाय बनाने दो।'
'अगर हम अलियार के यहाँ चले जाएँ तो हमारा समय बच जाएगा।'
इसलिए उन्होंने चाय की दुकान पर जल्दी से नाश्ता किया।
'सिवरामन नायर ने अपनी बैलगाड़ी नहीं भेजी है,' अलियार ने उन्हें बताया। 'यह तैयार है।'
रवि और खाजी जल्द ही मुल्ला के घर की ओर रवाना हो गए।

‘अब तुम्हारे लिए खाना कौन बनाता है?’ खाज़ी ने रवि से पूछा, उसे याद आया कि रवि ने चाय बनाने की पेशकश की थी।
रवि ने कहा, 'मैं इसे खुद करता हूं।'
‘बेचारी चांद उम्मा! कितनी बुरी मुसीबत है!’
‘यह अभिशाप कभी न कभी तो समाप्त होगा ही।’
'देवता अक्सर मनुष्यों से अधिक मूर्ख होते हैं।'
शिवरामन नायर की बैलगाड़ी मुल्ला के आंगन में खड़ी इंतजार कर रही थी।
खाज़ी ने कहा, 'उसने हमें अपने सबसे अच्छे बैल भेजे हैं।'
रवि पहले भी मुल्ला के घर जा चुका था, लेकिन अब जाकर उसे उस घर की जर्जर हालत का पूरा एहसास हुआ... मुल्ला चटाई पर लेटा हुआ था, उसके पैर के अंगूठे पर तेल में भीगी पट्टी बंधी थी। रवि उसके बगल में बैठ गया और उसके माथे पर हाथ फेरा।
‘हम प्रार्थना करेंगे कि आप जल्द स्वस्थ हो जाएं, मोल्लाक्का,’ रवि ने कहा।
पुजारी के चेहरे पर एक हल्की सी मुस्कान झलक गई।
थिथी बी ने आधे बंद दरवाजे के पीछे से कहा, 'यह वही है जो इस बूढ़ी चप्पल ने किया है।'
‘सच है,’ रवि ने उसे आश्वस्त करते हुए कहा, ‘जूते में मामूली सी चुभन है। चिंता की कोई बात नहीं है।’
जैसे ही उसने ये शब्द कहे, रवि को एहसास हुआ कि उसके पैर के अंगूठे पर यह घाव कई महीनों से था। खाज़ी ने पट्टी हटाई और रवि ने चांदी के रुपये के आकार का, खून रहित और निष्क्रिय घाव देखा।
‘क्या दर्द हो रहा है?’ रवि ने खाजी से पूछा।
ऐसा नहीं है।
‘यह चमड़े का ज़हर है,’ थिथी बी ने कहा, मानो वह अपने ही शब्दों पर विश्वास करना चाहती हो। मुल्ला कराह उठा।
‘उम्मा, संकोच मत करो,’ रवि ने कहा, ‘अगर मैं कुछ कर सकता हूँ तो...’
थिति बी का गला भर आया। उसने कहा, 'आप तो बहुत उदार हैं, सार। वह आपके बारे में बात करते-करते कभी नहीं थकता।'

खाज़ी ने दीवार पर लगी एक अलमारी की ओर हाथ बढ़ाया और दवा की एक बोतल निकाली। मुल्ला बड़ी मुश्किल से खाज़ी का सहारा लेकर उठा और बीमार बच्चे की तरह उस कड़वी दवा को पी गया। उसने कृतज्ञता से खाज़ी की ओर एक पल के लिए देखा...

शाम ढलते ही बैलगाड़ी सूखे खेतों से गुज़रते हुए गाँव की ओर लौटी, चौक पर चढ़ते ही उसने अपना हुड हिलाया। अलियार की चाय की दुकान के सामने एक छोटी सी भीड़ जमा थी—माधवन नायर, गोपालु पणिक्कर, पोन्थु रावुथर और कुछ अन्य लोग।

माधवन नायर ने बैलगाड़ी को रुकने का इशारा किया, शिवरामन नायर के तेज़ दौड़ते बैलों ने अपने सिर ऊपर उठाए और हांफने लगे।

‘मुल्ला कहाँ है?’ दर्जी ने पूछा।

गाड़ी से उतरते हुए खाज़ी ने उत्तर दिया, 'हमने उसे अस्पताल में भर्ती करा दिया है।'

‘डॉक्टर ने क्या कहा?’ अलियार ने पूछा।

वह दवा देंगे, निगरानी करेंगे और फिर हमें बताएंगे।

‘ये जूते तो लानत हैं!’ अछूत मल्ली ने निराशा से कहा।

'सचमुच शापित। इसके दांत हमाद्याद की तरह नुकीले हो गए थे।'

‘सांप हमारी चप्पलों और हमारी बेल्टों में रहता है।’

'हमारे नाखून भी सांप के दांत बन सकते हैं।'

बिल्कुल सही कहा।

मुल्ला दस दिनों से अस्पताल में भर्ती था। तिथि बी पालघाट चली गई थी; वह वार्ड के बरामदे में रहने वाले कई लोगों में शामिल हो गई, दिन-रात जागती रहती थी और पतले खंभों पर झुककर थोड़ी-थोड़ी देर के लिए झपकी लेती थी।

रविवार। रवि और माधवन नायर पालघाट कस्बे के लिए रवाना हुए। उन्होंने देखा कि मुल्ला की हालत बेहतर थी। वह बैठ सकता था, थोड़ा-बहुत बोल सकता था। रवि ने उसके हाथ पकड़े, मुल्ला मुस्कुराया।

‘मोल्लाक्का,’ रवि ने कहा, ‘मैं संतरे लाया हूँ।’

मुल्ला ने फिर से मुस्कुराया, एक अजनबी की मुस्कान।

‘मेरी ऐसी कोई इच्छा नहीं है, कुट्टी,’ उसने कहा।

कीटाणुनाशक की गंध वार्ड में अनेकों फूलों की सुगंध की तरह फैली हुई थी। इसके नीचे अनजान राह पर निकले थके-हारे यात्री इंतज़ार कर रहे थे। वे एक-दूसरे को नहीं

जानते थे, उन्होंने अजनबियों की तरह अस्पष्ट विदाई ली।
मुल्ला ने कहा, 'मैं एक हफ्ते में ठीक हो जाऊंगा।'
‘तुम जरूर कर लोगे,’ माधवन नायर ने उसे प्रोत्साहित किया। ‘आखिरकार, यह एक बेमेल चप्पल का ही कमाल है।’
जब वे विदा लेने लगे तो मुल्ला ने उन्हें थोड़ी देर और रोक लिया—उसे कुछ बोलना था। स्कूल की सफाई कौन कर रहा था? रवि ने उसे सहज करने की कोशिश की। लेकिन मुल्ला बोलता रहा, हर शब्द को बड़ी मुश्किल से खींचकर। उसने मज़दूरी तो ले ली थी, पर काम नहीं किया था, पर वह भरपाई करेगा, दो हफ्ते में वापस आ जाएगा। तब तक रवि को पोन्थु रावुथर की बेटी रोक्क्कामा से सफाई करने के लिए कहना चाहिए। उसे रोक्क्कामा को बताना होगा कि यह मुल्ला का आदेश है। थका हुआ पुजारी वापस बैठ गया। अजनबी का मुखौटा फिर से उसके चेहरे पर आ गया और उसका चेहरा उस जादुई दूरी में विलीन हो गया। इस खालीपन में गिनी जाने वाली मज़दूरी एक कर्म ऋण बन गई।
वार्ड के बाहर रवि और माधवन नायर ने डॉक्टर से बात की। डॉक्टर ने रवि के संदेह की पुष्टि की। डॉक्टर ने बताया कि ऊतक का एक नमूना पैथोलॉजिकल जांच के लिए वेल्लोर के बड़े अस्पताल में भेजा गया है, और परिणाम आने तक कुछ नहीं कहा जा सकता, लेकिन कैंसर होने की प्रबल संभावना है।
रवि और माधवन नायर कूमनकावु में बस से उतरे और घर की ओर पैदल चल पड़े... खासक से बहुत दूर, वैद्य मुल्ला के एक कक्ष पर अपनी पैनी नज़र गड़ाए बैठे थे। वह कक्ष एक इकाई था, सूक्ष्म जगत का एक ग्रह था, जिसका अपना युगकाल था, और जिसकी भूमि और जल में जीवन पनप रहा था। यह कैंसर था, निर्जीव सतहों का अनावश्यक उल्लंघन। जैसे ही वे दोनों घुमावदार पगडंडी पर, ताड़ के पेड़ों के झुरमुटों से और छोटी नदियों को पार करते हुए आगे बढ़े, पृथ्वी-कोशिका ने उस उल्लंघन को अस्वीकार कर दिया, और ब्रह्मांडीय अंगूठा धोखे से, दर्द रहित दुर्भावना से फड़कने लगा।
वे खासक के नजदीक पहुंच रहे थे।
‘माश,’ माधवन नायर ने पूछा, ‘यह कौन सी बीमारी है?’
‘अस्तित्व, सभ्यता—’
'क्या आप मजाक कर रहे हैं?'

'नहीं।'
इसका उपाय क्या है?
गवाही: अल्लाह के सिवा कोई ईश्वर नहीं है।
प्रमाणपत्र अन्ना मोहम्मदुर रसूलल्लाह।
मुअज़्ज़िन की अज़ान!
'वह कौन है, माधवन नायर?'
'खाज़ी।'
हय्या अलस सलात
हय्या अलल फलाह
अल्लाहु अकबर
अल्लाहु अकबर
निज़ाम अली सात साल के अलगाव के बाद अल्लाह-पिछड़े के लिए प्रार्थना की पुकार लगा रहे थे।

अजनबी का मुखौटा

रवि के ध्यान में मुअज्जिन की आवाज मंद पड़ गई, अब वह अपने अंतर्मन से सुनने लगा:
सर्वशक्तिमान के सिवा कोई ईश्वर नहीं है।
इस तंबू में आओ और उसकी आराधना करो!
रवि को खसक के प्रार्थनाघर, उस उदास और सन्नाटे से भरी मस्जिद, उसकी अटारी में पनपते चमगादड़ों और कीड़ों-मकोड़ों, और एक भयानक बीमारी से खामोश हो चुके उसके मुल्ला की याद आई; रवि को पुजारियों की कई पीढ़ियों की पीड़ा भरी पुकार सुनाई दी, जो उपासकों को पुकार रहे थे। कब्रों पर लिखे नामों की कोई गिनती नहीं थी, वे धीरे-धीरे नरम पड़कर टूट गईं और मिट्टी और दलदल में तब्दील हो गईं। रवि को नींद नहीं आई, वह बेचैन होकर उठ खड़ा हुआ। उसने बाहर देखा: धुंध में धुंधला चाँद चमक रहा था, आखिरी नावें रात भर रोशनी बिखेरती हुई चल रही थीं।
रवि गाड़ी से उतरा और सोए हुए गांव में चला गया। उसने दर्जी के दरवाजे पर दस्तक दी। माधवन नायर ने दरवाजा खोला और फिर लड़खड़ाते हुए वापस बिस्तर पर चला

गया।
‘उठो!’ रवि ने कहा।
माधवन नायर ने अपनी आंखें मलीं, जम्हाई ली और मुस्कुराया।
‘तुम, माश?’ उसने कहा। ‘हालात कैसे हैं?’
‘अभी ग्यारह ही बजे हैं। और मुझे प्यास लगी है।’
'मेरे पास कुछ नहीं बचा है।'
तो चलिए अवैध शराब बेचने वालों को जगाते हैं।
माधवन नायर ने कोने में रखे मिट्टी के घड़े को एक कप पानी के लिए झुकाया और अपनी आंखों और माथे पर पानी डाला।
‘क्या यह यात्रा आवश्यक है, माश?’
चलो, हम चलते हैं।
‘क्या अवैध शराब बेचने वाले को?’
‘अभी नहीं। चलो तुम्हारे चाचा के घर चलते हैं।’
मेरे चाचा के?
मैं तुम्हारी उस चचेरी बहन के साथ सोना चाहता हूँ, वो चचेरी बहन जिसे तुमने जन्म नहीं दिया।
माधवन नायर हँसे, एक संक्षिप्त और कड़वी हँसी। उन्होंने कहा, 'वह पूरी तरह से तुम्हारी है।'
मुझे खेद है, भाई।
वे हाथ पकड़कर बच्चों की तरह चथेलन की शराब बनाने की भट्टी और घर की ओर चल पड़े। मात्र दस फीट की दूरी से भारी साँसों की आवाज़ आ रही थी। रवि के मन में पसीने से तर-बतर शरीरों की कल्पना उमड़ रही थी, पाप की छवियों का सैलाब उमड़ पड़ा था।
‘ओ चथेलन!’ माधवन नायर ने पुकारा। शरीर एक दूसरे से अलग हो गए, उमड़ती हुई सांसें धीमी लय में बदल गईं।
‘वह कौन है?’ चैथेलन की महिला ने पूछा।
बरामदे में चिमनी के पास जल रहे एक दीपक ने गहरी सांसों के रहस्य को दूर कर दिया, और जल्द ही चैटेलन झोपड़ी से बाहर आ गया।
'माफ़ करना, चैथेलन, हमारी माश को पानी चाहिए।'

चैटेलन ने टालमटोल किया—वहाँ ताजा बनी हुई अराक की एक बोतल थी, लेकिन वह ग्राम अधिकारी के लिए थी।
‘चैथेलन, चलो ना,’ माधवन नायर ने शराब तस्कर को फुसलाते हुए कहा, ‘ग्राम अधिकारी इंतजार कर सकता है। ये लो कीमत से एक रुपया अधिक।’
‘मैं दर्जी और शिक्षक को कैसे मना कर सकता हूँ?’ चैथेलन ने कहा और बोतल लेने वापस चला गया।
ताजा बनी शराब लेकर जाते समय रवि ने सुझाव दिया, 'चलो कुप्पू-अच्चन को भी एक घूंट पिलाते हैं।'
'क्या हमें ऐसा करना चाहिए, माश?'
'हमें करने दो-'
यदि आप ऐसा चाहें तो—
कदमों की आहट सुनकर कुप्पू-अच्चन उठ बैठा; उसने अपनी गहरी अंधेरी आँखों से रात के सन्नाटे को टटोला और सुना; 'हम हैं,' माधवन नायर ने घोषणा की।
‘माधवन? माश?’
'हाँ।'
क्या रात काफी बीत चुकी है?
यह एक मज़ाक था; रवि स्तब्ध रह गया।
‘कुप्पू-अच्चन,’ माधवन नायर ने कहा, ‘हम अराक की एक बोतल लाए हैं। हम चाहेंगे कि आप इसे हमारे साथ साझा करें।’
उसने आवाज़ों की दिशा में मुस्कुराते हुए धीरे-धीरे टटोलते हुए उस कमरे के दरवाजे की ओर कदम बढ़ाया जहाँ केसी सो रही थी।
'उठो, मेरे बच्चे—'
‘हाय, हाय! तुम मुझे सोने नहीं दे रहे हो—’
माधवन नायर ने कमरे में एक दीया जलाया। केसी चटाई से लुढ़ककर चिकनी ज़मीन पर आ गिरी थी, उसकी चोली और मुंडू अपनी जगह से खिसक गए थे।
'मामला-'
‘Hai, hai—’
जब वे घर से निकले तब तक चांद डूब चुका था, हवा ने कोहरे को छंट दिया था और तारे किसी भयानक सपने की तरह चमक रहे थे।

‘माधवन नायर, क्या तुमने उस बूढ़े चेहरे को देखा?’
यह दुखद था।
‘दुख से परे—’
अराक की काफी मात्रा बची हुई थी, और उन्होंने उसे ताड़ के पेड़ों के नीचे बैठकर पीने का फैसला किया।
‘उस चेहरे पर कुछ तो था, माधवन नायर। ऐसी चीजें जो अंधे भी देख सकते हैं...’
अंधापन की भटकती आँखें रवि को सता रही थीं, रक्त और लार से भरी पुतलियाँ, अलौकिक दृष्टि की आँखें। उसके चारों ओर चेहरे थे, हर चेहरे पर उदासीनता का मुखौटा था... उसे अपने पैतृक गाँव की यात्रा याद आई जहाँ उसके दादा रहते थे। सड़क से थोड़ी दूर चलने पर वह सुरम्य ग्रामीण इलाके से गुज़रा। फिर, अपने आगे उसने अपने दादा को सुबह की सैर करते देखा। रवि ने जल्दी की और उन्हें पीछे छोड़ दिया।
दादाजी!
बूढ़ा आदमी रुका और धीरे से मुड़ा।
‘दादाजी, मैं रवि हूँ।’
बूढ़ी आँखों ने ध्यान केंद्रित करने के लिए संघर्ष किया, और लार टपकते होठों पर एक दिवंगत पूर्वज की मुस्कान फैल गई।
उस मुस्कान का क्या मतलब था, रवि अपनी सुनसान यात्राओं के दौरान यही सोचता रहता था। क्या यह प्रेम था? या फिर बार-बार एक ही तरह के जीवन की ऊब, जो पालने में लेटे बच्चे को कभी खुश करती थी तो कभी परेशान? या फिर समुद्र किनारे की प्रतीक्षा का जुनून, आखिरी लहर का इंतज़ार? रवि उस रहस्य को उजागर नहीं करना चाहता था, वह अजनबी के मुखौटे को पहचानकर ही संतुष्ट था...
‘चलिए, माधवन नायर, हम यहीं बैठ जाते हैं।’
'मुझे बोतल पकड़ा दो, माश।'
वे नम घास पर बैठ गए और बोतल से पानी पीने लगे।
‘माश,’ माधवन नायर ने याद करते हुए कहा, ‘यहीं, इन्हीं ताड़ के पेड़ों के बीच, जब मैं वेदांत का अध्ययन करने के लिए दूर था, तब मेरी माँ ने वेश्यावृत्ति की थी...’
पूर्वी हवा चलने लगी, आधी रात हो चुकी थी। खसक सो रहा था। माधवन नायर ने आगे कहा, 'मैं इक्कीस साल की उम्र में चुपके से निकल गया था। मेरी माँ पैंतीस साल की

थीं, उन्होंने मुझे चौदह साल की उम्र में जन्म दिया था और कम उम्र में ही विधवा हो गई थीं...'
वह नहीं चाहती थी कि वह जाए। वह जवान थी, अपनी उम्र से छोटी दिखती थी और उसका शरीर सुडौल था।
उसने उससे कहा था, 'अगर तुम मुझे छोड़कर चले जाओगे, तो मैं बिल्कुल अकेली रह जाऊंगी।'
लेकिन माधवन नायर को उस घर में चैन नहीं मिला। वह अपने पिता से हूबहू मिलते-जुलते थे—उनकी माँ ने एक बार खुशी से यह कहा था, लेकिन जल्द ही उन्होंने पाया कि वह यही बात नाराजगी और डर से कह रही थीं। अपनी छोटी सी झोपड़ी में उन्हें नींद नहीं आती थी, न ही उनकी माँ को... जब वह अपने अंधे गुरु के साथ पाँच साल बिताने के बाद लौटे, तो घर में मेहमान थे, जो नशे में धुत और हंगामा कर रहे थे। जब वे लोग चले गए, तो उनकी माँ ने उन्हें ताना मारा, 'तो तुमने वेदांत का अध्ययन किया, मेरे बेटे?'
माधवन नायर अंधे कुप्पू-अच्चन के बारे में सोचने लगे, जो अब भी देखने से नहीं थके थे, और अपने गुरु के बारे में, जिन्हें अंधेपन ने शांति का दर्शन दिया था। माधवन नायर इस पहेली को सुलझा नहीं सके, वे दिन-रात से संतुष्ट थे, उन्होंने धूप में तितलियों को मैथुन करते देखा, उन्होंने बारिश देखी, झरना देखा, पहाड़ देखा, उन्होंने नग्न जांघों को मृत्यु की लय में कांपते देखा। हर देखी गई वस्तु देखने के अर्थ को छीन लेती थी... रवि और माधवन नायर पाप के घर की ओर जाने वाली एक जादुई सीढ़ी पर थे, तभी मुर्गे ने बांग दी और जादू का समय समाप्त हो गया। सीढ़ी गायब हो गई।
अभी भोर नहीं हुई थी। रवि उठा और खजूर के बाग में लड़खड़ाते पैरों से खड़ा हो गया। उसने दूर से मस्जिद की धुंधली आकृति देखी। अपने हाथों को कनपटी पर दबाकर उसने कड़वी आवाज में अज़ान दी:
अल्लाहू अक़बर!
अल्लाहू अक़बर!
माधवन नायर नम घास पर सो रहा था। रवि ने चारों ओर देखा, भगवान और मनुष्यों के निवास स्थान गायब हो चुके थे, चारों ओर केवल ताड़ के पेड़ थे, वे पेड़ जो कभी विस्मृति और आनंद का पेय प्रदान करते थे।

उसके भीतर केवल पित्त ही बचा था, प्रार्थना का अवशेष। रवि आगे झुका और उल्टी करने लगा।

पूर्वजों का पर्व

हर तीन-चार साल में एक बार खासक अपने पूर्वजों के लिए भोज का आयोजन करता था। मुसलमान और हिंदू एक साथ प्रार्थना करते और भोजन करते थे। फिर रात में वे मुल्ला की मस्जिद के पीछे बंजर भूमि में इकट्ठा होते और परलोकों के बारे में बातें करते। उन्हें अपने प्रिय शेख की उपस्थिति का अहसास होता था; वे खासक के रास्तों पर चलते हुए पूर्वजों से संवाद करते थे। पिछले भोज को चार साल बीत चुके थे; खासक राजा की मस्जिद में एकांतवास के लिए चले गए। मस्जिद में प्रवेश पाने वाले कुछ विशेषाधिकार प्राप्त लोगों ने तपस्या के विस्तृत विवरण दिए। तपस्या के पाँचवें दिन, रविवार को, खासक तीव्र और बुखार की अवस्था में लौटे और उन्होंने उस दिन से पंद्रहवें दिन को भोज का दिन घोषित किया।
खासक में हलचल मची हुई थी। बच्चों की उन्मादी टोलियाँ बंजर ज़मीन पर आ गईं, उन्होंने कंटीली झाड़ियों को उखाड़ दिया, और तेज़ सुगंध वाली पेड़ों की छालों से साँपों को भगा दिया। जिस जानवर को बलि के लिए चुना जाना था, वह चोलयुम्मा की काली बकरी थी, जिसे उसने गाँव वालों को बाज़ार भाव से आधे दाम पर बेच दिया।
'लेकिन यह एक हिजड़ा है,' गांव के मुखिया पोंथु रावुथर ने कहा, 'और इससे कोई सौभाग्य नहीं आ सकता।'
'तो क्या हुआ?' अलियार ने पलटवार किया, 'हमें वह आधी कीमत में मिल गया है, और यही काफी सौभाग्य की बात है।'
अलियार बकरी को वध तक रखने के लिए सहमत हो गया, क्योंकि कुन्हामिना उसे देखते ही रोने लगी थी।
चोलयुम्मा ने उसे बताया कि बकरे की बलि दी जानी है। अलियार चोलयुम्मा के घर आया और बकरे को ले गया। उसने तय किया कि इसे वध के दिन तक भार-ढेर से बांधकर रखा जाए। तब तक यह उसका शुभंकर रहेगा।
वह हिजड़ा बकरी शांत स्वभाव की थी, पालतू जानवर की तरह सीधी-सादी। अलियार उसे सुबह डोसा खिलाता था और चाय, जिसे वह बड़े आराम से घूंट-घूंट करके पीती

थी। मुत्थु पंदारम नामक भिक्षु ने अलियार से पूछा, 'क्या इस बकरी का आपके पास कोई ऋण है?'
'हां। और क्यों नहीं? अगर आपके चचेरे भाई करुमंडी पंडारम को यहां श्रेय मिल सकता है, तो बकरी को भी मिल सकता है।'
'हे अलियार, इसमें क्या सच्चाई है?'
'सच तो सीधा-सादा है, हे भगवा वस्त्रधारी। तुम्हारे सौतेले भाई पर भैंस का मांस खाने का सवा पाँच रुपये का कर्ज़ है। वह तीर्थयात्रा पर है, और मुझे न तो पंडारम मिल रहा है और न ही पैसा।'
वह बकरी जल्द ही बच्चों के लिए आकर्षण का केंद्र बन गई। वे स्कूल से चुपके से निकलकर उसके लिए हरी कोंपलें इकट्ठा करते थे और जब वह जानवर उनके हाथों में पकड़ी हुई बेरियों को लालच से कुतरते हुए उनकी उंगलियों को छूता था, तो वे जोर-जोर से हंसते थे। कुन्हामिना उससे दूर ही रहती थी।
शाम को जब बच्चे चले गए, तो अप्पू-किली बकरी के पास आया। वह उसके लिए न तो फल लाया, न फूल, बल्कि केवल एक मूर्ख का प्यार लाया। उसने बकरी की सूनी गर्दन पर हाथ फेरा, धीरे से अपना सिर बकरी से सटाया और उसे दिलासा देने वाले गीत गाए।
त्यौहार से पहले वाले गुरुवार को खाज़ी ने अस्पताल जाकर मुल्ला से मिलने का फैसला किया।
'मैं रविवार सुबह तक उस पर नजर रखूंगा,' उसने अलियार से कहा, 'और अगर वह ठीक हो गया, तो मैं उसे दोपहर तक बैलगाड़ी में लेकर आऊंगा।'
'कम से कम उसे कुर्बानी की आग के सामने लेटने दो,' अलियार ने कहा। 'हम माएश्तर की आरामकुर्सी उधार ले सकते हैं।'
'मैं अब जा रहा हूँ, अलियार। और लौटते समय ठेले के किराए के लिए कुछ पैसे बचाकर रखना।'
खाज़ी परिवार पालघाट कस्बे के लिए रवाना हुआ... मैमूना ने स्नान किया और सुगंधित तेलों से शरीर को लपेटा, फिर अपने बालों में चंपक के फूल सजाते हुए चौक पर टहलने लगी। वह पौधशाला पहुँची। रवि बिस्तर से नहीं उठा था।
'हमारी टीचर बहुत ज्यादा सोती हैं,' उसने अंदर आते हुए कहा।
रवि जम्हाई लेते हुए उठ बैठा और सिगरेट ढूंढने के लिए इधर-उधर देखने लगा।

‘लो, मैं तुम्हारे लिए दो पैकेट लाया हूँ। धूम्रपान करो!’
रवि ने पैकेट लिए, एक पैकेट निकाला और उसे जलाया।
उन्होंने कहा, 'तुम फिर से मेरे लिए टाइगर ब्रांड की लकड़ी लाए हो। यह तो जलाने की लकड़ी है।'
‘यह अंत्येष्टि की चिता की लकड़ी है।’
जैसे ही उसने यह कहा, सिगरेट में आग लग गई और मैमूना मजे से देखती रही। रवि ने उसे थूक दिया और दूसरी सिगरेट जला ली।
‘शिक्षिका कुट्टी,’ उसने कहा, ‘तुम्हारे अंदरूनी अंग जलकर राख हो जाएंगे।’
'उन्हें जाने दो, मेरे जाने के बाद कोई मुझे याद नहीं करेगा।'
वह एक कदम और करीब आई और बोली, 'झूठ!'
‘मुझे माफ करना, मैमूना।’
रवि ने कहा, हे ईश्वर, आपने मुझे अपना प्रेम दिया, बड़े स्नेह से दिया, फिर भी यह मेरे भीतर के रेगिस्तान में मर रहा है। हे दयालु ईश्वर, मैं पलायन कर रहा हूँ: मुझे अपनी इस थकावट का आनंद लेने दीजिए। तभी विचित्र और अद्भुत मंडलों के बीच से उसके पिता की वाणी आई: मेरे प्रिय पुत्र, मैं यहाँ लकवाग्रस्त पड़ा हूँ, तुम्हारे लौटने की प्रतीक्षा कर रहा हूँ।
पिताजी, मेरे लिए दुखी मत होइए, रवि ने कहा। मैं स्मृतियों से हम दोनों को मुक्त करने के लिए यात्रा पर निकल रहा हूँ। मैं अवधूत की तरह, एक संन्यासी की तरह अनंत सागर के तटों पर चल रहा हूँ। यात्रा करते हुए, मैं अपनी स्मृतियों की परत को उतार फेंक रहा हूँ। जब मैं अंतिम तट पर पहुँचूँगा, जब मैं अंतिम मुक्तिदायक लहर की प्रतीक्षा करूँगा...
उनके पिता की आवाज ने कहा, मैं अपनी यादों के बिना नहीं मर सकता, मृत्यु अधूरी होगी।
रवि एक बार फिर कड़वी सच्चाई में लौट आया। उसने कहा, 'मैमूना, पालघाट से क्या खबर है?'
उसने कंधे उचकाते हुए कहा, 'कोई खबर नहीं है।'
जब खाजी अस्पताल पहुंचा, तो उसने थिथी बी को वार्ड के बरामदे में एक खंभे पर टेक लगाकर बैठे हुए पाया।
‘उम्मा, वह कैसा है?’ खाज़ी ने उससे पूछा।

'सो गया।'
‘क्या डॉक्टर ने आपको कुछ बताया?’
‘कुछ नहीं, मेरे बच्चे।’
दोपहर के दौर के दौरान डॉक्टर और नर्स ने पट्टी खोली। घाव अभी भी पैर के अंगूठे पर था, खून सूख चुका था, एकदम ठंडा और साफ-सुथरा। मुल्ला स्तब्ध पड़ा था। अचानक खाज़ी की नज़र बिस्तर पर किसी चीज़ के हिलने-डुलने पर पड़ी, धान के छिलके जितनी छोटी।
'जूँ,' थीथि बी ने उदास होकर कहा।
‘ये जूँ खतरनाक हैं, उम्मा।’
थिथी बी ने अपनी आँखें पोंछीं। उन्होंने कहा, 'डॉक्टर दाढ़ी मुंडवाना चाहते थे, लेकिन मोल्लाक्का दाढ़ी नहीं छोड़ सकता।'
उसने धीरे से बूढ़ी दाढ़ी पर हाथ फेरा। बिखरे हुए बाल रूसी की परतों पर टिके हुए थे, भूरे रंग के जूँ पपड़ीदार परत पर बेसुध और प्यासे रेंग रहे थे।
उस दोपहर डॉक्टर ने खाज़ी को बुलाया और उससे पूछा, 'क्या तुम रिश्तेदार हो?'
‘नहीं, सार, मैं सैयद मियां शेख का खाज़ी हूँ।’
'कोण है वोह?'
‘यह एक आत्मा है, सार।’
डॉक्टर ने कहा, 'ठीक है, चूंकि आप परिवार के करीबी हैं, इसलिए मैं आपको बता देता हूं। यह कैंसर है, और यह काफी बढ़ चुका है। मेरा सुझाव है कि आप उसे वापस ले जाएं।'
खाज़ी थिथी बी के पास वापस आया और बोला, 'ये अंग्रेज़ी दवाइयाँ किसी काम की नहीं हैं, उम्मा। चलो वापस चलते हैं।'
वह उसकी बात सुनने के लिए नहीं रुका। वह अस्पताल से बाहर निकला और टीपू सुल्तान के किले के पास से गुजरा; किले के पीछे का इलाका सुनसान था। खाज़ी घास के एक टीले पर खड़ा होकर दूर स्थित पहाड़ी दर्रे को देखने लगा, उसे पक्षियों की चहचाहट और दूर से आती ट्रेन की गड़गड़ाहट सुनाई दी। वह व्याकुल भी था और आनंदित भी: खासक का मुल्ला मर रहा था!
बादशाह की मस्जिद में। इसके प्राचीन भीतरी हिस्से का शुरुआती अंधेरा। मकड़ी के जाले और धूल।

रवि ने कहा, 'मुझे लग रहा है जैसे मैंने कोई चोर बनाया हो।' मैमूना ने कुछ नहीं कहा।
'ये लो तुम्हारे लिए एक पेय,' उसने बोतल उसकी ओर बढ़ाते हुए कहा।
‘इसका स्वाद कैसा है, मैमूना?’
'गर्मजोशी भरा, आनंददायक।'
वे एक पुरानी चटाई पर लेट गए। कब्रों के ऊपर रात का नीला रंग चमक रहा था। अचानक वह तनावग्रस्त हो गई। 'क्या तुम सुन रहे हो?' उसने पूछा। वह अंधेरे की कीचड़ से नग्न अवस्था में उठी।
‘क्या?’ रवि ने पूछा।
यह उस सुहावनी गर्मी की रात में आया:
कोई भगवान नहीं है सिर्फ अल्लाह!
कोई भगवान नहीं है सिर्फ अल्लाह!
‘यह क्या है?’ रवि ने फिर पूछा।
मैमूना ने कहा, 'लाश।'

फूलना

पालघाट से किराए पर ली गई भैंसगाड़ी ऊबड़-खाबड़ रास्ते पर धीरे-धीरे आगे बढ़ रही थी। उसके जुए के नीचे मुल्ला की लालटेन लटकी हुई थी। खाज़ी आगे-आगे चल रहा था, लालटेन की रोशनी से उसकी काली, टेढ़ी-मेढ़ी परछाई बन रही थी। गाड़ी चौक में आकर अलियार की दुकान के सामने रुक गई। खाज़ी ने अपने हाथ ऊपर उठाकर गूंजती हुई भारी आवाज़ में पुकारा:
कोई भगवान नहीं है सिर्फ अल्लाह!
जल्द ही ग्रामीणों की लालटेनें गाड़ी के चारों ओर हल्की रोशनी बिखेरने लगीं। वे पास आ गए, अपनी लालटेनें ऊपर उठा लीं; मुल्ला अंततः शांति से लेट गया, उसका सिर थिथी बी की गोद में था। खाज़ी ने भीड़ को इशारा किया, 'मय्यत को नीचे उतारो।'
कई लालटेन की रोशनी में खाज़ी ने एक बार फिर मृत चेहरे को निहारा। जूँ गायब हो चुकी थीं। उस खुरदरी दाढ़ी के बाल, जो भंगुर और चांदी जैसे थे, उस भयावह परलोक में अपनी पीली पपड़ियों पर बढ़ते जा रहे थे। जूँओं को मृत्यु का आभास था, ठीक वैसे ही जैसे भविष्यवक्ता दूर से आने वाले तूफान या भूकंप को भांप लेते हैं। अस्पताल से

लौटते समय, वे बालों की लटों से भाग निकलीं, चेहरे की झुर्रियों की ढलानों से नीचे उतरीं, फिर गाड़ी के चटाइयों के अंतहीन रेगिस्तान को पार किया, और गाड़ी के ढांचे के किनारे से नीचे अनंत शून्य में समा गईं।
गांव वालों ने निजी और अस्पष्ट प्रार्थनाओं के साथ चेताली की ओर रुख किया।
बादशाह की मस्जिद; रवि और मैमूना उसके भयावह अंधेरे में खड़े थे।
'जाओ,' मैमूना ने कहा, 'जाओ!'
रवि पैदल यात्रा के खतरों को देखकर स्तब्ध खड़ा था।
‘जाओ,’ मैमूना ने दोहराया, ‘जाओ!’
रवि बाहर निकला और नुकीले क्वार्ट्ज़ और फिसलन भरी चट्टानों पर चलते हुए खासक की लालटेन की ओर बढ़ा। उसने पीछे मुड़कर देखा—मैमूना अरबी तालाब के रहस्यमयी पानी में नहा रही थी... रवि चौक के किनारे से होते हुए पौधशाला तक पहुँचा।
मुल्ला का शव मस्जिद में पड़ा था, अगले दिन सुबह, त्योहार के दिन, उसके दफन की प्रतीक्षा में।
गांव की महिलाएं थिथी बी के चारों ओर बैठकर उसे सांत्वना दे रही थीं।
चोलयुम्मा ने कहा, 'पवित्र पर्व के दिन दफनाया जाना सौभाग्य की बात है।'
‘यह सौभाग्य की बात है,’ थिथी बी ने कमजोर स्वर में सहमति जताई।
‘शेख की दया।’
‘हाँ। उसकी दया।’
दफ़नाने के बाद, ग्रामीणों ने अपने पूर्वजों से फिर से मिलने के लिए, मृत्यु के साथ एक और मुठभेड़ के लिए स्वयं को शुद्ध करने हेतु अनुष्ठानिक स्नान किया। रात हो गई, पवित्र भूमि पर तेल के दीपक जगमगा रहे थे, उनकी लौ पूर्वी हवा की तरह तेज़ थी जो उन पर बह रही थी। ढोल प्राचीन जुलूस की तरह खट-खट की आवाज़ कर रहे थे। आज रात मुल्ला पूर्वजों के साथ विचरण करेगा।
टैटू बनवाने से रवि को नींद आ गई और उसे शांति के सपने आने लगे। उसने मुल्ला को देखा, जो अब बेहद खूबसूरत लग रहा था और स्कूल के आंगन में पड़े कूड़े को फूलों की क्यारियों में बदल रहा था।
महामारी ने स्कूल के कामकाज को अस्त-व्यस्त कर दिया था। एक परीक्षा होनी थी, फिर वार्षिक पिकनिक। उसके बाद गर्मियों की छुट्टियां शुरू होनी थीं।

‘यह कौन सी परीक्षा है?’ माधवन नायर हँसे। ‘वही कक्षा, वही शिक्षक।’
‘मानव नियति की तरह ही, है ना?’ रवि ने टिप्पणी की।
'बिल्कुल वैसा ही, माश।'
‘यह वाकई भ्रामक है, माधवन नायर। मेरे स्कूल में इतनी ज़्यादा कक्षाएँ हैं कि किसी भी शिक्षक के लिए उन्हें संभालना संभव नहीं है—’
वे विद्यार्थी जो जूँओं के पुनर्जन्म, समय यात्राओं, डायनासोरों में रुचि रखते थे, वे विद्यार्थी जिन्होंने अपने शिक्षक को आश्चर्य और विश्वास के पाठ पढ़ाए।
परीक्षा के अगले दिन, जिसमें बच्चों ने प्रश्न और उत्तर आपस में बाँटे थे, वे चेताली में पिकनिक के लिए सुबह जल्दी इकट्ठा हो गए। वे गीत गाते और हँसते हुए निकल पड़े। उन्होंने बड़ी पहाड़ी पार की और सुहावनी धूप में चढ़ाई शुरू की। जैसे-जैसे वे ऊपर चढ़ते गए, उन्हें बड़े-बड़े कीड़े और बड़े पत्तों वाले पौधे दिखाई दिए। बच्चे कतार तोड़कर उनके पीछे दौड़ पड़े। गीत की जगह खोज की खुशी भरी आवाज़ें सुनाई देने लगीं। रवि इस अव्यवस्थित समूह के पीछे-पीछे चलते हुए चिंता से निगरानी कर रहा था। कुन्हमीना उसके बगल में चल रही थी।
‘तुम बच्चों ने गाना क्यों बंद कर दिया है?’ रवि ने उनसे पूछा।
‘ये तितलियाँ, सार,’ जवाब आया, ‘कितनी बड़ी हैं, सार!’
‘और ये लाल मकड़ियां, सार, रेशमी आवरण वाली!’
और ये ड्रैगनफ्लाई—
अप्पू-किली ने पिकनिक में आने से मना कर दिया था। रवि ने उदास मन से सोचा, शायद उसका प्रशिक्षण समाप्त हो गया था और तोता एक नई और एकाकी यात्रा पर निकलने वाला था।
बच्चे आपस में झगड़ते और बड़बड़ाते हुए चलते रहे। किसी के पैर के अंगूठे में चोट लग गई थी, तो किसी के पैर में कांटा चुभ गया था।
‘कोई गाना क्यों नहीं गाता?’ रवि ने फिर सुझाव दिया।
बच्चे एक-दूसरे को धक्का देकर और चुटकी काटकर उकसा रहे थे। फिर से शोर मचने लगा, जब सबसे छोटे मंगुस्तान ने एक ऊँची आवाज़ में एकल गीत गाना शुरू किया।
हे मेरे प्रिय ईश्वर, मैं बिस्मि का उच्चारण करता हूँ, मैं बलिदानों और चढ़ावों को नहीं भूला हूँ...

बच्चों को वह गाना आता था।
‘सार,’ कुन्हामिना ने लगभग रोते हुए कहा, ‘मोल्लाक्का ने यह गाना लिखा और गाया था।’
यह बदर युद्ध की गाथा थी, इसी ने बद्रीनों को खासक तक पहुँचाया, खजूर के जंगलों में युद्ध छिड़ा... रवि और बच्चे पहाड़ की चोटी पर थे। वे शेख की कब्र के चारों ओर खड़े थे, वह समाधि मीनारों से घिरी हुई थी जिन्हें सदियों पुरानी हवाओं ने प्राकृतिक चट्टानों से तराशा था।
दोपहर के समय कक्षा के सभी बच्चे भोजन करने बैठे, उन्होंने आपस में बाँटकर खाना खाया। उसके बाद चेताली के पथरीले तालाब में खेलने का समय था।
एडम ने रवि से कहा, 'तालाब में एक जलराशिकार है, साहब!'
‘क्या हम इस पर पत्थर फेंक सकते हैं, सार?’ मंगुस्तान ने पूछा।
खदीजा ने कहा, 'यह सांस लेने के लिए ऊपर आता है, अपना रूप बदलता है और जलपक्षी की तरह उड़ जाता है।'
‘उसे नहीं पता, सार,’ खोलुसु ने कहा, ‘यह एक पंखों वाला सर्प है, सार!’
एक पंखयुक्त सर्प? सूर्य की रोशनी ने रवि की यादों को झकझोर दिया। मुकुटधारी सिर वाला एक पंखयुक्त सर्प, एक अकेले बच्चे के लिए मृगतृष्णा पर सवार?
रवि ने कहा, ‘मेरे बच्चों, जलराशि पर पत्थर मत फेंको। वह एक सौम्य प्राणी है।’
जब बच्चे तालाब में खेल रहे थे, रवि उनसे दूर हट गया। वह पूरी तरह खिले हुए वाका वृक्ष के नीचे बैठ गया। उसे यह देखकर आश्चर्य हुआ कि कुन्हामिना भी उसके पीछे-पीछे वहाँ आ गई थी।
‘क्या तुम पूल में नहीं खेलना चाहते?’ रवि ने पूछा।
‘मुझे लगता है...’ वह शब्द को लेकर असमंजस में थी, ‘शर्मिंदा।’
वह करीब आई।
‘तुम्हें क्या हुआ है?’ रवि ने उसकी आँखों में देखते हुए पूछा।
‘क्या मैं बैठ सकता हूँ, सार? आपके पास?’
‘मेरे प्यारे बच्चे, तुम किस बात से दुखी हो?’
‘उदासी।’
रवि ने प्यार से अपना हाथ बढ़ाया। कुन्हामिना धीरे से उसके ऊपर गिर पड़ी। और फिर वह उसकी गोद में समा गई, भारी और रहस्यमय सी।

‘जाओ, नन्हे बच्चे,’ रवि ने कहा, ‘अपने दोस्तों के पास जाओ।’
वह उठी, कुछ कदम दूर चली गई। फिर मुड़ी और वापस आ गई।
उसने कहा, 'मैं बीमार हूँ।'
उसकी आँखों में आँसू भर आए।
'अय्ये!' रवि ने कहा, 'रो रहे हो?'
कुन्हमीना ने अपने हाथों को अपनी नाभि पर दबाया और आगे की ओर झुकी। रवि ने उसे थाम लिया। अचानक उसने चांदी की पायल और उसके पैरों पर लाल बूँदें देखीं! रवि ने अपनी हथेली को बार-बार मुट्ठी की तरह भींचा और खोला, जहाँ भाग्य की रेखाएँ रेगिस्तानी रास्तों की तरह बिछी हुई थीं; उन पर खून की लाल बूँदें गिर चुकी थीं। रवि ने उस चमत्कार को विस्मय से देखा, नारीत्व के पहले रक्त-फूल!

झील की शांति

रवि का मन पहाड़ और उस लड़की की ओर लौट गया जो अंतरंगता और पीड़ा में उसके ऊपर झुकी हुई थी। रवि सोचने लगा, मासूमियत के खोने और दिवंगत पूर्वजों के लिए किए जाने वाले अनुष्ठानों के बीच क्या अंतर है?
स्कूल गर्मियों की छुट्टियों के लिए बंद हो गया था, लेकिन बहुत सारा कागज़ी काम बाकी था, और स्थगन के कारण काम बोझिल हो गया था। लगभग हर हफ्ते ज़िला बोर्ड से स्कूल में छात्रों की संख्या या गाँव में साक्षरता के स्तर के बारे में कोई न कोई नियमित पूछताछ आती रहती थी। इसी वजह से डाकिया केलू मेनन हर हफ्ते खासक जाने लगे थे। बूढ़े हो चुके केलू मेनन अपनी साप्ताहिक या द्विसाप्ताहिक यात्राओं के लिए रविवार का दिन चुनते थे, क्योंकि रवि को उनसे बात करने का समय मिल जाता था। रवि विद्वान थे और केलू मेनन को विद्वान से बातचीत करने में आनंद आता था...
उस रविवार, सुबह तड़के, रवि ने बड़े टीले से आते हुए संदेशवाहक को देखा। गाँव-गाँव की ये लंबी और सुनसान यात्राएँ होती थीं, और कल्पनाओं में खो जाने का मौका देती थीं; केलू मेनन कभी-कभी दौड़ते हुए कल्पना करते थे कि वे किसी दूसरे युग के डाकिया हैं, भाले, घंटियों और 'रॉयल मेल' लिखे थैले के साथ एक महान नायक।
‘आखिरकार, माश!’ केलू मेनन ने गेट से आवाज़ लगाई, ‘इस हफ्ते तुम्हारे पास एक असली चिट्ठी आई है। जिला बोर्ड से कोई भूरा लिफाफा नहीं!’

डाकिया ने अपने पैरों से धूल झाड़ी, अंदर आया और कक्षा की एक बेंच पर आराम से बैठ गया। वह अपने बैग में कुछ ढूंढने लगा, 'मुझे यकीन है कि आपके पास एक होगा। मैं इसके अंदर क्या है, यह नहीं बता सकता, यह अंग्रेजी में है। आह, यह रहा!'
उसने खुला हुआ लिफाफा रवि को थमा दिया। रवि ने चिट्ठी निकाली और पढ़ने लगा। डाकिया बढ़ती हुई चिंता के साथ उसे देखता रहा।
‘सब ठीक है, माश?’
सब ठीक है।
उत्कृष्ट चर्मपत्र पर लिखी नाजुक लिखावट, भरोसेमंद संदेश, और इन सब की निकटता, रवि, यह मैं हूँ...
‘यह अच्छी खबर है, है ना?’ केलू मेनन ने दोहराया।
'यह है।'
गुरुवायूर के भगवान की जय हो!
रवि ने उस खूबसूरत नीले चर्मपत्र को मोड़कर वापस लिफाफे में रख दिया। केलू मेनन, अब शांत होकर गपशप करने लगीं, 'कोझानास्सेरी में पंचायत के चुनाव हैं।'
मुझे पता नहीं था।
‘आप यहाँ बैठकर पढ़ते और पढ़ाते रहिए जबकि बाहर की दुनिया में बहुत कुछ घटित हो रहा है। कोझानास्सेरी पूरी तरह से लाल रंग में रंगने के लिए तैयार है!’
'दिलचस्प।'
क्या रूस में लोगों को इसके बारे में पता है?
मुझे लगता है कि वे ऐसा करते हैं।
'हाँ, बिल्कुल। उनके जासूस हैं।'
केलू मेनन उठे और अपने कंधे पर रखे बैग को अधिक आरामदायक स्थिति में ले गए। उन्होंने कहा, 'दोपहर होने वाली है। मुझे जाने दीजिए।'
केलू मेनन चले गए। पंखों वाले सर्प मृगतृष्णा में उठे और उत्सुकता भरी भावना से रवि को इशारा किया।
रवि ने पत्र निकाला और उसे दोबारा पढ़ा:
रवि, ये मैं हूँ, तुम्हारी पद्मा। सात साल पहले हम लेटे थे।
ठंडी रेत पर बैठकर रात के पक्षियों को आसमान में उड़ते देखना। अगर मैं फिर कभी आऊं तो...

आपकी शांति भंग करने के लिए क्षमा करें।
मैं 10 मई को पालघाट पहुँचूँगा। ट्रेन पालघाट जल्दी पहुँच जाती है।
सुबह। कोयंबटूर में, मैं ज्योति की मेहमान हूँ। याद है, शर्मीली छोटी बच्ची?
ज्योति, तांबरम में हमारा सहपाठी? वह यहाँ का जिला कलेक्टर है और
बहुत मददगार साबित हुआ है।
मेरा इंतजार करना।
पद्मा
रवि ने हस्ताक्षर को देखा, देर तक, तल्लीन होकर, उस छवि को निहारता रहा; उसका अपना हस्ताक्षर अब उपयोग में नहीं था, शायद अकेलेपन में मिट गया था। अंतिम विघटन से पहले उसकी आत्मा अंगूठे की रेखा में समा गई होगी। पद्मा, उस चित्र से उसे कोमलता से निहार रही थी! उसने भी शुष्क कृतज्ञता से उसे निहारा।
अभी दस दिन और बाकी थे; रवि को यह देखकर आश्चर्य हुआ कि वह अभी भी अधीर होने में सक्षम था।
‘माश, तुम थके हुए लग रहे हो,’ माधवन नायर ने उनकी एक सैर के दौरान कहा। ‘गर्मी का असर होगा।’
‘ज़रूर होगा—’
'मानसून बहुत तेज होने वाला है।'
वही घिसी-पिटी चालें, वही दोहराव।
दस दिन बीत चुके थे। रवि सुबह जल्दी उठा, उसने सूर्योदय को शीतल प्रकाश में चमकते देखा। वह फाइबर टॉर्च जलाते हुए कूमनकावु की ओर चल पड़ा। फिर पालघाट के लिए पहली बस पकड़ी... वह जल्दी पहुँच गया था। रास्ते में एक दुकान पर कॉफी पीने के बाद, रवि प्लेटफार्म पर चढ़ गया। प्लेटफार्म पर भीड़ नहीं थी और उसके दोनों सिरों पर कोयले और भाप की महक से महकते पेड़ और बेंच थे...
खस्ताहाल 'यात्री' ट्रेन पुराने पिस्टनों की खड़खड़ाहट के साथ आई।
‘क्या तुम मुझे जानते हो, अजनबी?’
'मैं नहीं।'
रवि ने उसके द्वारा पहने गए खूबसूरत रेशम को देखा, उसके मोटे चश्मे को देखा जो पहले से काफी मोटा हो गया था, और फिर काफी देर तक उसके मुस्कुराते हुए चेहरे को देखता रहा।

उन्होंने एक-दूसरे का हाथ पकड़ा और रेलवे रेस्तरां की ओर बढ़े, और एक-दूसरे के सामने बैठ गए, बोलने की स्थिति में इतने बोझिल थे कि एक-दूसरे को भूखी, लालची निगाहों से निहार रहे थे।
‘चलो,’ उसने कहा, ‘कोई ऐसी जगह जहाँ हम आराम कर सकें...’
मैं तुम्हें अपने पौधशाला में नहीं ले जा सकता...
‘पौधशाला?’
‘जहां वे रोपण से पहले पौधों के छोटे-छोटे अंकुर जमा करते थे।’
‘क्या आप उनके साथ रहते हैं?’
'हां। एक अलग तरह के पौधे के साथ।'
‘ओह, रवि!’
हम बांध स्थल पर स्थित गेस्ट हाउस को आजमा सकते हैं।
‘तो चलिए चलते हैं।’
पालघाट कस्बे की सड़कों पर एक टैक्सी में। मानसून से पहले की उमस भरी हवा, नमी से भरी हुई। पसीना, बेचैनी।
‘पद्मा, तुम्हें नहाना होगा।’
'और आप ...'
मुझे नहाने से ज्यादा, कपड़े बदलने की जरूरत है।
‘तुम अपने साथ कुछ क्यों नहीं लाए?’
‘पौधों के घर में कोई कपड़े नहीं थे।’
‘आपके यहाँ लोग क्या पहनते हैं?’
‘पेड़ की छाल।’
‘चलिए पेड़ की छाल से बनी चीजों से कुछ कम महंगी चीजें खरीदते हैं। कमीजें और धोती।’
मैं पूरी तरह से कंगाल हो चुका हूँ।
हम इसका ध्यान रखेंगे।
'ठीक है। मेरे लिए चटख लाल और हरे रंग का कुछ खरीदो। कुछ ऐसा जो बहुत भड़कीला और अश्लील हो।'
'क्यों?'
क्योंकि पीछे बैठी महिलाएं आश्चर्य से दंग रह जाएंगी।

‘ओह, रवि।’
वे चुप हो गए। फिर रवि बोला, 'क्या मैंने तुम्हें चोट पहुंचाई, पद्मा?'
'यह दुनिया दुखों से भरी है। दूसरा संसार भी, यदि ऐसा कोई है तो।'
'हाँ, है। मेरे छात्रों ने मुझे यही सिखाया है।'
टैक्सी कस्बे को पीछे छोड़ गई। वे बांध की ओर जाने वाली सड़क पर थे। गहरे रंगों वाला परिदृश्य। एक अकेली बस धीमी गति से, मानो बुढ़ापे की हालत में चल रही थी। एक प्रवासी आदिवासी महिला, जिसके नंगे स्तनों पर मोतियों की माला थी। एक बुलडोजर, मंदिर के हाथी की तरह डरपोक, खड़खड़ाती टैक्सी को विनम्रतापूर्वक रास्ता दे रहा था...
गेस्ट हाउस के सुइट में, पद्मा ने खिड़की खोल दी। खिड़की से बांध की विशाल झील दिखाई दे रही थी, जो धूप से जगमगाती, चमकीली और ठंडी थी।
‘रवि!’
‘जी हां, पद्मा?’
‘आपने मुझसे मेरी उस विचित्र खोज के बारे में नहीं पूछा—जो मैं आपके लिए कर रही थी।’
मैंने नहीं किया।
'अच्छा, तो मैं तुम्हें नहीं बताऊंगा।'
‘ओह, मुझे बताओ।’
'महीनों की थकाऊ जांच के बाद, मैं आपके पवित्र स्थान तक पहुंचा। हे भगवान! इसे क्या कहते हैं?'
'खासक।'
'जी हां, खासक।'
काशी के एक मठ में, जो कुष्ठ रोगियों से घिरा हुआ था, प्रयाग की सराय में, मध्य प्रदेश के क्केकर केंद्र में; हर पल सुराग मिटने का खतरा मंडराता रहा। अंत में, बोधानंद के आश्रम में जाकर जाकर सुराग मिला। इसी बीच ज्योति ने नौकरशाही के विशाल नेटवर्क को सतर्क कर दिया था।
पद्मा ने कहा, 'आश्रम में एक स्वामिनी ने आपके बारे में पूछा था।'
क्या उसने ऐसा किया?
क्या आपको निवेदिता नाम की कोई महिला याद है?

‘निवेदिता। मुझे याद है।’
‘बेहद खूबसूरत!’
रवि ने कड़वी मुस्कान दी।
‘क्या अमेरिका ने तुम्हें लेस्बियन बना दिया है?’
मैं तुम्हें नहीं बताऊंगा। चश्मा ले आओ।
रवि ने अलमारी से गिलास निकाले और उन्हें मेज पर रख दिया।
उसने कहा, 'यह काफी अच्छी व्हिस्की है, मुझे उम्मीद है कि शराबबंदी के कानून लागू करने वाले पुलिसकर्मी हमें यहां परेशान नहीं करेंगे।'
रवि ने धातु के ढक्कन के चटकने की आवाज़ सुनी। उसने चुप्पी तोड़ी।
‘रवि, तांबरम की उन शामों के लिए बधाई!’
‘लूज़ में रात्रिचर पक्षियों के लिए जय हो!’
मैं रो सकती हूँ...
‘ये तो बहुत गड़बड़ हो जाएगी।’ कुछ देर तक सन्नाटा छाया रहा।
‘बोर्बन ऑन द रॉक्स, जैसा कि वे कहते हैं,’ उसने कहा। ‘पसंद आया?’
'खास तौर पर नहीं। यह हमारे उत्साह जितना अच्छा नहीं है।'
‘आपकी आत्माएं?’
'हां। खसक की देसी शराब।'
हे भगवान, मैं उन आत्माओं को श्राप दे सकता हूँ!
झील के ऊपर बादलों का एक घना समूह छा गया, ये बादल झील से उठते थे और फिर बारिश बनकर वापस लौट जाते थे। एक छोटी नाव झील पर भारी कदमों से पहाड़ की ओर बढ़ रही थी।
‘रवि,’ उसने कहा, ‘क्या तुम यह नहीं जानना चाहते कि मेरे साथ क्या हुआ है?’
'मैं करता हूं।'
‘मैं प्रिंसटन गया था। क्या आपको तांबरम में हमारा मेहमान याद है?’
मुझे याद है। और आपने प्रिंसटन में क्या किया?
‘अनुसंधान। इन सात वर्षों के दौरान।’
‘प्रिज्मों के साथ खेलना।’
रवि ने गिलास दोबारा भर दिए।

‘मैं ऊटी में तुम्हारे घर गई थी,’ उसने कहा। ‘रवि, उन्हें नहीं पता कि तुम कहाँ हो। यह बहुत ज़ालिम है।’
उसने अपना गिलास उठाया, लेकिन फिर उसे वापस मेज पर रख दिया।
‘मुझे बताओ,’ उसने कहा।
मैं वहीं रुका था। मैं तुम्हारे बिस्तर पर सोया था।
पहाड़ों पर चांदनी, खिड़कियों के बाहर चमेली की लताएँ, लताएँ आपस में इस तरह लिपटी हुई हैं जैसे मैथुन करते हुए सर्प।
'और तब?'
अगले दिन मैं तुम्हारी चिट्टम्मा के साथ तैरने के लिए बाहर गया।
‘हम्म।’
‘हमने खूब तैराकी की। और, रवि, वह कितनी खूबसूरत है... रवि, तुम कहाँ हो?’
‘मैं सुन रहा हूँ, पद्मा।’
‘तुम्हारे पिताजी बहुत बीमार हैं। रवि, क्या तुम चाहते हो कि मैं बोलना जारी रखूँ?’
‘आगे बढ़ो, पद्मा।’
‘लूज़ की शाम। वह पत्र जो तुमने मुझे पढ़ने को दिया था। मैं गोधूलि बेला के उनके उल्लेख को कभी नहीं भूल पाया। गोधूलि बेला ने उन्हें अपने वश में कर लिया था।’
रवि ने खुद से पूछा, पश्चाताप क्या होता है? दूर पहाड़ों पर ताड़ के पेड़ों पर ढलता सूरज। हवा ठंडी थी, झील से आती हुई हल्की-हल्की हवा।
‘रवि!’
मैं सुन रहा हूँ।
'मेरे साथ भाग चलो।'
एक लंबा सन्नाटा छा गया। सूर्यास्त के बाद सुबह के तारे निकलने लगे।
मुझे यह कहते हुए दुख हो रहा है, लेकिन शायद वह हमारे साथ ज्यादा समय तक न रहे। भविष्य के लिए कुछ योजना बना लो। मेरे पास प्रिंसटन में नौकरी है। मैं तुम्हारा खर्च उठा सकती हूँ, और तुम अपनी पढ़ाई वहीं से शुरू कर सकते हो जहाँ तुमने छोड़ी थी।
रवि हंस पड़ा।
‘पद्मा, कौन सी पढ़ाई? कौन सा शोध?’
‘तुम मेरा मजाक उड़ाते हो, रवि। मुझे यह बिल्कुल पसंद नहीं।’

उसके भीतर एक चीख उठी। और वह अपने गहरे मौन में बोला—बाहर फैले विशाल रेगिस्तान को देखकर कुछ नहीं सीखा जा सकता, स्पेक्ट्रोस्कोप को भीतर की ओर मोड़ो, जहाँ उसने भीतर बादलों में अपना धनुष स्थापित किया है, जो उसके और पृथ्वी के बीच की वाचा का प्रतीक है। गैलीलियन लेंस तोड़ो—फ्लोरेंटाइन गलत था, उसने मनुष्यों को एक सीमित गणना से बहकाया। धर्मोपदेशक और पूछताछकर्ता सही थे, क्योंकि पृथ्वी गोल नहीं है, बल्कि नश्वर मानव मन का एक अनुभव है।
रवि पीठ के बल लेटा हुआ था, उसने उसे अपने ऊपर उठाया और देखा कि उसके स्तन और कमर धूप से दमकते शरीर के बाकी हिस्सों की तुलना में अधिक फीके थे।
‘रवि—’
‘हां, पद्मा—’
‘मुझे बताओ कि तुम खासक छोड़ दोगे।’
अविश्वसनीय सहजता के साथ उत्तर आया, 'मैं करूँगा!'
क्या यह एक वादा है?
'यह है।'
और तुम मेरे साथ प्रिंसटन चलोगे...
‘मुझे नहीं पता, पद्मा।’
वह सिसकने लगी। रवि ने उसके दुख को उसी तरह ग्रहण किया जैसे रेगिस्तान बारिश को ग्रहण करता है।
‘तुम किससे भाग रहे हो रवि?’ हताश आवाज ने पूछा।
मैं किसी चीज से भागना नहीं चाहता, रवि ने मौन में ही उत्तर दिया। मैं रेगिस्तान की रेत बनना चाहता हूँ, रेत का हर एक कण; मैं झील बनना चाहता हूँ, उसकी हर एक छोटी बूँद; मैं लय बनना चाहता हूँ, विलीन होना चाहता हूँ।

यात्रा शुरू होती है

चेताली के ऊपर छाए बड़े-बड़े बादल छंट गए। मानसूनी बारिश खासक पर बरस पड़ी। मूसलाधार बारिश में स्कूल इंस्पेक्टर का चपरासी पौधशाला में आया। सामने का दरवाजा बंद था। अप्पू-किली बरामदे में पालथी मारकर बैठा था और छज्जे से नीचे बहते बारिश के पानी को देख रहा था।

‘अरे, तुम वहाँ—’ चपरासी ने पुकारा।
अप्पू-किली न तो देख पा रहा था और न ही सुन पा रहा था, वह बहते पानी में इतना मग्न था।
‘ये कैसी बदतमीज़ी है?’ चपरासी ने कहा। वह बरामदे पर चढ़ गया और अपनी छतरी की नोक से उस मूर्ख को हल्का सा धक्का दिया। अप्पू-किली चौंककर उछल पड़ा।
'एट्टो,' उसने तुतलाया, 'आ यू ए पूथम?'
‘मैश्तर कहाँ है?’
गुरु का नाम सुनते ही अप्पू-किली ने भावुक होकर मुस्कुराते हुए कहा, 'वह तो आग पकड़ने जा रहा है।'
चपरासी गुस्से से आग बबूला होकर मुड़ गया और दर्जी को ढूंढते हुए चौक की ओर आ गया।
‘तुम मेरा अपमान कर रहे हो—’ चपरासी ने कहा।
चपरासी का अपमान? माधवन नायर अचंभित रह गए।
उन्होंने कहा, 'मुझे समझ नहीं आ रहा है।'
'मेरा मतलब विशेष रूप से आपसे नहीं था। मेरा मतलब आप सभी से था, माएष्टार से, और उस अजीब से चौकीदार से जिसने मुझे मुंह बनाकर चिढ़ाया और मुझे पूथम कहा।'
माधवन नायर ने उस दृश्य का पुनर्निर्माण किया और एक पल में उनके मन से तबाही का डर दूर हो गया।
‘ओ चपरासी,’ उसने हंसते हुए कहा, ‘वह जरूर हमारा मंदबुद्धि अप्पू-किली ही रहा होगा।’
मुझे परवाह नहीं कि वह कौन था।
हम इसकी भरपाई करेंगे।
लेकिन मुझे बताओ, हे दर्जी, मैश्टर कहाँ है?
'क्या बात है आ?'
'पहले मुझे बताओ—मैश्तर कहाँ है?'
माधवन नायर अपनी दुकान से बाहर निकले और बोले, 'आइए, चपरासी। चलिए कहीं ऐसी जगह चलते हैं जहाँ हम आराम से बैठकर बातें कर सकें।'

अलियार की चाय की दुकान में, गर्म समोवर के पास बैठे हुए, उन्होंने कहा, 'बताओ, हे चपरासी, क्या कोई बात है?'
'बिल्कुल।'
'मुझे बताओ।'
'मैश्तर कहाँ है?'
वह कुछ दिनों के लिए बाहर गए हैं।
'तो जब वह वापस आएगा तो उसे खुद ही पता चल जाएगा।'
'अलियार,' माधवन नायर ने कहा, 'हमारे आदरणीय चपरासी के लिए आप्पम। और आपके पास क्या है? उबले हुए केले—'
चपरासी ने बड़े चाव से खाया-पिया। उसका स्वभाव नरम पड़ गया।
उन्होंने कहा, 'ये नौजवान बेवजह सजा को न्योता देते हैं।'
माधवन नायर ने कहा, 'आप हमें अपराध के बारे में जरूर बता सकते हैं, सजा चाहे जो भी हो। आखिर हम पड़ोसी गांवों में ही तो रहते हैं।'
चपरासी आगे झुककर दबी आवाज में बोला, 'इंस्पेटर यजमान के पास एक रिपोर्ट पड़ी है...'
एक गुमनाम पत्र, लेकिन उसमें गंभीर आरोप लगे थे: रवि पढ़ाने के बजाय कहानियां सुनाने में अपना समय व्यतीत करता है, उसका नैतिक आचरण बिगड़ा हुआ है, वह फर्जी प्रवेश रजिस्टर रखता है, वह धार्मिक घृणा को भड़का रहा है, और वह निजाम अली नामक एक काले जादूगर की मदद से इसे फैलाता है।
एक और उबला हुआ केला खाते ही चपरासी और भी ज्यादा बातूनी हो गया। अगर जल्द ही आरोपों को गलत साबित नहीं किया गया, तो रवि की नौकरी जा सकती है और स्कूल बंद भी हो सकता है।
एक नए इंस्पेक्टर ने पदभार संभाला था, एक युवा और उत्साही अधिकारी, जिसे दसवीं कक्षा के बाद इंस्पेक्टर-प्रशिक्षु के रूप में चुना गया था। अपने सख्त बाहरी रूप के बावजूद, वह दयालु और मददगार था, और अच्छे भोजन और सुखमय जीवन की कद्र करता था।
'किस तरह का अच्छा खाना?' दर्जी ने अपनी घृणा छुपाते हुए पूछा।
'मुर्गा-'

‘क्या उसे बटेर और तीतर पसंद आएंगे? अगर हम उन्हें इशारा भी दे दें, तो पंडारम जंगली पक्षियों के पूरे झुंड का नरसंहार कर देंगे।’
चपरासी ने उत्सुकतावश पक्षियों को चबाते हुए अश्लील आवाजें निकालीं।
‘और अच्छे जीवन के बारे में,’ माधवन नायर ने कहा, ‘मुझे लगता है कि हमें इसकी पड़ताल करनी होगी...’
‘अपने माएष्टार से कहो कि जाकर उनके चरणों में गिर पड़े। बाकी का मैं ख्याल रख लूंगा।’
चाय पीने आए खाज़ी को गुमनाम याचिका के बारे में बताया गया।
‘घिनौना झूठ!’ खाज़ी ने कहा, ‘धोखा!’
‘जरूरत पड़ने पर हम उच्च अधिकारियों से मिलेंगे,’ सौम्य स्वभाव वाले अलियार ने भड़कते हुए कहा, ‘हम हलफनामे देंगे।’
‘एक गुमनाम याचिका!’ खाज़ी ने कहा। ‘निश्चित रूप से, सैयद मियां शेख इसकी अनुमति नहीं देंगे।’
‘लेकिन इंस्पेक्टर इसकी इजाज़त देता है,’ चपरासी ने बिना सोचे समझे कहा और अगले ही पल वह दहशत से कांप उठा। उसने पहाड़ पर एक पल के लिए नज़र डाली —वह बादलों के एक भयानक आवरण से ढका हुआ था और इंस्पेक्टर कार्यालय के सभी क्लर्कों से कहीं ज़्यादा डरावना लग रहा था। वह बुरी तरह परेशान होकर वहाँ से चला गया, क्योंकि उसे एक नई आत्मा ने घेर लिया था। घर लौटते समय उसने बिजली से बचाव के लिए अर्जुन के दस नामों का जाप किया, और यह सुनिश्चित करने के लिए बार-बार पीछे मुड़कर देखा कि कहीं उस पर भूत तो नहीं सवार है... अलियार के यहाँ मौजूद छोटी सी भीड़ वहीं रुकी रही। खाज़ी का गुस्सा शांत नहीं हुआ था; वह मन ही मन बुदबुदाया, ‘यह किसने किया है?’
‘कोई भी हो,’ दर्जी ने कहा, ‘और अलियार, मैं उधार पर सामान लेता हूँ। दो आप्पम, दो उबले केले—’
अलियार मुस्कुराया। 'इसे अलियार पर ही रहने दो। मोल्लाक्का इसे अल्लाह का श्रेय कहता।'
रवि लौट आया। वह दस दिन से गायब था, लगभग एक तिहाई महीना बिना किसी स्पष्ट कारण के बीत गया था। बारिश रुकी थी और अप्पू-किली गाँव के बाहरी इलाके में घूम

रहा था। तभी उसकी नज़र रवि पर पड़ी और वह उछलता-कूदता हुआ पौधशाला की ओर आ गया।
पुनर्मिलन की खुशी में वह चिल्लाया, 'एटो! तुम कहाँ थे?'
‘काशी को, मेरी प्यारी,’ रवि ने कहा।
अप्पू के बालों से बारिश का पानी पोंछते हुए रवि एक पल के लिए स्तब्ध रह गया। उस मूर्ख के बालों के स्पर्श से उसे पुरानी यादें ताजा हो गईं—आर्य और पुनर्जन्म लेने वाले बच्चे, दुख में डूबे कर्मों के कीड़े।
‘जब मैं दूर था तो क्या किसी ने तुम्हें चिढ़ाया?’
‘पूथम। उसने छाते से मारा।’
‘चिंता मत करो। हम उसे भगा देंगे। अब, ये लो मेरे तोते के लिए कुछ।’
अप्पू-किली ने कृतज्ञता के भाव से कराहते हुए रवि से चॉकलेट का पैकेट छीन लिया।
‘एट्टो,’ उसने कहा, ‘कैच यू गू बिग डागॉन फाई।’
‘माश, तुम कहाँ थे?’
माधवन नायर आराम से एक बेंच पर बैठे थे, जबकि रवि अपना बैग खोल रहे थे।
‘तुम कहाँ थे?’ दर्जी ने फिर पूछा।
"काशी के लिए," रवि ने मजाक में कहा।
‘क्या सभी घोड़ों की हालत अच्छी है?’
फिर, अपने दोस्त को नाराज न करने के डर से, बहुत सावधानी बरतते हुए, माधवन नायर ने रवि को स्कूल के खिलाफ रची गई नवीनतम साजिश के बारे में सब कुछ बताया।
‘माश, परेशान मत हो। पूरा गांव एकजुट है—’
लेकिन, माधवन नायर, मैं नाराज नहीं हूं।
'अगर बोर्ड स्कूल बंद कर देता है, तो हमने वैकल्पिक व्यवस्थाएं तैयार कर ली हैं।'
रवि सुन नहीं रहा था, उसका ध्यान उन तिलचट्टों पर था जो चुपचाप अपनी विरासत लेकर आए थे; वह फिर से उनके सड़े-गले स्थानों को अपवित्र करने लौट आया था।
"मुझे खेद है, मेरे नन्हे भाइयों," रवि ने कहा। "बच्चे यहाँ पढ़ने-लिखने में बोझ तले दबे हुए थे, और मैं एक सराय, एक लंबी यात्रा के बाद विश्राम स्थल की तलाश में था।" एक काली बालों वाली मकड़ी, जो अपने मानव निवासी की अनुपस्थिति में पौधगृह में लौट आई थी, दीवार पर गोल-गोल दौड़ रही थी, भयभीत। "मैंने इस सराय में बहुत देर तक

घुसपैठ की," रवि ने कहा, "दीयों और अगरबत्तियों से इसकी प्राचीन रातों को अपवित्र किया, जबकि समय, अनियंत्रित और विस्मयकारी, घड़ियों से परे रो रहा था, गहरे नीले हवाओं की तरह गरज रहा था। तिलचट्टा और मकड़ी इन हवाओं में घात लगाए बैठे थे।"
'मैं सोच रहा था, माश...' माधवन नायर ने कहा, 'इंस्पेक्टर के कार्यालय में जाना, माफी मांगना, समझौता करना।'
रवि ने धीरे से कहा, 'नहीं।'
माधवन नायर को शब्द ढूंढने में मुश्किल हो रही थी, 'लेकिन... खासक ने फैसले लिए हैं...'
वे अपने स्वयं के स्कूल के लिए आवश्यक धन जुटाएंगे, और कोझानास्सेरी के कम्युनिस्ट उन्हें एक समिति का गठन करना सिखाएंगे।
अगले दिन, साथी पौधशाला में आए।
रवि अप्पू-किली को एक कहानी सुना रहा था।
'हम कोझानसेरी से हैं-'
'स्वागत है साथियों।'
उनमें से एक पत्ते की तरह पतला था, और दूसरा पहाड़ के ट्रोल की तरह काला और गठीला था।
'मैं किसानों के संघों के साथ काम करता हूं,' दुबले-पतले व्यक्ति ने कहा।
'संकरण नाम है।'
ट्रोल ने कहा, 'कन्नी मूथन।' 'कोज़ानासेरी की शांति परिषद के सचिव।'
'आपसे मिलकर खुशी हुई, साथियों। और यह जानकर अच्छा लगा कि पास में ही एक शांति परिषद है। वैसे, परिषद करती क्या है?'
'अरे, कुछ खास नहीं। कभी-कभी हम परमाणु युद्ध पर प्रतिबंध लगा देते हैं। फिलहाल हमारी चिंता स्कूल को लेकर है—'
'यह एक साजिश है,' दुबले-पतले साथी ने कहा। 'हम इससे निपटेंगे।'
अप्पू-किली को कहानी में बीच में रुकावट आना पसंद नहीं आया।
'Etto,' he said, 'thel stoyi.'
तोता किश्तों में कहानी नहीं सुन सकता था। इसलिए, उसे असुविधा से बचाने के लिए, रवि ने कहा, 'कहानी यहीं समाप्त होती है।'

वह मूर्ख रवि और उसके साथियों के सामने उदास और निराश खड़ा रहा, फिर छज्जे से पानी बहते देखने के लिए बरामदे में चला गया। कहानी बिना अर्थ या समाधान के समाप्त हो गई।
साथी रवि को एक अलग ही कहानी सुना रहे थे। केलन की कहानी, जो एक दलाल पूंजीपति था, शिवरामन नायर की कहानी, जो एक सामंतवादी था, और नौकरशाही में काम करने वाले एक चपरासी की कहानी।
‘यहाँ कोई राष्ट्रीय बुर्जुआ वर्ग नहीं है,’ कन्नी मूथन ने अपने वर्ग विश्लेषण का निष्कर्ष निकालते हुए कहा। ‘खासक प्रतिक्रियावाद का गढ़ है।’
‘राष्ट्रीय बुर्जुआ वर्ग?’ रवि ने पूछा। ‘यह क्या होता है?’
‘मैं सामान्य तौर पर बोल रही थी। उदाहरण के लिए, धान के पौधों की रोपाई करते समय अछूत महिलाओं को ब्लाउज पहनने की अनुमति नहीं है। जरा सोचिए! नग्न स्तन वाली महिलाएं झुकी हुई—’
रवि ने कहा, 'मैं कल्पना कर सकता हूँ। कितना खूबसूरत होगा।'
ये शब्द मजाक में बोले गए थे, और असहजता को भांपते हुए उसने इसे समझाने की कोशिश की। उसने कहा, 'मैं सामान्य तौर पर बोल रहा था।'
इससे स्थिति और भी खराब हो गई और बातचीत बिगड़ गई। अचानक हुई एक टिप्पणी के बाद साथी उठ खड़े हुए और बोले, 'माश, तुम्हें सबसे आगे होना चाहिए।'
'अचे से।'
बाद में, राजा की मस्जिद में, 'साथी—'
आगंतुकों को तुरंत सुधारते हुए कहा गया, 'मुझे खाज़ी कहो।'
‘अहा, जी हाँ,’ किसान नेता ने कहा। ‘हमारे खाज़ी इस स्थिति से अनजान नहीं हैं।’
'बिल्कुल नहीं,' खाज़ी ने कहा।
यह एक साजिश है।
‘इसमें संदेह की क्या बात है?’
ट्रोल ने कहा, 'साम्राज्यवादी ताकतें सक्रिय हैं। शांति आंदोलन में शामिल हम लोग इसे भली-भांति जानते हैं।'
'डरो मत!' खाज़ी ने कहा और साम्राज्यवाद के खिलाफ एक मंत्र का जाप किया, जिससे साथी थोड़े विचलित हो गए।
‘खाजी की वापसी से आंदोलन को काफी मजबूती मिलेगी—’

खाज़ी ने रहस्यमय अल फातिहा के साथ मंत्रोच्चार समाप्त किया। प्रेतवाधित मस्जिद में साथी घबरा गए।
बारिश की बूँदें धरती की भाप के साथ मिलकर पौधशाला को ढक रही थीं। कुन्हामिना कोहरे और बारिश के बीच से टिफिन का डिब्बा लेकर आई।
'उम्मा ने ये भेजा है, सर,' उसने कहा, 'पत्थरी और मीट करी।'
'बैठ जाओ, मेरी नन्ही सी बच्ची,' रवि ने कहा। वह नहीं बैठी। बीते दिनों की तरह वह पास आकर खड़ी हो गई। रवि ने उसके हाथ अपने हाथों में ले लिए। उसके विचार चेताली की चोटी पर अकेली खड़ी उस लड़की और पर्वत की प्रतिज्ञा की ओर चले गए। वह धीरे-धीरे उसके करीब आई, अब वह उसकी गोद में बैठी थी, उसकी आँखों में आँसू भरे हुए थे।
'लोग कह रहे हैं कि तुम जा रहे हो,' उसने कहा, 'क्या यह सच है, सार?'
रवि ने आशीर्वाद देते हुए अपना हाथ उसके सिर पर रखा।
'क्या तुम वापस नहीं आओगे, सार?'
गांव वालों का कहना था कि चांदी की कलगी और लाल धब्बों वाली मछली कई सालों तक चेताली की दरारों में शीतनिद्रा में रही। यह शेख की दूत थी और प्राकृतिक आपदाओं के समय तैरकर नीचे आती थी। एक शाम जब बारिश रुकी, तो नदी में नहाने वालों ने उस कलगी वाली मछली को देखा।
अगली रात भयंकर हवा चलने लगी। दो रात और दो दिन तक वह बेरहमी से चलती रही, उसने छप्परों को उड़ा दिया, बच्चे रोते रहे और उनके माता-पिता प्रार्थना करते रहे। काले ताड़ के पेड़ जड़ से उखड़ गए, इमली की मजबूत शाखाएँ टूट गईं।
फिर हवा और बारिश दोनों थम गईं। उस शांत क्षण में, रवि और माधवन नायर पहाड़ियों पर टहलने निकल गए। खसक सूर्यास्त की रोशनी में लिपटा हुआ, साफ-सुथरा और सूखा पड़ा था। आसमान नीचे झुका हुआ था, मानो अपनी अपार शक्ति को रोके हुए हो। न तो शिक्षक और न ही दर्जी ने स्कूल के बारे में कुछ कहा।
'किली कहाँ सोएगा, माधवन नायर?'
'मेरी दुकान में, माश।'
वे वापस लौटने लगे। उन्हें भगोड़े गांव की एक झलक मिली।
'मुझे विश्वास नहीं हो रहा कि कोडाची की मृत्यु हो गई है,' रवि ने याद करते हुए कहा।
'क्या नाम है! आपने इसका क्या मतलब बताया था?'

‘पहाड़ों की धुंध की स्त्री।’
बातचीत के हाशिये पर पड़ी बातें। छोटी-मोटी चर्चाएँ। वे मुख्य विषय से दूर रहे। उन्होंने आतिशबाजी और फिल्मों के बारे में बात की।
पौधशाला के द्वार पर वे अलग हो गए। रवि ने द्वार खोला और अंदर चला गया। माधवन नायर पहाड़ी चढ़कर गांव की ओर चल पड़ा। दोनों में से किसी ने भी पीछे मुड़कर नहीं देखा।
माधवन नायर को वापस जाने की तीव्र इच्छा हुई, रवि के साथ कुछ और समय बिताने की। मुलाकातें और बिछड़ना, समय के टुकड़े-टुकड़े...
रवि सुबह जल्दी उठ गया। अभी भी सूर्योदय का समय था। उसने गलियारे में सो रहे अप्पू-किली को जगाने से बचने का पूरा ध्यान रखा। रवि ने गलियारा खुला रखा और पौधशाला के दो कमरों में वापस आ गया। उसने अपना त्यागपत्र उपस्थिति रजिस्टर में डाल दिया। उसने माधवन नायर को आने से मना कर दिया था, क्योंकि वह विदाई समारोह नहीं चाहता था। स्कूल की चाबी दरवाजे के चौखट पर रखी थी।
रवि कुछ पल के लिए बंद दरवाजे के सामने आँखें बंद करके प्रार्थना में खड़ा रहा। हे पिता! उसने कहा। हे मेरे संध्याकाल के पिता, मेरी गोधूलि यात्राओं के पिता, मुझे जाने की अनुमति दें। मैं पत्तों के इस घोंसले को, पुनर्जन्म के इस घोंसले को छोड़ रहा हूँ।
रवि अपने थोड़े से सामान को थैले में रखकर बाहर निकला। बारिश की बूँदें उसके फैले हुए छाते पर पड़ रही थीं; पहले हल्की फुहारें, फिर तनी हुई छतरी पर तेज़ आवाज़ करने लगीं। बारिश तेज़ होती गई, बिना गरज और बिजली वाली मानसूनी बारिश... रवि कोमन-कावु पहुँच गया।
बारिश लगातार बरस रही थी, मानो सफेद धुंध का एक नीचा गुंबद बन गया हो। कूमनकावु में तूफान और भी भयंकर था, सारी झोपड़ियाँ उड़ गई थीं, और कभी एक छोटा सा बाज़ार हुआ करता रहा वह स्थान अब सुनसान पड़ा था... बस आने में अभी समय था। रवि ने चारों ओर फैली सन्नाटे भरी शांति का जायजा लिया और बस स्टॉप के पास खड़ा हो गया, जो अब भीगे हुए ढेलों का ढेर बन चुका था। वह ढेलों से खेलने लगा, उन्हें अपने पैरों से अलग करने लगा।
रवि ने मिट्टी के ढेलों से रेंगते हुए निकले उस छोटे नीले और काले जीव को बड़े प्यार और उत्सुकता से देखा। नीले-काले जीव ने रवि की ओर देखा और अपनी फड़फड़ाती जीभ से बातें करने लगा। रवि ने उसका छोटा सा फन देखा, जो अब फैला हुआ था।

शिशु के नुकीले दांत रवि के पैर में चुभ गए। क्या तुम्हारे दांत निकल रहे हैं, मेरे नन्हे बच्चे?
अपनी दोमुही जीभ को आखिरी बार चंचल अंदाज में हिलाते हुए, सांप गीली मिट्टी की गलियों में वापस सरक गया।
बारिश, बस बारिश। सफेद, अपारदर्शी। बारिश सो रही थी, सपने देख रही थी। रवि लेट गया। वह मुस्कुराया। शाश्वत बारिश का पानी उसे छू गया। उसके शरीर के रोमछिद्रों से घास उग आई। उसके ऊपर विशाल बारिश सिकुड़कर अंगूठे जितनी छोटी हो गई, मानो विलीन होते सूक्ष्म शरीर के आकार की हो।
रवि बस का इंतजार करते हुए लेटा था।

एक उपसंहार

यह एक जादुई सफर था। मेरी किताब 'खासक्किन्ते इतिहासम' (जिसका अनुवाद 'खासक की किंवदंतियाँ' के रूप में किया गया है) की सफलता के दशकों बाद, थासारक गाँव के लोग मेरा स्वागत कर रहे थे। एक शाम के लिए, अपने नीरस जीवन में वे अब आम किसान नहीं रहे, बल्कि ऐसे पात्र बन गए थे जो अपने लेखक का अभिनंदन करने आए हों, मानो परियों की दुनिया में प्रवेश कर रहे हों। हम सिंचाई नहर के किनारे-किनारे चलते रहे, एक अंतहीन, रहस्यमय और अद्भुत सफर; यहाँ तक कि लालिमा लिए सूर्यास्त भी खासक के समय के ठहराव का प्रतीक लग रहा था।
यह सब इस तरह शुरू हुआ: 1956 में मेरी बहन को थसारक गांव में पढ़ाने का काम मिला। यह राज्य की उस योजना का हिस्सा था जिसके तहत पिछड़े गांवों में एकल शिक्षक वाले स्कूलों में पढ़ाने के लिए स्नातकों को भेजा जाता था।
एक दूरदराज के गाँव में अकेली लड़की का रहना मुश्किल था, इसलिए मेरे माता-पिता ने एक छोटा सा फार्महाउस किराए पर लिया और मेरी बहन के साथ रहने चले गए। इसी बीच मुझे उस कॉलेज से निकाल दिया गया जहाँ मैं पढ़ाती थी। बेरोज़गार और खालीपन महसूस करते हुए, मैं भी अपने गम भुलाने के लिए उनके साथ थासारक चली गई।
मैं ग्रामीण इलाके में पला-बढ़ा था, दरअसल पहाड़ी क्षेत्र में, जहाँ मेरे पिता सशस्त्र पुलिस बल के एक पहाड़ी शिविर के कमांडर थे। आस-पास कोई अच्छे स्कूल नहीं थे,

और घाटी में मोपलाहों (मुसलमानों) का प्राथमिक विद्यालय भी, जिसमें मैंने बाद में दाखिला लिया, जर्जर हालत में था। और पहाड़ी पर चढ़ना-उतरना मेरे लिए बहुत मुश्किल था—मैं एक कमज़ोर बच्चा था—इसलिए मैंने स्कूल छोड़ दिया और अपना बचपन कहानियों के सहारे गुज़ारा। नियति मुझे खासक के लिए तैयार कर रही थी। कॉलेज के आखिरी दिनों में, शिक्षकों की एक सभा में मुझे मालाबार जिला बोर्ड के अध्यक्ष के साथ मंच साझा करने का मौका मिला। सभा के बाद अध्यक्ष ने मुझे घर छोड़ने की पेशकश की, और उस दौरान हमारी मलयालम में नई रचनाओं पर बातचीत शुरू हुई। हम दोनों कम्युनिस्ट थे, और स्वाभाविक रूप से हमने एक भयंकर वर्ग विश्लेषण शुरू कर दिया। मैंने पालघाट में काल्पनिक किसान विद्रोहों को दर्शाने वाली दो लंबी कहानियाँ प्रकाशित की थीं; उन पर टिप्पणी करते हुए कॉमरेड-अध्यक्ष ने कहा, 'वे...

अच्छी कहानियां हैं, लेकिन काश आप कुछ ऐसा लिख पाते जिसमें इंकलाब का जिक्र ज्यादा होता।

ठीक यही बात उस समय मेरे मन में चल रही थी। क्रांति। मैं पालघाट के ग्रामीण इलाकों से अच्छी तरह वाकिफ था, जहाँ धान के खेत थे और वहाँ की बोलचाल की भाषा भी बहुत रोचक थी। मैं आसानी से सौ प्रसंग रच सकता था, दर्जनों स्थानों में से चुन सकता था। शहर में पले-बढ़े शिक्षक का गाँव आना मानो एक संयोग था। मैंने कॉमरेड-राष्ट्रपति को बताया कि मैं किसी रचना पर काम कर रहा हूँ और अपने तीर्थयात्री-क्रांतिकारी चरित्र को परिपूर्ण बनाना चाहता हूँ। वे प्रसन्न हुए और कहा कि वे पुस्तक का इंतजार करेंगे।

तभी दूर से आई एक त्रासदी ने मुक्ति के उत्सव को चकनाचूर कर दिया। हंगरी में, उन्होंने इमरे नागी को धोखे से गोली मार दी। यह देखकर मैं दंग रह गया। मैंने मुंह मोड़ लिया, और अपनी अनजानी यात्रा शुरू कर दी।

पीछे मुड़कर देखता हूँ तो ईश्वर का शुक्रगुजार हूँ, क्योंकि मैं बाल-बाल 'क्रांतिकारी' उपन्यास लिखने से चूक गया। अगर मैंने इसे लिखा होता, तो मार्क्सवाद की निरर्थक, दोहराव वाली ग्रंथसूची में एक और उबाऊ प्रविष्टि ही होती।

और फिर मैं ताजी हवा के लिए तड़प रहा था, मानो आसमान भर जीवंत साँसों के लिए तड़प रहा था। वाद-विवाद, यहाँ तक कि इतिहास भी, अब मायने नहीं रखता था। मैंने

पेड़-पौधों और फूलों को चुना, और खासक जैसी जगह को। नियति ही सब कुछ थी, खासक मेरा इंतज़ार कर रहा था।
एक बार जादू टूट गया तो बाकी सब आसान हो गया। स्टालिनवादी घुटन ऐसे गायब हो गई मानो कभी थी ही नहीं। रवि, मेरा नायक, मुक्ति का वाहक, अब गाँव लौटा और अपने जादुई बचपन में फिर से प्रवेश कर गया। वह अब शिक्षक नहीं था, प्रायश्चित के रूप में वह सीखेगा। वह खासक की अचेतना से सीखेगा।
उस निर्णय के साथ ही उपन्यास की संरचना और भाषा में ऐसा परिवर्तन आया जिसने मुझे भी आश्चर्यचकित कर दिया। कहते हैं कि मलयालम भाषा फिर कभी वैसी नहीं रही। मैं इस बात की पुष्टि तो नहीं कर सकता, लेकिन इस पुस्तक ने मुझे यह अवश्य सिखाया कि कोई भी भाषा, चाहे वह भौगोलिक रूप से कितनी भी सीमित हो, ऐतिहासिक रूप से कितनी भी वंचित रही हो, पुनर्जन्म की संभावनाओं से रहित नहीं रहती। मलयालम में उतनी ही कथात्मक क्षमता है जितनी शाही भाषाओं में। खासक ने आने वाली पीढ़ियों को यही आश्वासन दिया है।
अनजाने में ही मैं उत्तर-औपनिवेशीकरण द्विभाषिकता के सिद्धांत में भटक गया हूँ। चलिए, किंवदंतियों की बजाय खासक की कहानी पर लौटते हैं।
मलयालम में जगहों के नामों की बात करें तो, थसारक एक अनोखा और विचित्र नाम था। यह सम्मोहक था—शायद भौतिकवाद के प्रति मेरे अरुचि के कारण मैं आंतरिक रूप से एक ऐसी अवस्था में था कि सम्मोहित हो गया। मैंने एक काल्पनिक नाम गढ़ा, जो उतना ही असामान्य था—खासक। कुछ और नाम भी मुझे परेशान करते थे। अल्लाह-पिच्चा, मुल्ला, और निश्चित रूप से सैयद मियां शेख, खासक के संरक्षक जिन्न, जिसका नाम मैंने उस जिन्न के नाम से लिया था जिसे खाज़ी लोग तांत्रिक अनुष्ठानों के दौरान बुलाते थे।
उस जिन्न का नाम सैयद शेख हसन मस्तान था और वह अरब के नखलिस्तानों में रहता था। थासारक पहुँचने के कुछ ही दिनों में मेरी दोस्ती खाज़ी और मुल्ला दोनों से हो गई। खाज़ी की मेरी मासूमियत ने ही मुझे थासारक के गुप्त रहस्यों में प्रवेश करने दिया। एक दिन उन्होंने मुझे बताना शुरू किया कि शेख के लिए अरब से थासारक में आए प्रार्थना करने वाले भक्त तक इतनी दूर का सफर तय करना कितना कठिन था। खाज़ी ने कहा, 'बुरी आत्माओं की बुरी नज़रें बंद करनी होंगी। शेख उनकी आंखों पर पट्टी बांध देते हैं।'

खाज़ी की कल्पनाएँ तब और भी गहरी हो गईं जब कहानी में भौतिक विवरणों का ज़िक्र आया, जिसकी शुरुआत उनकी पहली मुलाकात से हुई। मैंने उनकी कुछ गलतियों को सुधारा, लेकिन खासक की चिरस्थायी गाथा में इसका कोई महत्व नहीं था। इन विसंगतियों से उन्हें कोई शर्मिंदगी नहीं हुई। क्या न्यूटन के सिद्धांत को मानने वाला भौतिक विज्ञानी आइंस्टीन के समीकरण से विचलित होगा? सत्य एक प्रिज्म से छनकर आने वाला प्रकाश है, और इसी से मुझे उस खगोल भौतिक विज्ञानी का विचार आया जो बाहरी ब्रह्मांड से मुंह मोड़कर भीतर के अंतरिक्ष की ओर मुड़ जाता है। खाज़ी का जादू बिग बैंग सिद्धांत से कम तर्कसंगत नहीं था। थासारक में अस्तित्व और अस्तित्व से परे के बीच एक चंचल अंतर्संबंध स्थापित हुआ।

यह इंटरफ़ेस ही थसारक का 'द लीजेंड्स ऑफ खासक' में एकमात्र योगदान था। बाकी सब एक कथाकार का नियमित काम था। लेकिन वह एक योगदान बहुत बड़ा था, इसने मुझे इमरे नागी के लिए शोक मनाने की आजादी वापस दिला दी।

एक और योगदान, जो उस समय उतना स्पष्ट नहीं था, ग्रामीणों का समय के प्रति दृष्टिकोण था, जिसे मैंने, भले ही मैं इसके प्रभाव में आ गया था, अपनी बेरोज़गारी की सुस्ती समझ लिया था। लेकिन नहीं। यह एक सकारात्मक पहलू था। थसारक के लोग किसी भी तरह की जल्दी में नहीं थे। उनका समय बिल्कुल अलग था, मानो प्रकाश की गति से भी तेज़ गति से चलने वाले टाकेऑन आराम करने के लिए घर लौट आए हों। इस लिहाज से देखा जाए तो 'द लीजेंड्स ऑफ खासक' एक तरह से पुनर्जागृति का गीत है। अब थासारक में बहुत से आगंतुक आते हैं—शिक्षाविद, युवा और जिज्ञासु लोग, और इस पुस्तक के विशिष्ट पाठक। अगर वे खासक सॉफ्टवेयर की तलाश में आते हैं तो उन्हें निराश होना ही पड़ेगा, क्योंकि 'द लीजेंड्स' थासारक की कहानी नहीं है।

गांव वालों को इस तरह की लोकप्रियता से कोई आपत्ति नहीं है। मलयालम में लिखी गई मूल रचना कई साल पहले बेहद लोकप्रिय हुई थी और आज भी यह बेस्टसेलर है। गांव वालों ने भी इन घटनाओं को जीवंत रखा है। वे एक तरह के सामूहिक आत्ममुग्धता में डूबे हुए हैं। थसारक में अपने नीरस प्रवास के कई साल बाद जब मैं रिसेप्शन में दाखिल हुआ, तो एक मुस्लिम युवक ने मुझे गले लगा लिया, वह रो रहा था। “किली-अन्नान मर गया,” वह सिसकते हुए बोला। मेरे उपन्यास का पात्र अप्पू-किली, थसारक्कियन शैली का नहीं था। वह बचपन की एक स्मृति का साकार रूप था।

लेकिन मैं गाँव वालों के प्रेम के वरदान का उल्लंघन नहीं करना चाहता था।
लगभग हर ग्रामीण ने कोई न कोई ऐसी परिस्थिति पहचान ली है जो उसे काल्पनिक पात्रों में प्रवेश करने का अवसर देती है। पालघाट कस्बे की समृद्ध मस्जिद के इमाम, खाज़ी ने मेरे लिए इसे संक्षेप में बताया। उन्होंने कहा, 'आखिरकार, ये सब ईश्वर की इच्छा है।'
सचमुच वे हैं। जब मैं शाम ढलते ही उस छोटे से आंगन में मौजूद कम पढ़े-लिखे श्रोताओं से बात करने के लिए खड़ा हुआ, तो मुझे उनमें से खसक की गाथा सुनाई दी, जो मेरी कल्पना और प्रशंसा से कहीं अधिक समृद्ध थी। मुझे उस अवसर के लिए छपा हुआ पर्चा भी याद आया। उसमें उन्होंने मुझे थसारक का पुत्र बताया था।
हे दयालु अल्लाह! वह पुत्र, जिस पर आप प्रसन्न हैं।

***** समाप्त *****

sjeet

दूसरी बारी

* हालाँकि शाब्दिक रूप से बुद्ध का अर्थ बुद्ध का अनुयायी होता है, हिंदू उच्च जातियाँ इसका प्रयोग किसी भी अन्य धर्म के अनुयायी के लिए करती थीं, यहाँ मुस्लिम मुल्ला ने एक बुजुर्ग से पूछा, 'तो, यह सच है?'

एक उपसंहार

* क्रांति

लेखक का नोट

यह मेरा पहला उपन्यास है। मूल रूप से मलयालम में 'खासक्किन्ते इतिहासम' शीर्षक से लिखा गया यह उपन्यास 1968 में 'मातृभूमि वीकली' में धारावाहिक के रूप में और 1969 में 'करंट बुक्स, त्रिचुर' द्वारा प्रकाशित पुस्तक के रूप में प्रकाशित हुआ। उपन्यास पर वास्तविक कार्य 1956 में शुरू हुआ था और इसका एक अध्याय अक्टूबर 1958 में 'मातृभूमि वीकली' में समय से पहले ही छप गया था। कई कारणों से इसके अंतिम रूप में प्रकाशित होने में देरी हुई। मलयालम में प्रकाशित पुस्तक, जो वर्तमान में डी.सी. बुक्स, कोट्टायम द्वारा प्रकाशित है, अब अपने इक्कीसवें संस्करण में है।

⋆

इस पुस्तक का अनुवाद करना कठिन रहा है। इसमें प्रकृति के गहन चित्र, प्राचीन लोक रीति-रिवाज, जातिगत भेदभाव का चित्रण, बोलियों का समृद्ध मिश्रण, सब कुछ समाहित है, जिन्हें अंग्रेज़ी में प्रस्तुत करना मुश्किल है। इतना कुछ खो गया है कि उसे पुनः प्राप्त करना संभव नहीं था। मैंने यथासंभव कथा को उसकी अपनी ऊर्जा पर निर्भर रखने का प्रयास किया है और मूल पाठ की गति और लय को बनाए रखा है। देहाती मलयालम भाषा में शिष्टाचार का प्रयोग होता है, यहाँ तक कि जब यह परिचित भाषा में बोली जाती है तब भी। इस प्रकार संबोधन के तरीके मित्रता का भाव स्थापित करते हैं।

मलयालम में 'माश' शब्द अंग्रेजी के 'स्कूल-मास्टर' से लिया गया है; 'कुट्टी', जिसका शाब्दिक अर्थ 'बच्चा' है, किसी छोटे व्यक्ति को संबोधित करने का एक सौम्य और स्नेहपूर्ण तरीका है और कभी-कभी यह नाम का हिस्सा भी होता है; 'यजमान', सेवक द्वारा अपने स्वामी को दिया जाने वाला एक विनम्र संबोधन है; 'अत्था' और 'उम्मा' मुस्लिम बोलचाल में पिता और माता के लिए प्रयुक्त शब्द हैं। 'उम्मा' मुस्लिम महिलाओं को संबोधित करने का भी एक तरीका है; 'अच्चन' (स्त्रीलिंग: अच्ची) बड़े लोगों के लिए प्रयुक्त एक सम्मानजनक शब्द है और आमतौर पर नामों के अंत में जोड़ा जाता है। इसके अलावा 'एत्तन', 'एट्टा', 'अन्नन' भी प्रयुक्त होते हैं; 'पूथम' परिचित राक्षस हैं और कभी-कभी हास्यप्रद भी होते हैं।

⋆

इस अनुवाद को तैयार करने में सहयोग देने के लिए मैं कुछ लोगों का धन्यवाद करना चाहता हूँ। सबसे पहले, मेरे भतीजे पॉल विनय कुमार का, जिन्होंने अनुवाद के कार्यक्रम का ध्यान रखा। साथ ही, सुश्री शोभा रामचंद्रन का, जिन्होंने उपन्यास को त्रुटिरहित रूप से टाइप किया।
नई दिल्ली
जुलाई, 1997

O. V. Vijayan

पेंगुइन बुक्स

पेंगुइन ग्रुप द्वारा प्रकाशित
पेंगुइन बुक्स इंडिया प्राइवेट लिमिटेड, 11 कम्युनिटी सेंटर, पंचशील पार्क, नई दिल्ली 110 017, भारत; पेंगुइन ग्रुप (यूएसए) इंक., 375 हडसन स्ट्रीट, न्यूयॉर्क, न्यूयॉर्क 10014, यूएसए; पेंगुइन ग्रुप (कनाडा), 90 एग्लिंटन एवेन्यू ईस्ट, सुइट 700, टोरंटो, ओंटारियो, एम4पी 2वाई3, कनाडा (पियर्सन पेंगुइन कनाडा इंक. का एक प्रभाग)।
पेंगुइन बुक्स लिमिटेड, 80 स्ट्रैंड, लंदन WC2R 0RL, इंग्लैंड; पेंगुइन आयरलैंड, 25 सेंट स्टीफंस ग्रीन, डबलिन 2, आयरलैंड (पेंगुइन बुक्स लिमिटेड का एक प्रभाग); पेंगुइन ग्रुप (ऑस्ट्रेलिया), 707 कॉलिन्स स्ट्रीट, मेलबर्न, विक्टोरिया 3008, ऑस्ट्रेलिया (पियर्सन ऑस्ट्रेलिया ग्रुप प्राइवेट लिमिटेड का एक प्रभाग)।
पेंगुइन ग्रुप (न्यूजीलैंड), 67 अपोलो ड्राइव, रोजडेल, ऑकलैंड 0632, न्यूजीलैंड (पियर्सन न्यूजीलैंड लिमिटेड का एक प्रभाग)
पेंगुइन ग्रुप (दक्षिण अफ्रीका) (पीटीवाई) लिमिटेड, ब्लॉक डी, रोज़बैंक ऑफिस पार्क, 181 जन स्मट्स एवेन्यू, पार्कटाउन नॉर्थ, जोहान्सबर्ग 2193, दक्षिण अफ्रीका
पेंगुइन बुक्स लिमिटेड, पंजीकृत कार्यालय: 80 स्ट्रैंड, लंदन WC2R 0RL, इंग्लैंड।
पहली बार मलयालम में करेंट बुक्स द्वारा 1969 में प्रकाशित।
पहली बार अंग्रेजी में पेंगुइन बुक्स इंडिया द्वारा 1994 में प्रकाशित।
कॉपीराइट © ओ.वी. विजयन 1991, 1994
लेखक द्वारा मलयालम से अनुवादित।
कवर पेंटिंग: के. राजैया द्वारा 'जोखिम भरी जिंदगी'
सर्वाधिकार सुरक्षित

यह एक काल्पनिक रचना है। नाम, पात्र, स्थान और घटनाएँ या तो लेखक की कल्पना की उपज हैं या काल्पनिक रूप से प्रयुक्त की गई हैं, और किसी भी जीवित या मृत व्यक्ति, घटना या स्थान से कोई भी समानता पूरी तरह से संयोगवश है।

ISBN: 978-01-4306-367-4
यह डिजिटल संस्करण 2013 में प्रकाशित हुआ था।
ई-आईएसबीएन: 978-93-5118-009-8

मेरे पिता के लिए

यह पुस्तक इस शर्त के अधीन बेची जाती है कि इसे प्रकाशक की पूर्व लिखित सहमति के बिना, व्यापारिक रूप से या किसी अन्य तरीके से, उधार नहीं दिया जाएगा, पुनर्विक्रय नहीं किया जाएगा, किराए पर नहीं दिया जाएगा या किसी अन्य प्रकार से प्रसारित नहीं किया जाएगा, सिवाय उस रूप में जिसमें यह प्रकाशित हुई है, और बाद के खरीदार पर भी इसी प्रकार की शर्त लागू होगी। ऊपर आरक्षित कॉपीराइट अधिकारों को सीमित किए बिना, इस प्रकाशन का कोई भी भाग कॉपीराइट स्वामी और इस पुस्तक के उपरोक्त प्रकाशक दोनों की पूर्व लिखित अनुमति के बिना पुनरुत्पादित, संग्रहीत या पुनर्प्राप्ति प्रणाली में शामिल नहीं किया जा सकता है, या किसी भी रूप में या किसी भी माध्यम से (इलेक्ट्रॉनिक, यांत्रिक, फोटोकॉपी, रिकॉर्डिंग या अन्य) प्रसारित नहीं किया जा सकता है।